लेखक—

श्रीशङ्करनाथ शर्मा कौशिक

Taj Tahir Foundation

R. L. Campbell.

8. xi. xxviii.

Taj Tahir Foundation

Taj Tahir Foundation

प्रकाश-पुस्तक-माला की ३४वीं पुस्तक

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

उनके आचार-विचार, रीति-रिवाज, रूपरंग, नखशिख, शृंगार, परिच्छादन, सुविधाएँ, असुविधाएँ, उत्सव-नृत्य, सामाजिक महत्व तथा अन्य आवश्यक बातें.

लेखक
विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

सम्पादक—हिन्दी मनोरञ्जन

प्रकाशक
शिवनारायण मिश्र, भिषग्रत्न
प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर

२॥)

Taj Tabir Foundation

जाब प्रेस, कानपुर ।

Taj Tahir Foundation

निवेदन

'संसार की स्त्रियाँ' के नाम से एक लेख-माला 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका में कई वर्ष तक निकलती रही थी। वह लेख-माला हिन्दी पाठकों को बहुत पसंद आई। हमारा विचार था कि उक्त लेख-माला में संसार के सब देशों पर लेख प्रकाशित करें – भारत के सम्बन्ध में तो एक लेख-माला अलग ही निकालने का विचार था और उसके लिए हमने तैयारी भी यथेष्ट करली थी – अर्थात् बहु-संख्यक चित्र एकत्र कर लिये थे; परन्तु खेद है कि 'प्रभा' का प्रकाशन कुछ काल के लिए स्थगित हो जाने के कारण हमारा यह विचार कार्य्य-रूप में परिणत न हो सका। प्रभा में निकालने के साथ ही साथ हमारा यह विचार भी था कि हम इस लेख-माला को पुस्तकाकार भी प्रकाशित करेंगे। अपने उस विचार के अनुसार तथा हिन्दी-प्रेमियों के अनुरोध से हम उस लेख-माला का कुछ अंश आज पुस्तक रूप में हिन्दी पाठकों के सन्मुख उपस्थित करते हैं। इस अंश में केवल असभ्य जातियों की स्त्रियों का ही वर्णन है, अतएव इसका नाम 'संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ' रक्खा है। आशा है पाठक हमारी इस योजना को पसंद करेंगे। यदि पाठकों ने इस पुस्तक का यथेष्ट आदर किया तो हम संसार के सब देशों पर इसी प्रकार की सचित्र और सुन्दर पुस्तकें छापकर प्रकाशित करते रहेंगे।

निवेदक—

शिवनारायण मिश्र।

Taj Tahir Foundation

प्रकाश-पुस्तक-माला की कुछ पुस्तकें।

तिलक चित्रावली .. १)
व्यङ्ग चित्रावली .. १॥)
वन्दे मातरम् चित्राधार .. २)
गोरा (रवीन्द्रनाथ टैगोर) .. ३)
घर बाहर ,, .. १।)
मुक्तधारा ,, .. ॥=)
बलिदान (विक्टर ह्यूगो) सचित्र २)
वज्राघात (आपटे) .. २॥)
महाराज नन्दकुमार को फाँसी .. २॥)
कृष्णार्जुन युद्ध .. ॥=)
उद्योगी पुरुष .. ।=)
साम्यवाद .. ।=)
राष्ट्रीय वीणा भाग १ .. ॥=)
राष्ट्रीय वीणा भाग २ .. ॥)
मेरे जेल के अनुभव .. ।=)
देवी जोन .. ।=)
रूस का राहु .. ।=)
रूस की राज्य क्रान्ति (सजिल्द) २॥)
चीन की राज्य क्रान्ति (सजिल्द) १॥)
सचित्र अकाली दर्शन .. ॥।)
ट्राल्सटाय के सिद्धान्त .. १।)
सती सरिंधा .. ॥=)
त्रिशूल तरङ्ग .. ॥=)
फ़िजी में भारतीय प्रतिज्ञा बद्ध कुली प्रथा .. १)

एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का बर्ताव .. ।=)
सम्राट् अशोक .. १)
भारतीय सम्पत्ति शास्त्र सजिल्द .. ५)
शिक्षा सुधार .. ॥)
फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष .. ॥)
मेघनाद वध .. ॥।)
बहिष्कृत भारत .. ।)
सितार शिक्षक .. ।=)
बीसवीं सदी का महाभारत .. ॥।)
राजनीति प्रवेशिका .. ।=)
कृषक क्रन्दन .. ≡)
रानाडे की जीवनी .. =)॥
सरोजिनी की जीवनी .. ।=)
हमारा भीषण ह्रास .. ।)
कुसुमाञ्जलि .. =)
दादा भाई नौरोजी .. =)॥
चम्पारन की जाँच .. ।-)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र .. ।)
स्वराज्य पर मालवीयजी .. ।)
राजयोग .. ।=)
आयर्लैण्ड में होमरूल .. ॥)
आयर्लैण्ड में मातृभाषा .. ।=)
कांग्रेस का इतिहास ... ॥-)
श्रीकृष्णचरित्र ... ।=)

Taj Tahir Foundation

सूची

भूमिका

संसार में स्त्री का प्रभाव–सौन्दर्य–शृङ्गार–गुदना–परिच्छादन–विवाह प्रथा–धर्म्म–स्त्रियों का महत्व ९

पालीनीशिया

१—भौगोलिक स्थिति–शारीरिक बनावट–सौन्दर्य्य–शारीरिक विकृति और गुदना–परिच्छादन–टापा और उसका निर्माण–सामोआ के चटाई के वस्त्र–शृङ्गार–जन्म और बाल्यकाल–बालहत्या ... ३३

२—सामोअन बाल्यकाल–गोद की प्रथा–सगाई की वयस–विवाह प्रथा –बहु विवाह–दाम्पत्य नियम–वैधव्य ४८

३—जातीय प्रभाव–भौगोलिक प्रभाव–सामाजिक प्रभाव–गान और नृत्य–टाऊपाऊ ६०

न्यू ज़ीलैण्ड

न्यू ज़ीलैण्ड और पालीनीशियन–मावरी स्त्री का स्थान–टापू–जन्म और बाल्यकाल–गुदना–वस्त्र-निर्माण कला–परिच्छादन–शृङ्गार–टीकीं–दैनिक जीवन–भोजन–खाद्य पदार्थ पकाने और सुरक्षित रखने की युक्ति–मावरी उत्सव तथा नृत्य–मनुष्य भक्षण–युद्ध में स्त्रियां–विवाह प्रथा ६९

Taj Tahir Foundation

विषय-सूची

मेलेनीशिया

१—भौगोलिक स्थिति—शारीरिक बनावट—स्त्रियों का द्वीप—शृङ्गार—गुदना—शारीरिक विकृति—पुष्पों के अलङ्कार—परिच्छादन ... ८०

२—जन्म और बाल्यकाल—बालिकाओं के साथ व्यवहार—सगाई तथा विवाह—बाल विवाह—न्यू ब्रिटेन की रीति रिवाज—बहु विवाह—नैतिक जीवन—विधवाएँ और वैधव्य—विधवाओं की हत्या—मेलेनीशियन स्त्रियों का सामाजिक महत्व ९४

माइक्रोनीशिया

भौगोलिक स्थिति—जातीय नख शिख—परिच्छादन—गुदना—अलङ्कार—वैवाहिक रीति रिवाज—बहु विवाह—स्त्रियों का सामाजिक स्थान. .१२२

आस्ट्रेलिया

शारीरिक बनावट—परिच्छादन तथा अलङ्कार—जन्म और बाल्य-काल—शिक्षा—वैवाहिक रीति रिवाज—स्त्रियों का कर्तव्य—वैधव्य—अन्त्येष्टि क्रिया—वर्तमान दशा १३५

टारेस स्ट्रेट्स और न्यू गाइना

टारेस स्ट्रेट्स की पापन जाति का विनाश—परिच्छादन—वैवाहिक रीति रिवाज—न्यू गाइना की स्त्रियाँ—गुदना—विवाह—न्यू गाइना की विधवाएँ—गापा—भोजन पकाने की रीति १५९

सण्डा द्वीप तथा सैलीबीस

१—इण्डोनीशियन जाति की उत्पत्ति—शारीरिक बनावट—अचेहनीज़—सौन्दर्य—अचेहनीज़ वैवाहिक रीति रिवाज—बहु विवाह—बत्तक जाति की विवाह प्रथा—सुमात्रा के बच्चे ... .१६९

Taj Tahir Foundation

२—वोर्नियो की जातियाँ—सौन्दर्य्य—विचित्र परिच्छादन—गुदने की प्रथा—कायन जाति की श्रेणियाँ—स्त्री चिकित्सक—विवाह प्रथा—जावा की जातियाँ—जावा के हरम—स्त्रियों का स्थान—विवाह प्रथा—कुत्तों की उपासना—बालीनी सौन्दर्य—बालीनी परिच्छादन—सती प्रथा—सैलीवियन परिच्छादन—सैलीवियन विवाह प्रथा—मध्य सैलीबीस का परिच्छादन १७९

मलाया प्रायद्वीप

जाति—परिच्छादन—मलाया स्त्री का गृहजीवन—जन्म और बाल्य-काल—सौन्दर्य—वैवाहिक रीति रिवाज—अन्त्येष्टि क्रिया ..२०२

फ़िलीपाइन द्वीप

जाति की उत्पत्ति—नेग्रिटो सौन्दर्य—विवाह प्रथा—मण्डाया स्त्रियाँ ..२१५

मेडागास्कर

जातियाँ—शारीरिक बनावट—स्त्रियों का कार्य—विचित्र नाच—परिच्छादन—शृङ्गार—जन्म और बाल्यकाल—बहु विवाह—विवाह प्रथा २२५

Taj Tahir Foundation

चित्र-मुची

भूमिका

फ़िजी की स्त्रियाँ टोकरी बना रही हैं ६

आस्ट्रेलिया की स्त्री की प्रस्तर मूर्त्ति ११

यूनामा की स्त्री १३

अलजीरिया की स्त्री १५

कांगो की स्त्री १७

पूर्वी अफ्रीक़ा की स्त्री १९

कांगो की स्त्रियाँ २१

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का द्वन्द-युद्ध २३

मलाया प्रायद्वीप की साकाई युवती २५

पूर्वी अफ्रीक़ा की मसाई स्त्रियाँ २६

एरीज़ोना की होपी कुमारी २७

एरीज़ोना की स्त्री २८

फ़िजी द्वीप की कुमारी २९

ज़ूलू जाति की स्त्रियाँ ३१

पालीनीशिया

१—सामोआ द्वीप की स्त्री ३४

टाँगा स्त्रियाँ ३६

टाँगा स्त्री ३७

सामोआ स्त्री ३९

Taj Tahir Foundation

हवाई द्वीप का टापा ४१
सामोआ स्त्री ४२
सामोआ की नाचने वाली स्त्रियाँ ४३
सामोआ द्वीप के दुदुइला स्थान की स्त्रियाँ ४४
सामोआ स्त्री ४६
सामोआ स्त्री ४७
२—सामोआ स्त्री ४६
सामोअन स्त्रियाँ ५०
'सीसी' और सुअर के दाँतों का हार ५२
'सीसी' और सुअर के दाँतों का हार पहने हुए एक स्त्री .. ५३
ताहीती स्त्रियाँ ५५
टाँगा बाच ५७
सामोआ द्वीप की 'टाऊपाऊ' स्त्रियाँ ५८
हवाई द्वीप की नाचने वाली स्त्रियाँ ५६
३—सामोआ द्वीप का 'शिव-नृत्य' ६१
ताहीती स्त्री ६३

न्यू ज़ीलैण्ड

मावरी स्त्रियाँ और लड़कियाँ ६७
मावरी स्त्री ६८
कुलीन मावरी स्त्री ७०
खाद्य भण्डार ७२
मावरियों के स्वागत करने का ढंग ७५
एक मावरी मुखिया का घर ७७

मेलेनीशिया

१—एडमिरलटी द्वीप की स्त्री ८१

Taj Tahir Foundation

चित्र-सूची

मेलेनीशिया के न्यू ब्रिटेन द्वीप की स्त्रियाँ ८३
मेलेनीशिया के न्यू आयर्लैण्ड द्वीप की स्त्रियाँ ८५
दो फ़िजियन स्त्रियाँ 'टापा' बना रही हैं ८७
फ़िजी के कानडावू स्थान की पहाड़िनें ८९
सुलेमान द्वीप समूह की स्त्रियाँ ९२
२—न्यू ब्रिटेन द्वीप की स्त्री ९५
फ़िजी की दो स्त्रियाँ ९७
न्यू कैलीडोनिया की स्त्री १००
न्यू हैब्रिडेस का एक परिवार १०३
फ़िजी द्वीप की स्त्री १०४
फ़िजी के वैटोवा स्थान की स्त्रियाँ १०७
फ़िजी द्वीप की स्त्री १०९
फ़िजी द्वीप की अविवाहिता युवती १११
सुलेमान द्वीप समूह की युवती.. .. ..११५
ठेठ फ़िजी की स्त्री ११७
फ़िजी द्वीप का 'लाकालाका' नाच ११९

माइक्रोनीशिया

कैरोलिन्स द्वीप की स्त्री १२३
माइगीउल द्वीप की सुन्दरी १२५
कैरोलिन्स द्वीप की दो स्त्रियाँ १२७
मार्शल द्वीप के एक राजा की पत्नी १२९
कैरोलिन्स के 'रुक' स्थान की तीन स्त्रियाँ १३१
कैरोलिन्स के इनोर स्थान की स्त्री .. . १३२
कैरोलिन्स के 'पोनापी' स्थान की स्त्री १३३

Taj Tahir Foundation

आस्ट्रेलिया

आरण्टा जाति की स्त्रियाँ १३७
आस्ट्रेलियन स्त्री १३९
आस्ट्रेलियन स्त्री १४१
उत्तरी आस्ट्रेलिया की स्त्री १४३
अस्ट्रेलिया की 'वाकाई' जाति की स्त्री १४७
आस्ट्रेलियन स्त्रियों का नाच १४९
आस्ट्रेलिया की 'मोरूया' जाति की स्त्री १५१
आस्ट्रेलिया की विधवाएँ अपने मृत पति की क़ब्र पर बैठी हुई हैं ..१५३
लड़किया जाति की स्त्री १५५
उत्तरी आस्ट्रेलिया की 'उलना' जाति की स्त्री १५७

टारेस स्ट्रेट्स और न्यू गाइना

टारेसस्ट्रेट्स की एक वृद्धा १६१
मिराकी स्त्रियाँ १६३
मोट्टू जाति की लड़की १६५
ईरोपीनाच १६७
स्त्रियाँ भोज के लिए भोजन पका रही हैं १६८

सण्डा द्वीप तथा सैलीबीस

१—बत्तकस्त्री १७१
सुमात्रा की बत्तक स्त्री १७३
सुमात्रा की बत्तक स्त्री १७५
बत्तक स्त्री १७७
२—भूमिदासक स्त्रियाँ १८१

Taj Tahir Foundation

चित्र-सूची

बोर्नियो के सरावक स्थान की टानजांग स्त्रियाँ १८३
भूमिदायक स्त्री १८५
समुद्रदायक जाति की अविवाहित युवती .. . १८७
समुद्रदायक स्त्री कपड़ा बुन रही है १८९
भूमिदायक जाति की चिकित्सक स्त्रियाँ १९१
बोर्नियो की 'कदायन' स्त्रियाँ १९२
जावा की 'बताबियन' युवती १९५
जावा की स्त्रियाँ 'सरांग' बना रही हैं १९७
पश्चिमी जावा की सण्डानी स्त्रियाँ तथा पुरुष ..१९९

मलाया प्रायद्वीप

मलाया की मूल निवासी जाति 'सीलांगर' की स्त्रियाँ २०३
कलन्तन नगर के भले घर की विवाहित स्त्री २०५
कलन्तन की एक वेश्या और उसकी सन्तानें २०७
साकाई स्त्रियाँ और बच्चे २०९
एक साकाई युवती २११

फ़िलीपाइन द्वीप

इगोरोट जाति की युवती २१७
बकिडनोन जाति की स्त्री २१९
'डाटो' मुखिया और उसकी पत्नी २२१
बागोबो पुरुष, स्त्री और बच्चा २२३

मेडागास्कर

सकलावा स्त्री २२७
बेत्सीमिसारका स्त्री २२९
बेत्सीलियो स्त्रियाँ ... .२३१

Taj Tahir Foundation

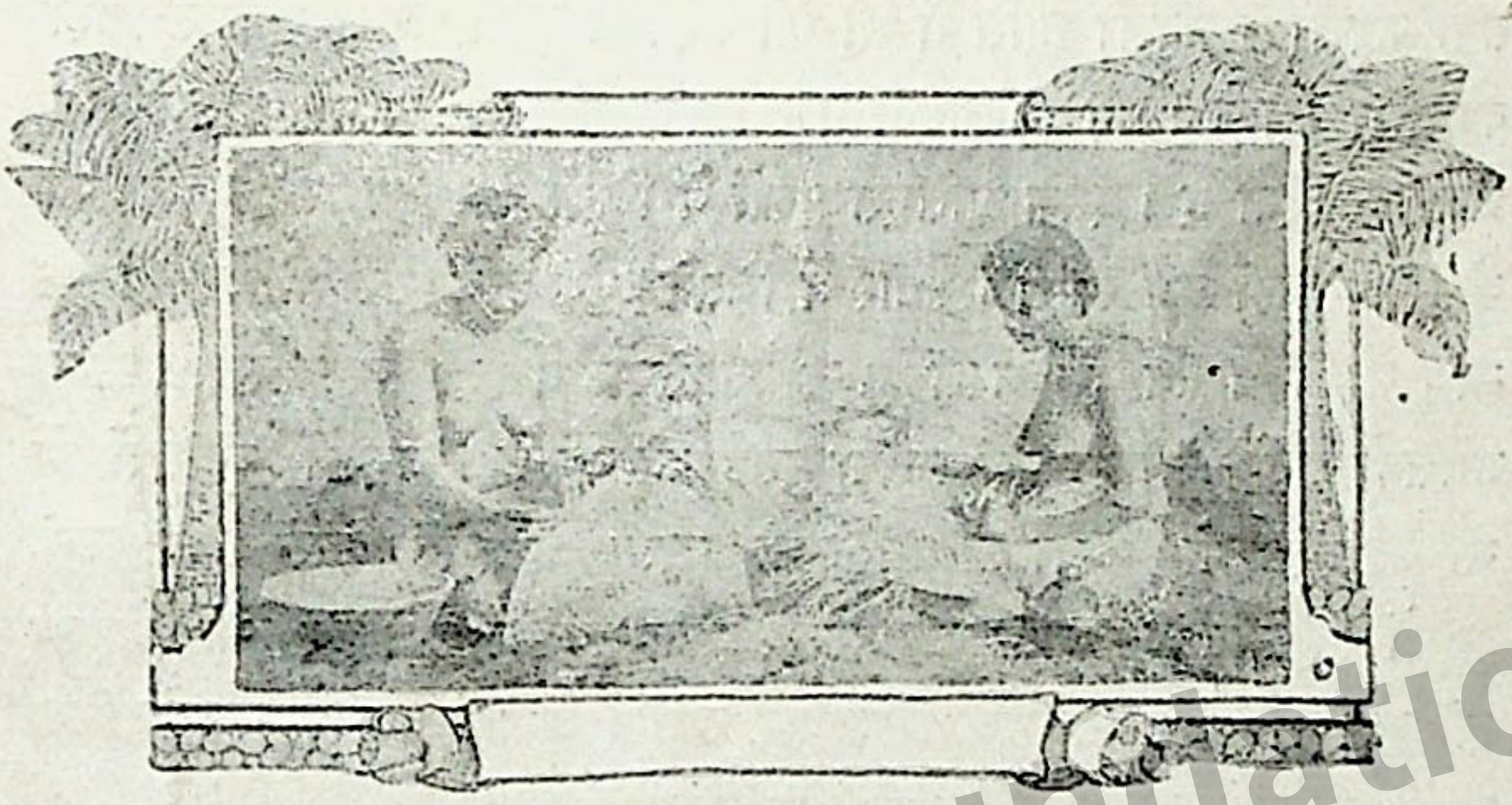

फ़िजी की स्त्रियां टोकरी बना रही हैं.

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ।

भूमिका

स्त्री सदैव अबला के नाम से पुकारी जाती रही है। परन्तु अबला होते हुए भी स्त्री कितनी बलवान है यह बात प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास देखने से ज्ञात हो सकती है। बड़े बड़े वीर पुरुष तथा वृद्धा स्त्री के एक नयन बाण से विद्ध होकर कितने अशक्त हो जाते रहे हैं। इस अबला ने बड़े बड़े वीरों को परास्त किया है, बड़े बड़े विद्वानों तथा बुद्धिमानों को पागल बना दिया है, बड़े बड़े योगियों और तपस्वियों को भ्रष्ट कर दिया है। सभ्य से सभ्य

संसार में स्त्री का प्रभाव

१० संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

तथा जङ्गली से जङ्गली जाति में भी स्त्री सदैव ही पुरुषों की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी रही है। बड़े बड़े कवियों ने स्त्री की प्रशंसा में अपनी प्रतिभा का अन्त कर दिया है। इसके प्रतिकूल पुरुषों ने स्त्रियों को बुरा कहने में भी कोई कसर नहीं उठा रक्खी। संसार में जितने दुर्गुण हैं वे सब स्त्रियों ही के मत्थे मढ़ दिये गये हैं। केवल सभ्य जातियों में ही नहीं वरन् असभ्य जातियों में भी स्त्री की प्रशंसा तथा बुराई की गई है। जङ्गली जातियों में भी जहाँ एक ओर स्त्रियों की प्रशंसा की जाती है वहीं दूसरी ओर उन्हें दुर्गुणों की खान कहा जाता है। परन्तु, इतना सब कुछ होते हुए भी अबला स्त्री अब भी पुरुषों पर अपना सिक्का पूर्ण रूप से जमाये हुए है—उसके बिना पुरुषों का कार्य एक क्षण भी नहीं चल सकता।

सौन्दर्य

सौन्दर्य की अभी तक कोई ऐसी व्यापक परिभाषा नहीं बनी है जो समस्त संसार पर समान रूप से लागू हो सके। हम जिसे सौन्दर्य समझते हैं दूसरे उसको असौन्दर्य मानते हैं। अधिक मोटा होना सभ्य जातियों में बदसूरती समझी जाती है, परन्तु न्यू ज़ीलैण्ड की सामोअन् जाति, ईरानियों, तुर्कों, मूरों, अफ़्रीक़ा तथा अमेरिका की कुछ जङ्गली जातियों में मोटापा खूबसूरती का द्योतक है। कहीं गोल सिर सुन्दर समझा जाता है तो कहीं लम्बा और चपटा सिर सुन्दर माना जाता है। दक्षिणी अमेरिका में फूली हुई पिण्डलियाँ सुन्दर समझी जाती हैं, इसके लिए वे पिण्डलियों को बाँध बाँध कर मोटा कर देते हैं। अफ़्रीक़ा में जङ्गली जातियाँ कुचों को लम्बा बनाने की चेष्टा करती हैं, क्योंकि उनके यहाँ लम्बे कुच ही सुन्दर माने जाते हैं। पालीनीशिया में माताएँ अपने बालकों की नाक दाब दाब कर चपटी कर देती हैं। उनका कथन है कि बड़ी और पूर्णोन्नत नाक सुन्दरता को बिगाड़ देती है। चीन में अभी तक इतने छोटे पैर, जिससे कि स्त्री चल फिर भी न सके, सुन्दर माने जाते हैं। बड़ी बड़ी आँखें किसे सुन्दर नहीं प्रतीत होतीं;

Taj Tahir Foundation

परन्तु सभ्य जातियाँ छोटी आँखों में ही सौन्दर्य की पूर्ण छटा का दर्शन करती हैं। यूरोप वाले श्वेत वर्ण को सबसे सुन्दर वर्ण समझते हैं; परन्तु भारतीयों को वह श्वेत-कुष्ट सा दिखाई पड़ता है। भारतीयों का कथन है कि जब तक वर्ण में कुछ नमक न हो तब तक वह सुन्दर नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार जङ्गली जातियाँ अपने साँवले रङ्ग को ही सब से सुन्दर वर्ण मानती हैं। श्वेत रङ्ग को वे मुर्दे का रङ्ग समझती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वर्ण का सौन्दर्य के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। एक ऐसी स्त्री जिसके अन्य सब नखशिख सुन्दर कहे जा सकते हैं केवल वर्ण काला होने से कुरूपा समझी जाती है। यदि उसका वर्ण गौर हो जाय; तो सुरूपा कही जाने लगे। इसी प्रकार यदि एक गौर वर्ण की स्त्री, जो अन्य दृष्टि में

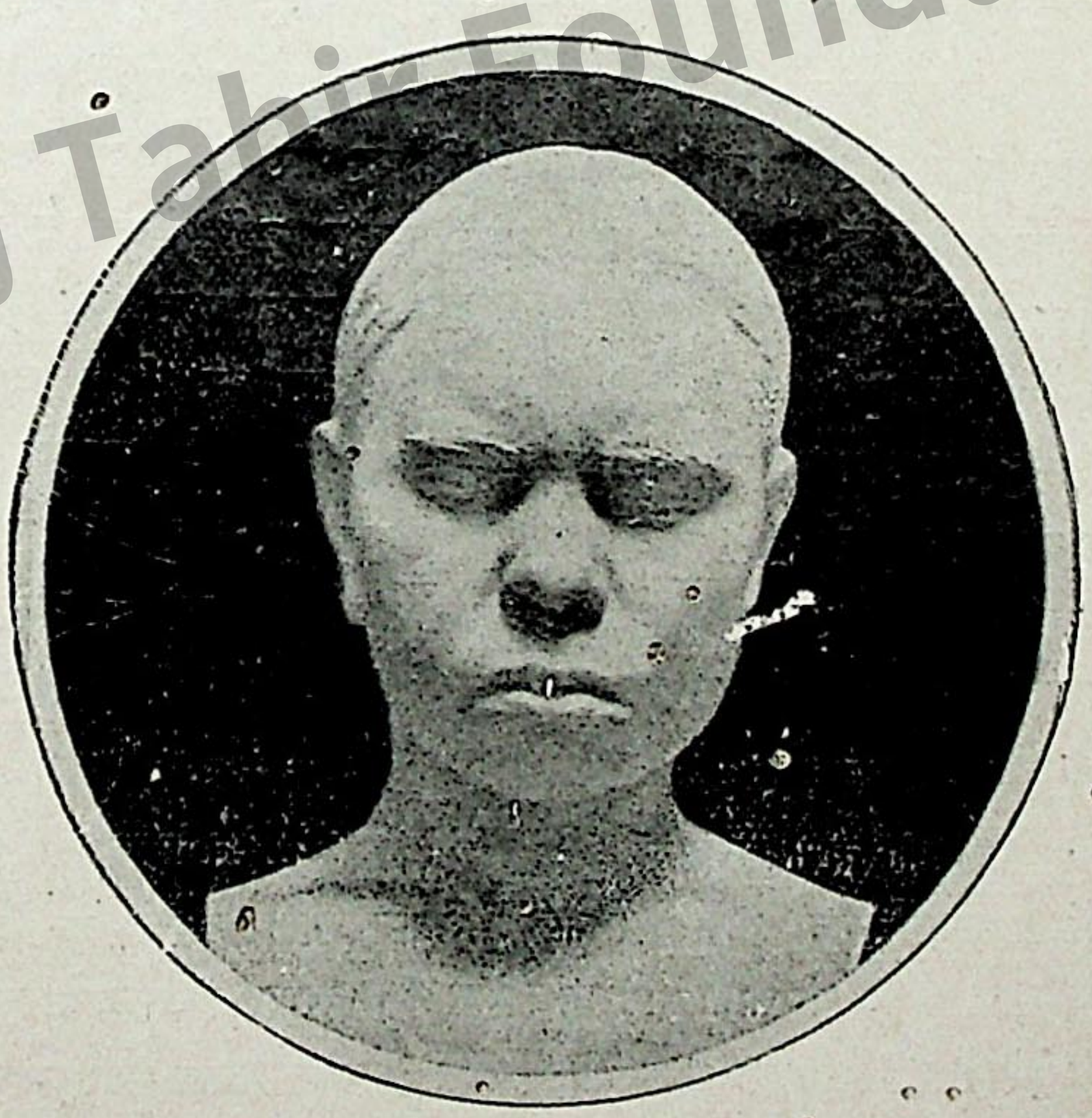

आस्ट्रेलिया की स्त्री की प्रस्तर मूर्ति

पूर्ण सुन्दर समझी जाती है, यदि उसका वर्ण काला हो जाय तो अधिकांश की दृष्टि में बदसूरत हो जायगी। यह बात पृष्ठ ११ में दिये हुए चित्र से भली भाँति समझ में आ सकती है। यह एक आस्ट्रेलियन स्त्री की प्रस्तर मूर्त्ति है। इस स्त्री का रङ्ग काला है और असली सूरत में देखने पर यह बदसूरत दिखाई पड़ती है। परन्तु मूर्ति का रङ्ग श्वेत होने के कारण यह उतनी बदसूरत नहीं दिखाई पड़ती। केवल वर्ण बदल जाने से इसकी बदसूरती में काफ़ी कमी हो गई।

यूरोप के सौन्दर्य विशारदों का कथन है कि वर्ण से सौन्दर्य की अधिक वृद्धि अथवा ह्रास नहीं होता। एक स्त्री जो अन्य प्रकार से सुन्दर कही जा सकती है केवल वर्ण काला होने से कुरूपा नहीं मानी जा सकती। इसी प्रकार एक गोरी स्त्री, जिसके नखशिख सुन्दर नहीं हैं, केवल इसीलिए सुन्दर नहीं मानी जा सकती कि वह गोरी है। इस बात में बहुत कुछ सत्यता है; परन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि केवल वर्ण से सौन्दर्य की बहुत कुछ वृद्धि तथा उसका बहुत कुछ ह्रास हो जाता है। एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री का मुख यदि काला कर दिया जाय तो उसकी सुन्दरता उतनी न रहेगी, उसका बहुत कुछ ह्रास हो जायगा। इसी प्रकार यदि एक काली स्त्री, जिसके नख शिख सुन्दर हैं, गोरी हो जाय तो उसकी सुन्दरता पहले की अपेक्षा बहुत कुछ बढ़ जायगी। अतएव यह सिद्ध हो गया कि नख शिख की सुन्दरता के साथ वर्ण की सुन्दरता भी सौन्दर्य वृद्धि के लिए आवश्यक है।

शृंगार. शरीर को नाना प्रकार के अलङ्कारों से, रङ्गों से, तथा अन्य कृत्रिम उपायों से सुन्दर बनाना ही शृङ्गार का अभिप्राय है। शृङ्गार का आदर्श भी संसार में भिन्न भिन्न है। यूरोप तथा अमेरिका की स्त्रियाँ मुख पर श्वेत पाउडर मल कर गालों पर हलका गुलाबी रङ्ग का पाउडर लगाती हैं। ओठों को

Taj Tahir Foundation

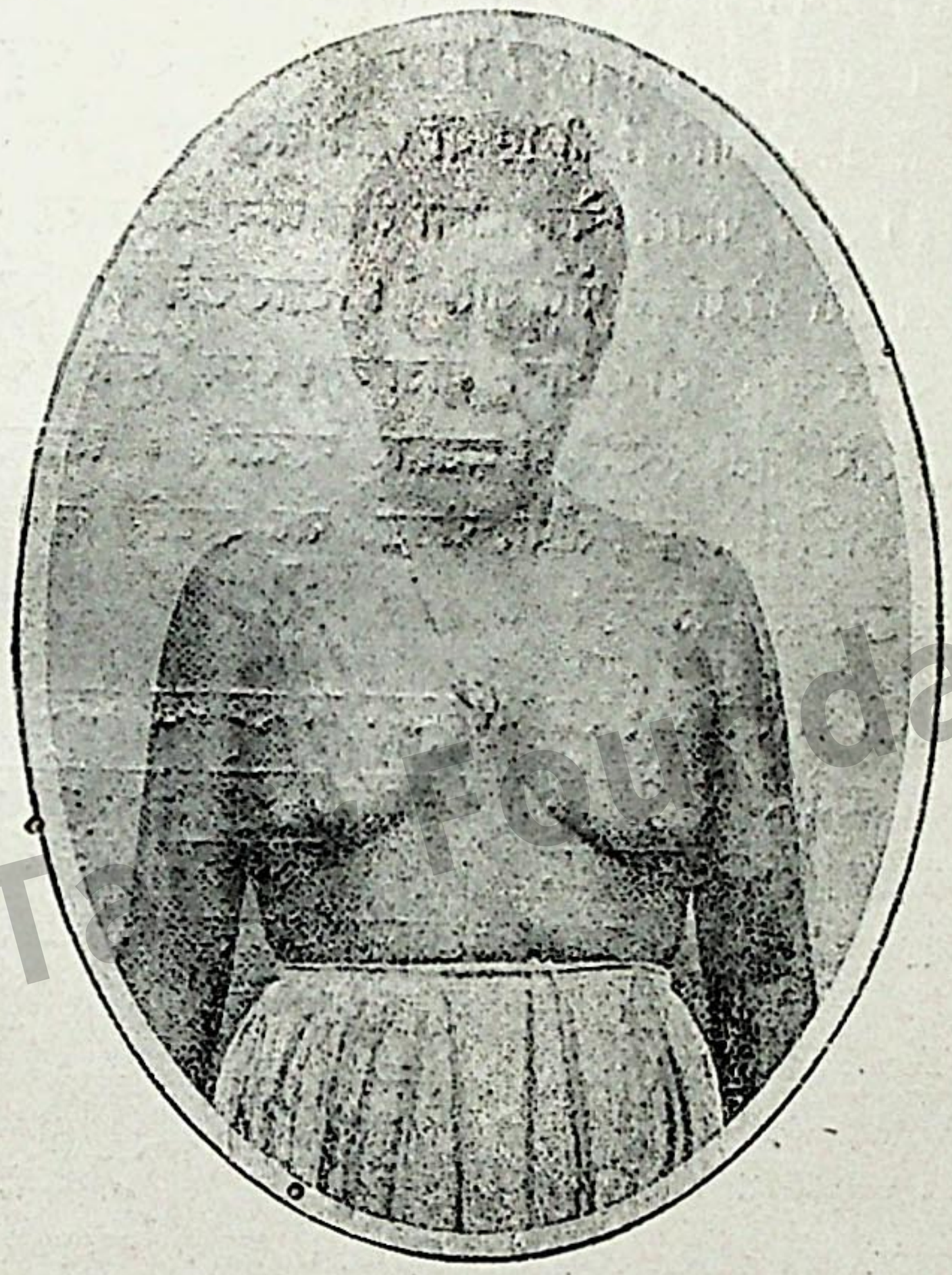

यूनामा की स्त्री.
वक्षस्थल पर गुदना गुदाये हुए.

Taj Tarun Foundation

यूनामा की स्त्री. ०

वक्षस्थल पर गुदना गुदाये हुए.

Taj Tawarikh Foundation

लाल रङ्ग से रँगती हैं। यूरोप में आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाने का रिवाज बिल्कुल नहीं है, परन्तु भारतवर्ष, ईरान तथा रूम में स्त्रियाँ आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाती हैं। इसी प्रकार हाथ पैरों में मेंहदी लगाने का रिवाज भी भारत, ईरान तथा रूम में पाया जाता है। अफ़्रीक़ा तथा आस्ट्रेलिया में जङ्गली जातियों की स्त्रियाँ अपने शरीर में अनेक प्रकार के रङ्ग पोतती हैं। लाल, पीला, श्वेत, काला तथा अन्य अनेक रङ्ग शरीर में, केवल सौन्दर्य वृद्धि की दृष्टि से पोते जाते हैं। शृङ्गार करने का रिवाज संसार की प्रत्येक जाति की स्त्रियों में पाया जाता है। सभ्य जाति की स्त्रियाँ, सोने, चाँदी, हीरे, मोती इत्यादि के अलङ्कार पहनती हैं। असभ्य जातियाँ लकड़ी, हड्डी, बाँस, घास फूस, ताँबा, पीतल, पोत इत्यादि के अलङ्कारों से अपना शरीर सुसज्जित करती हैं।

गुदना

जङ्गली जातियों में गुदना भी शृङ्गार का एक अङ्ग माना जाता है। केवल जङ्गली जातियों में ही नहीं, वरन सभ्य कहलाने वाली अनेक जातियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ भी कभी कभी बाँहों अथवा भुजाओं में गुदना गुदवाती हैं। भारत में भी स्त्रियाँ ठोढ़ी तथा गाल पर तिल गुदवाती हैं। न्यू ज़ीलैण्ड की माओरी जाति की स्त्रियाँ अपनी समस्त ठोढ़ी गुदवा डालती हैं। ऐनू जाति की स्त्रियाँ अपने ऊपरी ओंठ पर ऐसा गुदना गुदवाती हैं जो बिल्कुल मूँछों की तरह दिखाई पड़ता है। यद्यपि बहुत सी दशाओं में गुदने से सौन्दर्य वृद्धि की अपेक्षा सौन्दर्य नाश हो जाता है; परन्तु सौन्दर्य का आदर्श और शृङ्गार का आदर्श भिन्न होने के कारण वह अच्छा समझा जाता है। अल्जीरिया की स्त्रियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। १५ वें पृष्ठ पर अलजीरियन स्त्री का चित्र है जो दोनों गालों तथा दोनों बाँहों पर गुदना गुदवाये हुए है। यह स्त्री अन्य दृष्टि से सुन्दर कही जा सकती है; परन्तु अधिक गुदना गुदाने के कारण, एक भारतीय की दृष्टि में उसका सौन्दर्य कुछ

Taj Tahir Foundation

अलजीरिया की स्त्री.

(मुख तथा बाहों पर गुदना गुदाये हुए.)

Tajmahir Foundation

विगड़ गया है; परन्तु यदि एक अलजीरियन से पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि इससे स्त्री का सौन्दर्य वहुत कुछ वढ़ गया।

ऐसी जङ्गली जातियाँ, जिनका रङ्ग श्याम होता है, रँग का गुदना नहीं गुदवातीं; क्योंकि काले चमड़े में रङ्ग का गुदना दिखाई नहीं पड़ता। अतएव वे चमड़े को छील कर अथवा इस प्रकार दाग़ कर जिससे कि उतने स्थान का चमड़ा उभर आवे, गुदना गुदाती हैं। अफ्रीक़ा की काङ्गो जाति में इस प्रकार के गुदने का वहुत रिवाज है। अन्यत्र काङ्गो फ्रीस्टेट की एक स्त्री का चित्र दिया गया है, इसकी छाती और पेट पर उभरा हुआ गुदना गुदा हुआ है।

संसार की अनेक जाति की स्त्रियों में अनेक प्रकार के गहने पहनने का रिवाज है। न्यू ज़ीलैण्ड में छोटे छोटे जीवित पक्षी कानों में लगाये जाते हैं। पेरिस की लेडियाँ अपनी कमर में जीवित कछुए लटकाती हैं। अलङ्कारों के लिए शरीर को बिगाड़ लेना प्रायः संसार की सभी स्त्रियों का स्वभाव है। भारत में स्त्रियाँ केवल गहने पहनने के लिए कानों की दुर्दशा कर डालती हैं। पूर्वी तथा मध्य अफ्रीक़ा में स्त्रियाँ ऊपरी ओंठ को फाड़ कर उसमें गहना पहिनती हैं। उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में नीचे का ओंठ फाड़ डाला जाता है और उसमें गहना पहना जाता है। दक्षिण अमेरिका में गाल केवल गहना पहनने के लिए फाड़ डाले जाते हैं। नाक में कील तथा नथ पहनने का रिवाज भारत में है, तातारी स्त्रियाँ भी नाक में नथ पहनती हैं। गले में हँसली, तौक़ तथा अन्य गहने भारत में खूब पहने जाते हैं। काङ्गो (अफ्रीक़ा) की स्त्रियाँ गले में इतने बड़े तौक़ पहनती हैं कि एक एक तौक़ का वज़न १५ सेर तक का होता है। पूर्वी अफ्रीक़ा में पैरों तथा बाँहों में लोहे के तार लपेटे जाते हैं। बर्मा की कुछ पहाड़ी जातियाँ गले में ऐसे गहने पहनती हैं जिस से उनकी गर्दनें असाधारण रूप से लम्बी हो जाती हैं।

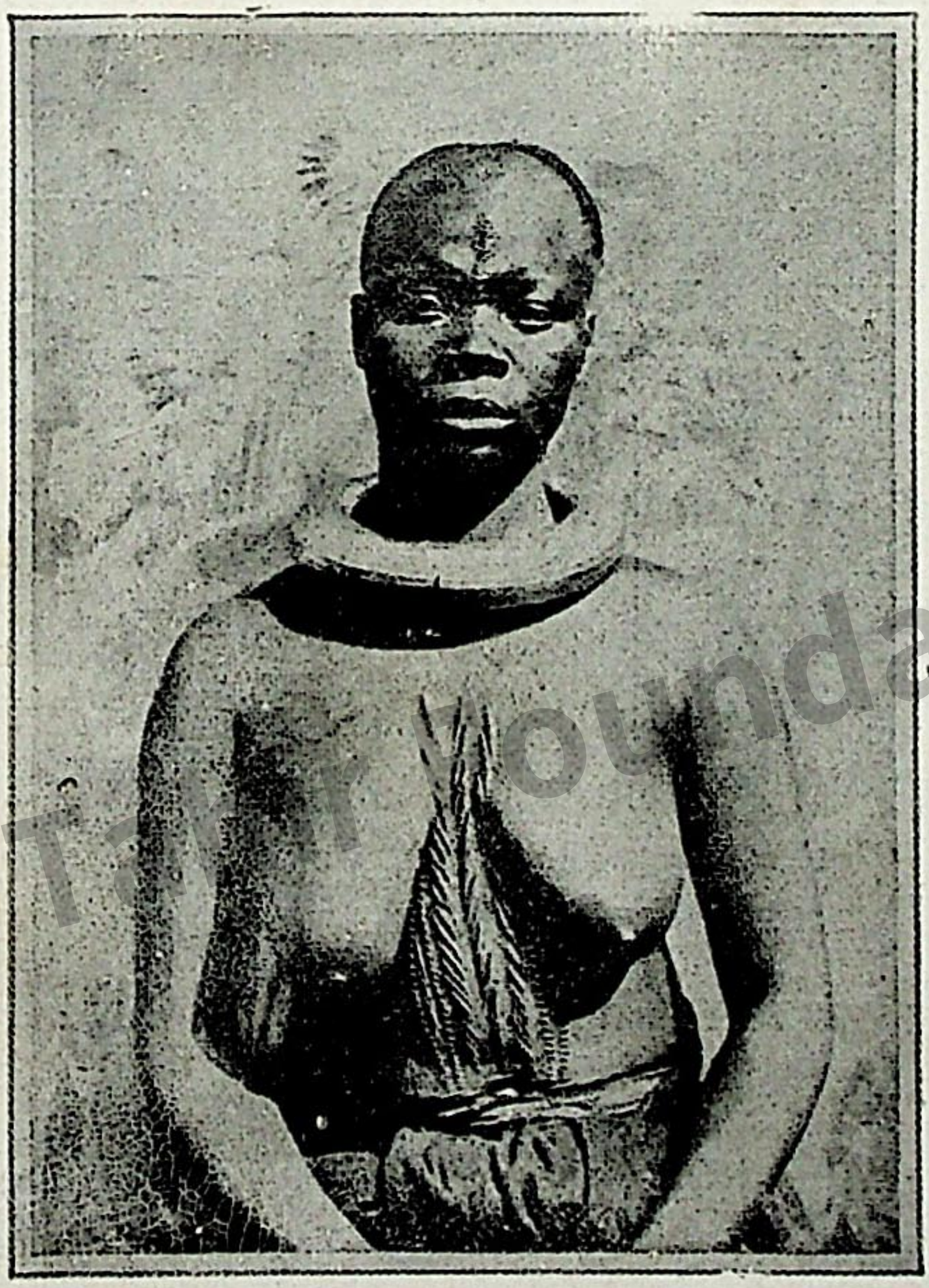

कांगो (अफ्रीका) की स्त्री
पेट पर उभरा हुआ गुदना गुदाये तथा गले में तौक़ पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

यूरोप की सभ्य जातियाँ भी गले में गलेवन्द तथा हार पहनती हैं। कानों में रिङ्ग तथा हाथों में कड़े पहनती हैं। इस प्रकार संसार की कोई ऐसी जाति नहीं है जिसकी स्त्रियों को गहने से प्रेम न हो।

सिर के वालों को सजाने का ढङ्ग भी भिन्न भिन्न है। अनेक जातियों में तो वाल केवल सौन्दर्य वृद्धि के लिए सजाये जाते हैं, परन्तु कुछ जातियों में वालों का एक ख़ास ढङ्ग से सजाना एक विशेष अर्थ रखता है। उदाहरणार्थ एरीज़ोना की होपी जाति में कुमारियाँ सिर के दोनों ओर वालों के दो फूल से वना लेती हैं, यह फूल इस वात के द्योतक होते हैं कि कन्या का अभी विवाह नहीं हुआ। विवाह होने के पश्चात् फिर कोई स्त्री वालों के फूल नहीं वना सकती। विवाह होने के पश्चात् वह मूली की शकल की अलकें वना कर दोनों कन्धों पर लटकाये रहती है।

दाँतों को काला करना, उन्हें रेतवा देना भी अनेक जातियों में सौन्दर्य वृद्धि का हेतु माना जाता है। मेलेनीशिया की अनेक जातियाँ पान खाकर अपने दाँत काले कर लेती हैं; क्योंकि दातों का श्वेत रहना उनमें वदसूरती समझा जाता है। इसी प्रकार अफ्रीका की काङ्गो जाति की स्त्रियाँ अपने दाँत रेतवा डालती हैं। वहुत सी जातियों में विवाह के समय सामने के एकाध दाँत तुड़वा दिये जाते हैं।

शृङ्गार के पश्चात् परिच्छादन का प्रश्न उठता है। संसार की अधिकांश जातियाँ वस्त्र पहनती हैं। वस्त्र पहनने का हेतु केवल शरीर छिपाना ही नहीं है वरन् शरीर की सौन्दर्य-वृद्धि करना भी है।

परिच्छादन

केवल अङ्ग प्रत्यङ्ग को पुरुषों की दृष्टि से छिपाये रखने के विचार से स्त्रियाँ वस्त्र नहीं पहनतीं। यदि ऐसा होता तो वहुत सी जातियाँ, जिनमें किसी विशेष अङ्ग की लज्जा की जाती है और उसी को छिपाने की चेष्टा की जाती है, समस्त अङ्ग को वस्त्रों से न ढकतीं। उदाहरणार्थ मुसलमान स्त्रियाँ अधिकतर अपना मुख

Taj Tahir Foundation

पूर्वी अफ्रीका की स्त्री.
ओंठ में गहना पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

परपुरुष को नहीं दिखातीं। यदि कोई परपुरुष किसी मुसलमान स्त्री को नङ्गी देख ले तो वह स्त्री सब से पहले अपना मुख छिपायगी, दूसरे अङ्ग प्रत्यङ्गों को छिपाने का ज़रा भी प्रयत्न न करेगी। चीनी स्त्रियाँ अपना सब अङ्ग पुरुष को दिखा देंगी, परन्तु पैर कभी न दिखावेंगी, पैर देखने का अधिकार पति ही को प्राप्त रहेगा। जापानियों में स्त्री-पुरुष एक स्थान पर नङ्गे नहाते हैं, स्त्रियाँ ऐसी दशा में भी पुरुष के सामने कोई लज्जा अनुभव नहीं करतीं। परन्तु यदि किसी स्त्री की नङ्गी तस्वीर कोई पुरुष देख ले तो वह स्त्री लज्जा से मर सी जाती है। इसी लिए जापान में स्त्री के नङ्गे चित्र बहुत कम बनाये जाते हैं। इसके प्रतिकूल यूरोप में स्त्री पुरुष के सामने नङ्गी नहीं हो सकती, परन्तु स्त्रियों के असंख्य नङ्गे चित्र बाज़ारों में खुले तौर पर बिकते हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ ड्रार्स (छोटा पाजामा जो पेटी कोट के नीचे पहना जाता है) पहने हुए पुरुष के सामने कभी नहीं आ सकतीं-यद्यपि ड्रार्स से उनके सब अङ्ग ढके रहते हैं; परन्तु नाच में वे ऐसे महीन कपड़े पहनती हैं कि जिससे उनका समस्त शरीर नङ्गा दिखाई पड़ता रहता है। स्पेन की स्त्रियाँ किसी पुरुष को अपनी पिण्डलियाँ नहीं दिखातीं, पिण्डलियों के देखने का अधिकार केवल पति को रहता है—वैसे चाहे कोई पुरुष अन्य सब अङ्ग देख ले। जङ्गली जातियों में भी इसी प्रकार की प्रथाएँ हैं। उत्तर–पश्चिमी अमेरिका की स्त्री किसी भी पुरुष के सामने नङ्गी आ सकती है, पर यदि उसके ओंठ में उसका गहना न हो तो वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। अफ्रीका की कुछ जातियों में यह प्रथा है कि प्रत्येक स्त्री अपनी कन्धनी में एक लकड़ी पीछे की ओर लटकाये रहती है, जिस स्त्री की कन्धनी में यह लकड़ी न लगी होगी वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। जो जातियाँ बिल्कुल नग्न रहती हैं उनमें भी कोई न कोई चिन्ह ऐसा होता है जिसके बिना कोई स्त्री पुरुष के सामने नहीं आ सकती।

जल-वायु का प्रभाव भी परिच्छादन पर यथेष्ट पड़ता है। एक जर्मन विद्वान ने परिच्छादन को दो भागों में विभाजित किया है। एक तो शीत-प्रधान

Taj Tahir Foundation

तथा दूसरे उष्णता-प्रधान । उष्ण देशों में केवल कमर से लेकर पैरों अथवा घुटनों तक वस्त्र पहनने की आवश्यकता पड़ती है । यही कारण है कि भूमध्य रेखा के आस पास जितने देश हैं उनके निवासी केवल गुप्ताङ्गों को छिपाने के लिए कमर से लेकर घुटनों तक कपड़ा पहनते हैं । क्योंकि, उन्हें अधिक वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती । जिन जङ्गली जातियों में गुप्ताङ्गों को छिपाने की भावना विद्यमान नहीं है वे जातियाँ नग्न तक रहती हैं ।

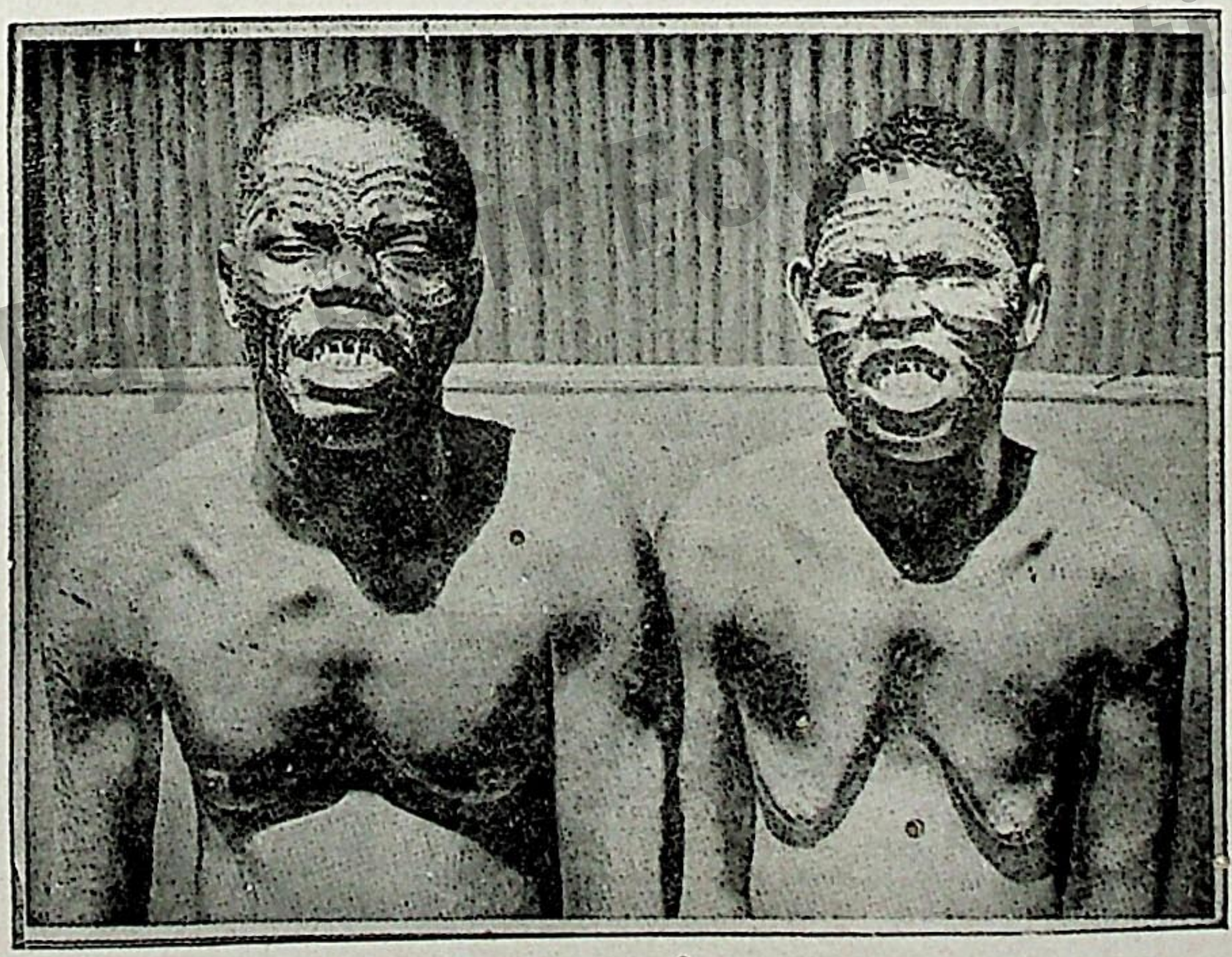

कांगो की स्त्रियाँ.
मुख पर गुदना गुदाये तथा दाँत रेतवाये हुए.

इसके प्रतिकूल शीत-प्रधान देशों में कपड़ा पहनना अनिवार्य है। विना कपड़े पहने वहाँ कोई जीवित नहीं रह सकता। यही कारण है कि शीत-प्रधान देशों की जङ्गली जातियों में यद्यपि लज्जा का भाव इतना नहीं होता कि वे अपने गुप्ताङ्गों को छिपाना अपना पहला कर्तव्य समझें, परन्तु तौ भी उन्हें, केवल शीत वचाने के लिए, वस्त्र पहनने पड़ते हैं।

परन्तु एक वार लज्जा का भाव उत्पन्न हो जाने पर फिर विना आवश्यकता भी वस्त्र पहनने पड़ते हैं। उदाहरणार्थ यूरोपियन जाति के लोग ऐसे गर्म देशों में जाकर भी; जहाँ वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती, उतने ही वस्त्र पहनते हैं जितने कि वे यूरोप में पहनते हैं। इसी प्रकार अरव के निवासी नीचे से ऊपर तक अपने शरीर को वस्त्रों से ढके रहते हैं—यद्यपि अरव एक ऐसा गर्म देश है जहाँ बहुत कम कपड़े पहनने की आवश्यकता पड़ती है।

सभ्य जातियों में वस्त्र न केवल शरीर को छिपाने के लिए पहने जाते हैं और न केवल शीत से वचने के लिए—वरन् शरीर का सौन्दर्य वढ़ाने के लिए भी पहने जाते हैं। यही कारण है कि सभ्य जातियों में नित्य नये फेशन और नई काट छाँट के वस्त्र वनते रहते हैं। अतएव यह सिद्ध हुआ कि सभ्य जातियों में वस्त्र पहनने के मुख्य दो अभिप्राय होते हैं—एक तो शरीर को छिपाना और दूसरे सौन्दर्य-वृद्धि करना। जङ्गली जातियों में भी मुख्य कारण दो ही हैं—एक तो शरीर को छिपाना, दूसरा शीत से वचना। असभ्य जातियों में वस्त्र वहुत कम, केवल यथाआवश्यकता, पहने जाते हैं। यह वात पाठकों पर प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने से भली भाँति विदित हो जावेगी। इसका कारण यही है कि एक तो असभ्य जातियों में शरीर को छिपाने की भावना उतनी प्रवल नहीं होती जितनी कि सभ्य जातियों में होती है, दूसरे वस्त्रों द्वारा सौन्दर्य-वृद्धि करने की कला वे विल्कुल नहीं जानतीं। हाँ, अव यूरोपियन तथा अमेरिकन मिशनरियों की कृपा से उन्हें वस्त्रों का महत्व

Taj Tahir Foundation

क्रमशः ज्ञात होता जा रहा है। अतएव अब उन्हों ने वस्त्र पहनने आरम्भ कर दिये हैं।

असभ्य जातियों की विवाह प्रथाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। कहीं कन्या हरण होता है, कहीं कन्या स्वयम् ही वर को चुनती है, कहीं विवाह करने का समस्त भार केवल माता पिता पर होता है। कुछ

विवाह प्रथा

जातियों को छोड़ कर अधिकांश जातियों में कन्या तथा वर को विवाह के पहले परस्पर मिलने जुलने की पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त रहती है।

जिन असभ्य जातियों में कन्या स्वयम् वर को पसन्द करके विवाह करती है, उनमें यह प्रथा है कि वर को कोई वीरता का काम करके कन्या की दृष्टि में अपने को वीर प्रमाणित करना पड़ता है। ये वीरता के

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का द्वन्द-युद्ध

Taj Tahir Foundation

काम या तो किसी शत्रु को परास्त करना, किसी भयानक जन्तु का शिकार करना अथवा अन्य इसी प्रकार के कार्य करके दिखलाना होते हैं। जिन जातियों में शत्रुओं की खोपड़ियाँ एकत्र करने की प्रथा है, उनमें कन्या उसी युवक को पसन्द करती है, जिसके पास खोपड़ियों की संख्या अधिक होती है।

मलाया प्रायद्वीप की कुछ असभ्य जातियों में यह प्रथा है कि कन्या भागती है और विवाह की इच्छा रखने वाला युवक उसको पकड़ने दौड़ता है। यदि युवक कन्या को पकड़ लेता है तब तो उसके साथ कन्या का विवाह हो जाता है अन्यथा वह उस कन्या के योग्य नहीं समझा जाता। कुछ जातियों में विवाह केवल धन-बल द्वारा होता है। इन जातियों में कन्या-विक्रय की प्रथा के अनुसार विवाह किया जाता है। जो युवक अधिक रुपये दे सकता है, उसी का विवाह होता है। ऐसी जातियों में दरिद्र युवक आजन्म अविवाहित ही रहते हैं।

विवाह के समय खुशी मनाना प्रायः सभी असभ्य जातियों में पाया जाता है। सभ्य जातियों की तरह असभ्य जातियों में भी विवाह के समय बड़े बड़े भोज दिये जाते हैं, नाच गान भी खूब होता है।

जहाँ स्त्रियों की अधिकता है वहाँ एक पुरुष अनेक विवाह कर डालते हैं; परन्तु जहाँ स्त्रियों की कमी है वहाँ एक स्त्री अनेक पुरुषों की पत्नी बनकर रहती है। जहाँ एक स्त्री के अनेक पति होते हैं वहाँ बहुधा स्त्रियों में सौतियाडाह होने के कारण परस्पर लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। आस्ट्रेलिया तथा पेसिफ़िक महासागर के कुछ अन्य छोटे छोटे द्वीपों में सौतों में परस्पर केवल मौखिक वादविवाद ही नहीं होता वरन् खुले रूप से द्वंद-युद्ध होता है—जिसे सैकड़ों स्त्री-पुरुष देखते हैं। इस द्वंद-युद्ध में जो स्त्री विजय प्राप्त करती है वह आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है और जो हारती है वह अपने पति तथा समाज की दृष्टि से गिर जाती है।

Taj Tahir Foundation

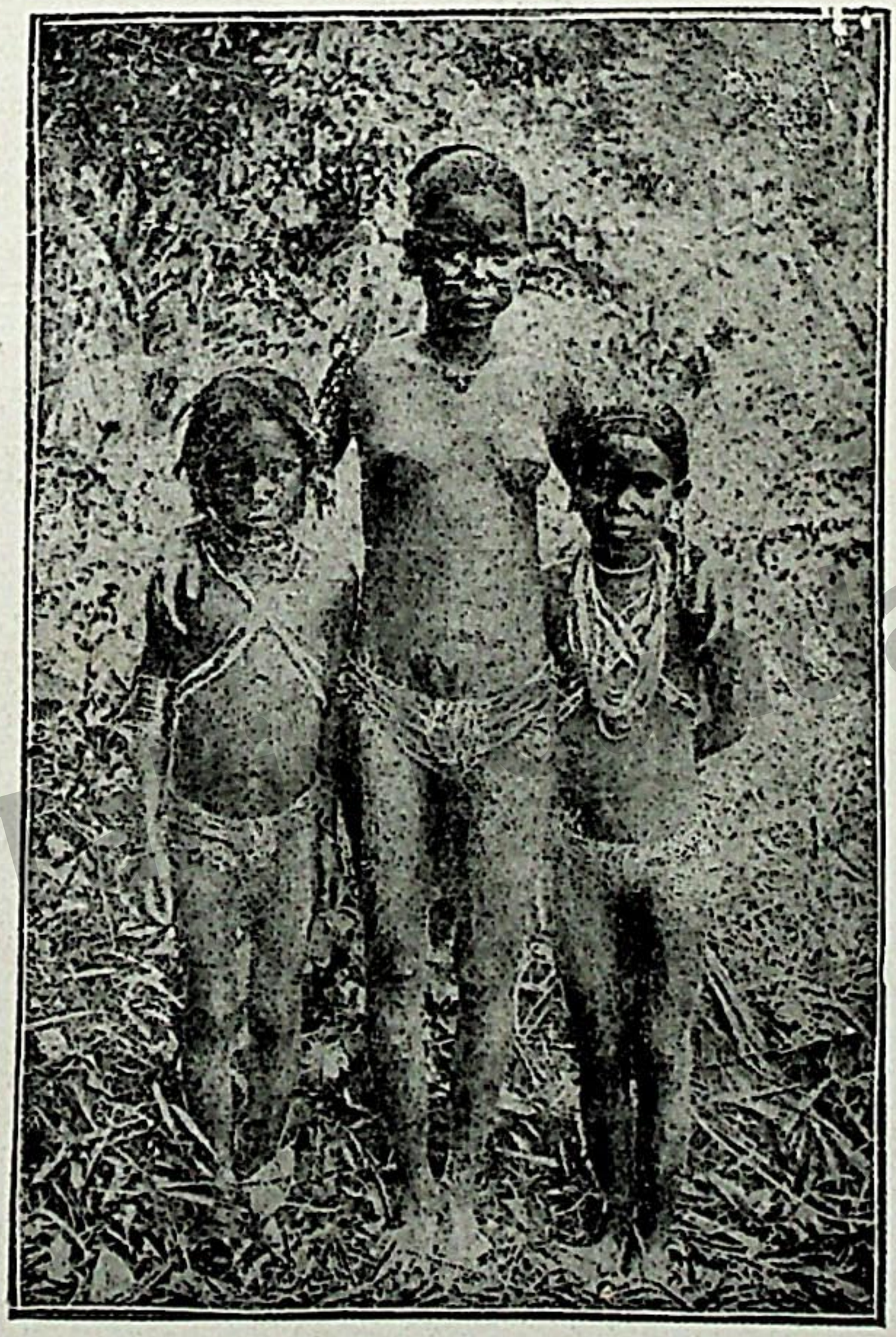

मलाया प्रायद्वीप का साकाई युवती
नाक में लकड़ी पहने हुए.

Taj Trust Foundation

असभ्य जातियों का कोई विशेष धर्म्म नहीं है। सर्व शक्तिमान ईश्वर की कल्पना करना उनके लिए असम्भव है। वे केवल उन चीज़ों को पूजते हैं जो उनसे अधिक बलवान हैं और जो उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं। उनमें पूजा का भाव केवल यह है कि जो चीज़ें उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं उन्हें इस प्रकार सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रखना कि वे हानि पहुँचाने का कभी इरादा भी न कर सकें। अतएव उनकी पूज्य वस्तुएँ साँप, भूत-प्रेत तथा भयानक आकार-प्रकार के कुछ काल्पनिक मनुष्य होते हैं। अधिकतर अपने मृत पुरुषों की मूर्तियाँ, खोपड़ियाँ तथा प्रेतात्माओं को ये लोग पूजते हैं। अथवा, यदि उनकी जाति में पहले

धर्म्म

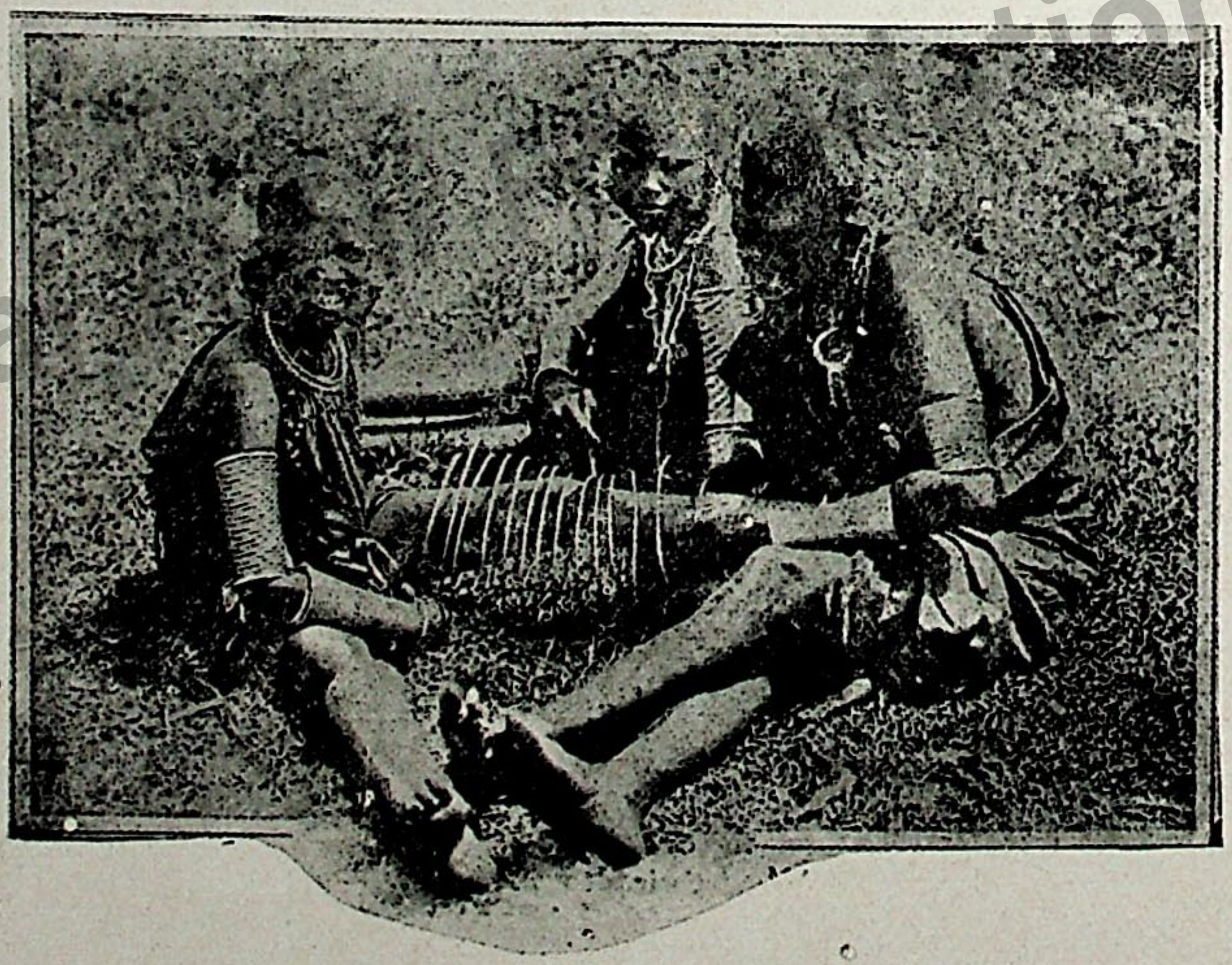

पूर्वी अफ्रीका की मसाई स्त्रियाँ.
पैरों में लोहे के तार पहने हुए.

कभी कोई बड़ा प्रतापी तथा बलशाली राजा अथवा मुखिया हो गया है तो उसकी मूर्ति बना कर रखते हैं और उसको पूजते हैं। टोना-टोटका मन्त्र जन्त्र का असभ्य जातियों में बहुत प्रचार है। यह भी उनके धर्म का एक महत्व पूर्ण अङ्ग है और जो व्यक्ति इसे जानता है वही उनका पुरोहित तथा गुरू समझा जाता है। रोग को ये लोग प्रायः जन्त्र मन्त्र से ही दूर करने की चेष्टा करते हैं और जहाँ तक देखा गया है इसमें उन्हें सफलता भी मिलती है। जन्त्र मन्त्र पर इन जातियों का इतना विश्वास होता है कि उसके आगे औषध का ये लोग कोई मूल्य ही नहीं समझते। अनेक जातियों

एरीज़ोना की होपी कुमारी.
सिर के दोनों ओर बालों के गुच्छे अविवाहित होने का चिन्ह हैं.

Taj Tabish Foundation

में जन्त्र मन्त्र विद्या की जानने वाली स्त्रियाँ ही होती हैं। ऐसी स्त्रियों का बड़ा मान तथा प्रतिष्ठा होती है।

स्त्रियों का महत्व

अधिकांश असभ्य जातियों में स्त्रियाँ केवल कामोत्तेजना को तृप्त करने तथा पुरुषों की सेवा करने के लिए होती हैं। कुछ जातियों में, जिन में स्त्रियों की संख्या अधिक है, स्त्रियाँ एक पालतू पशु की तरह समझी जाती हैं। घर का सब काम काज उन्हें करना पड़ता है; पति की सेवा करनी पड़ती है, परन्तु उन्हें न अच्छा खाना मिलता है न अच्छा कपड़ा। पुरुष दिन भर

एरीज़ोना की स्त्री.
मूली के आकार की अलकें विवाहित होने का चिन्ह हैं.

Taj Tahir Foundation

फ़िजी द्वीप की कुमारी.
दाहिने कंधे पर बालों की लटें अविवाहित होने का चिन्ह हैं.

Taj Tahir Foundation

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

आनन्द से इधर उधर घूमते हैं, शिकार खेलते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों के लिए भोजन जुटाती हैं, पकाती हैं तथा अन्य सब काम काज करती हैं।

स्त्रियों का महत्व उनकी संख्या पर निर्भर है। जहाँ स्त्रियाँ अधिक होती हैं और पुरुष कम वहाँ स्त्रियों का अधिक आदर तथा सम्मान नहीं होता। असभ्य जातियों में यह बात स्पष्ट देखने को मिलती है। जिन जातियों में स्त्रियाँ अधिक हैं, उनमें एक पुरुष अनेक स्त्रियाँ रख लेता है, बात बात पर स्त्रियों को मारता-पीटता तथा तलाक़ तक दे देता है। परन्तु जिन जातियों में स्त्रियों की संख्या कम है उन जातियों में स्त्री का पूर्ण आदर तथा सम्मान होता है। जितनी ही कोई चीज़ कम होती है उतना ही उसका अधिक मूल्य होता है और जितनी ही अधिक होती है उतना ही उसका मूल्य कम होता है। असभ्य जातियों में शिशु हत्या खूब प्रचलित है, परन्तु इसका परिचालन एक मात्र इसी संख्या के सिद्धान्त पर निर्भर होता है। जिन जातियों में स्त्रियों की अधिकता है उनमें कन्याएँ जन्म लेते ही मार डाली जाती हैं और जिन जातियों में पुरुष अधिक हैं और स्त्रियाँ कम, उनमें बालक जन्म लेते ही मार डाले जाते हैं। विवाह पर भी संख्या का यथेष्ट प्रभाव पड़ता है। जिन जातियों में स्त्रियों का आधिक्य है, उनमें एक पुरुष अनेक विवाह कर डालता है, परन्तु जहाँ स्त्रियों की कमी है वहाँ एकही स्त्री अनेक पुरुषों की, जो परस्पर भाई भाई होते हैं, पत्नी बनकर रहती है। असभ्य जातियों में स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक हीन तथा निकृष्ट प्राणी मानी जाती हैं। प्रायः समस्त असभ्य जातियाँ स्त्रियों को निकृष्ट मानती हैं। संसार में जितने अवगुण हैं वे सब स्त्रियों में कूट कूट कर भर दिये गये समझे जाते हैं। झूठ बोलना, कपट रखना, दग़ाबाज़ी, व्यभिचार इत्यादि इत्यादि सब स्त्रियों के ही काम समझे जाते हैं। बहुत सी धार्मिक रसूमात ऐसी होती हैं जिनमें स्त्री का उपस्थित होना निषिद्ध समझा जाता है।

Taj Tahir Foundation

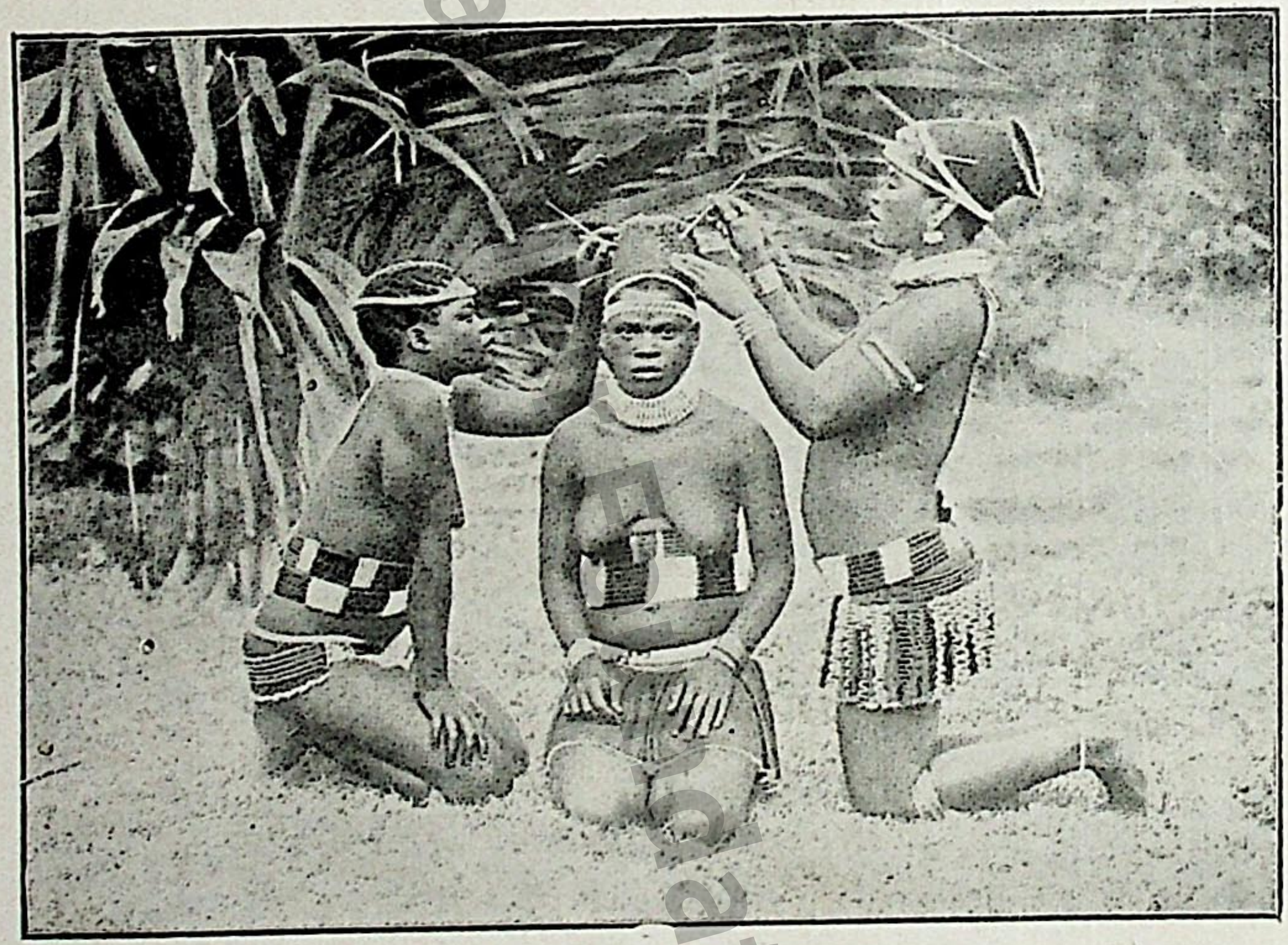

ज़लू जाति (अफ्रीका) की स्त्रियाँ.
पूर्ण शृंगार किये हुए.

प्राय: समस्त सभ्य कहलाने वाली जातियाँ स्त्री को पुरुष की अपेक्षा निकृष्ट प्राणी मानती हैं। परन्तु; सभ्य जातियों में स्त्रियों को अधिक सुख मिलता है—असभ्य जातियों में उन्हें इतना सुख नहीं मिलता।

इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को असभ्य जाति की स्त्रियों के सम्बन्ध में प्राय: सभी ज्ञातव्य बातें मालूम होजायँगी। उनके रूपरंग, नखशिख, शृङ्गार तथा परिच्छादन, आचार-विचार, उनकी सुविधायें, असुविधायें, उनका सामाजिक महत्व इत्यादि इत्यादि सभी बातें ज्ञात होजायँगी।

इस पुस्तक की सामग्री अँग्रेज़ी पुस्तकों से ली गई है। अँग्रेज़ी में इस विषय पर अनेक पुस्तकें हैं; पर खेद है कि हिन्दी में इस विषय पर अभी तक एक भी पुस्तक नहीं थी। आशा है इस पुस्तक से हिन्दी की यह कमी कुछ अंशों में पूरी होजायगी।

Taj Tahir Foundation

पालीनीशिया

१

भौगोलिक स्थिति, शारीरिक बनावट, सौन्दर्य्य उसकी प्राप्ति तथा रक्षा, शारीरिक विकृति और गुदना, परिच्छादन, टापा और उसका निर्माण, चटाई के वस्त्र, शृंगार, जन्म तथा बाल्यकाल, बालहत्या.

पालीनीशिया अनेक द्वीपों के समूह का नाम है। यूनानी भाषा में 'पाली' के अर्थ बहुत और 'नीशिया' के अर्थ द्वीप के होते हैं। आस्ट्रेलिया के पश्चिम पैसेफ़िक महासागर में कुछ द्वीपों का समूह पालीनीशिया के नाम से प्रसिद्ध है। यदि न्यूज़ीलैण्ड से पैसेफ़िक को पार करते हुए फ़िजी और हवाई के मध्य एक लकीर खींची जाय तो वह पालीनीशिया को इस प्रकार काटेगी कि पूर्व में माइक्रोनीशिया और पश्चिम में मैलेनीशिया पड़े। पालीनीशिया के सब द्वीपों का क्षेत्रफल इस प्रकार है कि उनमें जितने द्वीप हैं यदि उन सबको लिया जाय तो उनका व्यास एक हज़ार मील का होगा। पालीनीशिया के मुख्य द्वीप, ये हैं:—टांगा अथवा फ्रेण्डली, सामोआ, हर्वी अथवा कुक, सोसाइटी द्वीप जिसमें कि ताहीती भी सम्मिलित है तथा हवाई द्वीप जिसे कैप्टन कुक ने सैण्डविच द्वीप का नाम दिया है। ये सब द्वीप फिजी के पूर्व में स्थित हैं। इनमें से कुछ तो भली भाँति आबाद हैं और कुछ बिल्कुल उजाड़ पड़े हुए हैं। इन सब द्वीपों में पालीनीशियन जाति के लोग रहते हैं और सब एक भाषा बोलते हैं।

भौगोलिक स्थिति

Taj Tahir Foundation

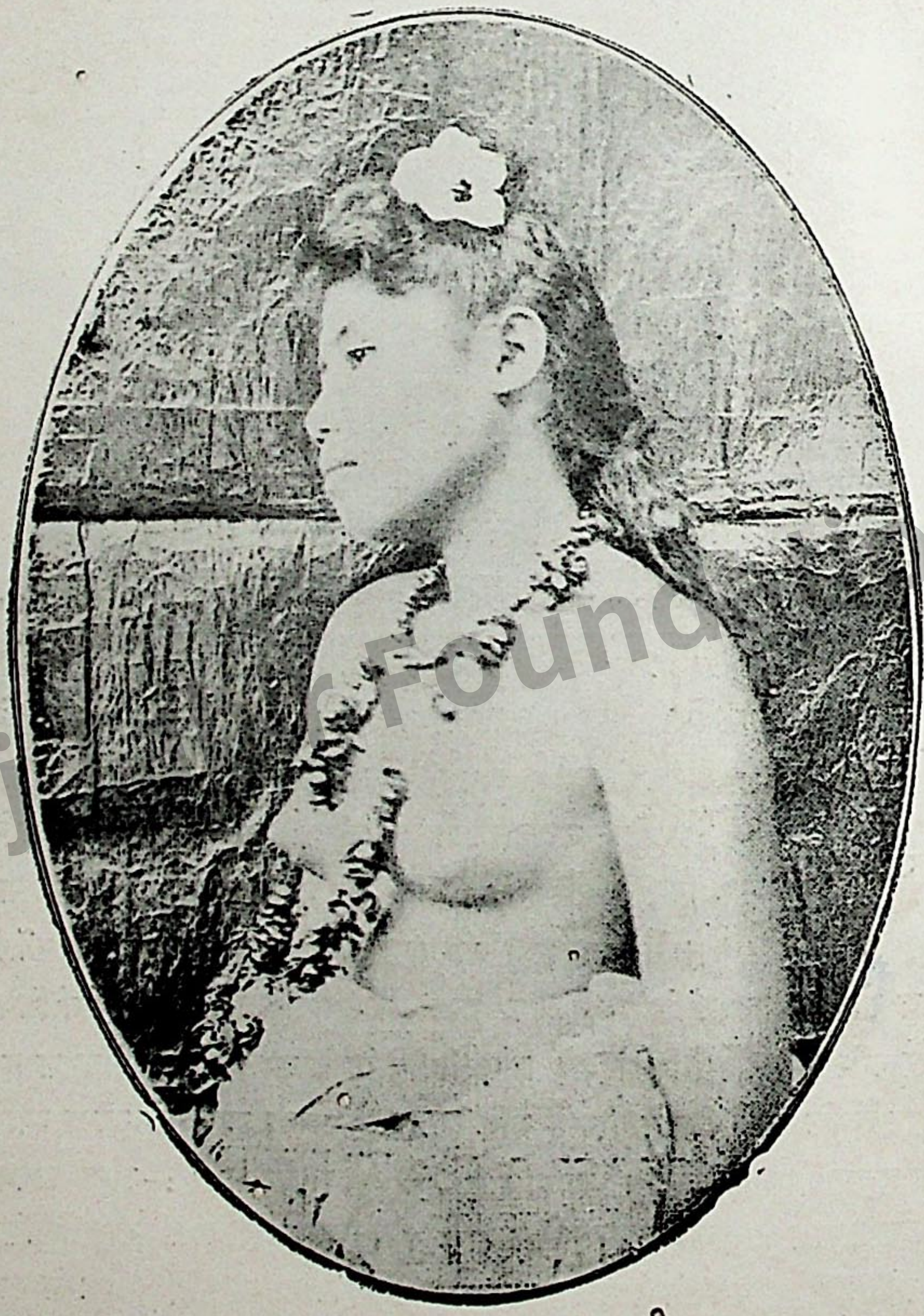

सामोआ द्वीप की स्त्री.

इसके बालों में लगा हुआ फूल इसकी सौन्दर्योपासना का चिन्ह है.

Tajmahal Foundation

शारीरिक बनावट

इस जाति के लोग क़द में लम्बे और हाथ पैर के सुदृढ़ होते हैं। इनके बाल काले अथवा गहरे बादामी रंग के होते हैं। इनमें से कुछ के बाल तो सीधे होते हैं और कुछ के घुंघराले। इनके शरीर का रंग बादामी मिश्रित पीत होता है। नाक सीधी और कुछ बड़ी होती है। यात्रियों ने इस जाति को एक सुन्दर जाति माना है। इस जाति का शरीर बिल्कुल सीधा होता है और इनकी चाल में एक ऐसी विशेषता है जो संसार की किसी अन्य जाति की चाल में बहुत कम पाई जाती है। इस जाति की स्त्रियां यूरोपियन यात्रियों तक की दृष्टि को सुन्दर प्रतीत होती हैं। इन स्त्रियों के सम्बन्ध में मिसेस बिशप का कथन है– "स्त्रियों की चाल एक विचित्र प्रकार की होती है और नेत्रों को बड़ी भली मालूम होती है। मैं इस जाति की स्त्री को केवल उसकी चाल से बता सकती हूँ। इन स्त्रियों की चाल के सामने यूरोपियन स्त्रियों की चाल बड़ी भद्दी प्रतीत होती है।" एक दूसरे यात्री का कथन है– "टोंगा जाति की स्त्रियों की चाल ऐसी होती है कि मानो वे हवा में तैर रही हैं। उनका वक्षस्थल मनोहर होता है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि बुढ़ापे में भी इन स्त्रियों की शारीरिक बनावट नहीं बिगड़ती।"

सौन्दर्य्य

पालीनीशियन बड़े सौन्दर्योपासक होते हैं। स्त्रियां अपने सौन्दर्य को बढ़ाना और उसे बुढ़ापे तक रखना भली भांति जानती हैं। ये लोग बड़े स्नान प्रेमी होते हैं। ये लोग नित्य स्नान करते हैं। स्नान सदा मीठे पानी में करते हैं। यदि कभी समुद्र के खारी पानी में स्नान करते भी हैं तो उसके पश्चात् एक बार मीठे पानी से अवश्य नहाते हैं। साबुन के स्थान में ये लोग एक प्रकार की लाल मिट्टी तथा हरी नारंगियों का अर्क़ काम में लाते हैं। शरीर में सुगन्धित तैल भी लगाते हैं। इन सब क्रियाओं से इनका शरीर अत्यन्त कोमल और चिकना रहता है। शरीर की कोमलता तथा स्थूलता इनका मुख्य सौन्दर्य समझा जाता है। शरीर को कोमल रखने के लिये स्त्रियां उसे धूप से बहुत बचाती हैं। बालक और

Taj Tahir Foundation

बालिकाओं को मोटा करने के लिए ये लोग उन्हें खूब ठूँस ठूँस कर खिलाते हैं और परिश्रम नहीं करने देते। अधिक खाने के लिए बहुधा बालकों पर मार भी पड़ती है।

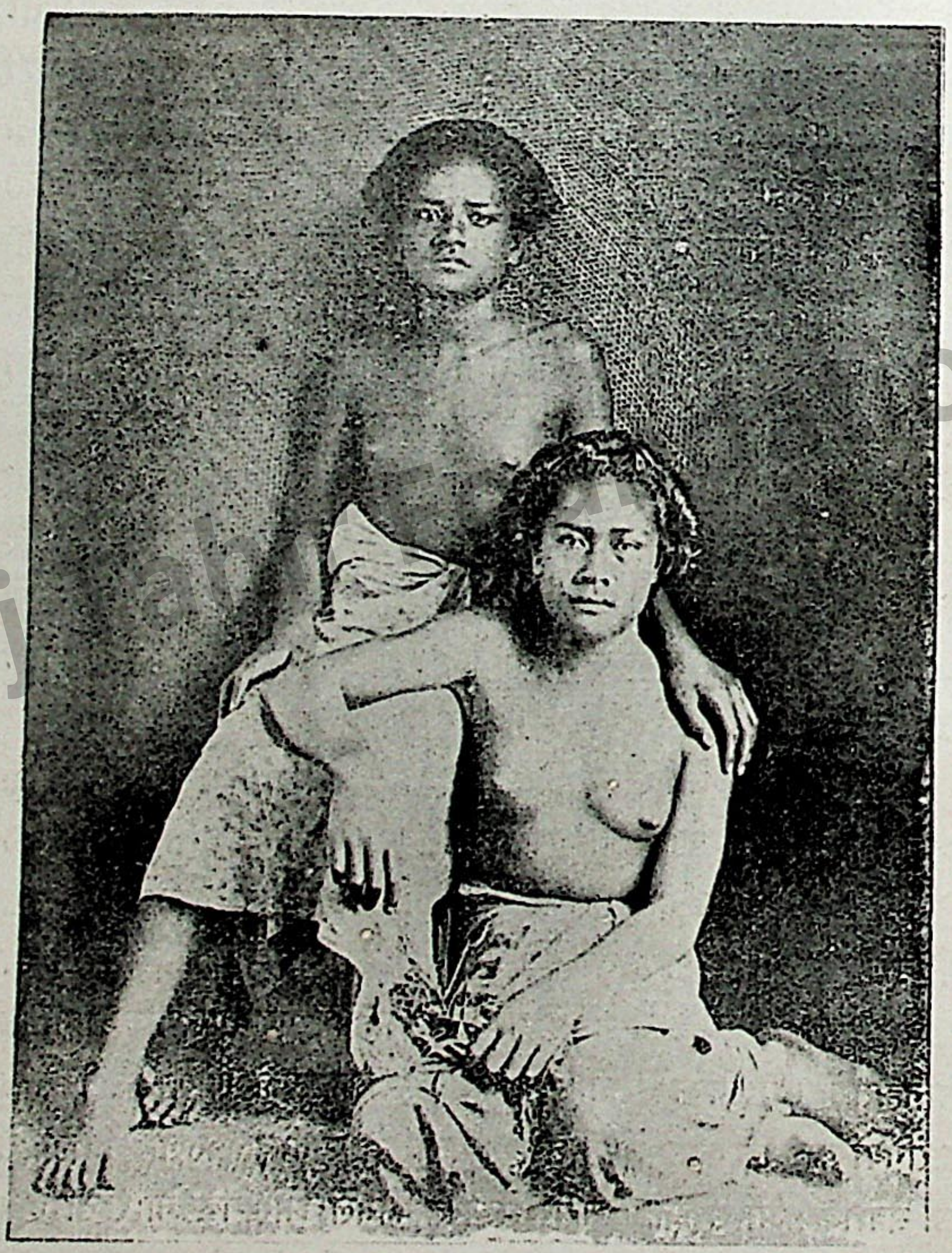

टांगा स्त्रियां
बालों को भिन्न भिन्न प्रकार से सँवारे हुए.

Tajmahal Library

स्त्रियां अपने बालों को अनेक प्रकार से सँवारती हैं और उनमें फूल लगाती हैं। शनिश्चर की रात को स्त्रियां बालों में मूँगे की राख का लेप करती

टंगा स्त्री.

शनिश्चर की रात को बालों में मूँगे की राख का लेप किये हुए.

Taj Information

हैं जिससे इनके वाल खूव साफ़ हो जाते हैं और साथ ही हल्के वादामी रँग जाते हैं। इतवार को प्रातःकाल सिर धोने के पश्चात् सुगंधित तैल लगाकर बालों को सँवारती हैं। वालों में एक प्रकार का गोंद भी लगाती हैं जिससे वाल अधिक समय तक जैसे के तैसे रहते हैं। कुमारियां वालों की लटें वनाकर कन्धों पर छोड़ लेती हैं। विवाह के समय यह लटें काट डाली जाती हैं। विधवाओं के केश पूर्णतया काट डाले जाते हैं।

शारीरिक विकृति और गुदना

पालीनीशिया के अनेक द्वीपों में वच्चों की खोपड़ियां कृत्रिम ढंग से विगाड़ दी जाती हैं। खोपड़ी के आगे पीछे लकड़ी अथवा पत्थर लगाकर उन्हें दवाते हैं। वालिकाओं की नाक को कृत्रिम रूप से चपटा वनाने की चेष्टा की जाती है। माताएं वालिकाओं की नाक इस प्रकार दवाती रहती हैं जिससे नाक कुछ चपटी हो जाती है और नथुने फैल जाते हैं। चपटी नाक और फैले हुए नथुने सुन्दर समझे जाते हैं। वालक और वालिकाओं के कान भी छेदे जाते हैं। ये लोग शरीर में रंग विरंग के गुदने भी गुदाते हैं। स्त्रियां वाहों पर चूड़ियाँ गुदवाती हैं और पुरुष फूल तथा अन्य इसी प्रकार के चित्र गुदवाते हैं। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में गुदवाने की प्रथा अधिक प्रचलित है। गुदना मनुष्य तथा पशुओं के दांत से गोदा जाता है। मिशनरियों के सत्संग से गुदने की प्रथा क्रमशः दूर होती जाती है; परन्तु कुछ द्वीपों में मिशनरियों के उपदेशों ने भी इस प्रथा का उन्मूलन नहीं किया। सामोआ द्वीप की स्त्रियां अव भी उस पुरुष को पसन्द नहीं करतीं जो कि गुदना नहीं गुदाए होता।

परिच्छादन

पालीनीशियन कभी सर्वथा नंगे नहीं रहे। यद्यपि वहां का जल वायु ऐसा है कि कपड़ा पहनना विल्कुल अनावश्यक जान पड़ता है; परन्तु तो भी लोग शौक़िया कपड़े पहनते हैं। पहले इनकी साधारण पोशाक पत्तियों की होती थी; परन्तु अव मिशनरियों तथा यात्रियों की कृपा से वहां मैन्चेस्टर के कपड़ों का रवाज फैल गया है। सामोआ में चटाइयाँ पहनने की प्रथा है। कुछ द्वीपों में नारियल के

सामोआ स्त्री.

बालों को यूरोपियन ढंग से सँवारे हुए.

TajTabish Foundation

पत्ते के लहँगे पहनने का रवाज भी है। इनका सबसे सुन्दर परिच्छादन "सीसी" है। सीसी भिन्न भिन्न प्रकार की पत्तियों की बनी हुई एक झालर सी होती है जिसे स्त्रियां टापा के लहँगे के ऊपर कमर में बाँध लेती हैं। कभी कभी गले में भी सीसी पहनने की प्रथा है।

टापा और उसका निर्माण

इन लोगों का खास कपड़ा टापा होता है। टापा बनाने की कला पालीनीशिया की एक महत्वपूर्ण कला है और इस कला को पालीनीशियनों ने यथाशक्ति खूब उन्नत किया है।

टापा बनाने के लिए कुछ विशेष वृक्षों की छाल की आवश्यकता पड़ती है। ये वृक्ष इसी काम के लिए उगाये जाते हैं। सबसे अच्छा टापा 'पेपर मलबैरी' का बनता है। ग़रीब आदमी बरगद तथा अन्य वृक्षों से भी टापा बना लेते हैं। टापा बनाने का काम स्त्रियां ही करती हैं। पहले वृक्ष की छाल पानी में भिगो कर मुलायम की जाती है जिससे ऊपरी कड़ी तह निकल जाती है। भीतर की मुलायम तह फिर पानी में भिगोई जाती है। इसके पश्चात् इस छाल को एक लकड़ी के लट्ठे पर रखकर लकड़ी की मुँगरी से खूब कूटा जाता है। इस क्रिया से छाल के रेशे परस्पर मिल जाते हैं और वह फैलकर क़ाग़ज की झिल्ली सी हो जाती है। इसी प्रकार कई सप्ताहों तक छालों के टुकड़ों को पीट पीट कर जोड़ा जाता है; जिससे एक बहुत बड़ा थान, जिसकी लम्बाई २०० गज़ और चौड़ाई ४ गज़ तक होती है, तैयार हो जाता है। तैयार हो जाने पर थान धूप में सुखा लिया जाता है। धूप में सुखाने से छाल का रंग उड़ जाता है और वह सफ़ेद हो जाती है। इसके पश्चात् इस पर भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों से बेल बूटे बनाये जाते हैं। केले की पत्तियों के बेल बूटे काट कर और उनमें रंग लगा कर थान पर छापती चली जाती हैं। फूलों को रंग में डुबोकर छापने की प्रथा भी है। इसके पश्चात् कपड़े को पानी के प्रभाव से बचाने के लिए उस पर राल अथवा गोंद की वार्निश कर दी जाती है। यह कपड़ा तीन चार महीने से अधिक नहीं ठहरता। टापा बनाने के लिए एक

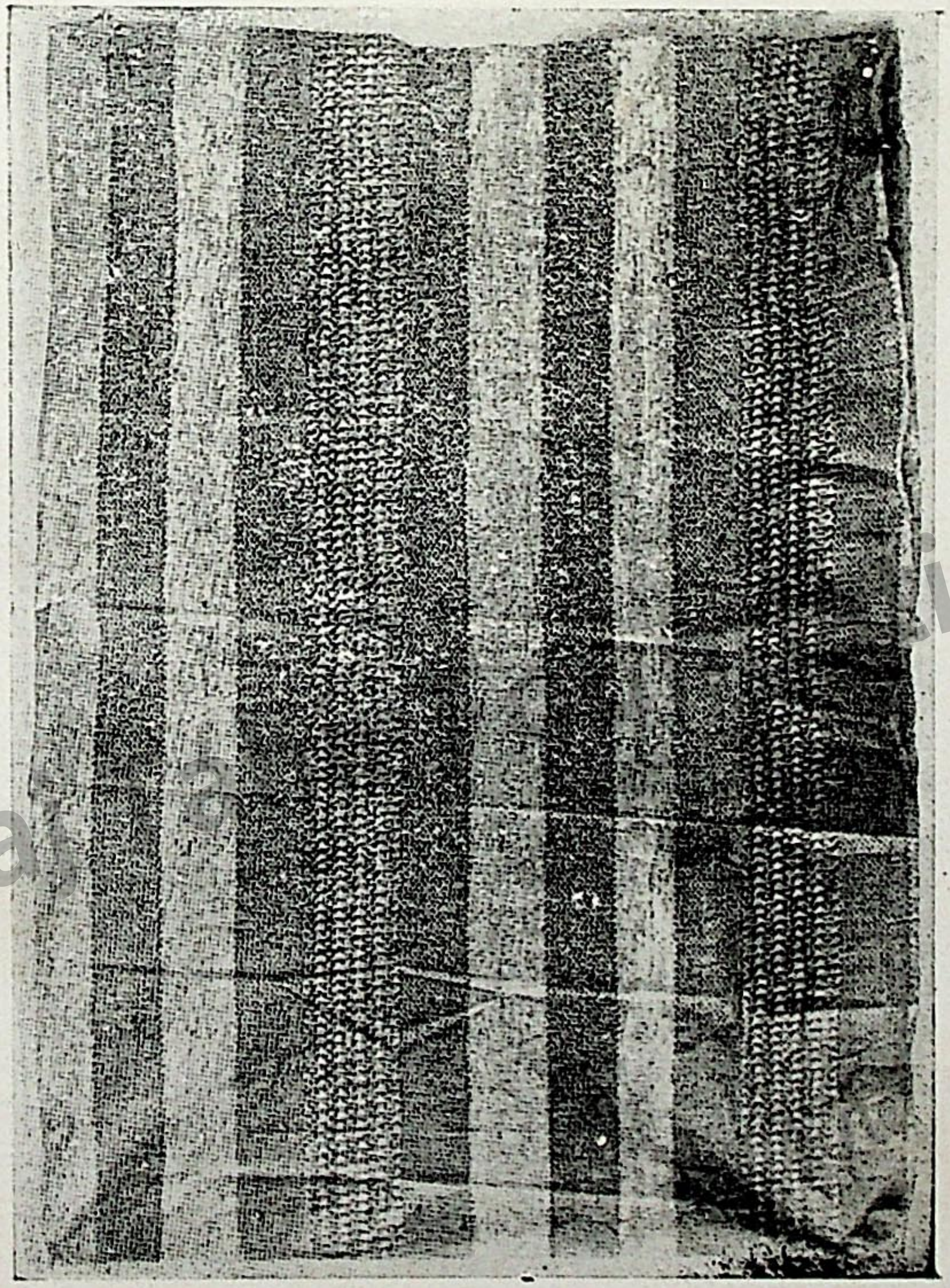

हवाई द्वीप का टापा.

सामोआ स्त्री.
मुखिया की टोपी पहने हुए.

अलग मकान होता है। नित्य कर्म से छुट्टी पाकर स्त्रियां उसमें चली जाती हैं और बैठ कर काम करती हैं। बहुधा १५।२० स्त्रियां एकसाथ बैठ कर टापा बनाती हैं। पहले टापा बनाने का कार्य स्त्रियों के लिए इतना महत्वपूर्ण समझा जाता था कि रानी से लेकर एक सामान्य स्त्री तक इस कार्य को बड़े उत्साह से करती थी। टापा बनाने में स्त्रियों में बड़ी प्रतिस्पर्धा रहती है। प्रत्येक स्त्री यह चेष्टा करती है कि उसका बनाया हुआ टापा, अन्य स्त्रियों के बनाये हुए टापे की अपेक्षा, अधिक सुन्दर और टिकाऊ हो। इस टापे से अनेक प्रकार के वस्त्र बनाये जाते हैं। आज कल इस टापे से जो वस्त्र बनते हैं वे अधिकतर यूरोपियन काट छांट के होते हैं।

ताहीती द्वीप में एक प्रकार का कपड़ा बनाया जाता है जिसे 'तिप्यूता' कहते हैं। कई कपड़ों को एक साथ कूट कर एक मोटा कपड़ा बना लिया जाता है और उसको वृक्ष की छाल से मढ़ लिया जाता है। इसमें एक बड़ा छिद्र करके इसे गले में डाल लेते हैं। यह परिच्छादन गले से लेकर घुटनों तक लटकता रहता है।

सामोआ जाति चटाई के वस्त्र पहनना अधिक पसन्द करती है। पहले चटाइयाँ इतनी महत्वपूर्ण समझी जाती थीं कि वे सिक्के तक का काम देती थीं।

सामोआ के चटाई के वस्त्र

अब भी वहां सुन्दर चटाइयों के वस्त्र बड़े सुन्दर तथा मूल्यवान समझे जाते हैं। ये चटाइयाँ एक वृक्ष की पत्तियों से बनाई जाती हैं जो काग़ज़ की तरह पतली होती हैं। पहले इन पत्तियों की धज्जियां बनाई जाती हैं जिनकी चौड़ाई एक इंच का सोलहवां हिस्सा

Taj Tahir Foundation

सामोआ की नाचने वाली स्त्रियां.

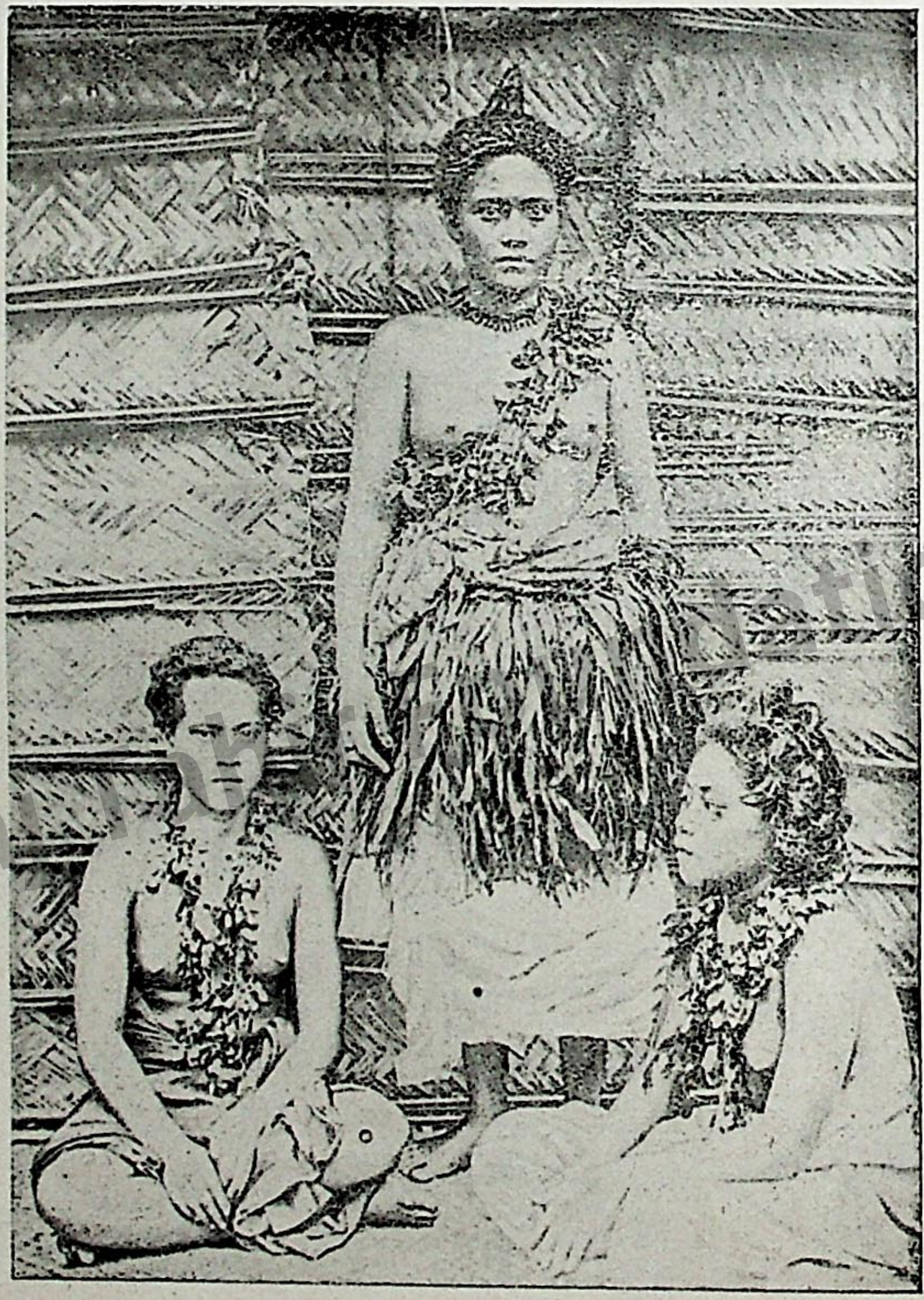

सामोआ द्वीप के टूटुइला स्थान की स्त्रियां.
परिच्छादन तथा अलंकार.

होती है। इन धज्जियों को बुन कर चटाई बनाते हैं। बुनते समय इसमें रंग-बिरंग के पक्षियों के पर लगा दिये जाते हैं। कभी कभी एक चटाई के बुनने में कई वर्ष लग जाते हैं और जब यह तैयार होती है तब इसका मूल्य सौ डेढ़ सौ रुपयों से कम नहीं होता। इन चटाइयों को ये लोग बड़े यत्न से रखते हैं। अतएव ये अनेक पीढ़ियों तक काम देती हैं। इन चटाइयों से शरीर के परिच्छादन का काम लिया जाता है। गाँव के बड़े आदमी इसी चटाई की पोशाक पहनते हैं।

हिबिस्कस नामक वृक्ष की छाल से भी एक प्रकार की चटाई बनाई जाती है। इस चटाई को पुरुष या तो कमर में बाँध लेते हैं अथवा इसके बीच में एक छेद करके गले में डाल लेते हैं। ये चटाइयाँ ६ फीट लम्बी और ४ फीट चौड़ी होती हैं। अब मिशनरियों की कृपा से वहां इन चटाइयों का स्थान मैनचेस्टर के बने हुए कपड़ों ने लेना आरम्भ कर दिया है।

शृंगार

पालीनीशिया में स्त्रियां गहने भी पहनती हैं। फूलों के गहने पहनने की प्रथा अधिक है। युवतियां केशों में फूल गूँथना बड़ा रुचिकर समझती हैं। कानों को छिदवा कर उनमें भी फूल पहनती हैं। गहनों में केवल हार, गलेबन्द तथा चूड़ियां पहनने का रवाज अधिक है। गहने ह्वेल मछली और जंगली सुअर के दांतों के होते हैं। ह्वेल मछली के दाँतों के छोटे छोटे टुकड़ों का गलाबन्द बड़ा सुन्दर गहना समझा जाता है। सुअर के दाँत के कड़े बना कर हाथों में पहनती हैं। सीप और पोत के हार बड़े चाव से पहने जाते हैं। इनका एक बड़ा मूल्यवान गहना जिसे ट्वींगा कहते हैं, बड़ा सुन्दर गहना समझा जाता है। इसकी बनावट बड़ी विचित्र होती है। यह सीप, पोत तथा पक्षियों के परों से बनता है। यद्यपि इसके पहनने में कष्ट होता है तथापि लोग इसे बड़े शौक से पहनते हैं। नाच में तो इसका पहनना अनिवार्य समझा जाता है। इसके पहनने में कई घण्टे तक खर्च होते हैं।

Taj Tahir Foundation

सामोआ स्त्री.

'टापा' की बनी हुई यूरोपियन पोशाक में.

पालीनीशियन माताएं अपने बालकों के लालन पालन को उसी दृष्टि से देखती हैं जिस दृष्टि से कि एक बालिका अपनी गुड़िया को देखती है। कभी वे उसे बड़ा प्यार करने लगती हैं और कभी उसकी ओर से बिल्कुल उदासीन हो जाती हैं। इस कारण बहुधा उनकी सन्तानें नष्ट हो जाती हैं।

जन्म और बाल्यकाल

पालीनीशिया के कुछ भाग में स्त्री की प्रथम तीन सन्तानें मार डाली जाती थीं। अतएव ऐसे परिवार बहुत कम थे जिनमें दो से अधिक मनुष्य हों। ताहीती द्वीप में ऐसा पुरुष, जिसके तीन चार सन्तानें हों, एक विशेष नाम से पुकारा जाता था। कुछ द्वीपों में अकाल के भय से क़ानूनन केवल दो सन्तानों के जीवित रखने का

बाल हत्या

अधिकार दिया जाता था। सामोआ द्वीप में खाद्य पदार्थ का आधिक्य है, अतएव वहां बालकों की हत्या नहीं होती थी। बच्चों को नष्ट करने का अधिकार पिता को होता था। यदि कोई उच्च श्रेणी का पुरुष किसी निम्न श्रेणी की स्त्री से विवाह कर लेता था तो उसकी सन्तान को जीवित रहने का अधिकार प्राप्त नहीं रहता था; क्यों कि उसके जीवित रहने से पुरुष के वंश की मर्यादा में बट्टा लग जाता था। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की हत्या अधिक की जाती थी; क्यों कि बालकों की अपेक्षा बालिकाएं कम काम की चीज समझी जाती थीं। अब वहां ईसाई धर्म के फैलने से बालकों की हत्या बिल्कुल बन्द हो गई है। केवल इसी कारण से स्त्रियों ने ईसाई धर्म का पूर्ण स्वागत किया है; क्यों कि बालकों की हत्या स्त्रियों के लिए सदैव दुखदाई होती थी।

सामोआ स्त्री.
केले के पत्तों का हार पहने हुए.

Tahir Foundation

२

सामोआन वाल्यकाल, गोद की प्रथा, सगाई की वयस, विवाह प्रथा, वहु-विवाह, दाम्पत्य नियम, वैधव्य.

मिसेस चर्चिल सामोआन वालकों के सम्वन्ध में लिखती हैं "जंगलियों का वच्चा भी माता पिता के लिए हर्ष व आनन्द का कारण होता है।

सामोआन वाल्यकाल

वालकों के साथ उनके माता पिता वड़ा अच्छा व्यवहार करते हैं और उनके हृदय में यह धारणा उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं कि माता पिता उनके आज्ञाकारी सेवक हैं। छोटे छोटे वच्चे अपने माता पिता पर हुक्म चलाते नित्य ही देखे जाते हैं। वच्चों को डाटना फटकारना तथा मारना पीटना वहां वहुत कम देखने में आता है।" जव कन्याएं कुछ वड़ी हो जाती हैं तो वे अपनी माताओं को गृह कार्य में सहायता देना आरम्भ कर देती हैं। जव कोई वच्चा वीमार हो जाता है तो उसे अपवित्र छाया तथा छूतछात से वचाने के लिए वह एक अलग स्थान में रखा जाता है और नित्य सुअर की भेंट दी जाती है।

इन लोगों में गोद लेने की प्रथा खूव है। माता पिता अपनी सन्तान को, विशेषत: ऐसी सन्तान को जो उन्हें किसी प्रकार का दु:ख पहुंचाती है, दूसरों को गोद दे देते हैं और स्वयं किसी दूसरी सन्तान को गोद ले लेते हैं। सामोआ में प्राय: पिता अपनी भगिनी को अपनी सन्तान दे देता है। भगिनी वदले में भ्राता को कुछ सुन्दर चीज़ें भेंट स्वरूप दे देती है। जिस प्रकार वच्चे गोद लिये जाते हैं उसी प्रकार माता पिता भी वना लिये जाते हैं। कोई वालक या वालिका किसी भी स्त्री पुरुष को स्वेच्छा से अपने माता पिता वना सकती है, चाहे उसके असली माता पिता जीवित ही क्यों न हों। जहां किसी वच्चे के माता अथवा पिता ने उससे कोई कटु शब्द कहा, वस, वहीं वह अपने वनाये हुए माता पिता के पास

गोद की प्रथा

चला जाता है और जबतक उसके असली माता पिता उसे कुछ भेंट देकर प्रसन्न नहीं कर लेते तब तक वह नहीं लौटता। कभी कभी ऐसा भी होता है कि बालक किसी प्रकार भी नहीं लौटता और अपने दूसरे माता पिता के पास रहता है।

सामोआ स्त्री.

'टापा' के लँहगे के ऊपर मखमल का कुरता पहने हुए.

Taj Tak Foundation

असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

बारह तेरह वर्ष की वयस के पूर्व कन्या की सगाई नहीं की जाती। अविवाहिता कन्याओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त रहती है। यदि किसी विशेष कारण से कन्या की सगाई बाल्यावस्था में ही हो जाती है तो भी वह घर के बाहर अकेली नहीं निकलने दी जाती।

सगाई की वयस

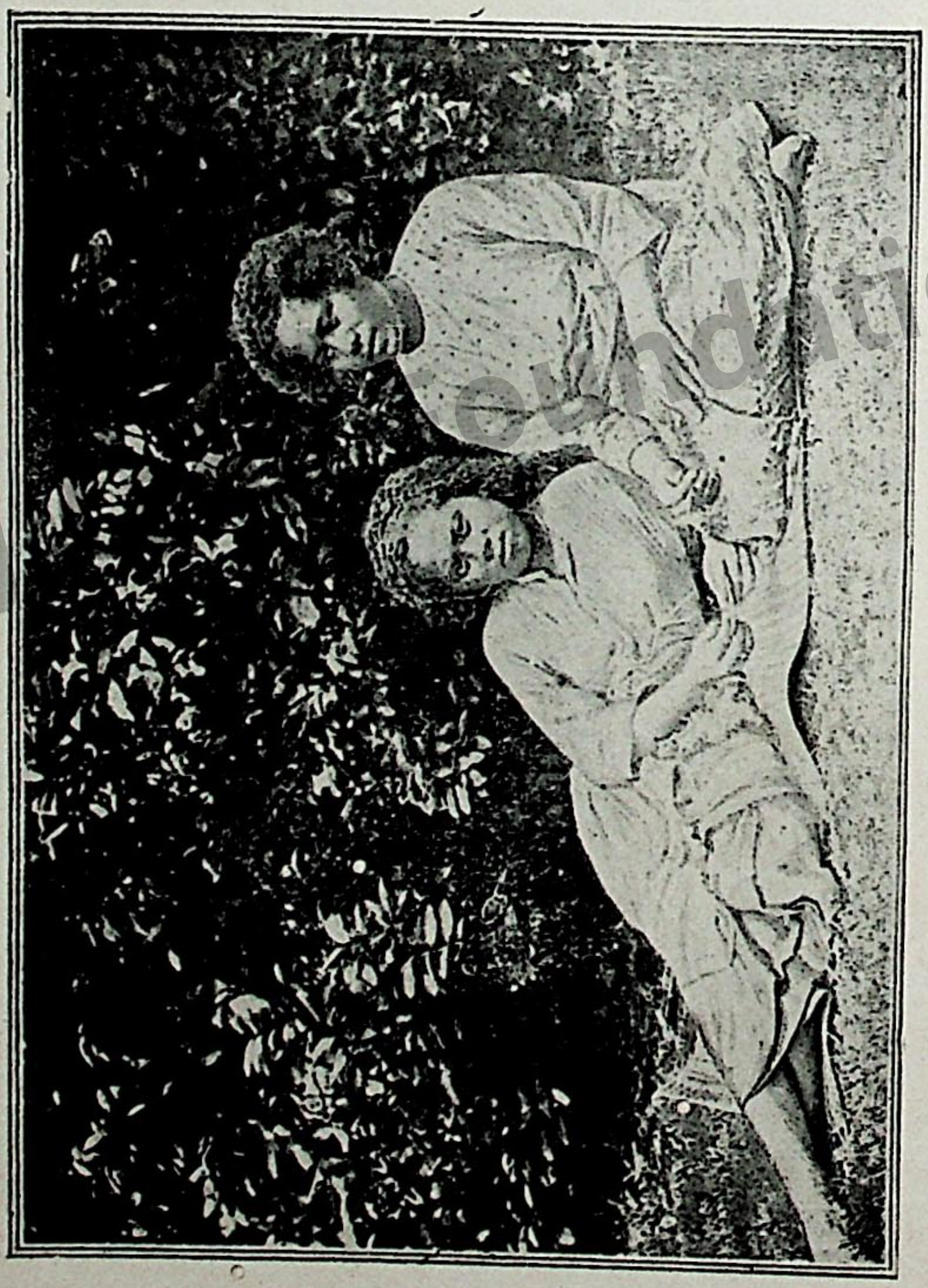

सामोआन स्त्रियाँ.

Tajore Foundation

कन्या विक्रय अथवा वर विक्रय की प्रथा पालीनीशिया में विल्कुल नहीं है। उच्च श्रेणी के लोगों में कन्या और वर का चुनाव माता पिता-द्वारा किया जाता है। निम्न श्रेणी के लोगों में वर स्वयं

विवाह प्रथा

ही कन्या ढूँढ़ लेता है; परन्तु विवाह सम्बन्ध की बात वह स्वयं नहीं करता। यह कार्य वह अपने किसी मित्र द्वारा करवाता है। कुलीन स्त्रियों को यह अधिकार प्राप्त रहता है कि वे अपने बराबर के अथवा अपने से नीच कुल के पुरुष से स्वयं विवाह का प्रस्ताव करें। ताहीती द्वीप में यदि स्त्री अपने पति से उच्च कुल की होती है तो उसे अधिकार होता है कि वह अन्य जितने पति चाहे कर ले, यद्यपि पत्नी वह उसी की कहलाती है जिससे कि उसका प्रथम विवाह होता है।

विवाह के समय साधारणतया एक भोज देने की प्रथा है जिसमें वर और कन्या एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं। भोज के पश्चात् वरपक्ष तथा कन्यापक्ष के लोग परस्पर भेट का लेन देन करते हैं। सामोआ द्वीप में कन्या के रिश्तेदार और मित्र दहेज के रूप में वरपक्ष को चटाइयाँ और कपड़े देते हैं और वर के रिश्तेदार और मित्र कन्यापक्ष वालों को नौकाएँ तथा सुअर देते हैं। परन्तु इस लेन देन में ख़र्च अधिक पड़ने के कारण यह केवल धनवानों में ही प्रचलित है। ग़रीव लोग केवल भोज देकर ही इति श्री कर देते हैं। सबसे सस्ता विवाह यह समझा जाता है कि वर कन्या को चुपके से भगा ले जाय; परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। ऐसा उसी समय में होता है जब कि वर को अपनी पसन्द की हुई कन्या से विवाह करने में कुछ अड़चनें पड़ती हैं।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि कन्या को जो दहेज देना निश्चित होता है वह सबका सब उसे पहना दिया जाता है। चालीस चालीस गज़ की चटाइयाँ कन्या के शरीर पर लपेट दी जाती हैं। यद्यपि यह चटाइयाँ बहुत पतली और रेशम की तरह मुलायम होती हैं परन्तु फिर भी इनके कारण कन्या का हुलिया तो बिगड़ही जाता है साथही उसे उठना बैठना भी दूभर हो

Taj Tahir Foundation

जाता है। ऐसी दशा में दो तीन स्त्रियां उठाने वैठाने का काम करती हैं। विवाह के समय कन्या के हाथों, पैरों, तथा वक्षस्थल पर हल्दी तथा चन्दन का लेप किया जाता है।

हवाई द्वीप में विवाह की रस्म में कभी कभी केवल इतना किया जाता है कि वर कन्या के ऊपर 'टापा' डाल देता है तत्पश्चात् एक भोज देकर विवाह की रस्म पूरी कर दी जाती है।

ताहीती में विवाह के पहले देवताओं की सम्मति ले लेना आवश्यक समझा जाता है। देवता की सम्मति लेने के लिए यह किया जाता है कि कन्या के घर में एक वेदी वनाकर उस पर कन्या के मृत पुरुषों की हड्डियां और खोपड़ियां रखी जाती हैं। वर तथा कन्या को विवाह के कपड़े पहना कर वेदी के सामने खड़ा करते हैं। पुरोहित वर से पूछता है "तू अपनी पत्नी को छोड़ेगा तो नहीं?" इस पर वह उत्तर देता है "नहीं"। इसी प्रकार कन्या से पूछा जाता है। कन्या के नहीं कह देने पर पुरोहित उन्हें सुखी रहने का आशीर्वाद देता है। इसके पश्चात् दोनों पक्ष वाले परस्पर भेंट का लेन देन करते हैं। कभी

"सीसी" और सुअर के दाँतों का हार.

कभी कन्यापक्ष की स्त्रियां शार्क मछली के दांतों से अपने मुख को चीर कर रक्त निकालती हैं और उस रक्त को कपड़े में लेकर कन्या के चरणों पर चढ़ाती हैं।

'सीसी' और सुअर के दांतों का हार पहने हुए एक स्त्री.

Taj Mahal Foundation

बहु-विवाह

बहु-विवाह की प्रथा यहां खूब प्रचलित है। सामोआ द्वीप में वरों को विवाहित कन्याओं के साथ एक या दो अन्य कन्याएं भी दी जाती हैं। ये कन्याएं या तो विवाहिता कन्या की भतीजी होती हैं या उसके नाना के परिवार की। इन कन्याओं को यदि वर चाहे तो अपनी उप-पत्नियाँ बना सकता है। यदि कोई बड़ा आदमी किसी गुलाम जाति की कन्या से विवाह करता है तो कन्या की जितनी छोटी बहिनें होती हैं वे सब उस वर की पत्नियाँ समझी जाती हैं। इतना होते हुए भी सामोअन लोगों की रुचि बहु-विवाह की ओर नहीं है; क्योंकि बहु-विवाह के कारण घर में नित्य कलह रहती है। बड़े बड़े सर्दारों को छोड़ कर अन्य लोग दो पत्नियों से अधिक नहीं रखते।

हवाई द्वीप में अधिक पत्नियों का होना पति की प्रतिष्ठा का कारण समझा जाता है। अतएव प्रत्येक आदमी कई विवाह करने का प्रयत्न करता है।

एक यात्री ने एक टांगा स्त्री से बहु-विवाह की बातचीत की। टांगा स्त्री ने बहु-विवाह पर अपने विचार प्रगट करते हुए कहा– "एक पत्नी होना उसी दशा में अच्छा है जब कि पति उससे पूरा प्रेम रखता हो। यदि पति पत्नी से प्रेम नहीं रखता तो एक पत्नी का होना बहुत ही बुरा है; क्योंकि वह उस पर निरन्तर अत्याचार करता रहता है। ऐसी दशा में बहुत सी पत्नियों के होने से उसका ध्यान अपनी अन्य पत्नियों की ओर बँटा रहता है और वह पत्नी, जिससे वह प्रेम नहीं रखता, उसके अत्याचारों का शिकार नहीं होने पाती।"

टांगा स्त्री का यह साधारण कथन इस बात का परिचायक है कि अपने यहां प्रचलित बुरी से बुरी प्रथा के सम्बन्ध में लोग कैसे कैसे सुविधाजनक विश्वास कर लिया करते हैं और उनको उपयोगी सिद्ध करने के लिए काम चलाऊ कारण भी पेश कर देते हैं।

Taj Tahir Foundation

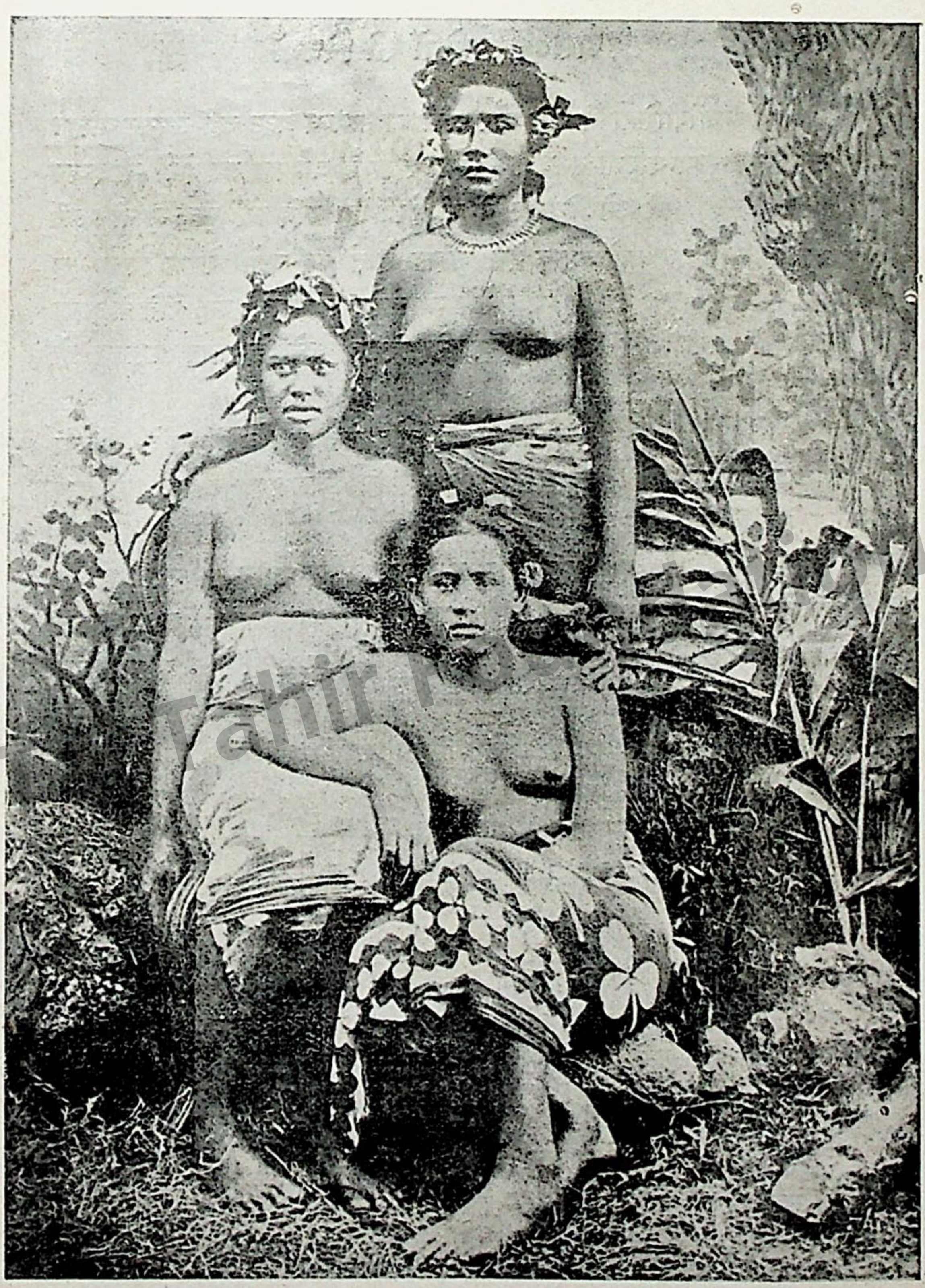

ताहीती स्त्रियां.

पालीनीशिया में पति और पत्नी का सम्बन्ध अटूट नहीं समझा जाता। उनका यह सम्बन्ध उसी समय तक स्थिर रहता है जब तक उन दोनों की इच्छा उसे स्थिर रखने की होती है। यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक़ देना चाहता है तो वह उससे केवल इतना कह देता है 'जहां तेरा जी चाहे चली जा'। बस, पति के इतना कहते ही पत्नी किसी भी अन्य पुरुष से विवाह करने के लिए स्वतन्त्र हो जाती है।

दाम्पत्य नियम

व्यभिचार भी पालीनीशिया में यथेष्ट होता है। व्यभिचार के सम्बन्ध में दंड का सामाजिक नियम केवल यह है कि जिस पुरुष की पत्नी के साथ व्यभिचार किया जावे वह पुरुष व्यभिचार करने वाले पुरुष की हत्या कर डाले। सामोआ में यद्यपि व्यभिचार खूब होता है तथापि बहुधा व्यभिचार का बदला रक्तपात से लिया जाता है; परन्तु जो पुरुष व्यभिचार करता है उसकी हत्या नहीं की जाती वरन् उसके भाई या अन्य किसी रिश्तेदार की हत्या कर दी जाती है।

पूर्वीय द्वीपों में श्वेतांगों के पदार्पण के पूर्व व्यभिचार जन्म सिद्ध अधिकार समझा जाता था। इसके अतिरिक्त अपनी पत्नियों और पुत्रियों को बेच डालना भी एक साधारण बात थी।

यद्यपि बालकों की हत्या, गोद की भ्रष्ट प्रथा तथा तलाक़ की सुविधा को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि पालीनीशिया में पति-प्रेम, पत्नी-प्रेम तथा पुत्र-प्रेम का अभाव सा है; परन्तु इतना होते हुए भी वहां ऐसी घटनाएं होती रहती हैं जिनसे यह विदित होता है कि इन जंगलियों की हृदय की स्वाभाविक प्रेरणाएं भी वैसी ही हैं जैसी कि सभ्य कहलाने वाले अन्य मनुष्यों की। अतएव उन जंगलियों और सभ्य जातियों के आदर्श में कोई अन्तर नहीं रह जाता। यात्रियों ने ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है। एक पतिव्रता स्त्री ने अपने पति के हत्याकारी की हत्या करके दम लिया। एक स्त्री के पति की मृत्यु हो गई, वह स्त्री ६ मास तक अपने मृत पति के कब्र पर बैठी रोती रही। एक स्त्री ने पति की मृत्यु हो जाने पर समुद्र में कूद कर आत्महत्या करली।

Taj Tahir Foundation

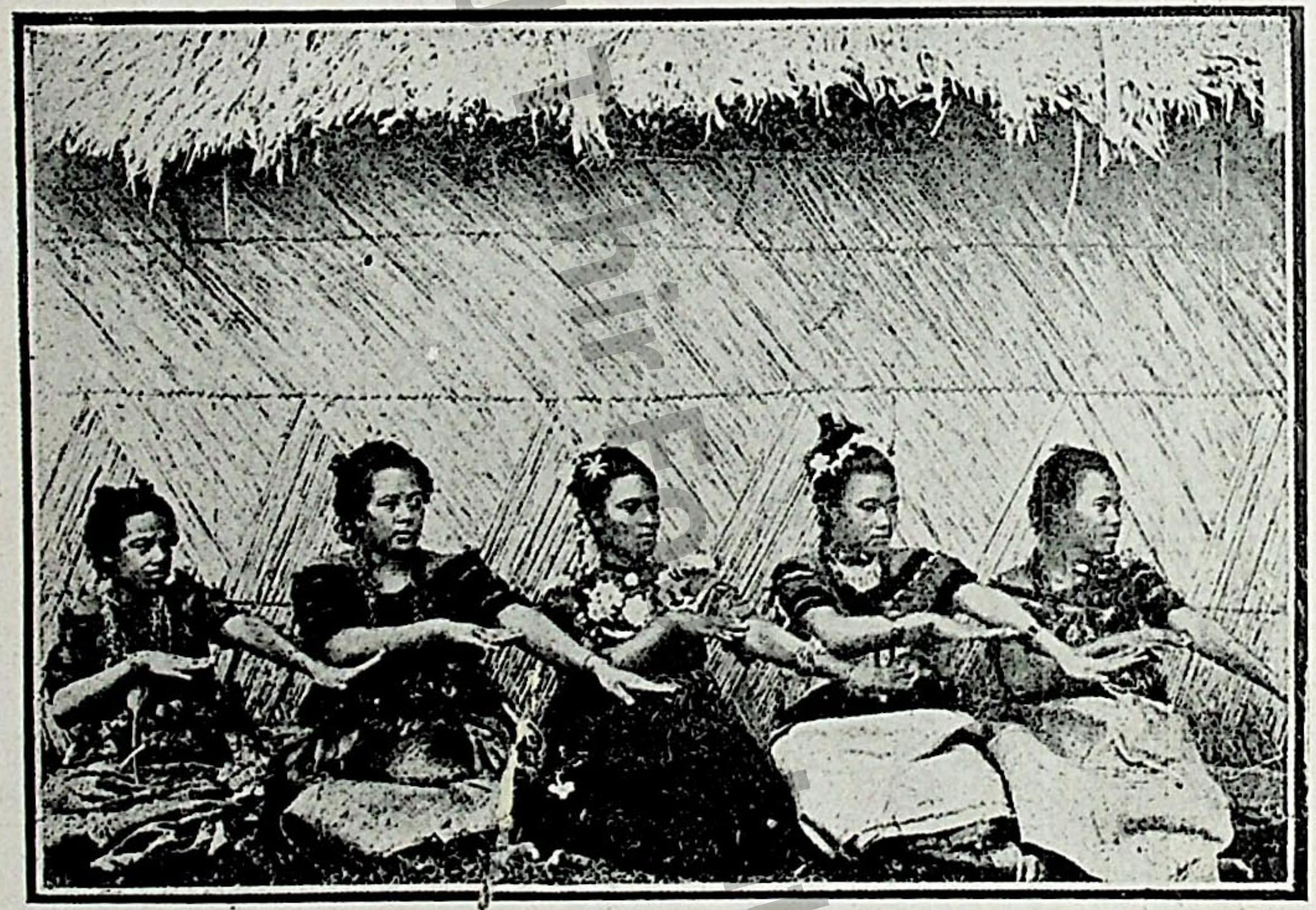

टोंगा नाच.

जब किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है, तब उस पुरुष का भ्राता उसकी पत्नियों का स्वामी और उसके बच्चों का पिता हो जाता है। उसे यह भी अधिकार होता है कि यदि वह चाहे तो उन्हें अपने किसी रिश्तेदार या मित्र को दे दे; परन्तु इस नियम में स्त्री की इच्छा का प्राधान्य सदैव रहता है। यदि स्त्री चाहे तो ऐसा हो सकता है अन्यथा वह स्त्री अपना समस्त जीवन वैधव्य में व्यतीत कर सकती है।

वैधव्य

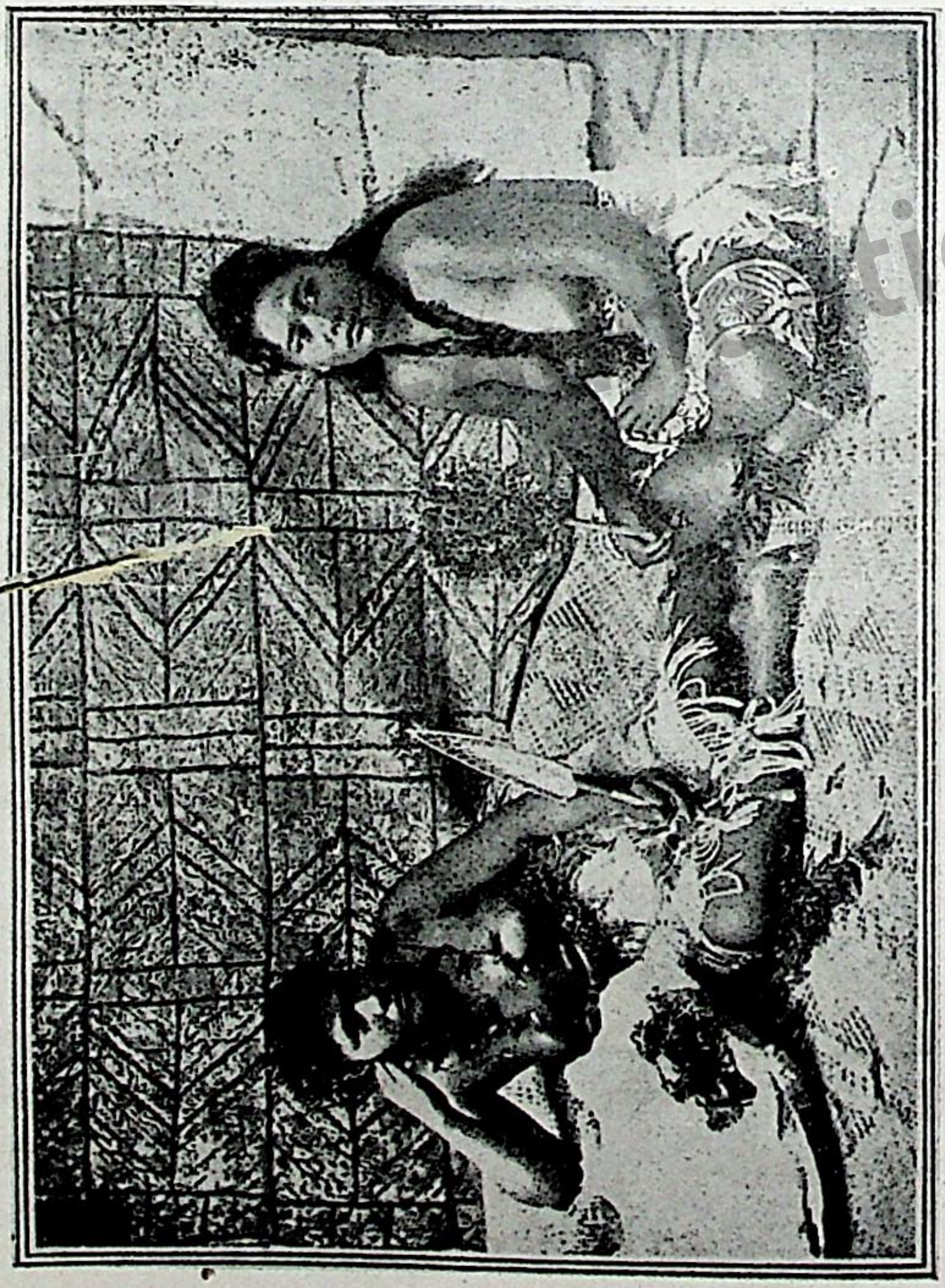

सामोआ द्वीप की, ताहपाक, स्त्रियां.

हवाई द्वीप की नाचने वाली स्त्रियां.

३

स्त्रियों का सामाजिक स्थान—जातीय प्रभाव, भौगोलिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, गान और नृत्य, टाऊपाऊ.

पालीनीशिया में स्त्रियों का सामाजिक स्थान तीन बातों पर निर्भर है। जाति, भूगोल तथा समाज।

पालीनीशिया के लोगों का शरीर यद्यपि बढ़ जाता है लेकिन उनका हृदय बालकों सा ही रहता है। शरीर यद्यपि देखने में सुन्दर होता है तथापि अधिक बलवान नहीं होता। शारीरिक परिश्रम कम पड़ने के

जातीय प्रभाव

कारण शारीरिक शक्तियों का विकास भी पूर्णतया नहीं होता। यद्यपि उनमें सदैव परस्पर लड़ाई झगड़े होते रहते हैं तथापि उन्हें एक वीर जाति नहीं कहा जा सकता, इसका कारण भौगोलिक प्रभाव है।

पालीनीशिया द्वीपों में मनुष्य जाति की उन्नति के साधन बहुत कम हैं। खाद्य पदार्थों की कमी न होने के कारण अधिक शारीरिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। मानसिक परिश्रम का भी सर्वथा अभाव है। धातुओं

भौगोलिक प्रभाव

का अभाव होने से कोई व्यापारिक उन्नति नहीं हो सकती और पशुओं के अभाव के कारण खेती-बारी की उन्नति का मार्ग भी बन्द है। अधिकांश भूमि बिल्कुल ऊसर है जिसमें किसी प्रकार का अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता—केवल नारियल उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त पालीनीशिया के द्वीप समुद्र के बीच में बिल्कुल अलग अलग स्थित हैं। अतएव अन्य जातियों से इनका कोई सम्बन्ध स्थापित होने नहीं पाता। केवल टांगा और सामोआ द्वीप ही ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध दूसरे द्वीपों से रहा है; इसी कारण ये दो जातियाँ सभ्यता के पथ पर कुछ अग्रसर हुई हैं।

Taj Tahir Foundation

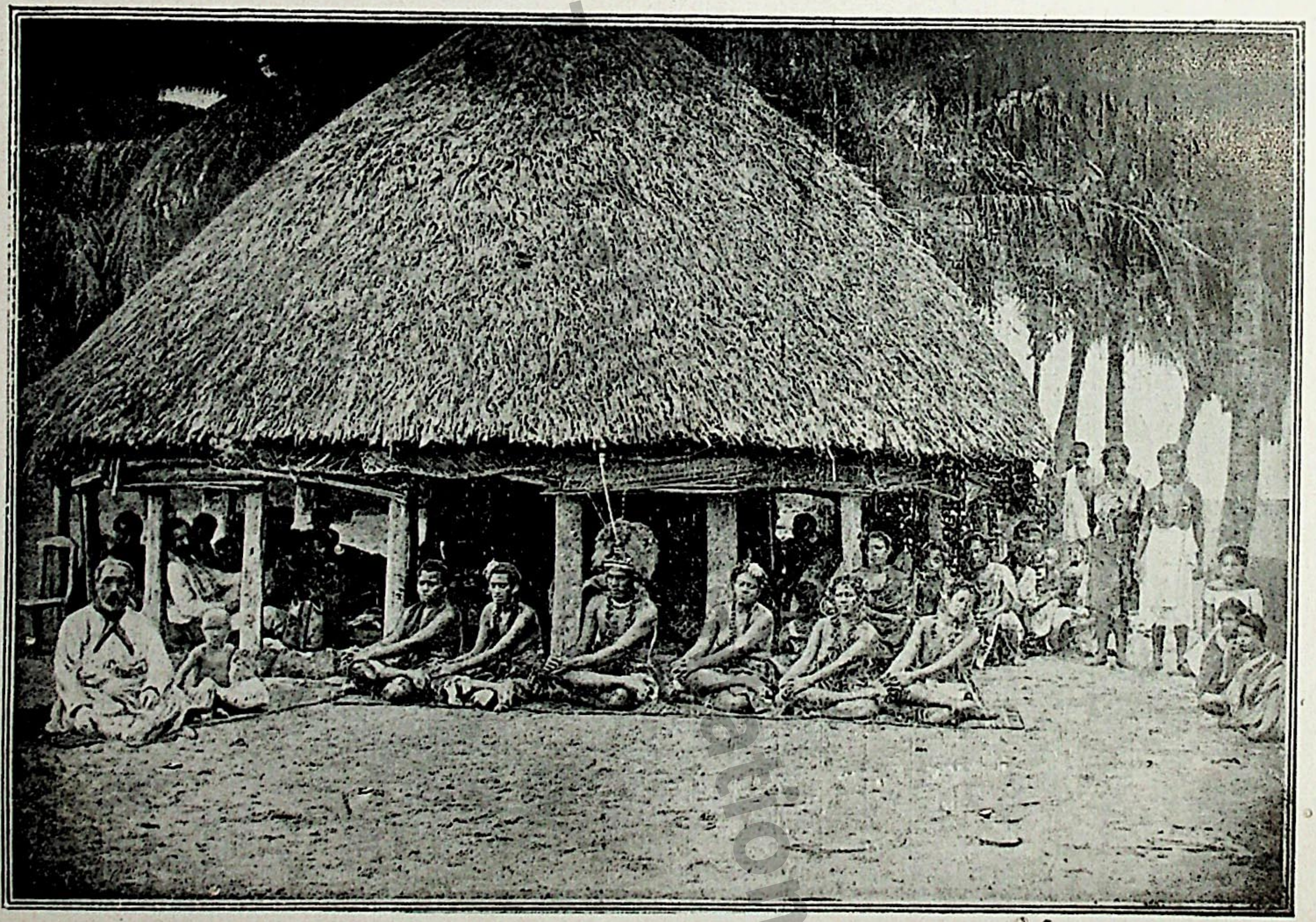

सामोआ द्वीप का 'शिव-नृत्य'

इन लोगों के धार्मिक विचार भी ऐसे हैं जिनका प्रभाव स्त्री जाति पर विशेष प्रकार से पड़ता है। इन्हीं धार्मिक विचारों के कारण व्यभिचार का आधिक्य है और वैवाहिक सम्बन्ध दुर्वल है। इन सब वातों का परिणाम अधिकांश रूप में स्त्रियों को ही भोगना पड़ता है।

सांमाजिक प्रभाव

हवाई द्वीप में स्त्रियों को पुरुषों के साथ भोजन करने का अधिकार नहीं है। उनका भोजन उस चूल्हे पर नहीं वन सकता जिस पर उनके पति का भोजन वनाया जाता है। वहां स्त्रियों के लिए कुछ खाद्य पदार्थ भी वर्जित हैं। स्त्रियों को केला, नारियल तथा कुछ प्रकार की मछलियाँ खाने का अधिकार नहीं है। एक बार कैपियोलानी नाम की एक स्त्री ने केला खा लिया था इस पर वह जाति के बाहर कर दी गई। एक लड़के की भेंट देने पर वह पुनः जाति में सम्मिलित की गई। देवस्थानों में भी स्त्रियों को जाने का अधिकार प्राप्त नहीं है; क्योंकि उनके वहां जाने से वह स्थान अपवित्र हो जाता है। हवाई द्वीप में स्त्रियां पुरुषों का एक खिलौना मात्र समझी जाती हैं।

पालीनीशिया के सब द्वीपों में सामोआ द्वीप अधिक उन्नत और सभ्य है। वहां स्त्रियों को अधिक सुविधाएं प्राप्त हैं और पुरुषों की दृष्टि में उनका महत्व भी अधिक है। टांगा द्वीप में यद्यपि अन्य द्वीपों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक आदर की वस्तु समझी जाती हैं परन्तु इतना होते हुए भी सामोआ के मुक़ाविले में उसने इस ओर कम उन्नति की है।

पालीनीशिया के लोग नाचने गाने के वड़े शौकीन हैं। इसका प्रचार अन्य द्वीपों की अपेक्षा सामोआ में अधिक है। टांगा द्वीप का 'ऊला' नाच केवल पुरुषों का नाच है। वाजों में सवसे मुख्य वाँसुरी है। यह वाँसुरी मुँह से न वजाई जाकर नाक से वजाई जाती है। इस वाँसुरी को अधिकतर स्त्रियां ही वजाती हैं।

गान और नृत्य

पालीनीशिया में एक प्रकार की मदिरा वहुत होती है जिसे 'कावा' कहते हैं। प्रत्येक उत्सव में कावा का व्यवहार होता है। यह कावा एक वृक्ष की जड़ से वनाया जाता है।

Taj Tahir Foundation

ताहीती स्त्री.

Taj Tahir Foundation

पालीनीशिया के सामोआ द्वीप में एक मुखिया स्त्री होती है। यह स्त्री गांव के मुखिया द्वारा चुनी जाती है। यह मुखिया स्त्री यातो मुखिया की पुत्री या गांव के किसी कुलीन घराने की कन्या होती है। इस

टाऊपाऊ

मुखिया स्त्री को 'टाऊपाऊ' कहते हैं। गांव में टाऊपाऊ के लिये एक वड़ा मकान अलग रहता है। गांव की समस्त स्त्रियां टाऊपाऊ के आधीन रहती हैं। टाऊपाऊ अपने मकान में अपनी सहेलियों के साथ रहती है। वह कभी अकेली बाहर नहीं निकलने पाती। गांव का कोई भी पुरुष टाऊपाऊ के मकान में नहीं जा सकता। जब गांव में मेहमान आता है तो टाऊपाऊ उसका आदर सत्कार करती है। इनका मुख्य काम उत्सवों के समय कावा पिलाना होता है। कावा युद्ध, विवाह तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के प्रारम्भ में टाऊपाऊ द्वारा पिलाया जाता है। टाऊपाऊ का दूसरा मुख्य काम नाचना है। नाचने में टाऊपाऊ वड़ी प्रवीण होती हैं; क्योंकि यह कार्य उन्हें भली भाँति सिखाया जाता है। टाऊपाऊ की सहेलियाँ भी उसके साथ नाचती हैं। इनका मुख्य नाच 'शिव' होता है। यह नाच वैठे वैठे ही होता है। इस नाच में कमर के ऊपर का भाग हिलता रहता है और पैरों से ताल दी जाती है।

पालीनीशिया में ताहीती द्वीप वड़ा रमणीक स्थान है। इस द्वीप को यात्री पालीनीशिया का वैकुण्ठ कहते हैं। यहां का जल वायु वड़ा अच्छा है। समस्त पालीनीशिया में टांगा द्वीप तथा सामोआ द्वीप की स्त्रियों का जीवन सुखमय जीवन कहा जा सकता है। इन द्वीपों की स्त्रियों से अधिक काम नहीं लिया जाता। प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में उनसे परामर्श लिया जाता है और उसमें उनको सम्मिलित किया जाता है। प्रायः युद्ध में स्त्रियां अपने पति के साथ साथ रहती हैं और उसके घायल हो जाने पर उसकी सेवा सुश्रषा करती हैं। टाऊपाऊ चुनने की प्रथा केवल सामोआ द्वीप में है। टाऊपाऊ का विवाह किसी मुखिया अथवा मुखिया के पुत्र के साथ किया जाता है।

सामोआ तथा टांगा द्वीप के अतिरिक्त प्रायः अन्य सब द्वीपों में स्त्रियां केवल पुरुषों की कामवासना तृप्ति करने तथा भोगविलास की सामग्री समझी जाती हैं।

Taj Tabir Foundation

न्यू ज़ीलैण्ड

न्यू ज़ीलैण्ड और पालीनीशियन, मावरी स्त्री का स्थान, टापू, जन्म और बाल्यकाल, गुदना, वस्त्र निर्माण कला, परिच्छादन, शृंगार, टीकी, दैनिक जीवन, भोजन, खाद्य पदार्थ पकाने और सुरक्षित रखने की युक्ति, मावरी उत्सव तथा नृत्य, मनुष्य भक्षण, युद्ध में स्त्रियाँ, विवाह प्रथा.

न्यू ज़ीलैण्ड और पालीनीशियन

मावरी जाति के लोग अर्थात् न्यू ज़ीलैण्ड के निवासी एक प्रकार से पालीनीशियन ही हैं। उनके आचार विचार पालीनीशिया के लोगों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, तथापि उनमें कुछ ऐसी महत्वपूर्ण विशेषताएं उत्पन्न हो गई हैं जिनके कारण वे पालीनीशिया निवासियों से भिन्न मालूम होते हैं।

पहले, अर्थात् सन् १२५०–१३५० ईस्वी में पालीनीशिया के निवासी न्यू ज़ीलैण्ड में आया जाया करते थे। सन् १३५० में पालीनीशिया के निवासियों की एक बड़ी संख्या न्यू ज़ीलैण्ड में आकर बस गई और इन्हीं लोगों ने मावरी जाति को जन्म दिया। सन् १३५० ई० से लेकर यूरोपियनों के आगमन तक मावरी जाति और पालीनीशियनों में किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रहा।

मावरी लोग पालीनीशिया से चेहरे मोहरे में बहुत कुछ मिलते जुलते हैं; परन्तु इतना होते हुये भी उनमें बहुत कुछ विभिन्नता है। मावरी जाति के केश

कुछ घुंघराले होते हैं और शरीर में भी वे पालीनीशियनों से अधिक सुदृढ़ और सुडौल होते हैं। इसका कारण केवल यह है कि मावरीयों को अपने जीवन निर्वाह के लिए पालीनीशियनों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ता रहा है। पहले ये लोग युद्ध को सबसे उत्तम व्यवसाय समझते थे; अतएव बड़े कठोर हृदय और रक्त पिपासु होते थे। कुलीनों में जाति गौरव तथा वंश गौरव की मात्रा किसी समय में बहुत थी। इसके साथही साथ उनका चरित्र भी बहुत ही सीधा सादा होता था; परन्तु आधुनिक सभ्यता की लहर में मावरी जाति के प्राचीन रीति रवाज बिल्कुल बह गये। यूरोपियनों के पदार्पण से उनका रक्त भी दूषित होगया अर्थात् उनके रक्त में यूरोपियन रक्त का सम्मिश्रण हो गया। उनके प्राचीन उद्योग धंधे भी बहुत कुछ लुप्त होगये। उनके जातीय नृत्य में भी यूरोपियन नृत्य की झलक आ गई।

मावरी स्त्री का स्थान

मावरी जाति में स्त्रियों को अच्छा स्थान प्राप्त है। स्त्रियाँ प्रायः जीवन के सब कार्यों में भाग लेती हैं यहाँ तक कि युद्ध में भी वे पुरुषों के साथ साथ रहती हैं। महत्वपूर्ण प्रश्नों पर उनका परामर्श लिया जाता है। कुलीन स्त्रियाँ बड़े आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं; क्योंकि उनके साथ विवाह करने से उनके पति को धन तथा मान दोनों की प्राप्ति होती है। स्त्रियाँ अपने सम्बन्धियों से खूब स्नेह करती हैं और पति या किसी अन्य प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु पर आत्महत्या तक कर लेती हैं। परन्तु इसके साथही साथ उनमें क्रोध तथा ईर्षा की मात्रा भी खूब होती है। पति से दुर्व्यवहार का बदला लेने के लिए, पहले, वे अपने बच्चों तक की हत्या कर डालती थीं।

टापू

अभिमंत्रण द्वारा पवित्र करने के कार्य को टापू कहा जाता है। अमुक मनुष्य टापू है, अमुक स्थान टापू है—इसका यह अर्थ हुआ कि उक्त मनुष्य अथवा उक्त स्थान पवित्र है। टापू की प्रथा अधिकतर यूरोपियनों के आगमन के पूर्वतक प्रचलित रही, इसके पश्चात् वह क्रमशः नष्ट हो गई। पुरोहित तथा बड़े बड़े मुखिया

मावरी स्त्रियाँ और लड़कियाँ.
इस चित्र में केशों की विचित्रता स्पष्ट है.

सदैव टापू समझे जाते थे और उनमें इतनी शक्ति थी कि जिस मनुष्य को या जिस वस्तु को वे छू देते थे वह भी टापू होजाता था। सर्व साधारण को यह अधिकार प्राप्त नहीं होता था कि वे किसी टापू मनुष्य अथवा टापू वस्तु को छू सकें। मुखियाओं की चीज़ें टापू होने के कारण उन्हें निम्न श्रेणी के लोग नहीं छू सकते थे। ऐसी अनेक घटनाएं देखी गईं जिनमें किसी निम्न श्रेणी के मनुष्य ने भूल से कोई टापू वस्तु छू ली और अपनी भूल का ज्ञान होने पर वह बेचारा

मावरी स्त्री।

केवल भय से मर गया। क्योंकि लोगों के हृदय में यह विश्वास जमा रहता था कि टापू वस्तु के छूने से मृत्यु हो जाती है। पकने के पहले खेत टापू कर दिये जाते थे और जब तक उनका टापूपन दूर नहीं किया जाता था वे काटे नहीं जा सकते थे। किसी मनुष्य को किसी कार्य में लगाते समय टापू कर देते थे और जब तक वह टापूपन दूर न किया जाता था वह मनुष्य वहाँ से उठ नहीं सकता था।

जन्म और बाल्यकाल

पहले समय में कन्याओं का जन्म बुरा समझा जाता था और इसलिए कभी कभी वे मार डाली जातीं थीं। यदि वे जीवित रहने दी जाती थीं तो गाँव का पुरोहित गाँव के बाहर एक पवित्र नदी में उसको स्नान कराता था। यह रस्म माता और बालिका को टापू करने के लिए अदा की जाती थी। इसके पश्चात् वे कुछ दिनों तक एक अलग झोंपड़े में रखी जाती थीं। कुछ दिनों उपरान्त उनका टापूपन दूर कर दिया जाता था और बालिका का नाम-करण करने के पश्चात् उसे घर में लाया जाता था।

मावरी बालक और बालिकाएँ अपना बाल्यकाल बड़े सुख में व्यतीत करते थे और उनका लालन-पालन बड़े लाड़ प्यार से करते थे। इसके कारण बहुधा बालक दुष्ट प्रकृति के हो जाते थे।

गुदना

कुलीन वंश की बालिकाओं के कुछ बड़ी होने पर गुदना गोदा जाता था। न्यू ज़ीलैण्ड में गुदना गुदाना बड़ा महत्वपूर्ण कार्य समझा जाता था। वहाँ गुदना गुदाने का ढंग भी निराला था। पालीनीशिया की तरह वहाँ सुई से गुदना नहीं गोदा जाता था। पहले ठोढ़ी और ऊपर के ओंठ पर कोयले से आकार बना लिया जाता था; तदुपरान्त एक हड्डी के नश्तर से वह स्थान इतना चीरा जाता था कि रक्त की धार बहने लगती थी। रक्त पोंछकर उस पर एक प्रकार की काली बुकनी मल दी जाती थी। इस प्रकार गुदना गुदाने वालों को बड़ा कष्ट होता था। इस कष्ट को दूर करने अथवा यों समझिये कि गुदने की क्रिया सकुशल समाप्त

हो जाने के लिए गुदाने वाले को टापू बना दिया जाता था और भेंट चढ़ाई जाती थी। किसी प्रतिष्ठित मुखिया की कन्या के गुदना गुदाते समय नरबलि भी दी जाती थी। स्त्रियों के ऊपरी ओंठ तथा ठोढ़ी पर गुदना गोदा जाता था।

कुलीन मावरी स्त्री.
गुदना गुदाए हुए और सिर में पक्षी के पर लगाए हुए.

Taj Tal Foundation

बालिकाओं की मुख्य शिक्षा चटाइयाँ बुनना होती थी। बालिका को चटाइयाँ बुनने की शिक्षा देने का भार माता पर रहता था 'हाराकीकी' नामक

वस्त्र-निर्माण कला

वृक्ष से एक प्रकार का सन निकाल कर, जो रेशम की तरह मुलायम और चमकदार होता है, वृक्षों की छाल के रंग से लाल पीला रँग लिया जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक वृक्षों की पत्तियों से कोई पचास प्रकार का सन बनाया जाता था। इस सन से डोरा बटा जाता था और इसी डोरे से चटाइयाँ बनाई जाती थीं।

चटाई बुनने की शिक्षा का कार्य बड़ा पवित्र समझा जाता था। आरम्भ में बालिकाओं को इस कार्य की शिक्षा देते समय पुरोहित कुछ मंत्र पढ़ता था जिससे छात्र का मष्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने के योग्य बन जाये। चटाई में बुनने के समय कभी कभी पक्षियों के पर प्रविष्ट कर दिये जाते थे। अधिकतर 'कीवी' नामक पक्षी के पर प्रविष्ट किये जाते थे; पीछे मुर्ग़ के पर भी बुने जाने लगे थे। कुत्ते की रोएँदार खाल की धज्जियाँ भी चटाई के ऊपर लगाई जाती थीं। परन्तु ये चटाइयाँ मकानों पर छप्पर की तरह डालने के काम आती थीं।

मावरियों की पोशाक अधिकतर दो चटाइयों से बन जाती थी। एक चटाई कमर म बाँध ली जाती थी और दूसरी लबादे की तरह पहन लीजाती थी।

परिच्छादन

स्त्रियों की पोशाक भी ऐसी ही होती थी। केवल इतना प्रभेद होता था कि गले में जो चटाई बाँधी जाती थी वह पुरुषों में दाहिने कंधे पर और स्त्रियों में बाँए कंधे पर बाँधी जाती थी। बालक और बालिकाएँ आठ वर्ष की वयस तक बिल्कुल नग्न रहते थे।

शृंगार

स्त्रियों के केश खूब लम्बे बढ़ने दिये जाते थे। बालिका माथे पर के बाल भौंह की बराबर से कटवा दिया करती थीं। कुलीन स्त्रियाँ बालों में 'हूमा' पक्षी के दो पर लगा लिया करती थीं। ये पर बड़े मूल्यवान समझे जाते थे और लकड़ी के बढ़िया बने हुए छोटे छोटे बक्सों में सुरक्षित रखे जाते थे।

Taj Tahir Foundation

कान भी छिदवाये जाते थे और उनमें अनेक प्रकार के गहने पहने जाते थे। कान का गहना एक विशेष प्रकार के अत्यन्त कठोर पत्थर का होता था और उसके

खाद्य भण्डार.

बनाने में बहुत समय लगता था। न्यू ज़ीलैण्ड में यूरोपियनों के पहुँचने के पूर्व वहाँ के निवासियों के पास किसी भी प्रकार की धातु नहीं थी, अतएव गहने केवल शार्क मछली के दाँतों, फूलों, परों इत्यादि के बनाये जाते थे। पर इसके

अतिरिक्त पति तथा अन्य सम्बन्धियों के दाँतों के बनाये हुए गहने भी पहने जाते थे।

टीकी

माबरीयों का जातीय गहना टीकी होता था जो गले में पहना जाता था। यह गहना मनुष्य की भद्दी सी बनी हुई मूर्ति होती थी और इसके बनाने में वर्षों लग जाते थे। यह गहना भी पत्थर का बनाया जाता था; कभी कभी मनुष्य की खोपड़ी का भी बनाया जाता था। इस गहने को अधिकतर पुरुष पहनते थे, पर विशेष अवसरों पर इसे स्त्रियाँ भी पहन लेतीथीं—विशेषतया वे स्त्रियाँ जो सुखिया का पद प्राप्त करती थीं। टीकी बड़ा पवित्र समझा जाता था और अनेक पीढ़ियों तक काम देता रहता था।

दैनिक जीवन

प्रातःकाल पुरुष पहाड़ियों पर से उतर कर अपने खेतों में जाते थे। वे लोग इस प्रकार इकट्ठे होकर जाया करते थे मानो किसी युद्ध में जा रहे हैं। प्रत्येक पुरुष के एक हाथ में भाला और दूसरे में खेती करने के औज़ार रहते थे। उनके पीछे स्त्रियाँ रहती थीं। इन लोगों में रात में कार्य करना अशुभ समझा जाता था, अतएव ये संध्या होने के पूर्व ही अपने घरों को लौट पड़ते थे। लौटते समय स्त्रियाँ और बच्चे आगे रहते थे और पुरुष पीछे। स्त्रियों और बच्चों के हाथ में ईंधन, पानी तथा रात के लिए अन्य आवश्यक सामग्री रहती थी। जिस समय में खेती का कोई कार्य न रहता था उतने समय तक यह लोग किसी नदी अथवा झील के किनारे पड़े रहते थे और अपना समय मछली का शिकार करने, मछली पकड़ने के जाल बनाने, भाले, अस्त्र शस्त्र तथा खेती के औज़ार बनाने में व्यतीत किया करते थे। स्त्रियाँ चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाया करती थीं। यह लोग निश्चेष्ट बहुत कम बैठते थे; क्योंकि आलसी कहाना इन लोगों में बड़ा अपमान जनक समझा जाता था।

Taj Tahir Foundation

भोजन बनाना स्त्रियों ही का कार्य समझा जाता रहा। मावरियों के खाद्य पदार्थ मछली तथा शाक भाजी रहे हैं। मांस को तो ये लोग बड़ी न्यामत समझते थे। कुत्ते का मांस तथा चूहा ये लोग बड़ी

भोजन

रुचि से खाते थे। कप्तान कुक जब न्यू ज़ीलैण्ड पहुँचे तब उन्होंने सुअर और बकरे का मांस मावरियों को खिलाया। मावरियों ने सुअर का मांस बहुत पसन्द किया था। अनेक प्रकार के पक्षी भी इनके भोज्य पदार्थ हैं। कुछ पक्षियों को ये लोग नहीं खाते थे; क्योंकि इन लोगों को विश्वास था कि उनमें पुरखाओं की आत्मा का निवास है। शाक में ये लोग एक विशेष प्रकार के पौधे की जड़ खाते थे। मीठे आलू तथा अनेक प्रकार के फल भी खाते थे। ये लोग पौधे में खाने योग्य वस्तु केवल उसकी जड़ ही समझते थे। बिशप मार्सडन नामक एक मिशनरी का कथन है कि पौधों की जड़ खाने के ये लोग इतने अभ्यस्थ हो गये थे कि जब पहले पहल इन लोगों से अनाज की खेती कराई गई तो फसल पकने की प्रतीक्षा से ये लोग ऊब गये और अनाज के हरे पौधों को उखाड़ कर उनकी जड़ में अनाज खोजने लगे। भोजन भी ये लोग इस प्रकार पकाते थे कि एक गड्ढा खोदकर उसमें लकड़ियाँ भर देते थे और उन्हें सुलगा देते थे। लकड़ियाँ सुलग जाने पर उनमें पत्थर छोड़ देते थे। जब पत्थर खूब गरम हो जाते थे और आग बुझ जाती थी तो गड्ढे में से राख और कोयले निकाल कर और पत्थरों पर पत्तियाँ बिछा कर उनपर पानी छिड़क देते थे। तत्पश्चात् पत्तियों में लपटे हुये खाद्य पदार्थ पत्तियों में रखकर ऊपर से पुनः पानी छिड़की हुई पत्तियों से ढक देते थे। इसके ऊपर चटाई इत्यादि डालकर मट्टी से ढक देते थे।

ये लोग खाद्य पदार्थ टोकरियों में रखकर भोजन करते थे। स्त्रियाँ पुरुषों से अलग और गुलाम लोग स्वामियों से अलग बैठकर भोजन करते थे। मेहमानों की उपस्थिति होने पर मेहमान लोग अलग भोजन करते थे। गृह स्वामी का मेहमानों के साथ भोजन करना शिष्टाचार के विरुद्ध समझा जाता था।

Taj Tahir Foundation

मावरियों के स्वागत करने का ढंग—परस्पर नाक रगड़ते हैं, दो स्त्रियाँ गले में 'टीकी' गहना पहने हुए हैं.

खाद्य पदार्थ पकाने और सुरक्षित रखने की युक्ति

पत्तियों और मछलियों को सुरक्षित रखने की अनेक युक्तियाँ ये लोग काम में लाते थे। मछलियों को समुद्र-जल में भिगोकर सुखा लेते थे अथवा आग में सेंक लेते थे। जहाँ पर कि गर्म पानी के सोते प्राप्त हो सकते थे, वहां माँस को उबाल भी लेते थे। जहाँ पर गर्म पानी के सोतों का अभाव होता था वहाँ पत्थर को गर्म करके पानी के बर्तन में छोड़ देते थे और इस प्रकार पानी गर्म कर लेते थे।

मावरी उत्सव तथा नृत्य

उत्सवों पर निकटवर्ती ग्रामों के लोगों को निमंत्रण दिया जाता था। इन उत्सवों के लिए बड़ी तैयारियां की जाया करती थीं। सन् १८३६ में एक उत्सव पर एक भोज दिया गया था जिसमें कि आलुओं की आठ हजार टोकरियाँ, पाँच लाख मछलियाँ, ८ सौ सुअर और तम्बाकू के १५ पीपे खर्च हुए थे। मेहमानों के आगमन के समय स्त्रियाँ एक ऊँचे स्थान पर खड़ी होकर वृक्षों की डालियाँ हिलाती थीं और स्वागत के शब्द चिल्ला चिल्ला कर कहती थीं। इसके पश्चात् टाँगी की रस्म अदा की जाती थी। इस रस्म में यह होता था कि मेहमान तथा स्वागत कर्ता परस्पर गले मिलकर रोते थे। युद्ध से लौटने के पश्चात् भी टाँगी रस्म अदा की जाती थी। इस अवसर पर स्त्रियाँ अपने शरीर को क्षत-विक्षत करके रक्तपात तक कर दिया करती थीं। टाँगी रस्म के पश्चात् स्वागत कर्ता तथा मेहमान परस्पर नाक रगड़ कर एक दूसरे को प्रणाम करते थे। इसके पश्चात् स्त्रियों द्वारा खाना परोसा जाता था।

इन उत्सवों पर नाच भी खूब होता था। स्त्री और पुरुष दोनों नाचते थे। नाच में अनेक प्रकार के नाट्य भी करते थे। जैसे किसी व्यक्ति का समुद्र यात्रा करना और अनेक कठिनाइयाँ उठाने के पश्चात् सकुशल लौट आना इत्यादि। इन लोगों के नाच ताल तथा लय की दृष्टि से बहुत उत्तम होते थे। नाच के साथ गाना भी गाया जाता था। इनका एक नृत्य गान 'हाका' कहलाता था। इस गाने को युवक और युवतियाँ मिलकर गाती थीं।

Taj Tahir Foundation

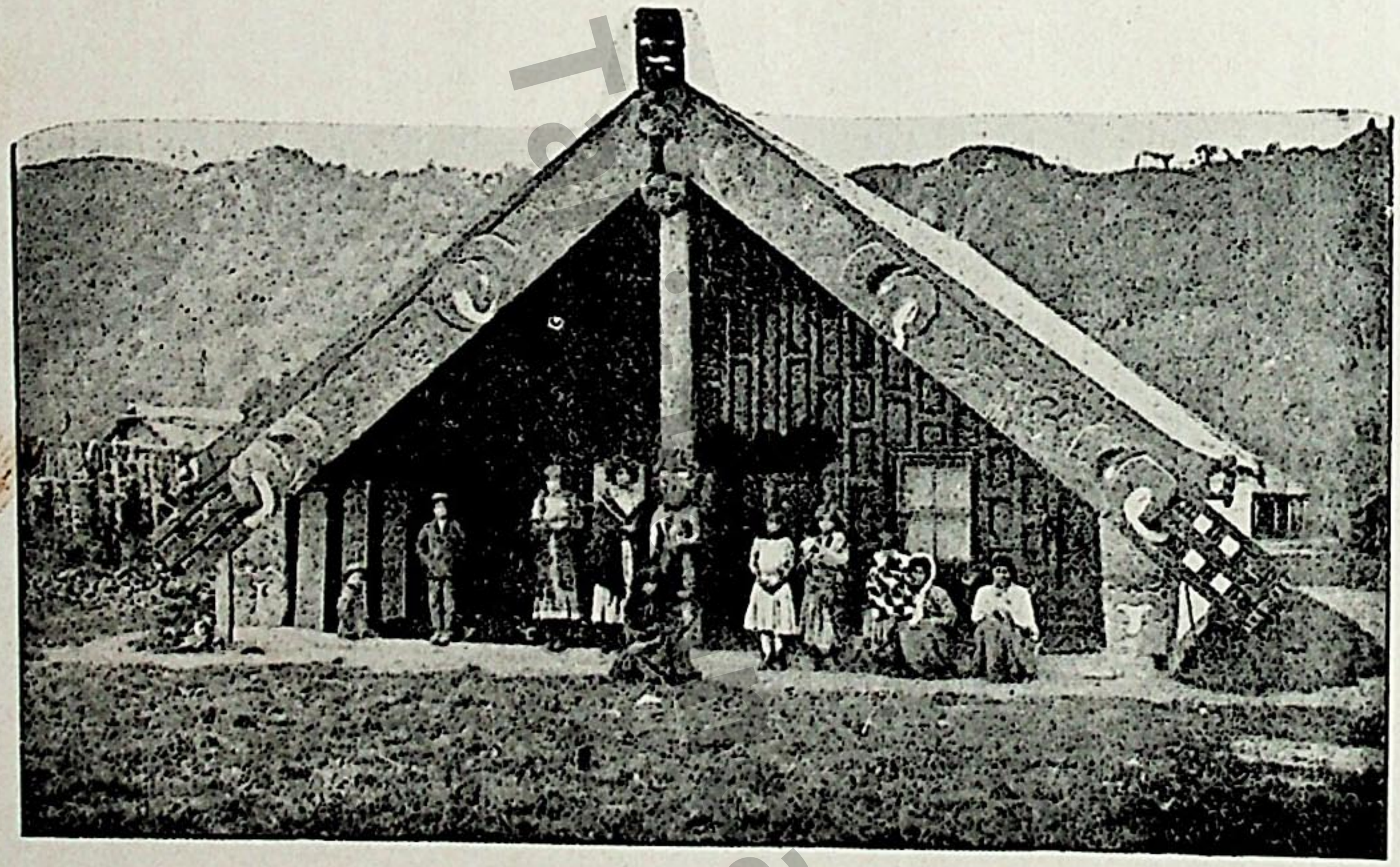

एक मावरी मुखिया का घर.

Taj Tandon Foundation

ये लोग मनुष्य को भी खा जाते थे; परन्तु ऐसा केवल दो कारणों से होता था। प्रथम जब खाद्य पदार्थ की कमी पड़ती थी और दूसरे शत्रु को अपमानित करने के लिए। जिसे अत्यन्त अपमानित

मनुष्य भक्षण

करना होता था उसे मारकर खा जाते थे। स्त्रियाँ कभी मनुष्य का मांस नहीं खाती थीं।

युद्ध में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ रहती थीं। वहाँ इनका मुख्य कार्य खाद्य पदार्थ तैयार करना और क़िले की रक्षा करना होता था। युद्ध में यह लोग जलते हुये पत्थर फेंक कर क़िले में आग लगाने की चेष्टा

युद्ध में स्त्रियां

करते थे। स्त्रियाँ उसी अग्नि काण्ड से क़िले को सुरक्षित रखने का कार्य करती थीं। जब किसी स्त्री का पति या अन्य कोई रिश्तेदार युद्ध में मारा जाता था तो वह स्त्री, शत्रुके क़ैदियों में से चार छः मनुष्यों को मार कर अपने मृत पति का बदला लेती थी। मि० टेलर ने एक ऐसी ही घटना का वर्णन किया है जिसमें एक स्त्री ने, अपने मृत पति के बदले में, शत्रुके १६ क़ैदियों को अपने हाथ से क़त्ल किया था।

इन लोगों में विवाह के समय किसी पुरोहित की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। अविवाहित कन्याओं को यथेष्ट स्वतंत्रता रहती थी और वे स्वच्छन्दता पूर्वक प्रेम लीलाएं किया करती थीं; परन्तु

विवाह प्रथा

विवाह हो जाने पर उन्हें एक पति की होकर रहना पड़ता था। कुलीनों में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी। किसी मुखिया का बड़प्पन केवल उनकी पत्नियों की संख्या से समझा जाता था। यह लोग गुलाम स्त्रियों को भी पत्नियाँ बना लेते थे। कुलीन स्त्री के लिए किसी गुलाम पुरुष से विवाह करना अपमान जनक समझा जाता था। कन्याओं को अपनेही समुदाय में विवाह करना पड़ता था। यदि दो भिन्न भिन्न समुदाय के स्त्री पुरुष विवाह करना चाहते थे तो दोनों समुदाय के लोगों की स्वीकृति ली जाती थी। विवाह का सबसे अच्छा ढंग यह समझा जाता था कि वर कन्या

Taj Tahir Foundation

को ज़बर्दस्ती पकड़ ले जाये। ऐसे अवसर पर कन्या-पक्ष और वर-पक्ष के लोगों में लड़ाई झगड़ा भी होता था ; परन्तु अधिकतर यह लड़ाई झगड़ा बनावटी हुआ करता था। यदि कभी कभी सच्चा लड़ाई झगड़ा हो जाया करता था तो कन्या की बड़ी दुर्गति हो जाती थी ; प्राय: कन्याएँ मर तक जातीथीं। विवाह हो जाने पर वर कन्या को अपने घर ले जाता था। यदि कन्या का पिता स्वयं वर को अपने घर में रहने का निमंत्रण देता था तो वर को कन्या के घर में अर्थात् अपनी ससुराल में रहना पड़ता था और वह ससुराल के समुदाय में सम्मिलित समझा जाता था। कन्याओं का विवाह प्राय: १० वर्ष की वयस में कर दिया जाता था। अतएव विवाह वर तथा कन्या के माता पिता की इच्छा से होता था

Taj Tahir Foundation

मेलेनीशिया

भौगोलिक स्थिति, शारीरिक वनावट, स्त्रियों का द्वीप, शृंगार, गुदना, शारीरिक विकृति, पुष्पों के अलंकार, परिच्छादन.

मेलेनीशिया के अर्थ काले द्वीप के हैं। मेलेनीशिया पालीनीशिया के पश्चिम तथा आष्ट्रेलिया के ईषान कोण में स्थित है। इसके उत्तर-पश्चिम में न्यू गायना और दक्षिण-पूर्व में फ़िजी है। यह कई सहस्र मील का एक टुकड़ा है जो कई छोटे छोटे द्वीपों से मिलकर वना है। इसके मुख्य द्वीप ये हैं—न्यू गा़यना, फ़िजी द्वीप, एडमिरलटी द्वीप समूह, विस्मार्क द्वीप समूह, सुलेमान द्वीप समूह, सांटाक्रुज़ द्वीप समूह, टारेस द्वीप समूह, न्यू हैब्रिडेस, न्यू कैलीडोनिया और लायलटी द्वीप समूह। इन समस्त द्वीपों में मेलेनीशियन जाति के लोग रहते हैं।

भौगोलिक स्थिति

इस जाति के मनुष्यों का सिर कुछ लम्वा और चपटा अर्थात् लोढ़े की शक्ल का होता है। चेहरा कुछ अण्डाकार और नाक छोटी तथा चौड़ी होती है। शरीर का वर्ण काला होता है जिसमें कभी कभी सुर्ख़ी आ जाने से वह ज़ंग खाये हुए लोहे सा दिखाई देता है। सिर के वाल अत्यन्त काले और कुछ घुंघराले

शारीरिक वनावट

TajTahir Foundation

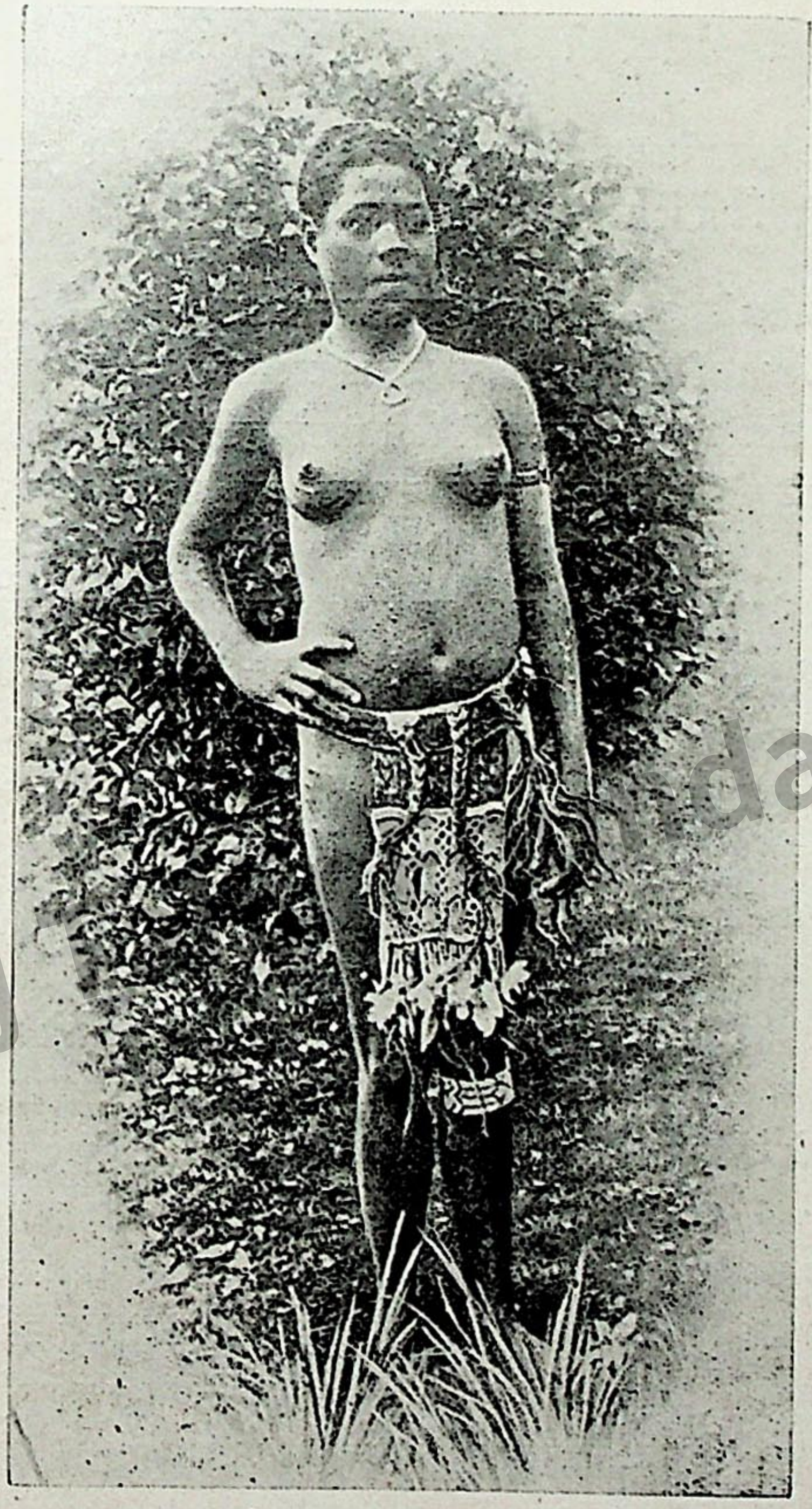

एडमिरलटी द्वीप की स्त्री.
कौड़ियों का लँगोट पहने हुए.

Taj Foundation

होते हैं। समस्त मेलेनीशिया में नखसिख का सादृश्य होते हुए भी प्रत्येक द्वीप के निवासियों में परस्पर कुछ थोड़ा अन्तर अवश्य है।

मेलेनीशियन जाति के लोग समुद्र यात्रा के कम अभ्यस्थ हैं तथा बड़े लड़ाके और रक्तपिपासु हैं; इस कारण इनमें परस्पर मित्रभाव नहीं रहने पाता और न ये लोग पड़ोस की अन्य जातियों से मिलते जुलते हैं। कभी कभी ऐसा हुआ है कि कोई नौका बहकर इनकी ओर चली आई और लोग इनके द्वीपों में बस गये। इस प्रकार इन लोगों में अन्य जातियों के लोगों के रक्त का सम्मिश्रण होगया है और उनके चिन्ह अब भी स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं; परन्तु ऐसा बहुत कम हुआ है। बहुधा ऐसी नौकाएं जो भटक कर इनकी ओर आजाती थीं उनके आरोही सबके सब मार डाले जाते थे; क्योंकि ये लोग अन्य जाति के लोगों को अपना शत्र समझा करते थे। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी बात यह थी कि अन्य जातियों के मनुष्यों से भरी हुई नौकाएं इनकी दृष्टि में खाद्य-सामग्री से भरी हुई नौकाएं होती थीं। मेलेनीशिया में चूहे के अतिरिक्त अन्य पशुओं का अभाव होने के कारण इन लोगों को मांस नसीब नहीं होता था, अतएव ये लोग कभी कभी अन्य जाति के मनुष्यों से भरी हुई नौकाओं का आजाना बड़ा रुचिकारक समझते थे। इन्हीं अनेक कारणों से यात्रियों को मेलेनीशिया का ज्ञान प्राप्त करने में बड़ी कठिनाइयां पड़ी हैं। जब जब यूरोपियन यात्री मेलेनीशिया के किसी द्वीप में पहुँचते थे तो स्त्रियाँ जंगलों में छिप जाती थीं। पुरुषों की सूरत भी उसी समय देखने को मिलती थी जब उनको यह विश्वास दिला दिया जाता था कि उनको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जायगी। पहले पहल जब यूरोपियन यात्री यहां पहुँचे तो उनके श्वेत चेहरे देखकर मेलेनीशियनों ने उन्हें प्रेत समझा था।

मेलेनीशिया में एक द्वीप ऐसा है जहां यात्रियों को केवल स्त्रियाँ ही देखने को मिलीं पुरुषों का चिन्ह दिखाई न पड़ा। इस बात की चर्चा यहां

तक उड़ी कि संयुक्त राष्ट्र (अमेरिका) ने इसपर अधिकार जमाने के लिये अपने आदमी भेजे; परन्तु वहां पहुँचने पर उनको ज्ञात हुआ कि वह द्वीप ब्रिटिश सरकार के अधिकार में है। सुलेमान द्वीप का रेज़ीडेण्ट कमिश्नर दो वार इस द्वीप में गया, पर दोनों वार उसने स्त्रियाँ ही देखीं पुरुष एक भी न देखा।

स्त्रियों का द्वीप

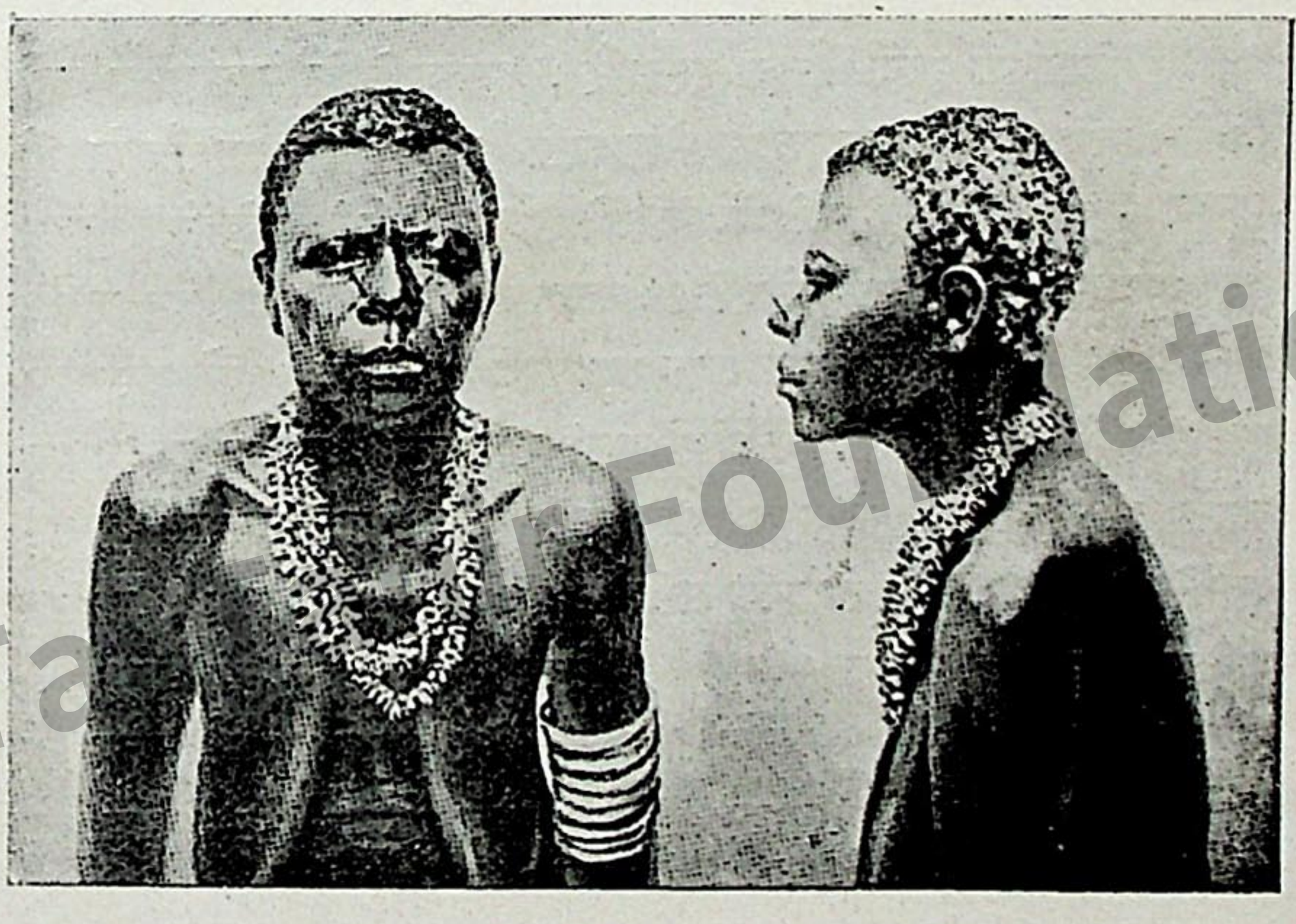

मेलेनीशिया के न्यू ब्रिटेन द्वीप की स्त्रियाँ.
दाँतों का हार पहने हुए.

मेलेनीशिया में गहना पहनने का चलन अधिकतर पुरुषों में है। जब कभी कोई उत्सव होता है तब स्त्रियां गहना पहनती हैं। कुछ मनचले यात्रियों को यह देखकर बड़ा खेद हुआ कि जो गहना उन्होंने किसी युवती को दिया वह उसके पति ने पहन लिया। एडमिरलटी द्वीप में तो केवल पुरुष ही गहना पहनते हैं।

शृंगार

स्त्रियां किसी भी अवसर पर गहना नहीं पहनतीं। केवल युवतियां गले में हार तथा हाथ पैरों में कड़े पहनती हैं। प्रौढ़ा और वृद्धा स्त्रियां कोई गहना नहीं पहनतीं। इनकी पड़ोसी जातियों की स्त्रियां बालों में फूल इत्यादि लगाती हैं; परन्तु इनके भाग्य में यह भी नहीं क्योंकि इनके बाल इतने छोटे छोटे हैं कि उनमें फूल इत्यादि लगाये ही नहीं जा सकते।

गुदना

स्त्रियों का मुख्य सौंदर्य्य गुदना है। इस जाति के पुरुष गुदना नहीं गुदाते। इनमें गुदना तीन प्रकार से गोदा जाता है। (१) साधारण तौर पर सुई द्वारा चमड़े में रंग प्रविष्ट करके। (२) चमड़े को छीलकर अथवा उसे किसी गरम चीज़ से इस प्रकार दाबकर कि उतने स्थान का चमड़ा उभड़ आवे। (३) छाले डालकर। एडमिरलटी द्वीप में समस्त मुख और छाती पर गुदना गोदा जाता है। इस जाति का वर्ण काला होने के कारण रंग का गुदना अधिक सफल नहीं होता; क्योंकि गुदने का काला रंग इनके शरीर के रंग से मिल जाता है। इसलिए अधिकतर चमड़े को जलाकर अथवा छीलकर गुदना गोदने की प्रथा है। गुदना गोदने का कार्य बाल्यकाल से आरम्भ किया जाता है और कन्या के विवाह योग्य होने तक समाप्त कर दिया जाता है। गोदने में बड़ा कष्ट होता है इसलिए एक समय में बहुत थोड़ा गोदा जाता है। इस प्रकार एक एक बेलबूटा बनाने में महीनों लग जाते हैं। कभी कभी गुदने का कार्य उस समय आरम्भ किया जाता है जबकि स्त्री के एक बच्चा उत्पन्न होजाता है। फ़िजी में तो गुदने की प्रथा इतनी चढ़ीबढ़ी है कि जिस स्त्री के गुदना न गुदा हो तो अन्य स्त्रियां उसे ज़बरदस्ती पकड़कर छील डालती हैं। यदि स्त्री ने चुपचाप गुदना गुदवा लिया तब तो कुशल है और जो उसने ज़रा भी चीं चपड़ की तो उसकी जान पर बन आती है।

मुख पर प्रायः गोलाकार और अंग्रेज़ी अक्षर 'वी' के चिन्ह गोदे जाते

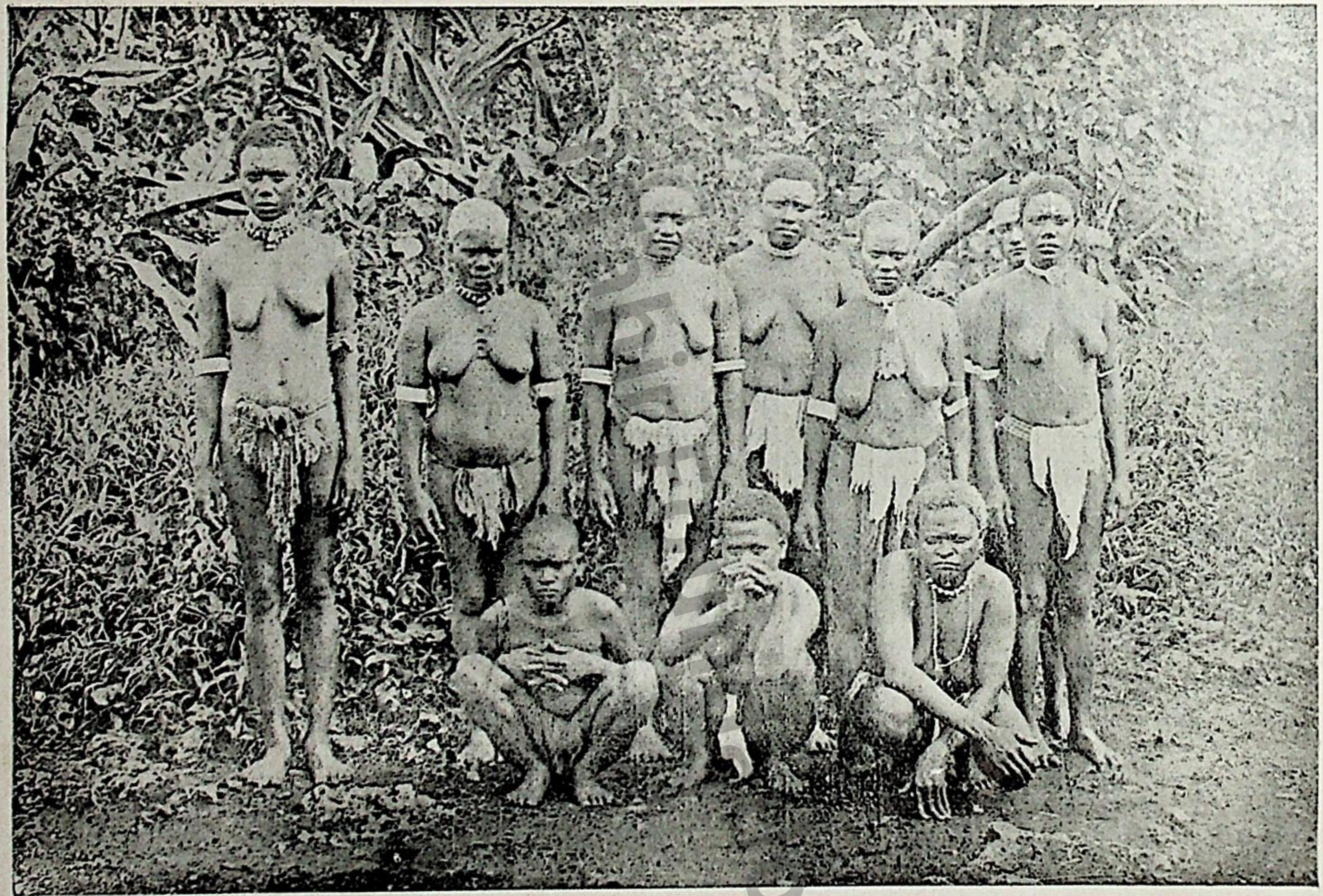

मेलेनीशिया के न्यू आयर्लैण्ड द्वीप की स्त्रियाँ.

हैं। गोदने का कार्य बड़े चमगादड़ के नाखून से किया जाता है। इस कार्य का व्यवसाय करनेवाली स्त्रियाँ ही इसे भली भांति करती हैं।

गहना पहनने के लिए तो ये लोग नाक और कान छिदवाते ही हैं; पर इन लोगों का विश्वास है कि जिस स्त्री की नाक और कान नहीं छिदे होते उसकी मोक्ष नहीं होती। इन लोगों का विश्वास है

शारीरिक विकृति

कि मरने के पश्चात् मृत मनुष्य की आत्मा स्वर्ग जाते समय रास्ते में एक ईश्वरीय दूत से मिलती है। ईश्वरीय दूत आत्मा के नाक में अपना डंडा डालकर देखता है कि नाक छिदी हुई है या नहीं। यदि नाक छिदी हुई होती है तो दूत आत्मा को स्वर्ग की ओर जाने देता है अन्यथा नरक की ओर ढकेल देता है।

इनकी सौन्दर्य वृद्धि की सबसे विचित्र प्रथा यह है कि ये लोग सिर को दवा दवाकर उसका आकार बदल देते हैं। न्यू कैलीडोनिया में नवजात शिशु के सिर को गर्म पानी से भिगोकर उँगलियों से दबाते हैं। कुछ द्वीपों में इस प्रकार सिर को दवा दवाकर चौड़ा बनाते हैं और कुछ में उसे कनपटियों की ओर से इतना दबाते हैं कि वह लम्बा तो बहुत हो जाता है; परन्तु उसकी चौड़ाई उतनी ही रह जाती है जितनी कि गर्दन की। इसी प्रकार लड़कों के चेहरे लम्बे बनाये जाते हैं; क्योंकि इनकी समझ में लम्बा चेहरा योद्धाओं का होता है। लड़कियों की ठुड्ढी दबा दबाकर उनका चेहरा गोल बनाने की चेष्टा की जाती है। सबसे भद्दा और कष्टसाध्य प्रकार मैलीक्यूला द्वीप के निवासियों का है। यह लोग लड़कों के सिर को उसी प्रकार बाँध देते हैं जिस प्रकार चीनी लोग लड़कियों के पैर बाँध दिया करते थे। सिर का बन्धन उस समय खोला जाता है जबकि लड़का बारह या पन्द्रह वर्ष का होजाता है। इस क्रिया से बच्चे को अत्यन्त कष्ट पहुँचता है। बन्धन के कारण बच्चे की आँखें हर समय इस प्रकार उबली हुई सी रहती हैं मानों बाहर निकल पड़ने की चेष्टा करती हैं। माताएँ अपने बच्चों के सिर की बनावट पर बड़ा

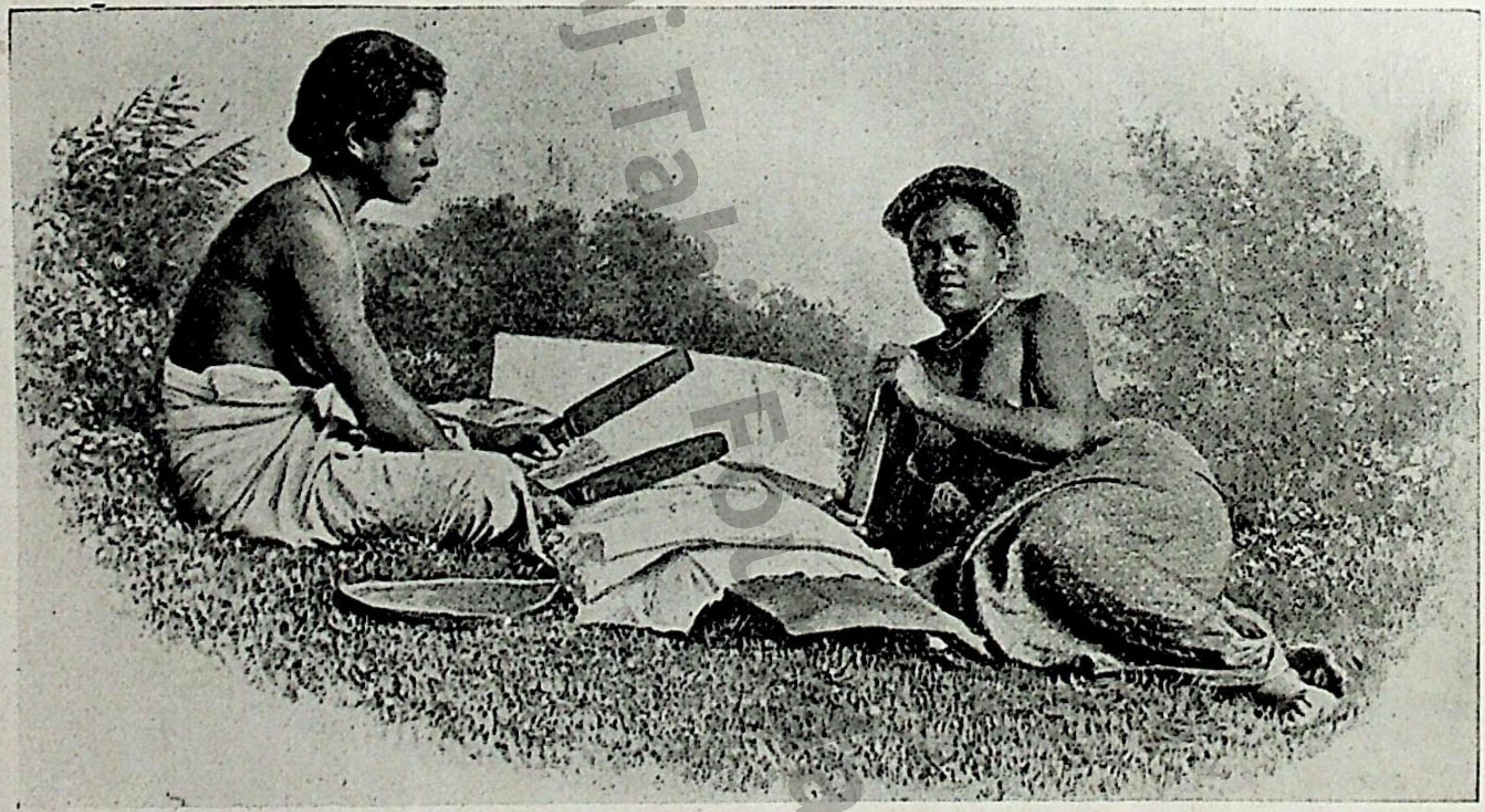

दो फ़िजियन स्त्रियाँ 'टापा' बना रही हैं.

Taj Tabir Foundation

गर्व करती हैं। जिस कन्या के सिर की वनावट, उनकी दृष्टि में, वड़ी सुन्दर होती है उसका विवाह शीघ्र होजाता है और कुलीन वंश में होता है। जिस कन्या के सिर की वनावट सुन्दर नहीं होती उस वेचारी को कोई नहीं पूछता। कभी कभी सिर को अधिक लम्वा प्रगट करने के लिए वच्चों के सिर पर टापा कपड़े की लम्वी पगड़ी पहनाई जाती है।

दाँतों की सौन्दर्य वृद्धि के लिए यह लोग उन्हें कृत्रिम रूप से काला वनाने की चेष्टा करते हैं। इसके लिए यह लोग पान चवाते हैं। दाँतों का श्वेत रहना उनके यहां भद्दा समझा जाता है।

ये लोग फूलों के गहने वनाकर पहनते हैं। गलेवन्द, हार, करधनी इत्यादि वहुधा फूलों के ही वनाकर पहने जाते हैं; परन्तु फूलों के गहने पहनने की प्रथा अधिकतर पुरुषों में ही है। पुरुष वहुधा सुगंधित

पुष्पों के अलंकार

पुष्प अपनी कमर की पेटी में लगाये रहते हैं। यह अधिकतर युवतियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये किया जाता है। अन्य द्वीपों की भांति मेलेनीशिया में स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टा कम करती हैं। अधिकतर पुरुष ही स्त्रियों को आकर्षित करने के लिये नाना प्रकार के फूलों से अपने को अलंकृत करते हैं।

स्त्रियाँ भी गहने पहनती हैं; परन्तु अधिकतर एडमिरलटी द्वीप समूह की स्त्रियाँ गहने पहनती हैं। इस द्वीप समूह की स्त्रियाँ हाथ पैरों में कड़े, गले में हार तथा कान और नाक में कीलें पहनती हैं। इनके गहने लकड़ी, वाँस, हड्डी, दाँत, घास फूस, पक्षियों के पर तथा अन्य ऐसी ही वस्तुओं के होते हैं। सुअर के दाँतों का गहना अधिक पसन्द किया जाता है। यह गहना इस प्रकार वनाया जाता है कि सुअर के नीचे के दाँत निकाल दिये जाते हैं और ऊपर के वढ़ने दिये जाते हैं। इस युक्ति से ऊपर के दाँत वढ़कर गोलाकार वन जाते हैं। इन गोलाकार दाँतों को स्त्रियाँ वड़े चाव से पहनती हैं।

Taj Tahir Foundation

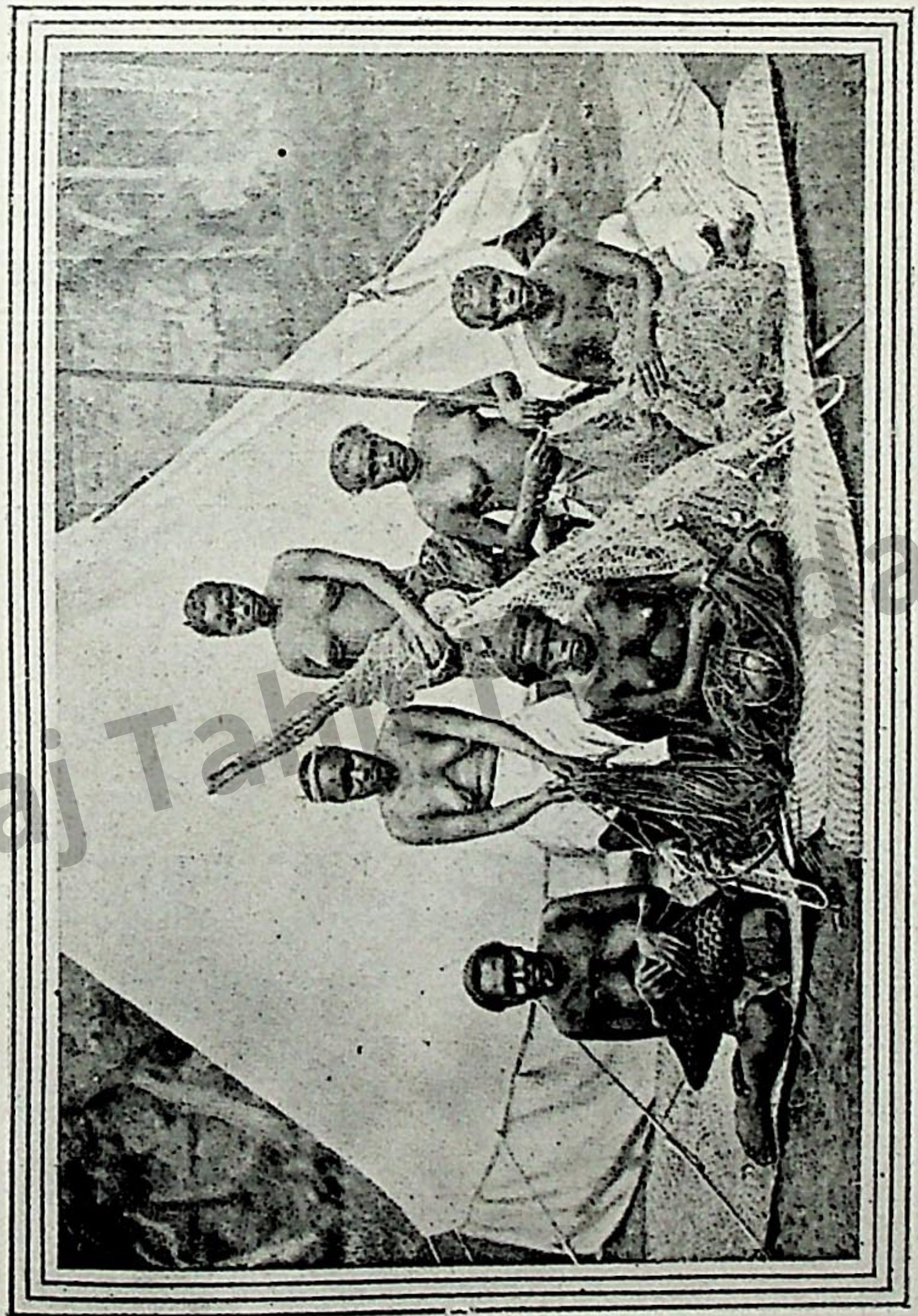

फ़िजी के कानकाव स्थान की पहाड़ियाँ.

Taj Foundation

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

न्यू ब्रिटेन द्वीप की स्त्रियाँ मनुष्य की पसलियाँ गले में पहनती हैं। दाँतों के हार भी पहनती हैं। इन दाँतों का मूल्य ३) प्रति सैकड़ा के लगभग होता है। एक हार में प्राय: एक सहस्र दाँत होते हैं। जिस स्त्री के पास यह हार होता है वह बड़ी धनवान समझी जाती है। यूरोप के बने हुए काँच के मोतियों और नगीनों का प्रचार होने के पूर्व इन लोगों में घोंघे तथा कौड़ियों के गहने बड़े मूल्यवान समझे जाते थे। कौड़ियों और घोंघे के गहने बनाने में बड़ा समय और परिश्रम लगता था। ये लोग घोंघे और कौड़ियों को तरासने में बड़े निपुण होते हैं। यह घोंघे और कौड़ियों को इतना छोटा तराशते हैं कि एक इंच में ५० के लगभग आजाते हैं। इनको डोरे में गूँथकर लँगोट बनाते हैं। यह लँगोट बड़े मूल्यवान समझे जाते हैं और नाच के समय पहने जाते हैं।

परिच्छादन

बिस्मार्क, सुलेमान तथा बैंक द्वीपों में स्त्रियाँ बिल्कुल नंगी तक रहती हैं; परन्तु अधिकतर आगे एक झालर सी लटका लेने का चलन है। न्यू कैलीडोनिया में डोरे में एक चीथड़े का टुकड़ा बनाकर कमर में बाँध लेते हैं। ईरीमैनगोआन द्वीप में कमर से एँड़ी तक एक लहँगा पहनने का रिवाज है। नीटैंडी द्वीप में सिर से लेकर पैर तक एक चटाई का लबादा पहना जाता है। हल्दी की तरह के एक वृक्ष की चटाइयाँ सी बनाकर आगे पीछे बाँधने का चलन भी है। सबसे साधारण परिच्छादन, जोकि मेलेनीशिया के प्राय: सब द्वीपों में पाया जाता है, यह है कि एक प्रकार की बेल को डोरे की तरह कमर में लपेट लिया और घास अथवा पत्तियों का कुत्ता सा बनाकर आगे पीछे उसी बेल में खोंस लिया। न्यू आयर्लैण्ड द्वीप की स्त्रियों के चित्र में यह परिच्छादन स्पष्ट देखा जा सकता है। यह परिच्छादन ऐसा है कि प्रत्येक समय में और प्रत्येक स्थान में मिल जाया करता है। बहुधा ऐसा होता है कि जब किसी स्त्री को कोई नदी या नाला पार करके जाना होता है तो वह अपना यह परिच्छादन उतार कर

Taj Tahir Foundation

फेंक देती है और उस पार पहुँचने पर उसी समय दूसरा बनाकर पहन लेती है। एडमिरलटी द्वीप में इसी का चलन अधिक है। वहां की स्त्रियाँ सौन्दर्य लाने के लिये घास अथवा पत्तियों को रँग भी लेती हैं।

सुलेमान द्वीप में सन का लँहगा पहना जाता है। वह ४ इंच से लेकर १ फीट तक ऊँचा होता है। शार्टलैण्ड द्वीप में इसी प्रकार का एक लँहगा पहना जाता है जिसे 'वासा' कहते हैं। यह लँहगा टापू समझा जाता है। एक कलेक्टर ने इस पवित्र पोशाक को हस्तगत करने का बड़ा प्रयत्न किया; परन्तु कोई स्त्री उसे देने के लिए तैयार न हुई। अन्त में उसने बड़े प्रलोभनों द्वारा एक मुखिया की विधवा को राज़ी किया, विधवा ने चुपके से रात को जाकर उसे एक वासा दिया और उसे अपने सामने पैक करा दिया। इतने भयभीत होने का कारण यह था कि यदि द्वीप के निवासियों को यह बात मालूम हो जाती तो वे वासा बेचनेवाले और खरीदनेवाले दोनों को मार डालते।

वैंक्स द्वीप में कपड़े कम पहने जाते हैं तथापि वृद्ध स्त्रियाँ एक पतला लँगोट बाँधे रहती हैं। सांटाक्रुज़ और न्यू हैब्रिडेस द्वीपों में कपड़ों का काम चटाइयों से लिया जाता है। यह चटाइयां पत्तियों की बनाई जाती हैं। एक चटाई आगे और एक चटाई पीछे बांध ली जाती है। नारियल की पत्तियों की झालर बनाकर भी बांध ली जाती है। सबसे विचित्र परिच्छादन वेट द्वीप का है। यह चटाई की एक चौड़ी सी पेटी होती है जिसमें सफ़ेद, काले तथा लाल रंग में डायमण्ड कट का काम बनाया जाता है। इस पेटी में चटाई की एक फीट लम्बी दुम सी बांध ली जाती है जो पीछे लटकती रहती है। ठेठ फ़िजी में, जहां अभी यूरोपियन सभ्यता ने पदार्पण नहीं किया है, अब भी घास फूस और सन की पोशाक पहनी जाती है; परन्तु इधर उधर देशों में मखमल की पोशाकें व्यवहृत की जाती हैं। छाल का बना हुआ कपड़ा भी पहना जाता है; परन्तु पालीनीशिया की तरह मेलेनीशिया में वह महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता और

सुलेमान द्वीप समूह की स्त्रियाँ.
सन के लँहगे और घोंघे तथा कौड़ियों के गहने पहने हुए.

न वह उतना सुन्दर ही वनता है। केवल फ़िजी में उसका व्यवहार अधिक है; क्योंकि फ़िजी पर पालीनीशिया का प्रभाव है। फ़िजी में स्त्रियों का मुख्य कार्य टापा बनाना है।

सुलेमान द्वीप में 'पेपर मलवैरी' के लँगोट वनाकर पहने जाते हैं। सावेल द्वीप में पेपर मलवैरी के वने हुए कपड़े को नीले रंग से रँग लेते हैं और उसकी पट्टियाँ सी वनाकर कमर में लपेटते हैं। यह कपड़ा घुटनों तक लटकता रहता है। न्यू ब्रिटेन द्वीप में छाल के वने हुए कपड़े के वड़े वड़े थान वनाये जाते हैं। न्यू हैब्रिडेस में इस छाल-वस्त्र का अच्छा व्यापार होता है। न्यू कैलीडोनिया में छाल-वस्त्र का कुछ कुछ रिवाज है। विवाहित स्त्रियाँ छाल वस्त्र को काला रँग कर इस प्रकार लपेट लेती हैं कि केवल टाँगें और वक्ष-स्थल खुला रहता है। सांटाक्रुज़ द्वीप में करघों द्वारा चटाइयां वुनकर पहनी जाती हैं। कर्घे का प्रचार केवल सांटाक्रुज़ के निटैण्डी द्वीप में है। आजकल मेलेनीशिया के सव द्वीपों में, मिशनरियों की कृपा से, छींटों का रिवाज वढ़ रहा है और कपड़ों की काटछाँट भी यूरोपियन होती जारही है। लोगों का अपने प्राचीन परिच्छादन पर इतना अंध-विश्वास था कि उसको त्यागना वे अपने लिए अशुभ समझते थे। मिशनरियों को उन लोगों का यह अन्ध-विश्वास दूर करने में वड़ी कठिनाइयाँ पड़ीं। सुलेमान द्वीप में तो यूरोपियन पोशाक पर एक रंगीन रूमाल कमर में वांध लेते हैं। इस रूमाल को 'सूलू' कहते हैं। केवल प्राचीन परिच्छादन की स्मृति को जीवित रखने के लिए इस रूमाल का व्यवहार किया जाता है।

Taj Tahir Foundation

२

जन्म और बालयकाल, बालिकाओं के साथ व्यवहार, सगाई तथा विवाह, न्यू ब्रिटेन की रीति-रिवाज, बहुविवाह, नैतिक जीवन, विधवाएँ और वैधव्य, विधवाओं की हत्या, मेलेनी-शियन स्त्रियों का सामाजिक महत्व।

जन्म और बालयकाल

कन्याओं के उत्पन्न होने पर यह प्रश्न उठता है कि उन्हें जीवित रहने दिया जाय या मार डाला जाय। यदि कन्या पुत्र के साथ जुडवाँ उत्पन्न होती है तो अवश्य ही मार डाली जाती है। वह या तो जीवित ही दफ़न कर दी जाती है या समुद्र में फेंक दी जाती है। यह केवल इसलिये किया जाता है कि माता एक साथ दो सन्तानों का लालन पालन कष्टसाध्य समझती है और इसलिये भी कि दो सन्तानों का एक साथ उत्पन्न होना अशुभ समझा जाता है; परन्तु यह रिवाज मेलेनीशिया के सब द्वीपों में नहीं है। सुलेमान द्वीप में जुड़वाँ सन्तानों का उत्पन्न होना भूत-प्रेतों के बुरे प्रभाव को दूर करनेवाला समझा जाता है। वैंक्स द्वीप में जिनके यहां जुड़वाँ सन्तान उत्पन्न होती है उन्हें अपने भाग्य पर गर्व होता है। न्यू हैब्रिडेस द्वीप में भी जुड़वाँ सन्तान की उत्पत्ति बड़ी शुभ समझी जाती है।

बालिकाओं के साथ व्यवहार

यदि कन्या अकेली जन्म लेती है तो बुरी समझी जाती है। सेन क्रिस्टावेल द्वीप में तो सब सन्तानें, चाहे कन्या हों चाहे पुत्र, मार डाली जाती हैं। यहां के निवासी सन्तानों का लालन पालन एक बड़ा दुखदाई कार्य समझते हैं। इसलिये अपनी सन्तानें मार डालते हैं और दूसरे द्वीपों के ऐसे बच्चे गोद ले लेते हैं जो अपने पैरों से चल फिर सकते हैं।

साधारण तौर पर कन्याओं का जन्म अशुभ ही समझा जाता है।

Tai Tahir Foundation

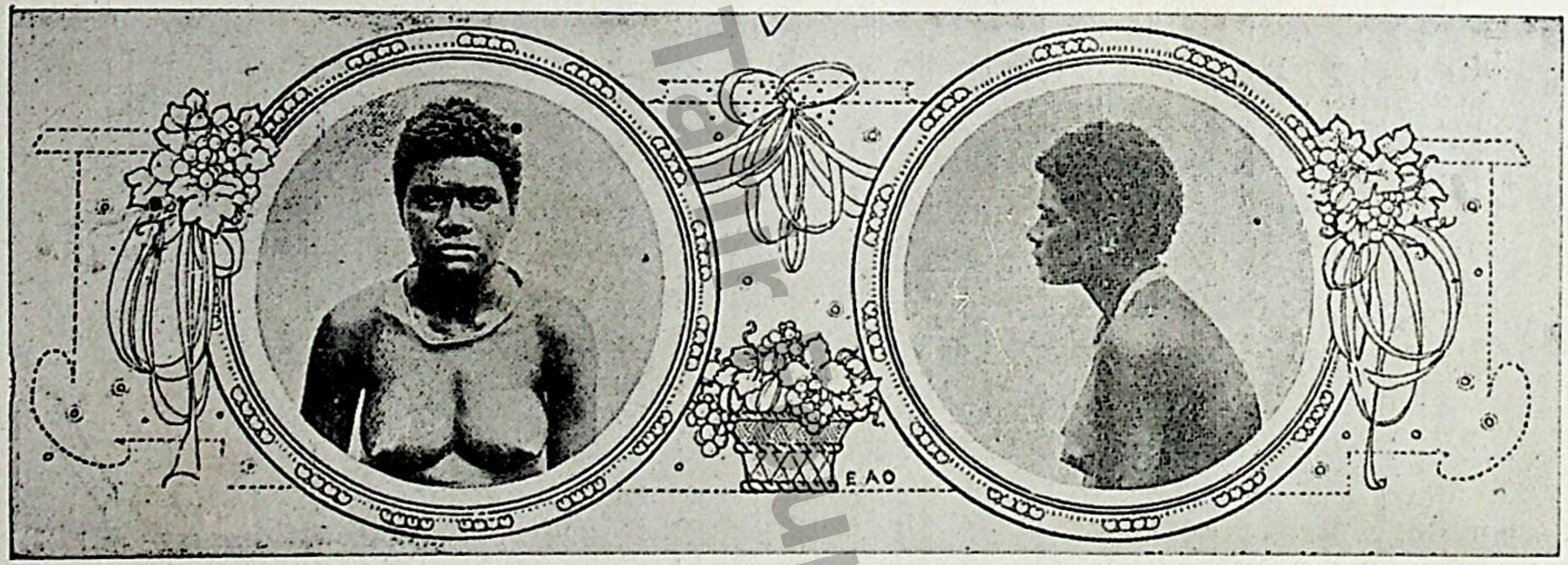

न्यू ब्रिटेन द्वीप की स्त्री.
सामने का और बगली दृश्य.

Tai Tapei
Foundation

न्यू कैलीडोनिया में स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कम उपयोगी समझी जाती हैं इसलिये कन्याएं मार डाली जाती हैं। सांटाक्रुज़ टुकोपिया द्वीप एक बहुत छोटा स्थान है इसलिये वहां प्रथम दो लड़कों को छोड़कर शेष सब लड़के मार डाले जाते हैं। इसका कारण वहां के निवासी यह बतलाते हैं कि वहां अधिक मनुष्यों के रहने के लिये स्थान नहीं है। लड़कियाँ जीवित रहने दी जाती हैं। अतएव वहां पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या तिगुनी है। वैंक्स द्वीप में भी लड़के मार डाले जाते हैं और लड़कियां जीवित रहने दी जाती हैं; क्योंकि वहां वंश लड़कियों के ही नाम से चलता है। सुलेमान द्वीप में माता को यह अधिकार रहता है कि वह अपने पुत्र की जितनी सन्तानें चाहे जीवित रखे और जितनी चाहे मार डाले। इन द्वीपों में घर के कामकाज का भार अधिकतर बड़ी बूढ़ी स्त्रियों पर रहता है। इसलिये उन्हें यह बात बुरी मालूम होती है कि वे तो कामकाज करें और उनका पुत्र और पुत्रवधू बच्चों के लालन पालन में लगे रहें। कभी कभी ऐसा होता है कि एक स्त्री जिसे सन्तान की आवश्यकता नहीं अपनी नवजात सन्तानों को जीवित दफ़न कर देती है और कोई दूसरी स्त्री जिसे सन्तान की आवश्यकता होती है निकाल कर पाल लेती है। ऐसी दशा में उसका उस बच्चे पर पूर्ण अधिकार होजाता है।

पादरी लारीमन फिशर का कथन है कि फ़िजी में क़ब्रों का वही उपयोग था जो लण्डन में वर्क हाउस का है। जिन लोगों को उनके परिवार का कोई मनुष्य किसी प्रकार से कष्टदायक होता है तो उसे जीता ही गाड़ देते थे। बच्चों के साथ भी यही व्यवहार होता था। यदि बच्चा अंगहीन, रोगी अथवा कुरूप हुआ तो उसे जीवित ही दफ़न कर देते थे। पादरी फिशन को फ़िजी के एक मुखिया ने अपने घर का एक गुप्त स्थान दिखलाकर बतलाया था कि उस स्थान में उसकी १५ सन्तानें गड़ी हुई हैं। कुछ तो अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरी थीं और शेष अनुपयोगी होने के कारण जीवित ही गाड़ दी गई थीं। इस मुखिया की ५० पत्नियाँ थीं।

Taj Tahir Foundation

फ़िजी की दो स्त्रियाँ.

यूरोपियन फ्राक और देशी लहँगा पहने हुए.

ऊपर की स्त्री यूरोपियन पिता और फ़िजियन माता के संसर्ग से उत्पन्न हुई है.

मेलेनीशिया के कुछ स्थानों में बच्चों की हत्या बिल्कुल नहीं की जाती। कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ बच्चों की हत्या केवल आर्थिक कष्ट के कारण की जाती है। बड़ी विचित्र बात तो यह है कि जहाँ ये लोग अपने बच्चों को मार डालना एक खेल समझते हैं वहीं अपने जीवित बच्चों के प्रति वे उतना ही प्रेम तथा स्नेह प्रकट करते हैं जितना कि कोई सभ्य से सभ्य जाति का आदमी कर सकता है। पावेल द्वीप के एक निवासी ने पादरी शैलविन के पास एक पत्र भेजा था, उसमें लिखा था, 'पिता, मैं आपको लम्बा पत्र नहीं लिख सकता; क्योंकि इस समय मैं बड़े दुःख में हूँ। मेरा इकलौता बच्चा खाँसी के रोग में मर गया है। मैंने अपनी समझ में ईश्वर के विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया फिर भी उसने मेरा प्यारा बच्चा मुझसे छीन लिया। इस समय मेरे बराबर अभागा संसार में दूसरा न होगा'।

छोटे बच्चे कभी कभी यूरोपियनों के हाथ बेच डाले जाते हैं। न्यू कैलीडोनिया का कोई भी मनुष्य यूरोपियनों को अपनी कन्या केवल एक बन्दूक़ के बदले में दे देता है; परन्तु ऐसा व्यापार की दृष्टि से कम होता है। बेचे वे ही बच्चे जाते हैं जिन्हें उनके माता पिता अपने लिये अनुपयोगी समझते हैं।

पुत्र की उत्पत्ति पर मेलेनीशियन लोग पक्षी तथा सुअर की भेंट चढ़ाते हैं। न्यू हैब्रिडेस में बच्चा जब १० दिन का होता है तब पिता बच्चे की चीज़ें समुद्र में धोने लेजाता है। यदि पुत्र हुआ तो पिता रास्ते में खिलौनेरूपी तीर कमान बखेरता जाता है। इससे उनका यह तात्पर्य होता है कि लड़का तीर कमान चलाने में निपुण हो। यदि लड़की हुई तो सन बखेरता जाता है जिसमें लड़की चटाई बुनने में निपुण हो।

मेलेनीशिया में कन्याओं का विवाह १० वर्ष की उम्र में कर दिया जाता है। इसका कारण यह है कि वहाँ कन्याएँ १० वर्ष की वयस ही में विवाह

सगाई तथा विवाह

योग्य होजाती हैं। कभी कभी कन्याओं का विवाह सात आठ वर्ष की ही वयस में कर दिया जाता है। न्यू हैब्रिडेस में जब कन्या विवाह के योग्य होती है तब उसके सामने के दाँत उखाड़ दिये जाते हैं। डा० कैलियट के सामने एक कन्या ने अपने दाँत उखड़वाना अस्वीकार कर दिया था इसलिये उसे अविवाहित ही रहना पड़ा और वह लोगों की दृष्टि में पतित होगई; परन्तु यह प्रथा दो ही तीन स्थानों में है।

न्यू आयर्लैण्ड द्वीप में कन्या के विवाह योग्य होने के समय तक वह एक छोटे पिंजड़े में बन्द की जाती है।प्राय: कई कन्याएँ अलग २ पिंजड़ों म एक साथ एक ही स्थान में रखी जाती हैं और एक वृद्धा स्त्री पहरा दिया करती है। यह प्रथा केवल अमीरों में प्रचलित है। ग़रीबों की कन्याएँ वक्ष-स्थल पर केवल एक झालर सी लटकाये रहती हैं। यह झालर उनके अविवाहित होने की सूचक होती है। जब तक कन्या पिंजड़े में बन्द रहती है तब तक वह टापू समझी जाती है। उसे भूमि पर पैर रखने की आज्ञा नहीं दी जाती। मि० ब्राउन नामक यात्री ने रिश्वत देकर इन कन्याओं को देखा था; क्योंकि टापू होने के कारण उनके पास कोई मनुष्य, यहाँ तक कि उन के रिश्तेदार तक, नहीं जाने देने पाते थे। मि० ब्राउन ने पिंजड़े को अन्दर से देखने की इच्छा प्रकट की थी; परन्तु पिंजड़े के अन्दर की वायु इतनी गर्म तथा दम घुटानेवाली थी कि वह ऐसा न कर सके। उनके पूछने पर बताया गया कि इनके इस प्रकार के रहने पर भी कोई कन्या नहीं मरती। बीमार अवश्य हो जाती है, पर तौ भी उसे नहीं निकलने दिया जाता।

बाल विवाह

कुलीन वंश की कन्याओं का विवाह उनके उत्पन्न होते ही कर दिया जाता है। कभी कभी उनके जन्म लेने के पूर्व ही उनकी सगाई कर दी जाती है। जिसके यहाँ लड़का उत्पन्न होता है वह किसी कुलीन परिवार की गर्भवती स्त्री से यह शर्त करा लेता है कि यदि उसके कन्या उत्पन्न हुई तो उसका विवाह उस व्यक्ति

के लड़के के साथ किया जायगा। न्यू ब्रिटेन द्वीप में जब लड़का १४ वर्ष का होता है तब उसका चाचा उसके लिये एक अष्टवर्षीया कन्या मोल ले लेता है। न्यू हैब्रिडेस द्वीपमें साधारणतया सात आठ वर्ष की कन्या का विवाह उन्नीस

न्यू कैलीडोनिया की स्त्री.

Taj Tahir Collection

बीस वर्ष के लड़के के साथ किया जाता है। बहुधा ऐसा होता है कि लड़की समझदार होने पर अपने पति को पसन्द नहीं करती और किसी दूसरे पुरुष के साथ भाग जाती है। ऐसी दशा में वर तथा कन्या पक्ष की ओर से जो चीज़ें विवाह के समय दी जाती हैं उन पर परस्पर बड़ा झगड़ा होता है।

न्यू कैलीडोनिया में वर को चुनने का कार्य कन्या के माता पिता तथा रिश्तेदार करते हैं; परन्तु अमीर घरानों में वर को चुनने का कार्य लड़की पर ही छोड़ दिया जाता है। लड़की वर को इस प्रकार चुनती है। बहुत से पुरुष एक क़तार में उसके सामने खड़े होजाते हैं। एक बड़े पत्ते पर नारियल की गिरी के टुकड़े रख दिये जाते हैं। प्रत्येक पुरुष टुकड़े का कुछ भाग खाकर शेष भाग पत्ते पर रख देता है। लड़की जिसे पसन्द करती है उसका खाया हुआ गिरी का टुकड़ा खाजाती है। उसके ऐसा करते ही उसका विवाह उसी पुरुष के साथ कर दिया जाता है। पुरुष कन्या पक्ष वालों को जितना रुपया वे माँगते हैं देकर कन्या को अपने साथ लेजाता है।

जब विवाह बहुत थोड़ी अवस्था में होता है तो यह उचित समझा जाता है कि वर तथा कन्या एक दूसरे से भलीभाँति परिचित होजायें। ऐसा करने के लिये कन्या को वर के घर भेजते हैं। कन्या कुछ दिनों वर के पास रह कर वर तथा वर के परिवार के साथ परिचय प्राप्त करती है। उत्तरी न्यू हैब्रिडेस में बहुधा विवाह के पूर्व कन्याओं का लालन पालन भी कन्या के ससुराल वाले ही करते हैं। कन्याएँ इतनी थोड़ी वयस में ससुराल भेज दी जाती हैं कि बड़े होने पर वर तथा कन्या एक दूसरे को भाई बहिन समझते हैं। जब उनको अपने असली रिश्ते का ज्ञान होता है तब बड़ा आश्चर्य होता है। आवोवा में कन्या दस वर्ष की वयस में अपने भावी पति के घर भेज दी जाती है। वहाँ उसकी सास उसे गृह-कार्य की शिक्षा देती है। जब वह विवाह योग्य होजाती है तब अपने मायके चली आती है। मायके आने पर उसके गुदना गोदा जाता है तत्पश्चात् विवाह किया जाता है।

Taj Tahir Foundation

न्यू ब्रिटेन की रीति रिवाज

न्यू ब्रिटेन द्वीप में भी विवाह वहुत थोड़ी वयस में किया जाता है जिस से कि जंव तक कन्या का पति वृद्ध हो तव तक वह किश्तों द्वारा कन्या के पिता को उतनी रक़म अदा करदे जितनी कि उसने विवाह के समय देने का वचन दिया है। यह रक़में वहुधा लम्वी होती हैं। इसीलिये इनकी अदायगी किश्तों द्वारा की जाती है। जव दम्पत्ति यथेष्ट वड़े होजाते हैं और कन्या के पिता को अपने जामात्र से एक दो किश्तें मिल जाती हैं तो पति अपनी पत्नी के लिये किसी झाड़ी में घर वनाता है और उसके वाद उसे भगा लेजाता है। उस समय कन्या का पिता वड़े क्रोध में आकर जोकि वहुधा रसूम अदा करने के लिए वनावटी होता है, अपने मित्रों को इकट्ठा करता है और अपने जामात्र की हत्या करने के लिए खोजने निकलता है। नियमानुसार दामाद उसे नहीं मिलता और वह उसका घर फूँककर लौट आता है। इसके पश्चात् दम्पत्ति गाँव में आकर वस जाते हैं। कभी कभी जव कन्या के पिता को ठीक समय पर किश्तों का रुपया नहीं मिलता अथवा कम मिलता है तो वह उपर्युक्त कार्य वनावटी रूप से न करके सच्चे रूप से करता है और उस दशा में दम्पत्ति को उस समय तक गाँव में वसने की आज्ञा नहीं दी जाती जव तक कि किश्त का रुपया अदा नहीं होजाता।

जव किसी युवक का विवाह उसके पूर्णवयस्क होजाने पर भी नहीं होता तव उसे यह अधिकार प्राप्त होता है कि वह अपने लिये स्वयं कोई स्त्री ढूँढ़ ले; परन्तु इस कार्य में कई वाधाएँ होती हैं। स्त्री पसन्द करने के पूर्व प्रथम तो उसे गाँव के मुखिया की आज्ञा लेनी पड़ती है। वहुधा मुखिया ऐसे युवकों के लिये जो इतने ग़रीव होते हैं कि अपना विवाह नहीं कर सकते अपने पास से रुपये देकर उनका विवाह कर देता है। दूसरी अड़चन यह होती है कि प्रत्येक जाति में दो श्रेणियाँ होती हैं। पुरुष केवल उसी स्त्री से विवाह कर सकता है जोकि उसकी श्रेणी में नहीं है, अर्थात् पुरुष अपनी श्रेणी की स्त्री से विवाह नहीं कर सकता। यह प्रथा ठीक वैसी ही है जैसी कि भारत में एक

Taj Tahir Foundation

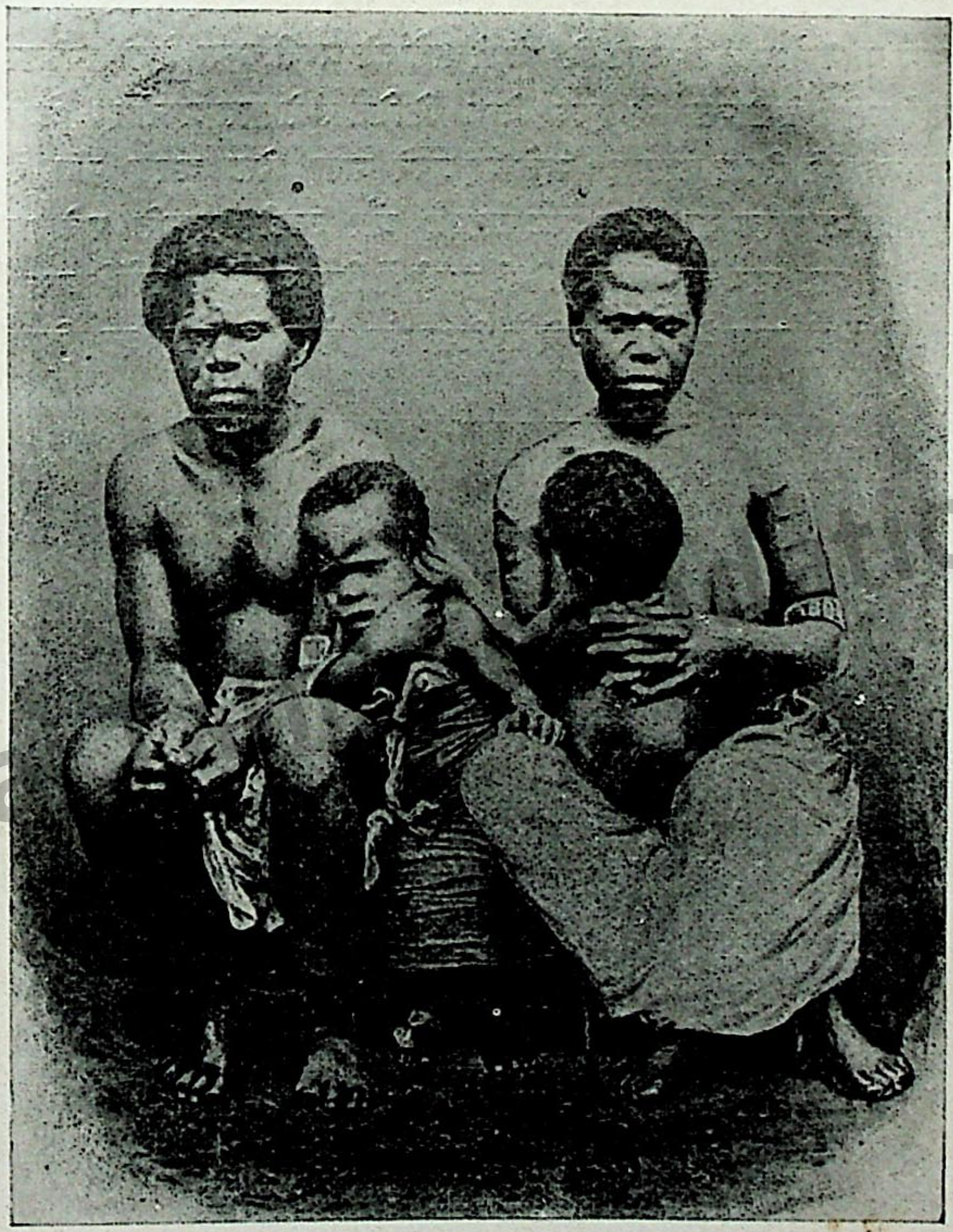

न्यू हैब्रिडेस का एक परिवार.

ही गोत्र में विवाह न करके भिन्न गोत्र में विवाह किया जाता है। परन्तु जब पुरुष ग़रीब होता है तो उससे भिन्न श्रेणी वाले उसे अपनी कन्या देना स्वीकार नहीं करते। ऐसी दशा में पुरुष निम्न लिखित रीति द्वारा अपनी ही श्रेणी की कन्या से विवाह करता है। पहले वह अपने माता पिता अथवा गाँव के मुखिया पर अपना यह विचार प्रकट करता है और उनकी अनुमति पाने पर गाँव के बाहर भाग जाता है और किसी झाड़ी में छिप जाता है; क्योंकि अपनी ही श्रेणी की कन्या से विवाह करने में नियम भंग होता है और इस नियम

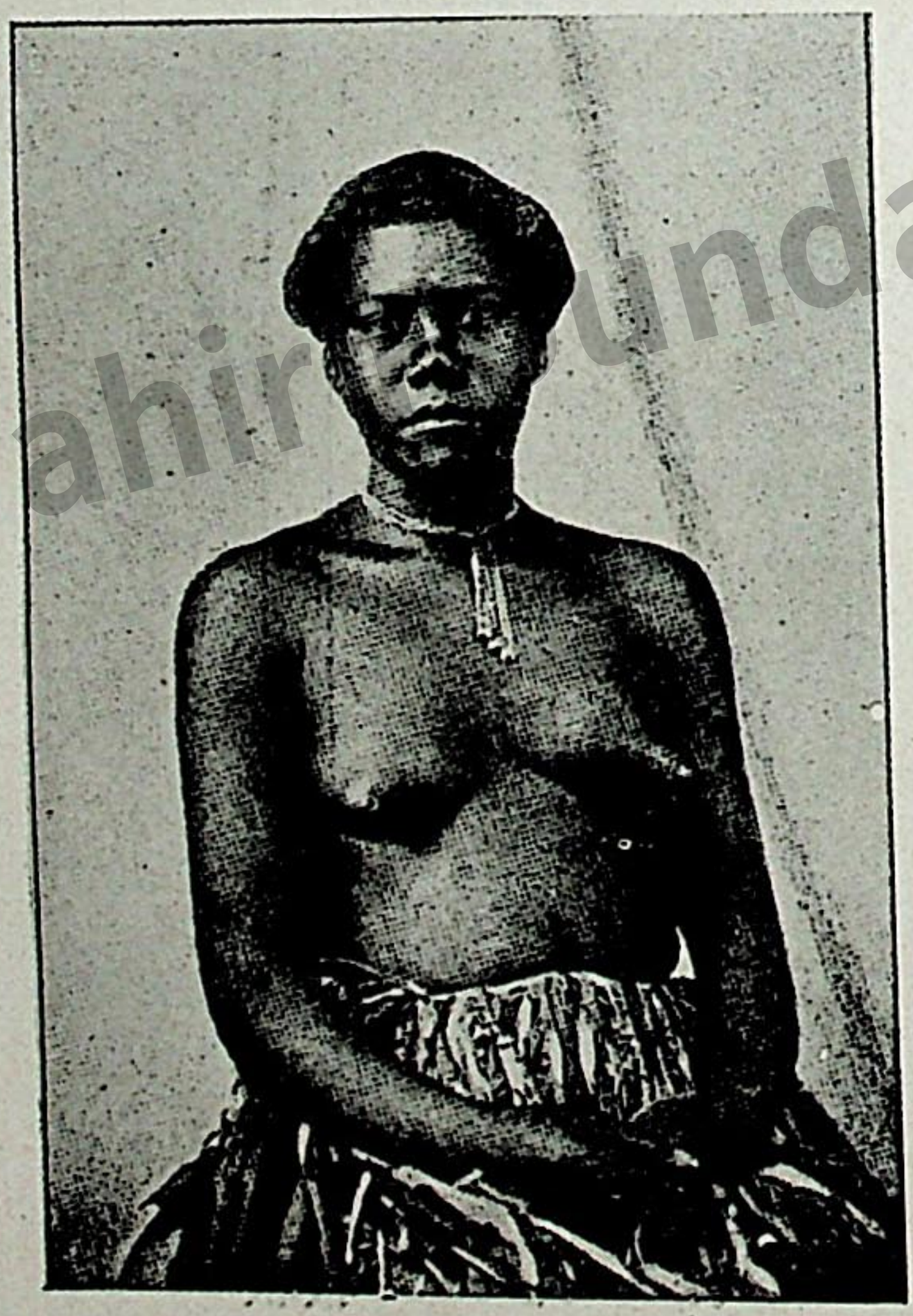

फ़िजी द्वीप की स्त्री.

Taj Tahir Foundation

भंग से उसके मृत पुरुषों की आत्माएँ क्रुद्ध होती हैं, अतएव उनके क्रोध से अपने को सुरक्षित रखने के लिए वह झाड़ी में छिपता है। उसके छिप जाने पर उसके रिश्तेदार लड़की के रिश्तेदारों से बातचीत पक्की करते हैं। बातचीत पक्की होजाने पर विवाह का दिन निश्चित होता है। जो दिन निश्चित होता है उस दिन लड़की के रिश्तेदार उसे उसकी ससुराल लेजाते हैं। वहाँ खूब खाना पीना तथा नाच होता है। परन्तु उस अवसर पर दूल्हा की शक़ल देखने को नहीं मिलती। वह बेचारा अपने प्राण लिये हुए झाड़ी में दबा पड़ा रहता है। लड़की के रिश्तेदार खा-पीकर तथा नाच कूदकर अपने घर चले जाते हैं और लड़की को उसकी ससुराल में छोड़ जाते हैं। इसके पश्चात् दूल्हा की तलाश होती है और उसे ढूँढकर घर लाते हैं।

मेलेनीशिया के कुछ स्थानों में कन्याएँ स्वयं विवाह का प्रस्ताव करती है। न्यू ब्रिटेन के सुलका स्थान में कन्या जिस पुरुष को पसन्द करती है उससे विवाह करने की इच्छा अपने माता पिता पर प्रकट करती है। उसका पिता उसकी इच्छा पूर्ण करने के लिये बाध्य होता है। अतएव वह उस पुरुष के पास जाकर उससे विवाह की प्रार्थना करता है। यदि पुरुष की इच्छा हुई तो वह उसे स्वीकार कर लेता है और अपने भावी ससुर के साथ उसके घर जाता है। वर के घर में पैर रखते ही कन्या वर के गले में हार डाल देती है और उसे कुछ खाद्य पदार्थ भेंट करती है। वर के इन चीज़ों के स्वीकार कर लेने पर घरेलू सगाई पक्की समझी जाती है। इसके पश्चात् वर अपने घर लौट आता है और कन्या का दिया हुआ हार अपने माता पिता को दे देता है। उसके माता पिता उसे हार के बदले में कुछ चीज़ें देते हैं जिन्हें ले जाकर वह अपनी भावी पत्नी को देता है। पत्नी वे चीज़ें अपने माता पिता को दे देती है। इसके पश्चात् वर अपनी ससुराल में रहने लगता है। जितने दिन वह ससुराल में रहता है उतने दिनों में दम्पत्ति के लिए कुछ खेती बो दी जाती है। खेती के तैयार होने पर सगाई का दिन निश्चित होता है। उस

Taj Tahir Foundation

दिन गाँव को एक भोज दिया जाता है और सगाई खुले तौर पर पक्की हो जाती है। इसके पश्चात् लड़की अपनी ससुराल भेज दी जाती है। वहां उसे मकान के पीछे एक कोठरी में वन्द कर देते हैं। उसके साथ उसकी कुछ सहेलियाँ, वहुधा उसकी वहिनें होती हैं, वन्द कर दी जाती हैं। उस दिन से लेकर विवाह के दिन तक उसे माँस मछली खाने की आज्ञा नहीं होती। न वह कोई चीज़ स्वयं पका सकती है और न अपना भोजन अपने हाथों से खा सकती है। उसकी सहेलियाँ उसके लिए भोजन वनाती हैं और उसे अपने हाथों से खिलाती हैं। इस पर किसी अन्य पुरुष की दृष्टि नहीं पड़ने दी जाती इसीलिये वह वाहर नहीं निकाली जाती। यदि कोई विशेष आवश्यकता पड़ने पर निकाली भी जाती है तो सिर से पैर तक केले की पत्तियों के लवादे से ढक दी जाती है और जव तक वाहर रहती है सीटी वजाती रहती है जिसमें कि सीटी का शब्द सुनकर पुरुष उसके सामने से हट जाय। इस एकान्तवास काल में उसके गुदना गोदा जाता है। इसी वीच में उसका भावी पति अपने लिए घर वनाता है। जव यह सव कार्य सम्पूर्ण होजाते हैं तव विवाह का दिन नियत होता है। विवाह के दिन खूव खाना पीना तथा नाच गाना होता है। विवाह होजाने पर दम्पति अपने नये घर में रहने लगते हैं।

न्यू हैब्रिडेस के एम्ब्रीम स्थान में जव कन्या इतनी वड़ी होजाती है कि अपने पैरों चल सकती है तव उसे चार पाँच सुअरों के वदले में वेंच डालते हैं। ग्राहक को अधिकार रहता है कि वह उसे उसी समय लेजाय। वहुधा ऐसा होता है कि कन्या ख़रीदं लेने के वाद वह अपने माता पिता के ही यहां छोड़ दी जाती है और जव वह वारह तेरह वर्ष की होजाती है तव ग्राहक उसे लेजाता है।

मेलेनीशिया में विवाह केवल पुरुष की आर्थिक अवस्था पर निर्भर होता है। वह जितना ही धनी होता है उसका विवाह उतनी ही सरलता के

फ़िजी के बैटोवा स्थान की स्त्रियाँ.

दो स्त्रियाँ सिर में चूने का लेप किये हुए हैं.

साथ होजाता है। सन् १६२१ में फ्लोरीडा (सुलेमान द्वीप समूह) की 'वौकोलू' (पार्लमेण्ट) में इस वात पर वड़ी वहस हुई कि पत्नियों की कोई निश्चित क़ीमत रखी जाय। स्त्रियाँ इतनी महँगी थीं कि केवल धनवान ही विवाह कर सकते थे। एक व्यक्ति ने घोंघो और कौड़ियों की १५० मालाएँ तथा एक सहस्र दाँत लेकर अपनी कन्या का विवाह किया था। यह क़ीमत उसकी दृष्टि में वहुत अधिक थी, अतएव यह प्रस्ताव रखा गया कि किसी व्यक्ति को अपनी कन्या के विवाह में ३० मालाओं से अधिक लेने का अधिकार न हो। यदि किसी मुखिया के साथ कन्या का विवाह हो तो कन्या के पिता को ५० मालाएँ तक लेने का अधिकार हो सकता है। यह प्रस्ताव पास हो गया। परन्तु इससे स्त्रियाँ वड़ी असन्तुष्ट हुईं; क्योंकि उन्हें यह वात वुरी लगी कि उनकी दर घटा दी गई। उन्होंने कुछ दिनों तक पुरुषों से वातचीत करना वन्द कर दिया था।

न्यू हैब्रिडेस द्वीप में, जहाँ रुपयों के स्थानों में शूकरों के देन लेन का व्यवहार होता है, एक पत्नी दस वारह शूकर में ख़रीदी जा सकती है। कन्याओं की क़ीमत उनकी कार्य कुशलता के अनुसार रहती है। सौन्दर्य को कार्य कुशलता के सामने कोई महत्व नहीं दिया जाता।

लायलटी [illegible]हाज़ वनाने का काम खूव करते हैं, पर उनके द्वीप में लकड़ी की कमी है। न्यू कैलीडोनिया में लकड़ी का आधिक्य रहता है और वहाँ के लोग लायलटी द्वीप की स्त्रियों को इसलिये वहुत अधिक पसन्द करते हैं कि वे सुन्दर होने के साथ साथ वड़ी कार्य कुशल होती हैं। अतएव लायलटी द्वीप के निवासी न्यू कैलीडोनिया द्वीप वालों के साथ अपनी कन्याओं का विवाह तव करते हैं जव उनसे एक नौका लकड़ी ले लेते हैं।

स्त्रियों को भी अपनी क़ीमत पर गर्व रहता है। जिस स्त्री का विवाह जितनी ही अधिक क़ीमत पर किया जाता है उतना ही अधिक उस स्त्री को अपने वड़प्पन पर गर्व होता है। परन्तु अव शिक्षा के कुछ कुछ फैलने से स्त्रियों

फ़िजी द्वीप की स्त्री.

के हृदय में यह भावना उत्पन्न होचली है कि क़ीमत लेकर विवाह करना बुरी बात है।

बहु विवाह

मेलेनीशिया में बहु विवाह की प्रथा बहुत कम है और उसका सब से बड़ा कारण यही है कि वहाँ बिना कन्या के पिता की मुट्ठी गरम किये विवाह हो ही नहीं सकता। वहाँ एक से अधिक विवाह वही करते हैं जो यथेष्ट धनवान हैं। बहुधा एक से अधिक विवाह दो कारणों से नहीं होते। एक तो पति पत्नी में प्रेम होने के कारण। दूसरे लड़ाई झगड़ा होने के भय के कारण; क्योंकि जहाँ एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं वहाँ नित्य ही झगड़ा हुआ करता है।

आवोवा में यह रिवाज़ है कि कोई पुरुष अकेले होने के कारण किसी वृद्धा से, जो बहुधा विधवा होती है, विवाह कर लेता है। मेलेनीशिया में सर्वत्र यही प्रथा है कि जब कोई पुरुष मर जाता है तो उसकी पत्नी पर उसके भाई अथवा भतीजे का अधिकार होजाता है। अर्थात् मृत पुरुष की विधवा को अपने भाई तथा भतीजे की पत्नी बन कर रहना पड़ता है। इस प्रकार एक दीर्घजीवी पुरुष अपनी वृद्धा अवस्था तक अनेक स्त्रियों का पति हो जाता है; परन्तु इनमें से सबसे वह पति का सा व्यवहार नहीं रख सकता। अधिकांश का वह केवल नाममात्र का पति होता है। वह सच्चा पति उन्हीं विधवाओं का होता है जो युवती होती हैं।

यह कहा जा चुका है कि मेलेनीशिया में विवाह वर तथा कन्या की बाल्यावस्था में ही कर दिया जाता है, अतएव बहुधा ऐसा होता है कि पूर्णवयस्क होने पर पुरुष अपनी उस पत्नी से, जिसका विवाह बाल्यावस्था में हुआ है, किसी कारण वश असन्तुष्ट रहता है। न्यू ब्रिटेन द्वीप में यदि कोई पुरुष एक पत्नी के रहते द्वितीय विवाह कर लेता है तो एक विचित्र रसूम होती है। विवाह होने के दूसरे दिन दोनों पत्नियां अपने शरीर पर लाल रंग पोत कर समुद्र के किनारे जाती हैं और आपस में खूब लड़ती हैं—प्रत्येक

Taj Tahir Foundation

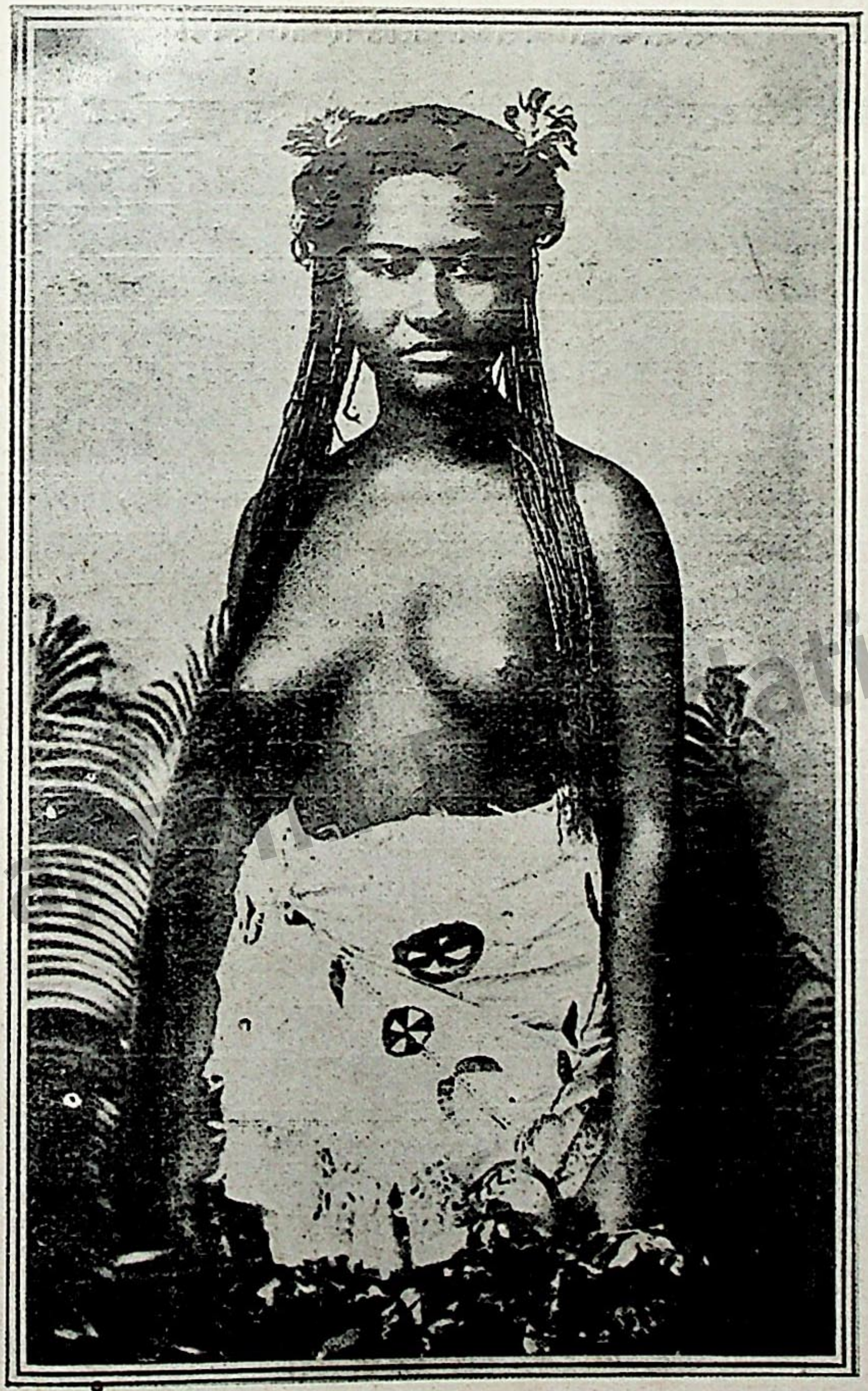

फ़िजी द्वीप की अविवाहिता युवती.
अविवाहिता स्त्रियों की तरह बाल सँवारे हुए.

स्त्री दूसरे को समुद्र में ढकेल देने की चेष्टा करती है। ऐसा बहुधा केवल रस्म पूरी करने के लिए बनावटी रूप से हुआ करता है। परन्तु जब कभी दोनों स्त्रियों में ईर्ष्या की मात्रा अधिक होती है तो यह बनावटी लड़ाई असली रूप धारण कर लेती है। इस लड़ाई का हेतु यह समझा जाता है कि जिसमें इस प्रकार लड़ लेने पर उनमें भविष्य में लड़ाई झगड़े की इच्छा न उत्पन्न हो। दूसरी पत्नी के आने पर भी घर में पहली पत्नी का ही अधिकार रहता है।

नैतिक जीवन

लोगों का विश्वास है कि मेलेनीशिया एक जंगली देश है, वहाँ के निवासी जंगली हैं, इस लिए वहाँ धर्मनीति का सर्वथा अभाव है; परन्तु बात ऐसी नहीं है। मेलेनीशिया में व्यभिचार बहुत बुरा समझा जाता है। इस बात का बड़ा ध्यान रखा जाता है कि सगाई होजाने के बाद कन्याएँ भ्रष्ट न होने पाएँ। उन पर बड़ी कड़ी देखरेख रखी जाती है। उनको अकेले बाहर नहीं निकलने दिया जाता। जो व्यक्ति किसी युक्ति से कन्याओं को भ्रष्ट कर भी देता है उसे, भेद खुलजाने पर, मृत्यु दण्ड दिया जाता है; परन्तु इतना होते हुए भी इनका नैतिक जीवन एक निराले ही ढंग का है। सुलेमान द्वीप में कन्या, पूर्ण वयस्क होने पर, जितने ही अधिक पुरुषों के संसर्ग में रहे उतनी ही उसकी क़ीमत बढ़ जाती है; परन्तु विवाह होजाने के पश्चात् वही कन्या यदि किसी दूसरे पुरुष से व्यभिचार करे तो उसे मृत्यु दण्ड तक दिया जा सकता है। इन जंगली देशों में भी पवित्रता प्रत्येक दशा में अच्छी समझी जाती है। पवित्र कुटुम्बों का खूब आदर तथा सम्मान होता है और उन कुटुम्बों की अपेक्षा जिनमें पवित्रता का ध्यान अधिक नहीं रखा जाता, अधिक प्रतिष्ठित समझे जाते हैं।

न्यू ब्रिटेन द्वीप में किसी की पत्नी यदि व्यभिचार करने पर अग्रसर होती है तो उसे तुरन्त मार डालते हैं। यदि पुरुष का अपराध समझा जाता है तो

Taj Tahir Foundation

उसे गर्दन मरोड़ कर मार डालते हैं। न्यू ब्रिटेन के उत्तरी भाग में स्त्रियों को दण्ड देने की प्रथा नहीं है चाहे स्त्री ही पुरुष को व्यभिचार करने के लिए प्रेरित करे, परन्तु दण्ड केवल पुरुष ही पाता है। इन लोगों में धन लोलुपता बहुत है, इसलिए कभी कभी ऐसा भी होता है कि कोई पुरुष, किसी की पत्नी के साथ व्यभिचार करने पर भी, केवल इसलिए छोड़ दिया जाता है कि वह उस स्त्री के पति को कुछ धन दे देता है। यदि वह धन नहीं दे सकता अथवा धन देने का वचन देने पर अपने वचन का पालन नहीं करता तो उसका घर फूँक दिया जाता है। उसके साथ ही साथ उसके पड़ोसियों के भी दो चार घर इसलिए फूँक दिये जाते हैं कि उन्होंने उसको अपना वचन पालन करने के लिए विवश नहीं किया। यदि इस पर भी वह व्यक्ति रुपये अदा नहीं करता तो उसके रिश्तेदारों के घर भी फूँक दिये जाते हैं और उसकी खेती नष्ट भ्रष्ट कर दी जाती है। जब तक वह व्यक्ति अथवा उसका कोई शुभचिन्तक रुपये अदा नहीं कर देता तब तक उसे चैन नहीं लेने देते।

सुलेमान द्वीप में व्यभिचारिणी स्त्री को एक वृक्ष से बाँध देते हैं और प्रत्येक पुरुष का यह अधिकार होता है कि वह उस स्त्री के कम से कम एक बाण मारे; परन्तु यदि स्त्री बाणों की मार खाने पर भी जीवित रहती है तो उसे छोड़ देते हैं और फिर उसे कोई पतित नहीं समझता। तलाक़ देने की प्रथा भी खूब है। तलाक़ केवल पुरुष अथवा स्त्री की इच्छा पर निर्भर है; परन्तु स्त्री की अपेक्षा पुरुष को तलाक़ देने की अधिक सुविधा रहती है। यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी से अच्छा व्यवहार नहीं करता तो पत्नी अपने मायके चली जाती है। ऐसी दशा में स्त्री के पिता को वह रुपया लौटाना पड़ता है जो उसने विवाह के समय अपने दामाद से लिया है। यदि विवाह हुए अधिक समय व्यतीत हो चुका है तो पूरा रुपया नहीं लौटाया जाता; विवाह होने के पश्चात् जितने समय तक स्त्री अपने पति की सेवा कर चुकी है उतने दिन का रुपया काट लिया जाता है; परन्तु इसके पूर्व दोनों में मेल कराने की पूरी चेष्टा कर ली जाती है।

Taj Tahir Collection Foundation

किसी भी विधवा को स्वतन्त्र रहने का अधिकार नहीं दिया जाता है। वह या तो अपने मृत पति के भाई की पत्नी होकर रहती है और यदि वह उसे नहीं रखना चाहता तो उसका चाचा या भतीजा उसे अपनी पत्नी बनाकर उसकी रक्षा करता है। सुलेमान द्वीप समूह में कुछ स्त्रियाँ अपने पति की मृत्यु पर आत्म-हत्या तक कर लेती हैं।

विधवाएँ और वैधव्य

न्यू हैब्रिडेस में पहले विधवा को इसलिए मार डालते थे कि वह स्वर्ग में भी अपने पति के साथ रहकर उसकी सेवा करे। पति के दम निकलते ही स्त्री मार डाली जाती थी और दोनों को एक साथ दफ़न करते थे, जिसमें दोनों साथ ही साथ स्वर्ग जायें। विधवाएँ भी अपने प्राण बचाने की कोई चेष्टा न करती थीं। मिशनरियों ने कई बार विधवाओं के प्राण बचाने की चेष्टा की और उन्हें इस बात का यथेष्ट अवसर दिया कि यदि वे चाहतीं तो बच सकती थीं; परन्तु कोई भी विधवा इस प्रकार अपने प्राण बचाने को राज़ी न हुई। क्योंकि इस प्रकार प्राण तो बच जाते पर वह स्त्री अपने समाज में घृणा की दृष्टि से देखी जाती। अतएव विधवाएँ घृणापात्र बनने की अपेक्षा मृत्यु को अधिक अच्छा समझती हैं।

विधवाओं की हत्या

फ़िजी द्वीप में भी विधवाओं को मार डालना आवश्यक समझा जाता है; क्योंकि उनकी समझ में किसी भी पुरुष की आत्मा उस समय तक स्वर्गद्वार में पाँव नहीं रखने पायेगी जब तक कि उसकी पत्नी की आत्मा उसके साथ न होगी।

जब कोई स्त्री मरती है तब उसके पति की दाढ़ी काट कर उसकी बाईं ओर रख देते हैं। पति की दाढ़ी काट कर रखने से इनकी समझ में यह लाभ होता है कि जब मृत की आत्मा स्वर्गद्वार पर पहुँचती है तब स्वर्ग-द्वार का रक्षक, जिसे ये लोग 'नंगा नंगा' कहते हैं; स्त्री से पूछता है 'तेरा पति कहाँ है' स्त्री बग़ल से उसकी दाढ़ी निकाल कर नंगा नंगा को दिखाती है और कहती है 'वह नहीं आया है पर उसने अपनी दाढ़ी दी है'। दाढ़ी देखते

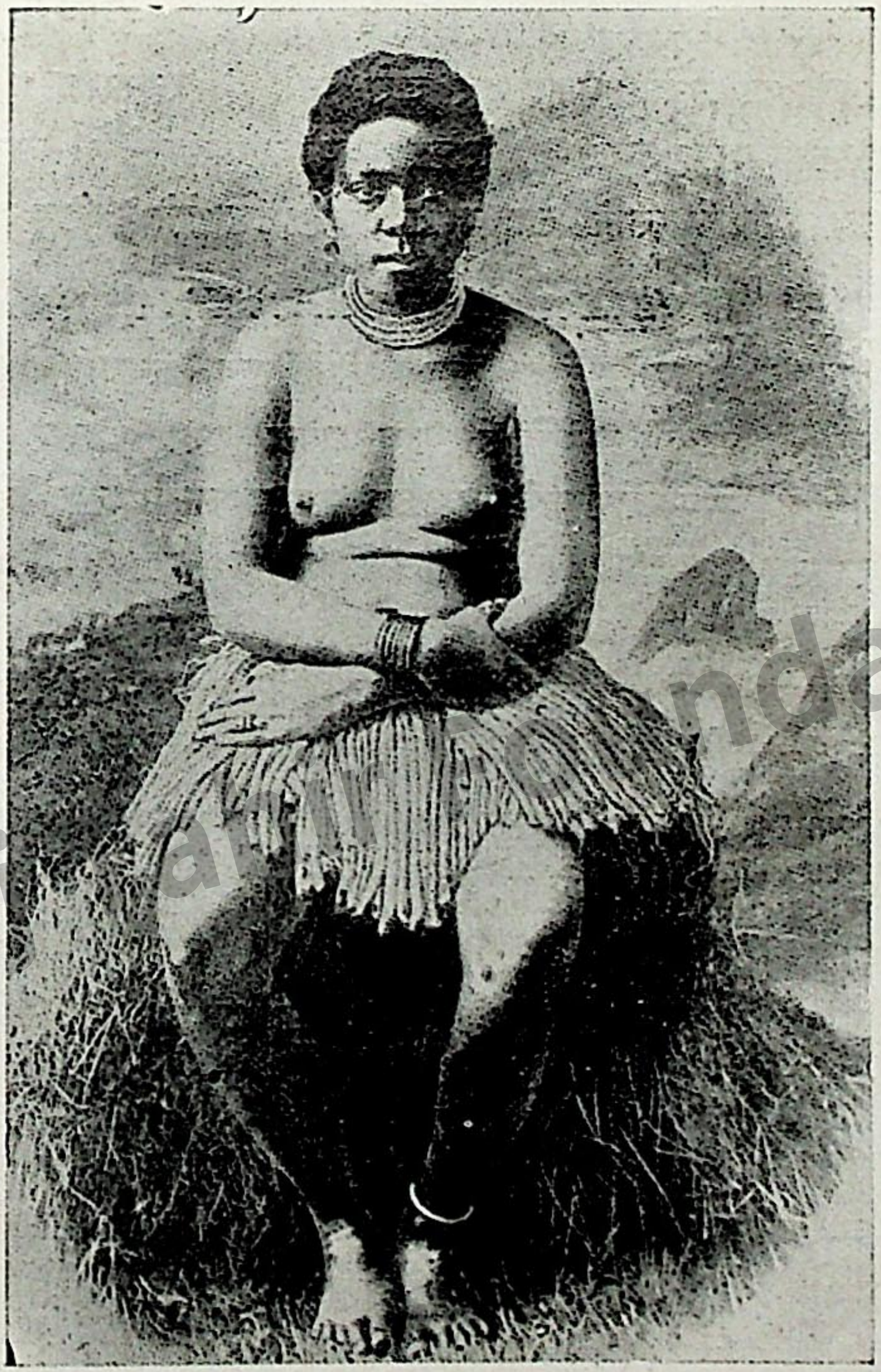

सुलेमान द्वीप समूह की युवती.

Tamil Foundation

ही नंगा नंगा उसके लिए स्वर्ग का द्वार खोल देता है। वृद्ध और ऐसे मनुष्य जो कुछ काम नहीं कर सकते हैं वहुधा मार डाले जाते हैं। सुलेमान द्वीप में केवल वृद्ध पुरुष मार डाले जाते हैं और वृद्ध स्त्रियाँ जीवित रहने दी जाती हैं; क्योंकि वृद्धाएँ गृहकार्य चलाने तथा युवतियों को शिक्षा देने के लिए उपयोगी समझी जाती हैं।

मेलेनीशियन स्त्रियों का सामाजिक महत्व

अन्य जंगली जातियों की तरह मेलेनीशियन स्त्रियों को केवल भोगविलास की सामग्री समझते हैं। पुरुष अपना समय शिकार खेलने, व्यायाम करने, इधर उधर गपशप लड़ाने तथा सोने में व्यतीत करते हैं। स्त्रियाँ खाद्य पदार्थ जुटाती हैं, घर का कामकाज करती हैं और इनसे अवकाश पाने पर पति की सेवा करती हैं। परन्तु इतना होते हुए भी कुछ वातों में इन जंगली स्त्रियों के अधिकार सभ्य जातियों की स्त्रियों के अधिकारों से कहीं वढ़ेचढ़े हैं। पत्नी के भाई अथवा साले की पदवी इन लोगों में वहुत वड़ी पदवी समझी जाती है। वच्चों पर अन्य रिश्तेदारों की अपेक्षा, यहाँ तक कि पिता की अपेक्षा भी, मामा का अधिकार अधिक समझा जाता है। पिता की सम्पत्ति पर पुत्र तथा पुत्री का अधिकार वरावर होता है। वहुतसे स्थानों में तो केवल पुत्री ही पिता की सम्पत्ति पाती है। पुत्र केवल अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है। जिस व्यक्ति के कोई पुत्री नहीं होती उसकी सम्पत्ति उसके भांजों को मिलती है।

न्यू कैलीडोनिया द्वीप में स्त्रियों की वड़ी हीन दशा है। उनको घोर परिश्रम करना पड़ता है। उनकी दशा पशुवत है। पश्चिमी व्यापारी थोड़े से ही व्यय में स्त्रियों की फ़ौज नौकर रख लेते हैं। स्त्रियों की युवावस्था केवल तीन ही चार वर्ष रहती है। २५ वर्ष की स्त्रियाँ वृद्धा सी दिखाई पड़ती हैं। इसीलिए यह जाति नष्ट होती जारही है। जिस जाति की स्त्रियाँ दुःखी रहती हैं वह जाति शीघ्र नष्ट होजाती है। ठीक भोजन, आराम न मिलने तथा घोर परिश्रम करने के कारण स्त्रियाँ वहुधा वन्ध्या रहती हैं और यदि सन्तान होती है तो वड़ी अल्पजीवी।

Taj Tahir Foundation

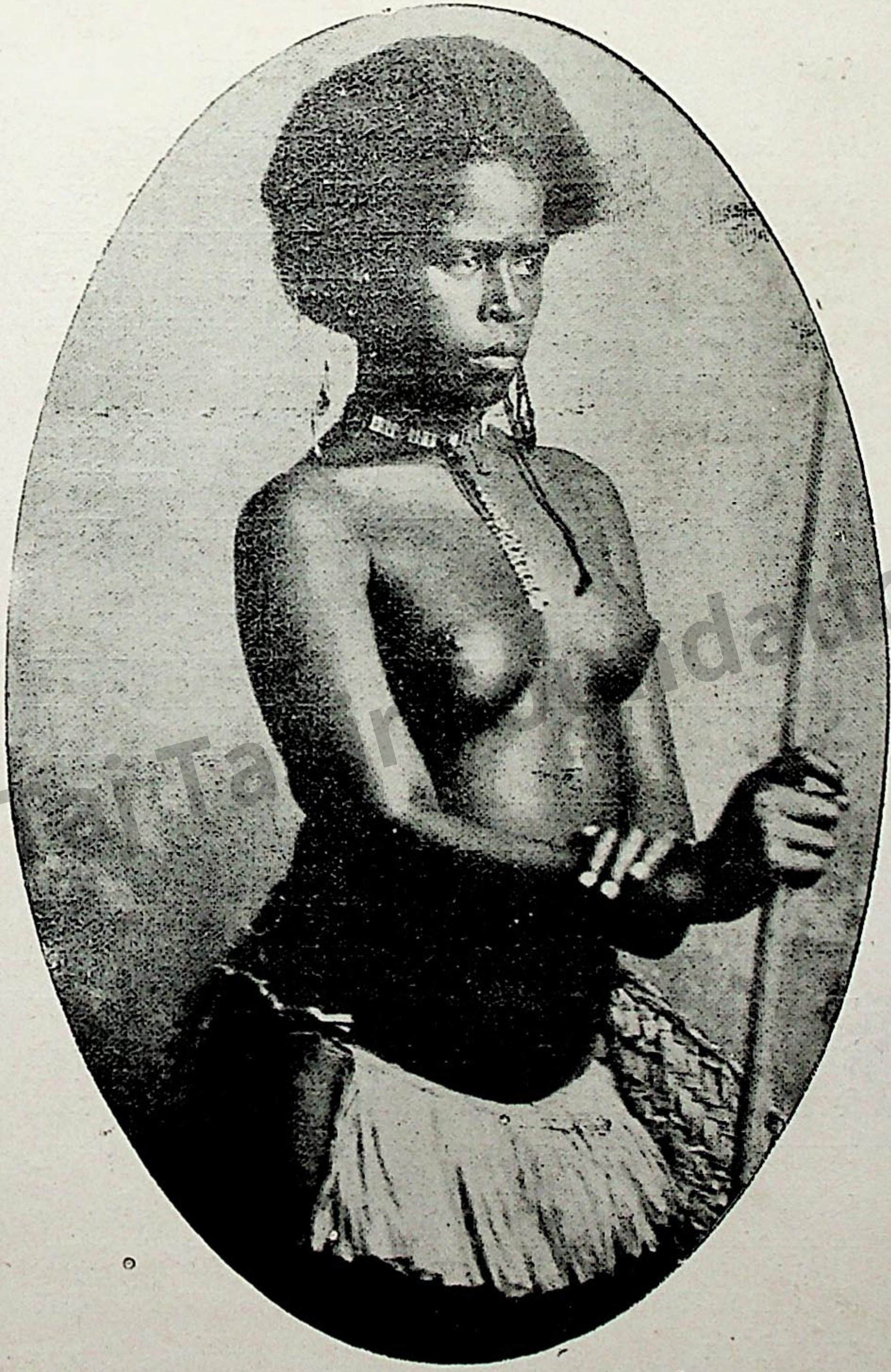

ठेठ फ़िजी की स्त्री.

न्यू कैलीडोनिया में एक त्योहार होता है जिसे 'पिलौं पिलौं' कहते हैं। इस त्योहार पर स्त्रियों को सब बातों का आराम मिलता है। इसीलिए यहाँ स्त्रियाँ इस त्योहार के लिए साल भर तक दिन गिना करती हैं। यह त्योहार आठ दस दिन तक रहता है। इस त्योहार पर स्त्रियाँ खूब खाती-पीती तथा नाचती-गाती हैं। नारियल की पत्तियों में गाँठ बाँधकर उन्हें निमन्त्रण पत्र के रूप में भेजते हैं। मेहमानों के लिए नये मकान बनाये जाते हैं। इसी अवसर पर स्त्रियों को अच्छे वस्त्र पहनने को मिलते हैं। पिलौं पिलौं ही एक ऐसा त्योहार है जिसके सहारे स्त्रियाँ अपना दुखमय जीवन व्यतीत कर डालती हैं। इस त्योहार में भाग लेने के लिए स्त्रियाँ अपने उन बच्चों को मार डालती हैं जो इस त्योहार के दिनों में उत्पन्न हों।

किसी देश की स्त्रियों की स्थिति उस देश की आर्थिक दशा पर निर्भर होती है। यह बात अब मान ली गई है कि दरिद्रता का भार पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर अधिक पड़ता है। यदि देश दरिद्र है तो उसकी दरिद्रता का अधिक भाग स्त्रियों को ही मिलता है। यदि देश सम्पत्तिशाली है तो उसकी सम्पत्ति का उपभोग अधिक मात्रा में पुरुष ही करते हैं। प्रकृति ने स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा दुर्बल बनाया है। अतएव स्त्रियाँ अपनी दुर्बलता के कारण सदैव घरों में रहती हैं। यह बात जंगली देशों में स्पष्ट देखने को मिलती है। मेलेनीशिया के जो स्थान अच्छे हैं अर्थात् जहाँ खाद्य पदार्थ का आधिक्य है, जहाँ की भूमि अधिक उपजाऊ है, जहाँ थोड़े परिश्रम से अधिक खाद्य पदार्थ उत्पन्न होता है, वहाँ की स्त्रियों की दशा उस स्थान की स्त्रियों से अच्छी है, जहाँ खाद्य पदार्थ की कमी रहती है, जहाँ की भूमि कम उपजाऊ है। मेलेनीशिया में न्यू हैनोवर द्वीप एक बहुत छोटा स्थान है; परन्तु वहाँ की भूमि बड़ी उपजाऊ है, अतएव वहाँ के निवासी बड़े धनवान हैं और वहाँ की स्त्रियों की दशा भी अच्छी है। वहाँ बहु विवाह की प्रथा नहीं है, पुरुष स्त्रियों का आदर करते हैं, उनसे परामर्श लेते हैं और उनके परामर्श के अनुसार कार्य करते हैं।

Taj Tahir Foundation

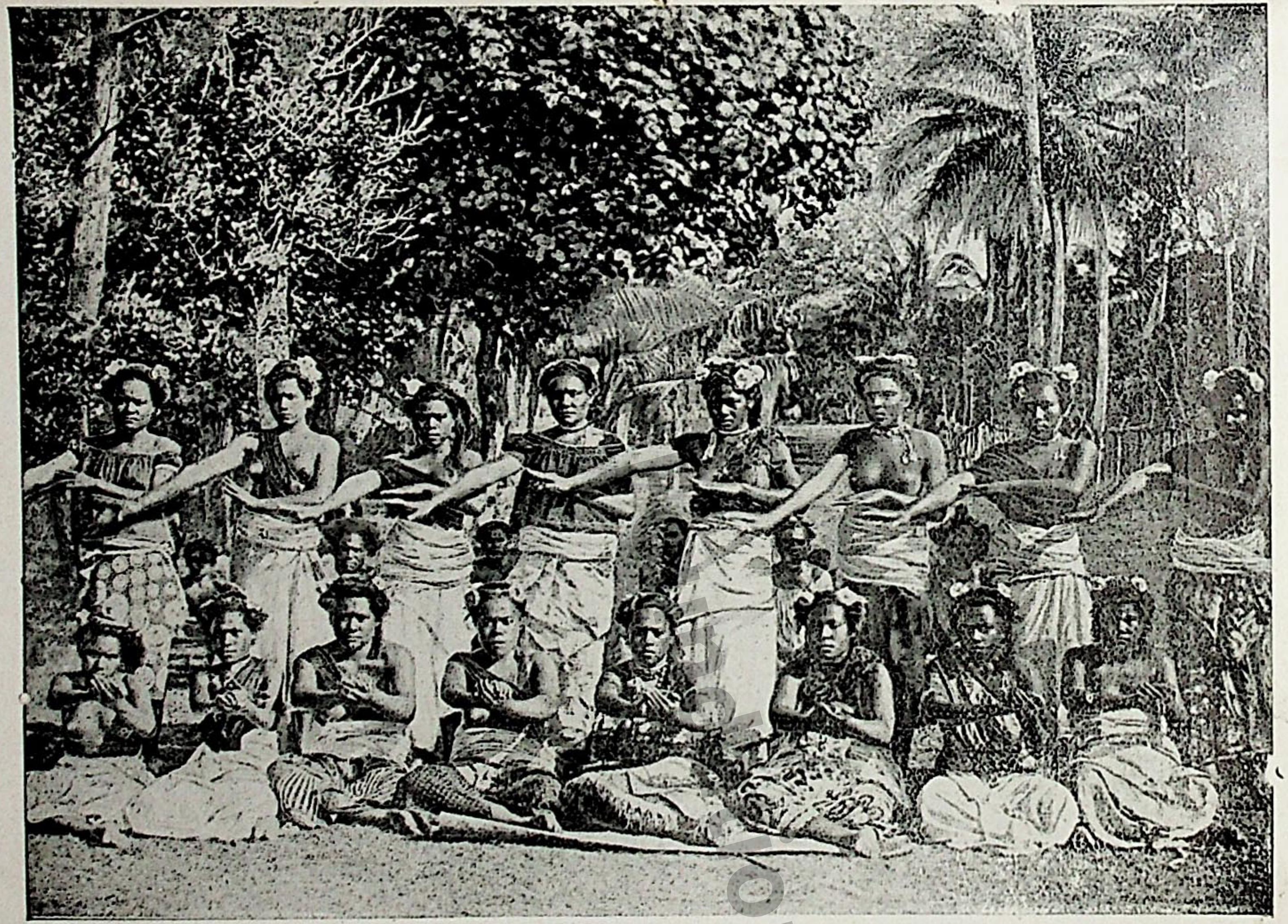

फ़िजी द्वीप का 'लाकालाका' नाच.

न्यू आयर्लैंण्ड की भूमि कम उपजाऊ है। अन्न उत्पन्न करने में बहुत परिश्रम पड़ता है; परन्तु फिर भी यथेष्ट अन्न नहीं होता, अतएव वहाँ की स्त्रियों की दशा ख़राब है। खाद्य पदार्थ की कमी के कारण पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को भोजन कम मिलता है। खाद्य पदार्थ उत्पन्न करने में अधिक परिश्रम भी स्त्रियों को ही करना पड़ता है। उनकी मृत्यु उसी दृष्टि से देखी जाती है जैसे कि किसी पशु की। स्त्री के मरने पर यह समझा जाता है कि चलो अच्छा हुआ एक खाने वाला ही कम हुआ।

न्यू ब्रिटेन द्वीप की आर्थिक दशा अच्छी है, अतएव वहाँ की स्त्रियों की दशा भी अच्छी है। स्त्रियों को प्रायः सब सुख प्राप्त रहते हैं। वे अपने लिए अलग धन एकत्र करती रहती हैं और उस धन पर पति का कोई अधिकार नहीं होता। उनको पति की आज्ञा के बिना भी, खेतों का अन्न तथा भूमि बेचने ख़रीदने का अधिकार रहता है। सुलेमान द्वीप में भी स्त्रियों की दशा अच्छी है। एम्ब्रीम द्वीप में तो स्त्रियों ने पुरुषों की तरह अपनी श्रेणियाँ बना रखी हैं। पुरुषों में दस श्रेणियाँ होती हैं। वीरांग सबसे नीची श्रेणी है और साल सबसे ऊँची। कुछ सूकर देने पर कोई पुरुष वीरांग श्रेणी में प्रविष्ट हो सकता है। इसी प्रकार सूकर देते रहने से और अपना प्रभाव बढ़ाने से कोई भी पुरुष साल की श्रेणी प्राप्त कर सकता है। स्त्रियों ने अपनी आठ श्रेणियाँ बना रखी हैं। सबसे ऊँची श्रेणी वीरांगवीर है। वहाँ की एक प्रथा यह है कि जब कोई स्त्री किसी पुरुष के सामने आती है तो अपने चारों हाथ पैरों पर पशु की तरह चलकर उसके सामने से हट जाती है।

लायलटी द्वीप में स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के समान ही समझे जाते हैं और उनका बड़ा आदर किया जाता है। एक स्त्री की मान मर्यादा के पीछे वहाँ दो जातियों में घोर युद्ध तक होजाते हैं।

मेलेनीशिया में सबसे अच्छी दशा फ़िजी द्वीप के निवासियों की है। फ़िजी द्वीप की भूमि बड़ी उर्वरा है। जंगलों में लकड़ी भी यथेष्ठ है। जल वायु भी उत्तम है। फ़िजी के निवासी पालीनीशियनों और मेलेनीशियनों के सम्मिश्रण

से उत्पन्न हुए हैं। फ़िजी की स्त्रियों को उनके समाज में अच्छा स्थान प्राप्त है। उनसे कठिन काम नहीं लिये जाते। उनका मुख्य कार्य चटाइयाँ बुनना तथा घर की देखरेख करना है।

सामान्यतः मेलेनीशिया में स्त्रियों की दशा कोई अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। समाज में उनका कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। उनका जीवन परिश्रम करने ही में व्यतीत होता है। पुरुषों की अपेक्षा उनको बहुत कुछ सुख तथा सुविधाएँ रहती हैं।

Taj Tahir Foundation

माइक्रोनीशिया

भौगोलिक स्थिति, जातीय नखशिख, परिच्छादन, गुदना, अलंकार, वैवाहिक रीति रिवाज, वहु विवाह, स्त्रियों का सामाजिक स्थान.

भौगोलिक स्थिति

मेलेनीशिया के उत्तर और पालीनीशिया के पश्चिम में छोटे छोटे द्वीपों का समूह है। यही द्वीप समूह माइक्रोनीशिया के नाम से विख्यात है। इस द्वीप समूह के मुख्य द्वीप ये हैं:— पेलो द्वीप जिसको पश्चिमी कैरोलिन द्वीप भी कहते हैं। कैरोलिन्स के उत्तर में लैड्रोन्स, पूर्व में मार्शल द्वीप, दक्षिण में जिलवर्ट द्वीप और किंग्स द्वीप हैं। इनमें कैरोलिन्स द्वीप मुख्य है और फ़िलीपाइन द्वीप से ६०० मील पूर्व की ओर है।

इन द्वीपों में मेलेनीशियां की आदिम जाति के लोग, जिनमें पालीनीशियन, मलाया तथा जापानी रक्त का सम्मिश्रण होगया है, रहते हैं।

जातीय नख शिख

माइक्रोनीशियन लोग सूरत शक़्ल में पालीनीशियन लोगों से वहुत मिलते जुलते हैं। अन्तर केवल इतना है कि माइक्रोनीशियन पालीनीशियनों की अपेक्षा क़द में छोटे होते हैं, सिर कुछ लम्वा होता है और शरीर पर वाल अधिक होते हैं। कप्तान मोरेल माइक्रोनीशियन स्त्रियों के सम्वन्ध में कहते हैं "स्त्रियाँ छोटे

Taj Tahir Foundation

क़द की होती हैं; परन्तु देखने में बड़ी सुन्दर होती हैं। इनके नखशिख बड़े कोमल होते हैं, आँखें काली होती हैं और उनमें एक विशेष प्रकार की चमक होती है जिससे प्रकट होता है कि इनके हृदय कोमल होते हैं और उनमें प्रेम की एक विशेष मात्रा होती है। इनके हाथ पैर छोटे छोटे होते हैं—

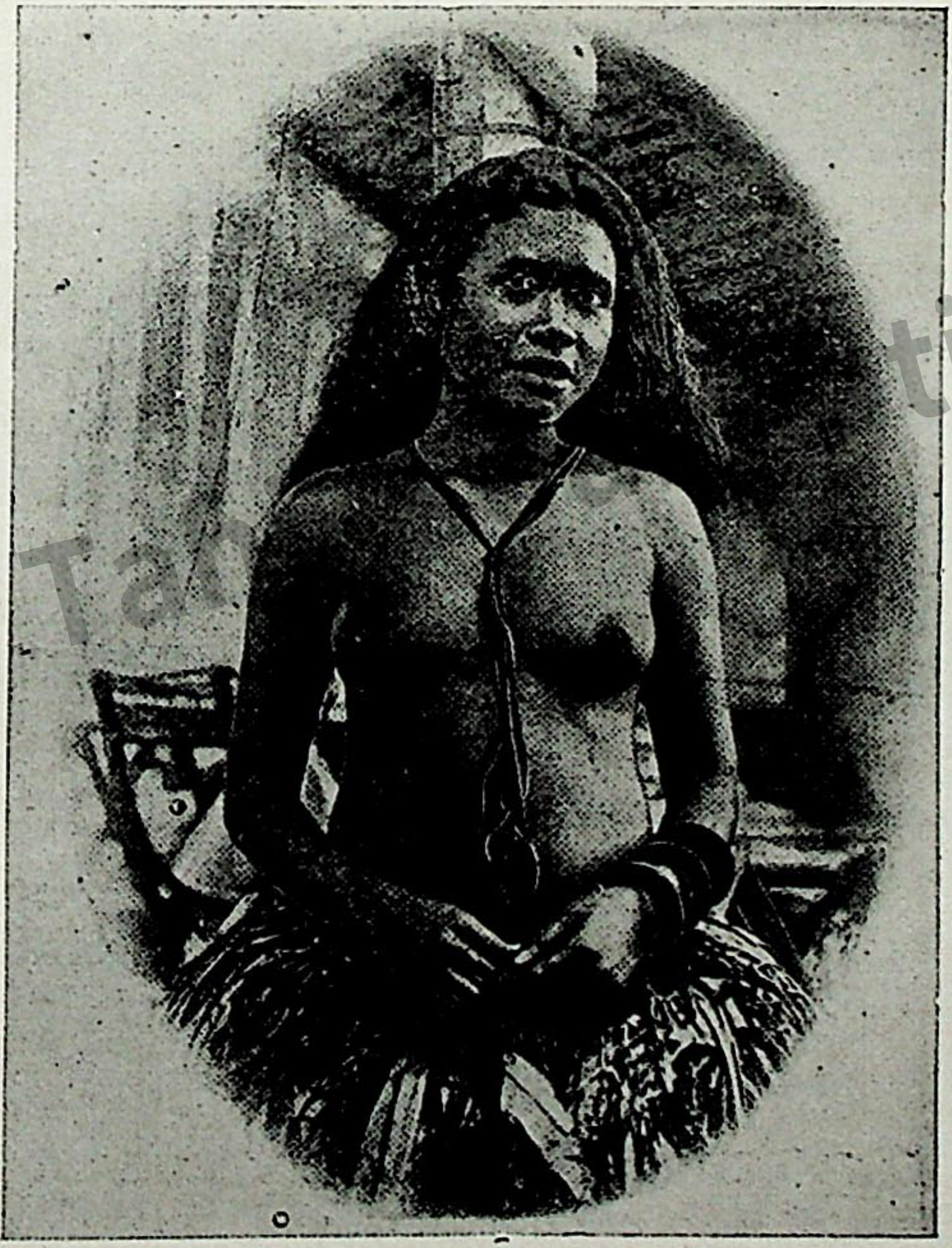

कैरोलिन्स द्वीप की स्त्री
नारियल के कड़े तथा घास का हार पहने हुए.

Taj Tap tion

उतने ही छोटे जितने कि हमारे यहाँ के बारह तेरह वर्ष के बालक के। कमर इतनी पतली होती है कि १८–१९ वर्ष की युवती की कमर मेरे दोनों हाथों में सरलता पूर्वक आजाती है। इनके दाँत भी बड़े सुन्दर होते हैं। दाँतों की सुन्दरता केवल उस समय देखने को मिलती है जब ये मुसकराती हैं। इनका वक्षस्थल विशाल और मनोहर होता है। सिर के बाल यथेष्ट लम्बे होते हैं। ये बड़ी सलज्ज होती हैं। जिस समय ये लज्जित होती हैं उस समय इनके श्याम वर्ण में लाली आजाती है जो बड़ी सुन्दर मालूम होती है। इनकी चाल बड़ी लचकदार होती है।" कप्तान मोरेल के उपर्युक्त वर्णन से यह अनुमान किया जा सकता है कि वे किसी माइक्रोनीशियन युवती पर मुग्ध होगये होंगे और इसीलिए प्रेम आवेश में आकर उन्होंने ऐसा लिख मारा है। ऐसी दशा में उनसे अतिशयोक्ति का होजाना स्वाभाविक ही है; परन्तु तो भी यह बात सर्व मान्य है कि माइक्रोनीशियन स्त्रियाँ सुन्दर होती हैं। माइक्रोनीशिया के 'माइगीउल द्वीप की सुन्दरी' नामक चित्र देखने से पाठक यह बात भली भाँति समझ सकते हैं। डाक्टर डबल्यू. एच. फरनेस के कथनानुसार यह युवती माइगीउल द्वीप की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी है और अपने गाने के लिए विख्यात है। डाक्टर साहब की दृष्टि में इस युवती के दाँत सुन्दर नहीं हैं, क्योंकि पान चबाने के कारण वे बिल्कुल काले होगये हैं। माइक्रोनीशिया के अधिकांश द्वीपों में पान खाने की प्रथा बहुत प्रचलित है। प्रत्येक स्त्री अपनी पान की टोकरी प्रत्येक समय अपने पास रखती है। मार्शल द्वीप में पान खाने की प्रथा बिल्कुल नहीं है, अतएव इस द्वीप के निवासियों के दाँत मोती के समान सफ़ेद और चमकदार होते हैं।

स्त्रियाँ प्रायः सिर के बाल खुले रखती हैं; परन्तु अब क्रमशः बालों के सँवारने का शौक़ बढ़ता जाता है। एक बार एक यूरोपियन यात्री मार्शल द्वीप में जाकर ठहरा। उसके साथ एक दासी थी जिसने अपने बालों की चोटी गूँथ रखी थी। उसकी चोटी देखने के लिए द्वीप की समस्त स्त्रियाँ

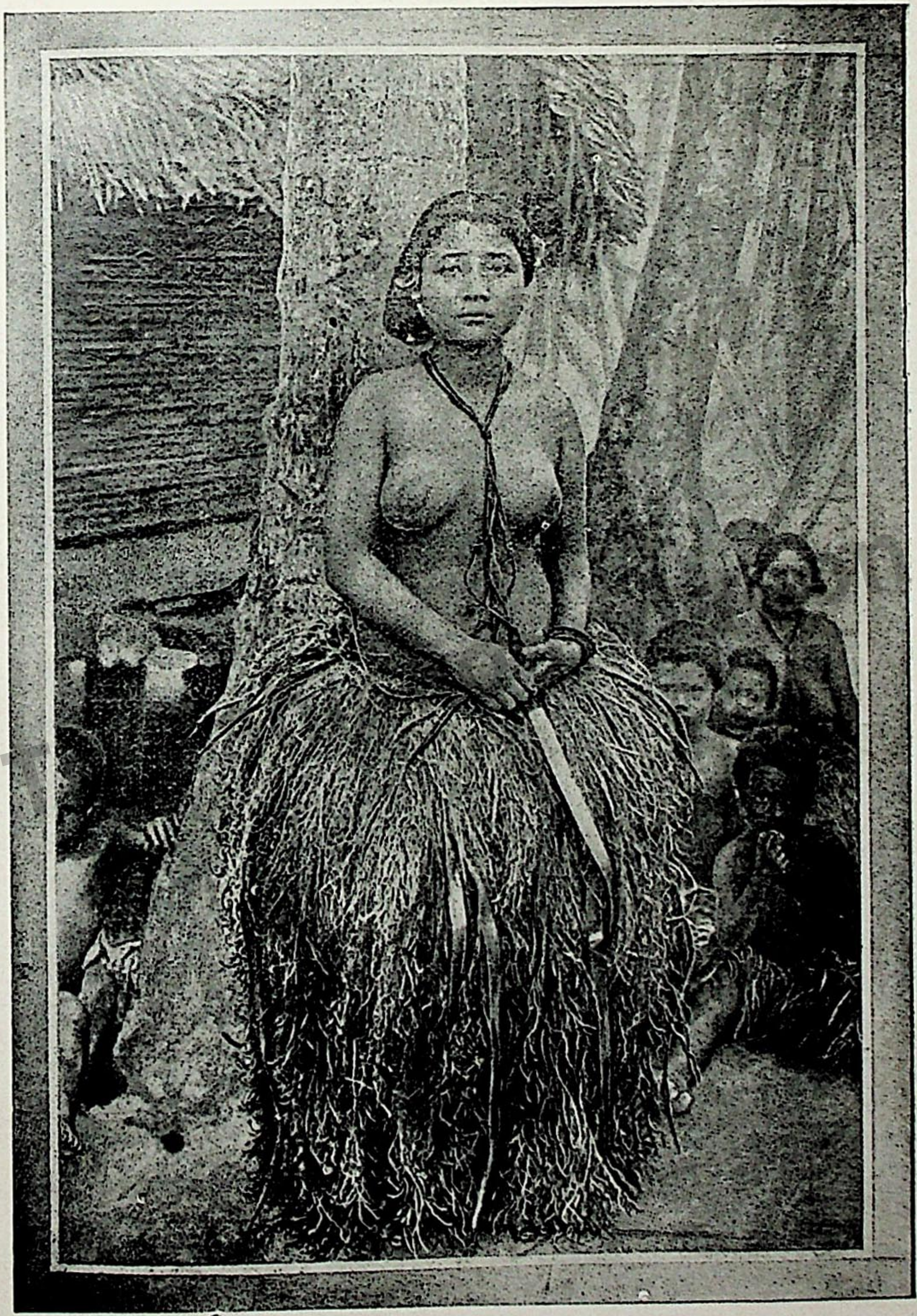

माइगीउल द्वीप की सुन्दरी.

यात्री महाशय के द्वार पर जमा हो गईं; क्योंकि उनके लिए चोटी एक अपूर्व चीज़ थी। दूसरे दिन सब स्त्रियों ने अपने वालों की चोटी गूँथ ली।

परिच्छादन

माइक्रोनीशिया के भिन्न भिन्न द्वीपों में भिन्न भिन्न प्रकार का परिच्छादन है। उत्तरी पेलो द्वीप में स्त्रियाँ नग्न रहती हैं। जिलवर्ट द्वीप में नारियल की पत्तियों की एक लुंगी सी बाँधने की प्रथा है। यह लुंगी कमर के वहुत नीचे, जहाँ से नितम्वों का आरम्भ होता है, बाँधी जाती है और केवल आधी जाँघों तक रहती है। कैरोलिन्स के 'नूकोर' तथा 'रुक' नामक स्थानों में केले की पत्तियों तथा एक प्रकार के विशेष सन की पत्तियों का लवादा वनाकर और उसमें छेद कर गले में डाल लेते हैं।

सवसे उत्तम परिच्छादन अखरोट के छिलकों का समझा जाता है। अखरोट की एक लुंगी वनाने में १२।१३ सहस्र अखरोट की कटोरियाँ लगती हैं। इसके वनाने में जो परिश्रम तथा समय लगता है उसका अनुमान किया जा सकता है। मार्शल द्वीप में टापा की चटाइयाँ पहनी जाती हैं। यह चटाइयाँ कमर से पैरों तक पहनी जाती हैं। कैरोलिन्स द्वीप का मुख्य परिच्छादन घास तथा नारियल की पत्तियों का लहँगा है।

माइक्रोनीशिया में कहीं कहीं करघे का भी रिवाज है। कैरोलिन्स के कुसाई स्थान में स्त्री पुरुष दोनों केले की पत्तियों की छोटी छोटी धज्जियाँ वनाकर उन्हें रंग विरंगे रँग लेते हैं तत्पश्चात् उन्हें करघे द्वारा वुनकर एक चटाई सी वना लेते हैं।

गुदना

माइक्रोनीशिया का मुख्य शृंगार गुदना है। मार्शल द्वीप में कुलीन पुरुष भी अपने गालों पर गुदना गुदाते हैं। नूकोर द्वीप में गुदना गुदाने के पूर्व ३ मास तक स्त्रियों को पवित्र मकान में रहना पड़ता है और नित्य समुद्र में स्नान करना पड़ता है। कैरोलिन्स के पोनापी स्थान में कमर पर गुदने की करधनी वनाने की प्रथा है।

कैरोलिन्स द्वीप की दो स्त्रियाँ.

एक पानों की टोकरी और दूसरी हल्दी का, जो रुपये की तरह काम में लाई जाती है, गट्ठा लिये हुए है.

माइक्रोनीशिया में एक जाति गुलाम जाति कहलाती है। गुलाम जाति को गुदना गुदाने की आज्ञा नहीं है।

अलंकार

कानों और नाक को फाड़ कर उनमें गहने पहनने की प्रथा खूब है। नाक में गहना पहनने की प्रथा माइक्रोनीशिया के सब स्थानों में नहीं है; परन्तु कानों में गहना सब कहीं पहना जाता है। मार्शल द्वीप में कानों में बहुत बड़े छेद करके उनमें पत्तियों की बालियाँ पहनी जाती हैं। कैरोलिन्स के कुछ स्थानों में कानों के छेद छोटे रखे जाते हैं और उनमें ऊन तथा फूल लगाकर बालियाँ पहनी जाती हैं। अधिकतर शंख तथा नारियल की बालियाँ पहनी जाती हैं। एक एक कान में इस प्रकार की १५/२० बालियाँ पहनी जाती हैं। कौड़ियों तथा अन्य इसी प्रकार की चीज़ों के गलेबन्द पहने जाते हैं। मनुष्य के बालों का डोरा बनाकर और उसमें सीप, कछुए की हड्डी तथा श्वेत शंख की कटोरियाँ सी पिरोकर गले में पहनी जाती हैं। लकड़ी की कंघियाँ भी व्यवहृत होती हैं।

वैवाहिक रीति रवाज

माइक्रोनीशिया के बहुत से स्थानों में यह आवश्यक नहीं है कि विवाह के पहले कन्या किसी पुरुष के संसर्ग में न आवे। विवाह साधारण तौर पर दस या बारह वर्ष की वयस० में किया जाता है। विवाह के समय कई सप्ताहों तक भोज तथा नाच गाना होता है।

कैरोलिन्स के पोनापी स्थान में विवाह के समय कन्या वर के घर लायी जाती है। उसकी सास उसकी पीठ तथा कन्धों पर नारियल के तेल की मालिश करती है; तत्पश्चात् उसके सिर पर फूलों की माला रखी जाती है। इसके पश्चात् भोज तथा नाच गाना होकर विवाह की रस्म समाप्त की जाती है।

जिलबर्ट द्वीप में विवाह इस प्रकार होता है कि कन्या मकान के नीचे वाले किसी दालान में बिठाई जाती है और दोमंज़िले के मकान में उससे

Taj Tahir Foundation

मार्शल द्वीप के एक राजा की पत्नी.
चटाइयों का लहँगा पहने हुए.

Taj Heritage Foundation

विवाह करने की इच्छा रखने वाले युवक बैठते हैं। ऊपर से युवक गण छत के एक छिद्र द्वारा, जो इस अवसर पर इसी कार्य के लिए बना लिया जाता है, नारियल की पत्तियाँ लटकाते हैं। कन्या एक पत्ती को पकड़ कर लटकाने वाले का नाम पूछती है। यदि युवक के नाम बताने पर कन्या उसके साथ विवाह नहीं करना चाहती तो वह उस पत्ती को छोड़ देती है और दूसरी पत्ती को पकड़ कर नाम पूछती है। जिस युवक से विवाह करना चाहती है उसके नाम बताने पर वह उसकी पत्ती पकड़ कर खींच लेती है। उसके पत्ती खींचते ही अन्य सब युवक चले जाते हैं और केवल वह रह जाता है जिसकी पत्ती कन्या ने खींची है। इसके पश्चात् युवक कन्या को लेकर अपने घर चला जाता है और विवाह का एक दिन नियत करके उस दिन सबको भोज देता है। विवाह के समय वर कन्या दोनों कन्या अथवा वर के पिता के सामने सिर झुका कर खड़े होते हैं। पिता एक हाथ से उन दोनों के केश पकड़ कर दूसरे हाथ से उन दोनों पर खजूर का रस छोड़ता है।

तलाक़ देना यहाँ बड़ा सरल है; क्योंकि तलाक़ के समय कन्या पक्ष वाले को वह रुपया नहीं लौटाना पड़ता जो वह विवाह के समय वर से लेता है। तलाक़ के समय स्त्री या तो स्वयं अपनी इच्छा से या पति के कहने से अपने मायके चली जाती है। मार्शल द्वीप में एक यात्री एक ऐसे युवक से मिला था जिसने ११ विवाह किये थे; परन्तु उन ११ पत्नियों में से उसके पास एक भी न थी। कुछ को उसने स्वयं तलाक़ दे दी थी और कुछ ने उसको त्याग दिया था। इस युवक की वयस केवल २४ वर्ष की थी।

इतना होते हुए भी इनका कौटुम्बिक जीवन सुखमय होता है और अधिकतर दम्पति में परस्पर यथेष्ट प्रेम होता है।

बहु विवाह केवल धनी लोग करते हैं। लुई बेक नामक यात्री ने एक घटना वर्णन की है जिससे प्रकट होता है कि वहां की स्त्रियाँ पुरुषों के बहु

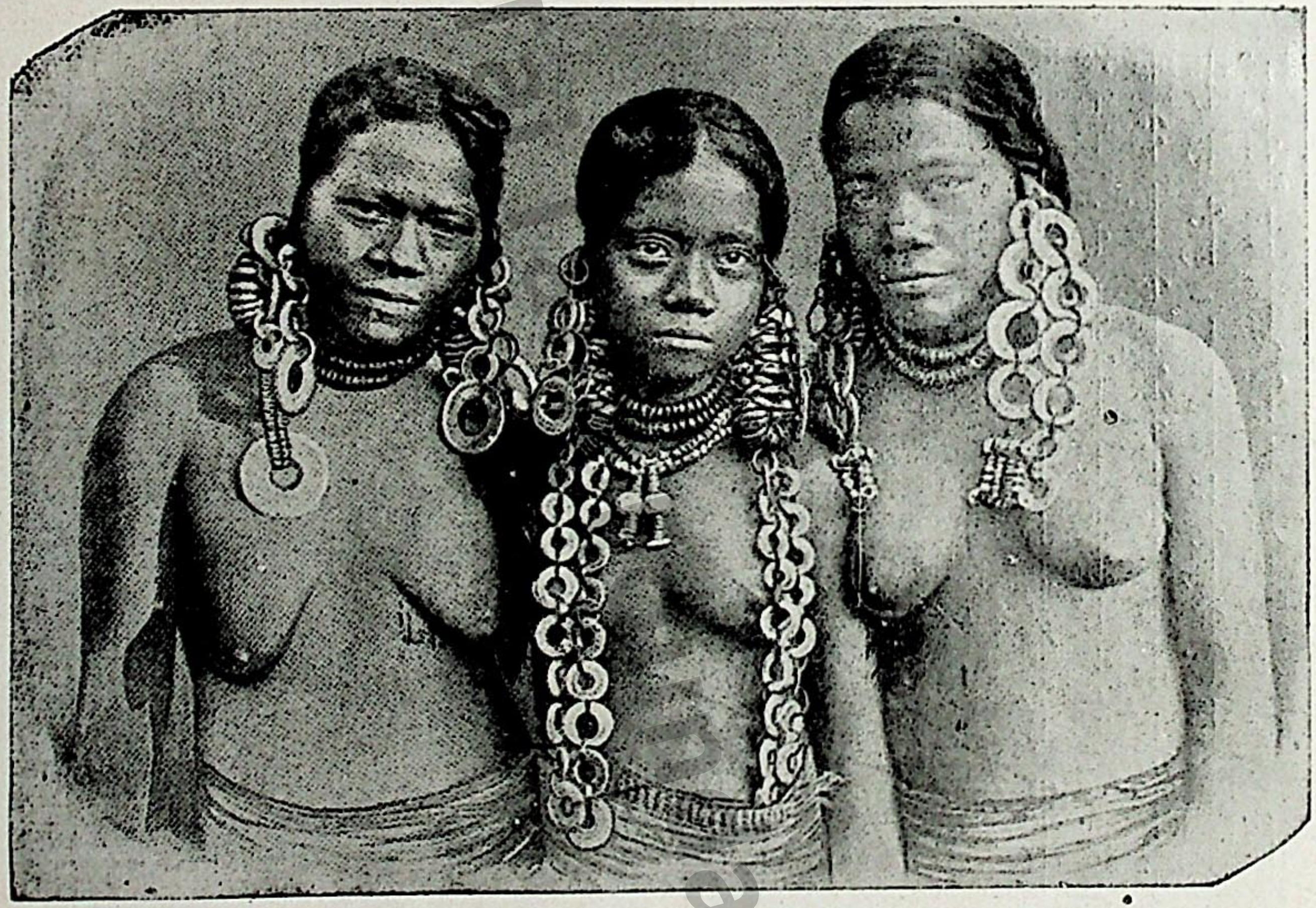

कैरोलिन्स के 'रुक' स्थान की तीन स्त्रियाँ.
श्वेत शंख की बालियाँ पहने हुए.

बहु विवाह

विवाह को बुरा नहीं समझतीं। घटना इस प्रकार है:—मार्शल द्वीप के एक मुखिया का भाई जिसका नाम जैलीक था, एक पड़ोसी युवती पर आशक्त था। युवती एक जर्मन व्यापारी के यहाँ नौकर थी। जैलीक ने अपनी प्रेमिका को कपड़ा सीने की एक मैशीन भेंट की। द्वीप में यह मैशीन एक अपूर्व चीज़ थी। मैशीन के साथ ही साथ उसने युवती को मांस का एक पीपा भी भेंट किया। युवती

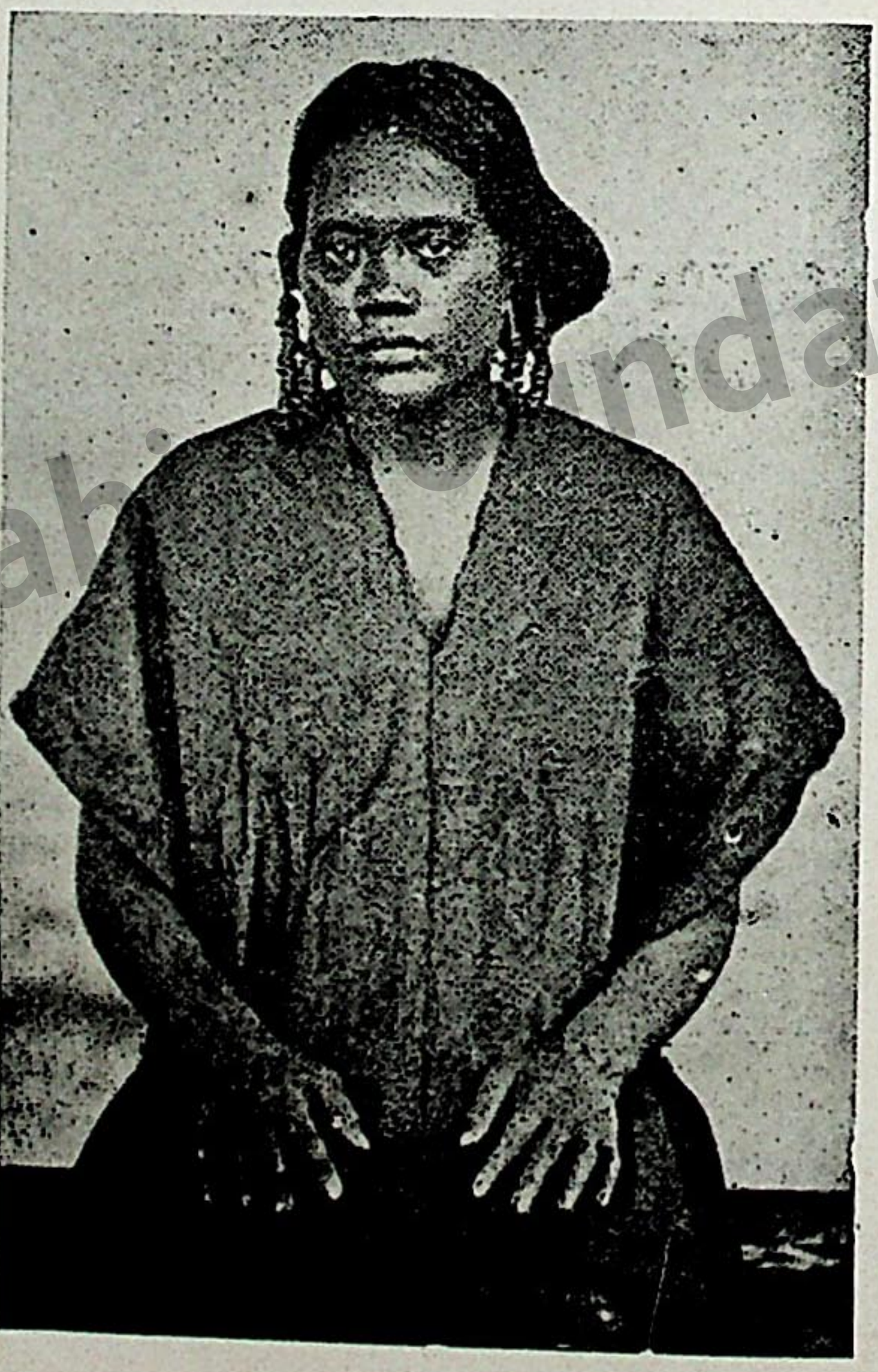

कैरोलिन्स के इनोर स्थान की स्त्री.

Taj Tabish Foundation

ने इन दोनों चीज़ों को अपने स्वामी अर्थात् जर्मन व्यापारी के हाथ बेच कर अपने प्रेमी जैलीक के लिए तम्बाकू तथा एक छुरा ख़रीद लिया। जैलीक इस युवती के प्रेम प्रदर्शन पर इतना मुग्ध हुआ कि उसने उससे विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात् उसने अपनी दोनों पत्नियों को, जिनसे वह अब तक बड़ा प्रेम रखता था, त्याग देने का विचार किया। जैलीक की यह इच्छा

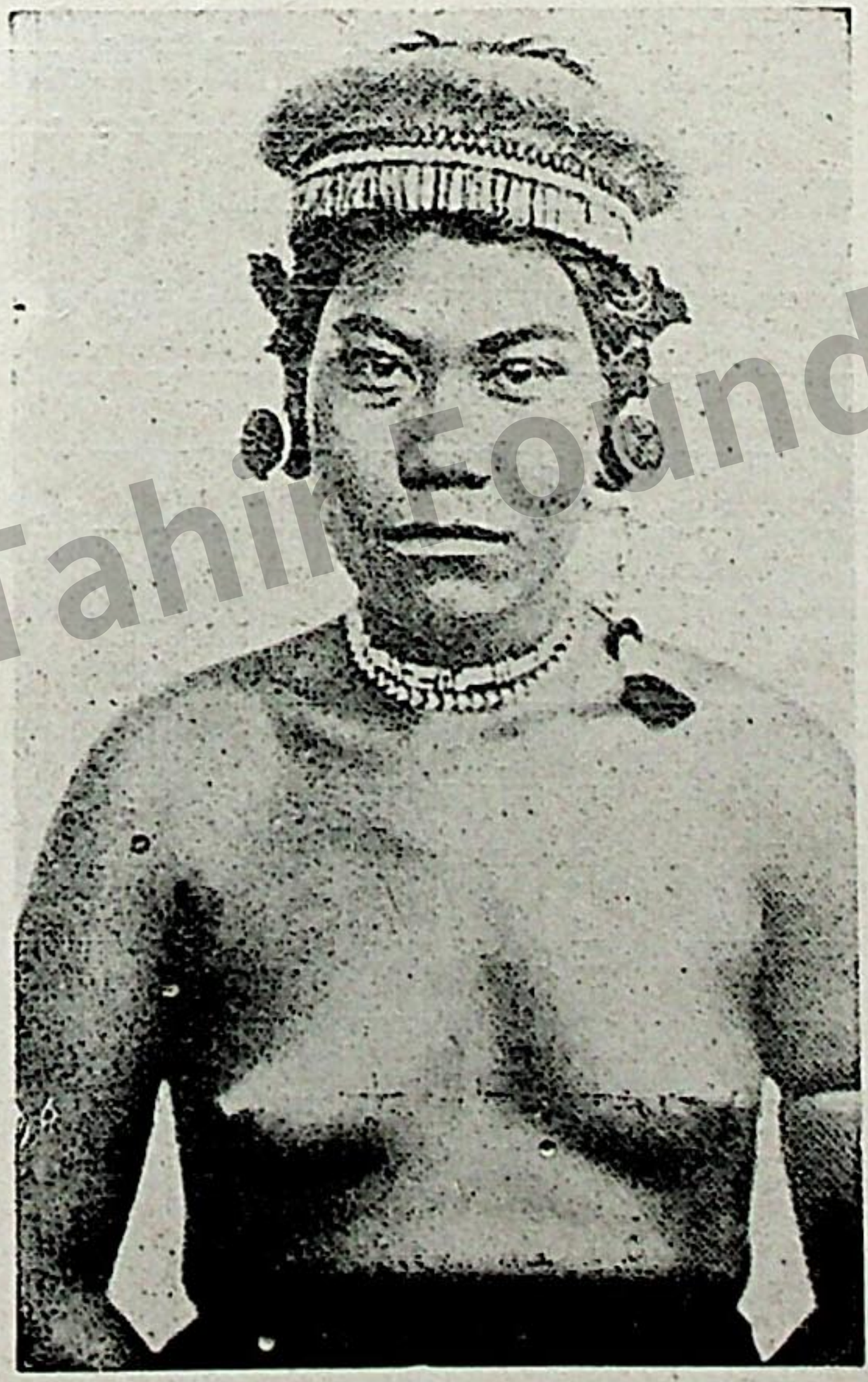

कैरोलिन्स के 'पोनापी' स्थान की स्त्री.
पत्तियों की बुनी हुई टोपी पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

जानने पर उसकी प्रेमिका बड़ी असंतुष्ट हुई और उसने जैलीक से कह दिया कि वह जैलीक के घर में तभी रहेगी जब उसकी दोनों पत्नियाँ भी रहेंगी। जैलीक को विवश होकर अपनी प्रेमिका की बात माननी पड़ी। इस प्रकार जैलीक की तीनों पत्नियाँ एक साथ आनन्द पूर्वक रहीं।

स्त्रियों का सामाजिक स्थान

स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है। जो पुरुष अपनी स्त्री को सबके सामने मारता पीटता है या भला बुरा कहता है उस पर जुर्माना किया जाता है। इन लोगों की भाषा में स्त्रियों को 'ली' कहते हैं। बहुत से शब्द इन्हों ने ऐसे बना रखे हैं जो प्रकट करते हैं कि ये लोग भी, भारतवासियों की तरह, स्त्री को कपटी तथा अविश्वासपात्र समझते हैं। जैसे 'लीकम' के अर्थ झूठ के हैं। 'ली' स्त्री को कहते हैं और 'कम' अपराध को। 'लीकम' का शाब्दिक अर्थ स्त्री का अपराध हुआ अर्थात् झूठ की जन्मदाता स्त्रियाँ ही हैं। इसी प्रकार 'लीपोरो' के अर्थ कौतूहल हैं; 'लीम्पाक' के अर्थ प्रेम के हैं अर्थात् प्रेम की जन्मदाता भी स्त्रियाँ ही हैं।

घर तथा बाहर का कामकाज अधिकतर स्त्रियाँ ही करती हैं। स्त्रियाँ चटाइयाँ तथा सेंठों के किंवाड़े बनाती हैं, टोकरियाँ बनाती हैं, छप्पर बाँधती हैं, पुरुषों के लिये पत्तियों की लुंगियाँ बनाती हैं मछली तथा नारियल का तेल निकालती और अन्य अनेक कार्य करती हैं। इसके पश्चात् पति के बाहरी कामों में भी उसकी सहायता करती हैं। युद्ध में भी पति तथा अपने रिश्तेदारों के साथ रहती हैं। इन सब कामों को वे बड़ी प्रसन्नता के साथ करती हैं।

———— •

आस्ट्रेलिया

शारीरिक बनावट, परिच्छादन तथा अलंकार, जन्म और बाल्यकाल, शिक्षा, वैवाहिक रीति रिवाज, स्त्रियों का कर्तव्य, वैधव्य, अन्त्येष्ठि क्रिया, वर्तमान दशा.

शारीरिक बनावट

आस्ट्रेलिया की मूल निवासी स्त्रियों के सम्बन्ध में कुछ यात्रियों का कहना है कि वे सुन्दर होती हैं। मिस्टर ईरी ने अपने 'जर्नल्स आफ़ ट्रैवल' में यहाँ तक कहा है कि उन्हों ने आस्ट्रेलिया में ऐसी युवतियाँ देखी हैं जिनका शरीर साँचे का ढला हुआ जान पड़ता था और कोई भी यूरोपियन मूर्तिकार उन्हें अपनी माडल चुन सकता था; परन्तु अन्य यात्रियों के कथन और चित्रों से यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट होती है कि आस्ट्रेलिया में ऐसी सुन्दरी युवतियों का होना अपवाद है। आस्ट्रेलियन स्त्रियाँ बहुत कम सुन्दर होती हैं, उनका सौन्दर्य यदि कुछ होता भी है तो थोड़ी वयस्क में समाप्त हो जाता है। उनका क़द इतना छोटा होता है कि उससे उनकी आकृति में भद्दापन आ जाता है। स्त्रियों की अपेक्षा आस्ट्रेलिया के पुरुष अधिक सुन्दर होते हैं।

आस्ट्रेलियन स्त्री का क़द लगभग ५ फ़ीट लम्बा होता है। उनके केश काले होते हैं; परन्तु उनमें वे लाल रंग का लेप करके उन्हें भूरा कर लेती हैं। उनके केश रेशम की तरह चमकदार तथा सीधे बहुत कम होते हैं।

Taj Tahir Foundation

अधिकतर चर्बी का लेप करने से वे उलझे हुए से और घुँघराले होते हैं। उनकी नाक बैठी हुई सी होती है; परन्तु नेत्र काले और सुन्दर होते हैं।

परिच्छादन तथा अलंकार

दक्षिणी आस्ट्रेलिया का जल-वायु वहाँ की स्त्रियों को शरीर ढकने के लिए विवश करता है। अतएव वे पहले 'ओपोसम' तथा 'कंग्र' नामक पशुओं की खाल के लबादे पहना करती थीं। उत्तर की ओर कपड़े पहनने का प्रचार शरीर को ढकने और गर्म रखने की अपेक्षा सुन्दरता के विचार से अधिक है। कुछ स्थानों में स्त्रियाँ जब चाहती हैं छोटा वस्त्र पहन लेती हैं और जब चाहती हैं नंगी रहती हैं।

अविवाहित तथा नव-विवाहित स्त्रियाँ 'उपोसम' तथा अन्य किसी पशु के बालों की पेटी बनाकर और उसमें थोड़े से बाल झालर की तरह लटका कर बाँध लेती हैं। शृंगार के लिए वे बाहों में, गले में, कान में तथा नाक में गहने पहनती हैं। ये गहने लकड़ी, हड्डी तथा कुत्ते के दाँतों के होते हैं। नाक में वे एक लम्बी हड्डी डाले रहती हैं। बालों में कुत्ते के दाँत लगाये रहती हैं। कभी कभी स्त्रियाँ शृंगार की दृष्टि से नक़ली दाढ़ी भी लगा लेती हैं।

जन्म और बाल्यकाल

बच्चा होने पर आस्ट्रेलियन स्त्री अपने घर से निकल जाती है और कहीं एकान्त में जाकर रहती है। यह केवल इसलिए कि जिसमें बच्चे पर दुष्ट आत्माओं का प्रभाव न पड़ सके। एकान्त में रहने का समय स्त्री की इच्छा पर निर्भर होता है—चाहे वह ३।४ घण्टे रहे चाहे ८।१० दिन तक रहे। नवजात शिशु की नाक को एक विशेष प्रकार की गर्म पत्ती से दबाते हैं; क्योंकि चपटी नाक इनके यहाँ सुन्दर समझी जाती है। कुछ जातियाँ बच्चा उत्पन्न होने पर उसे धोती हैं और उस पर बालू रगड़ती हैं। कुछ लोग चर्बी और राख मलते हैं।

Taj Tahir Foundation

बच्चा होने पर पिता एक विशेष दूत द्वारा यह सम्वाद अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों के पास भेज देता है। मित्र और रिश्तेदार इसकी सूचना पाकर आते हैं और पिता को चाकू, कमीज़ें तथा अन्य चीज़ें भेंट देते हैं। आस्ट्रेलिया के मध्य प्रदेश में बच्चा होने पर बच्चे का पिता, नाना, परनाना तथा ताऊ यह सब मौनव्रत धारण कर लेते हैं। इस मौनव्रत को तोड़ना बच्चे के लिए अशुभ समझा जाता है। जब स्त्री एकान्त वास से लौट कर अपने पति को बच्चा दिखाती है तब इन सबका मौनव्रत टूटता है।

एक स्त्री के चाहे जितने बच्चे हों, परन्तु वह पूर्ण लालन पालन दो ही तीन का करती है, शेष सब भूखों मार कर तथा विषैली चीज़ें खिला खिला कर मार डाले जाते हैं।

Tahir Foundation

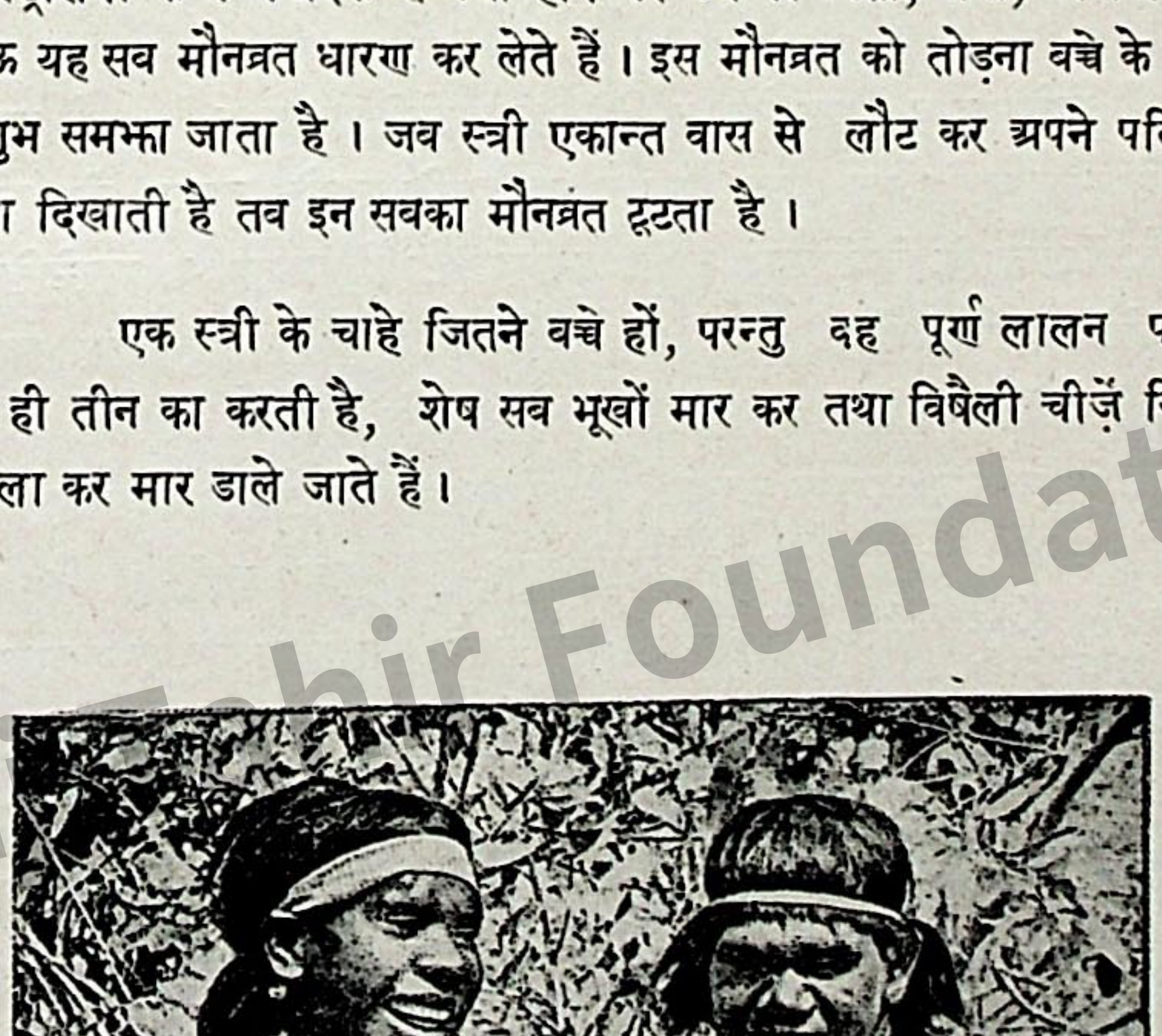

आरण्टा जाति की स्त्रियाँ.

कभी कभी जो बच्चा बिल्कुल व्यर्थ समझा जाता है वह तुरन्त मार डाला जाता है। किसी समय में यह प्रथा थी कि जो बच्चा मार डाला जाता था उसे या तो उसके बड़े भाई या बाबा, दादी खाजाते थे; परन्तु अब आज कल यह प्रथा विद्यमान नहीं है।

इससे यह न समझ लेना चाहिये कि आस्ट्रेलियन माता पिता को अपने बच्चों से स्नेह नहीं होता। सच बात तो यह है कि उनको उतना ही स्नेह होता है जितना कि किसी सभ्य जाति के मनुष्य को हो सकता है। आस्ट्रेलियन माता पिता अपने बच्चों को बहुत कम मारते पीटते हैं। माताएँ खाद्य पदार्थ की कमी होने पर स्वयं भूखी रहती हैं; परन्तु अपने बच्चों को खिलाती रहती हैं। बच्चे के स्वास्थ्य का पूर्ण उत्तरदायित्व बच्चे के माता पिता पर रहता है। वे उसे जादू टोने से बचाने का प्रयत्न करते रहते हैं। कुछ जातियों में यह प्रथा है कि यदि बच्चा रात को जाग पड़ता है तो माता अपने हाथ आग में सेंक कर बच्चे के अवयवों पर रगड़ती हैं जिसमें कि वह सुन्दर हो जाय। जब बच्चा घुटनों के बल चलने लगता है तो माता एक कानखजूरे को आग में भून कर उसे बच्चे के हाथों पर मारती है और कोई मन्त्र पढ़ती है। इससे, उनकी समझ में, बच्चा पूर्ण वयस्क होने पर चोर नहीं होता। नवजात शिशु का मुँह बन्द रखा जाता है जिससे कोई टोनेवाज़ उसके पेट में कोई रोग प्रविष्ट न कर दे। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी बच्चों की रक्षा करने की चेष्टा की जाती है। कौए दुष्ट आत्माओं के प्रतिनिधि समझे जाते हैं, इससे माताएँ उनकी दृष्टि अपने बच्चों पर नहीं पड़ने देतीं।

बहुत छोटे बच्चे एक नौका के आकार के वर्तन में लेजाये जाते हैं। जब वे बड़े होजाते हैं तो माताएँ उपोसम की खाल अथवा चटाई को इस प्रकार अपने शरीर पर लपेटती हैं कि उनकी पीठ पर एक थैला सा बन जाता है—उसी थैले में वे अपने बच्चों को रख लेती हैं। माताएँ अपने बच्चों को गाकर

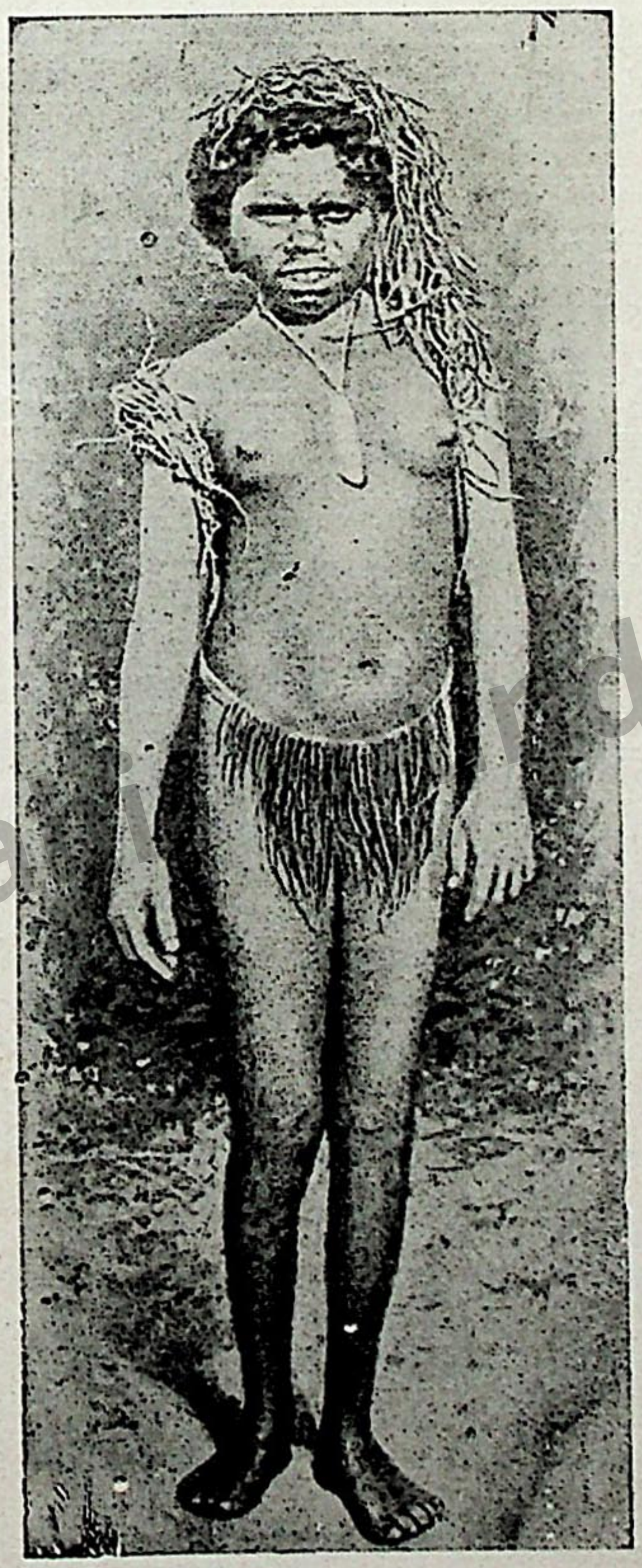

आस्ट्रेलियन स्त्री.

Taj Tarikh Foundation

कभी नहीं सुलातीं; हां, थपथपाती अवश्य हैं। वच्चों को सुलाने के लिए सवसे अधिक प्रचलित प्रथा यह है कि वच्चों की माताएँ उनकी छिदी हुई नाक के छिद्र में डोरा डाल कर उसको ऊपर की ओर खींचती हैं। वच्चे वहुत दिनों तक माता का दूध पीते रहते हैं। यह दृश्य वहुधा देखने को मिलता है कि एक छाती में तो एक दो तीन महीने का शिशु दूध पी रहा है और दूसरी छाती में एक तीन चार वर्ष का वालक जुटा हुआ है। जव वच्चे वहुत वड़े होजाते हैं तो उनको शहद तथा उपोसम और कंग्र का मांस खिलाया जाता है। लड़कियों की छोटी अँगुली का एक जोड़ काट दिया जाता है, कभी आगे का एक दाँत तोड़ दिया जाता है। उनकी नाक में पर अथवा हड्डी पहनाई जाती है; पर उनके कान कभी नहीं छेदे जाते। इस सम्वन्ध में एक वार एक आस्ट्रेलियन और एक यूरोपियन स्त्री में वड़ी मज़ेदार वातचीत हुई थी। यूरोपियन स्त्री ने आस्ट्रेलियन स्त्री से पूछा 'तुम लोग नाक में हड्डी क्यों पहनती हो? यह वड़ी भद्दी मालूम होती है। कोई यूरोपियन स्त्री ऐसा नहीं करती'।

आस्ट्रेलियन स्त्री ने यह सुन कर यूरोपियन स्त्री को सिर से पैर तक देखा; तत्पश्चात् वोली:— 'तुम लोग कान में छेद क्यों करती हो। कोई आस्ट्रेलियन स्त्री कान में छेद नहीं करती। तुम लोग कान में छेद करके उन्हें कुत्ते के कान की तरह वढ़ाती हो। यह वड़ी वुरी वात है। हम लोग नाक में हड्डी इसलिए पहनती हैं कि एक तो उससे कण्ठस्वर अच्छा हो जाता है; दूसरे नाक में कोई दुर्गन्ध प्रविष्ट नहीं हो सकती। कानों में छेद करके उन्हें कुत्ते के कान वनाने में कोई लाभ नहीं'। इतना कह कर और यूरोपियन स्त्री को चिढ़ाने के लिए अपने कानों को खींचती हुई तथा कुत्ते की तरह भोंकती हुई वह स्त्री चली गई।

आस्ट्रेलिया में कन्या की शिक्षा वहुत शीघ्र आरम्भ कर दी जाती है। थोड़े ही दिनों में वह छोटे छोटे कामों में अपनी माता को सहायता देने

आस्ट्रेलियन स्त्री.
पूरी पोशाक और गहने पहने हुए.

Taj Tarbiyat Foundation

शिक्षा

लगती है। उसका मुख्य कार्य छिपकलियाँ पकड़ना, जड़ें खोदना तथा मछली का शिकार करना होता है। आस्ट्रेलियन कन्याएँ काम करने के साथ साथ खेलती भी खूब हैं। वेत की गुड़ियाँ वनाती हैं तथा वृक्ष की छाल की गुड़ियाँ वनाकर उसे घास-फूस के कपड़े पहना देती हैं।

वैवाहिक रीति रिवाज

परन्तु उनके खेलने कूदने के दिन वहुत थोड़े होते हैं। उनका विवाह वहुत छोटेपन में कर दिया जाता है। कभी कभी तो कन्या उत्पन्न होते ही विवाह कर दिया जाता है। विवाह के पूर्व उसके गुदना गोदा जाता है। आस्ट्रेलिया में उभरा हुआ गुदना गोदने की प्रथा है। पहले एक वृद्धा स्त्री उसे घर के वाहर ले जाकर उसके शरीर पर मिट्टी का लेप करती है। इसके पश्चात् कुछ घास तथा पत्तियाँ जलाई जाती हैं और कन्या उसका धुआँ पीती है। उसी समय वृद्धा उसे पति–सेवा के सम्वन्ध में कुछ उपदेश देती है। इसके पश्चात् उसके गुदना गोदा जाता है। इस कार्य के लिए उसे प्रातःकाल वाहर ले जाते हैं। कन्या एक वृद्धा स्त्री की ओर पीठ करके वैठती है। स्त्री उसका सिर अपने घुटनों में दाव लेती है। इसके पश्चात् एक पुरुष जो प्रायः गुदना गोदने ही का व्यवसाय करता है, उसकी पीठ पर एक इंच लम्वा तथा एक इंच गहरा घाव वनाता है। जैसे जैसे ही यह कार्य होता जाता है वैसे वैसे कन्या की पीठ रक्त से तर होती चली जाती है। कन्या की चीत्कारों से समस्त स्थान गूँज उठता है। इस गुदने के कार्य में प्रायः एक घण्टा लगता है। गुदना समाप्त हो जाने पर घाव में ईंगुर और तेल मला जाता है और उसके सिर में कंग्रू के दाँत और एमू के पर लगा दिये जाते हैं। इसके पश्चात् उसे दूसरे दिन प्रातःकाल तक उपवास रखना पड़ता है। कन्याएँ यह सव कष्ट वड़ी प्रसन्नता पूर्वक सहन कर लेती हैं; क्योंकि पीठ में इस प्रकार का गुदना गुदा होना एक वहुत वड़ा सौन्दर्य समझा जाता है।

Taj Tahir Foundation

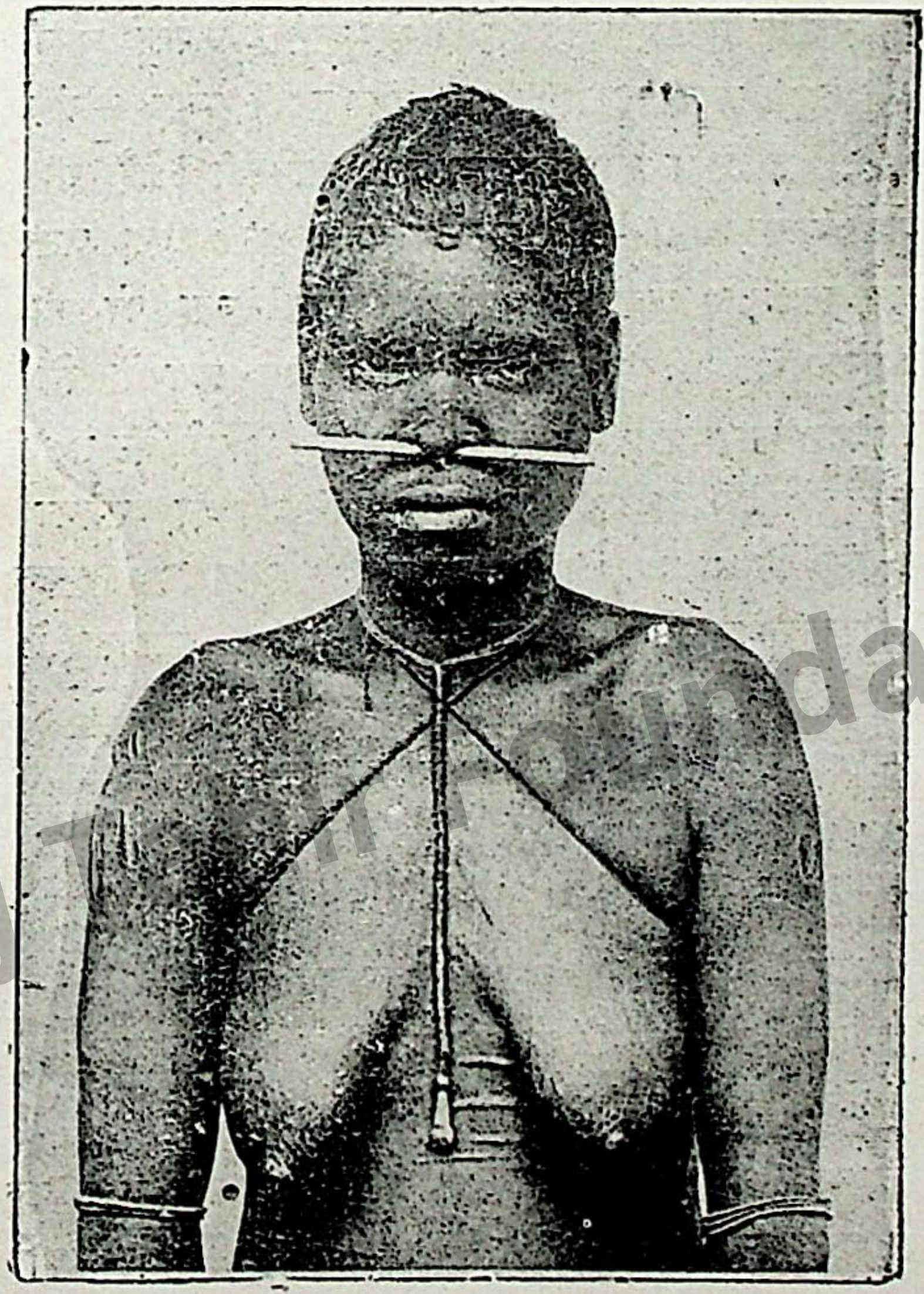

उत्तरी आस्ट्रेलिया की स्त्री.

Taj Foundation

विवाह के लिए यह आवश्यक नहीं है कि कन्या की सगाई की जाय; क्योंकि वहुधा ऐसा भी होता है कि दो व्यक्ति परस्पर अपनी वहिनें वदल लेते हैं अथवा अपनी कन्या दूसरे को देकर उसकी कन्या स्वयं ले लेता है। ऐसा भी होता है कि वर और कन्या को विवाह की कोई भी सूचना नहीं दी जाती और ठीक विवाह के समय कन्या का भाई एक जलती हुई लकड़ी लेकर वर के घर जाता है और इसी प्रकार कन्या को भी उसके विवाह की सूचना दी जाती है। कुछ जातियों में यह प्रथा है कि कन्या जव अपना विवाह करना चाहती है तो अपने झोंपड़े में कई दिन तक निरन्तर आग जलाये रहती है। इस प्रकार का विवाह अधिक अच्छा समझा जाता है। कन्या-हरण की भी प्रथा खूव प्रचलित है। युवक जिस कन्या से विवाह करना चाहता है उसे अकेला या अपने मित्रों की सहायता से हरण कर ले जाता है। कन्या पक्ष के लोग उसका पीछा करते हैं। ऐसे अवसर पर वहुधा कन्या पक्ष और वर पक्ष वालों में वड़ा लड़ाई झगड़ा होता है। ऐसा भी होता है कि वह कन्या जिसकी सगाई किसी से हो चुकी है किसी युवक द्वारा हरण कर ली जाती है। ऐसी दशा में वह युवक जिससे कि कन्या की सगाई हो चुकी है, उस युवक से द्वन्द युद्ध करता है। इस द्वन्द युद्ध में जो जीतता है कन्या उसी को मिल जाती है। इस युद्ध में वहुधा कन्याओं के प्राणों पर भी वन आती है।

कुछ जातियों में विवाह इस प्रकार होता है कि-रात को वर कन्या के घर चोरी से जाता है और उसे लकड़ी से जगाता है। यदि कन्या उससे विवाह करना चाहती है तो वह उसकी लकड़ी पकड़ लेती है। इसके पूर्व गाँव के पुरोहित द्वारा कन्या पक्ष के लोग मन्त्र द्वारा सुला दिये जाते हैं और जव वर कन्या को लेकर भाग जाता है तव उनकी नींद खुलती है और वे कन्या और वर को पकड़ने के लिए उनकी खोज में निकलते हैं। अगर कन्या और वर दोनों साफ़ वच निकले और उस समय तक छिपे रहे, जव तक कि

Taj Tahir Foundation

कन्या के एक सन्तान न होगई तो सब प्रकार कुशल रहती है और वे दोनों पुनः लौट कर निश्चिन्तता पूर्वक गाँव में रह सकते हैं; परन्तु यदि वे कहीं कन्या पक्ष वालों द्वारा पकड़ लिये गये तो उनकी बड़ी दुर्दशा होती है। वर और कन्या दोनों की खूब मरम्मत की जाती है। ऐसी दशा में उनका विवाह नहीं होने पाता और उनको फिर इसी प्रकार भाग निकलने का कार्य करना पड़ता है और जब तक कि वह साफ़ बच कर निकल नहीं जाते तब तक उनका विवाह नहीं होने पाता।

कुछ जातियों में यह प्रथा है कि कन्या वर के साथ प्रसन्नता पूर्वक नहीं जाती और उसका मुक़ाबला तक करती है। ऐसी दशा में कन्या और वर में मार पीट तक होजाती है।

आस्ट्रेलियन युवक २८ या ३० वर्ष के पूर्व विवाह नहीं करते। कुछ जातियों में यह प्रथा है कि जब पत्नी की आयु ३५ वर्ष की हो जाती है तो वह किसी युवक को दे डाली जाती है और बदले में युवक की भगिनी ले ली जाती है। युवकों का विवाह सदैव अर्द्ध वयस्क स्त्रियों अथवा वृद्धाओं से किया जाता है और वह इसलिए कि वृद्धाओं को गृहस्थी तथा अन्य दाम्पत्तिक बातों का पूर्ण अनुभव होता है। अतएव अनुभवी वृद्धा पत्नी अपने अनभिज्ञ पति को सब बातें सिखलाती है। इसी कारण प्रायः ऐसा होता है कि युवकों का विवाह ऐसी वृद्धा स्त्रियों से होता है कि वह स्त्री युवक की पत्नी प्रतीत होने की अपेक्षा उसकी दादी मालूम होती है। ठीक इसके प्रतिकूल वृद्ध पुरुषों को युवती पत्नियाँ मिलती हैं; क्योंकि वे अपनी वृद्धा पत्नी किसी युवक को दे देते हैं और बदले में उसकी युवक बहन ले लेते हैं। इसी उलट फेर में एक एक पुरुष के पास तीन-तीन चार-चार पत्नियाँ होजाती हैं जिनमें कोई तो वृद्धा, कोई अर्द्ध वयस्क और कोई षोड़शी होती है। वृद्धा सौत के साथ रहने से युवती की बड़ी दुर्दशा होती है, क्योंकि गृहस्थी की बागडोर वृद्धा ही के हाथ में होती है। अतएव

वृद्धा उसे प्रत्येक समय तंग करती रहती है और उसके विरुद्ध पति से चुग़ली खाया करती है। वृद्धा सौत के साथ पड़ने से युवती का छुटकारा दो ही तरह से होता है—या तो वृद्धा को यमदूत ले जायँ और या युवती किसी अन्य पुरुष के साथ निकल जाय।

आस्ट्रेलिया में सुन्दर और युवती स्त्रियाँ एक पुरुष के पास बहुत कम रहती हैं। कभी कभी तो ये किसी के साथ निकल जाती हैं और कभी ऐसा होता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी की पत्नी पर मुग्ध होजाता है तो वह उसके पति से द्वन्द युद्ध करता है और जीत जाने पर उसकी पत्नी ले जाता है। इसी प्रकार एक स्त्री अनेक पुरुषों की पत्नी बनती रहती है।

आस्ट्रेलिया के पुरुष बड़े वहमी होते हैं। वे अपनी युवती स्त्री को प्रत्येक समय अपने साथ रखते हैं। कहीं बाहर जाते हैं तो अपने साथ ले जाते हैं चाहे स्त्री किसी भी दशा में हो, चाहे वह चल फिर सके या न सके; पर वे उसे घर पर अकेली नहीं छोड़ते। पत्नी पर पति का अधिकार पूर्ण रूप से होता है; परन्तु साथ ही एक बात यह भी है कि यदि अपराध इतना गुरुतर न हुआ कि जिसके कारण पति का अपनी पत्नी की हत्या करना उचित समझा जाय तो ऐसी दशा में पति को अपनी बहन इसलिए देनी पड़ती है कि उस पत्नी के रिश्तेदार, जिसकी उसने हत्या की है, उसकी (पति की) बहन को मार डालें।

पति को यह भी अधिकार प्राप्त रहता है कि वह अपनी किसी पत्नी को अपने किसी मित्र को उधार दे दे। जब कभी जातीय पञ्चायतें होती हैं तो उनमें लोग परस्पर पत्नियाँ बदल लेते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक स्त्री का एक उपपति भी रहता है; जो प्रायः उसका भाई अथवा मित्र होता है। पति की अनुपस्थिति में यही उपपति उसका पति तथा रक्षक रहता है। उपपति रखने की प्रथा को आस्ट्रेलियन भाषा में 'पिराउरू' कहते हैं।

Taj Tahir Foundation

आस्ट्रेलिया की समस्त जातियाँ दो श्रेणियों में विभक्त हैं। एक श्रेणी की स्त्री का विवाह उसी श्रेणी के पुरुष से हो सकता है। 'डीरी' श्रेणी के पुरुष के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी नानी के भाई की दौहत्री के साथ विवाह करे। इसी प्रकार चचेरी बहन से भी विवाह करना आवश्यक समझा जाता है।

इनके यहाँ अनेक विचित्र प्रथाएँ हैं जैसे दामाद अपनी सास से कभी बात नहीं करता। पुत्र-बधू अपने श्वसुर से नहीं बोलती। पत्नी अपने पति से अन्य लोगों के सामने बात नहीं करती। भाई बहन भी एक दूसरे से दूर दूर

आस्ट्रेलिया की 'वाकाई जाति की स्त्री.
छाती पर उभरा हुआ गुदना गुदाये हुए.

Taj Tarikh Foundation

रहते हैं और आपस में वातचीत बहुत कम करते हैं। सात वर्षसे ऊपर की वयस के लड़के लड़की माता पिता के साथ नहीं सो सकते—उनके लिए अलग स्थान होता है।

स्त्रियों का कर्तव्य

गृहस्थी का सब काम स्त्रियों ही को करना पड़ता है। पुरुष केवल शिकार खेलकर दिन व्यतीत करते हैं। स्त्री जंगल से शाक तथा जड़ें लाती है, घर बनाती है, बोझ ढोती है तथा भोजन पकाती है। जब कभी कोई आस्ट्रेलियन यात्रा को जाता है तो वह अपनी पत्नी को अवश्य साथ ले जाता है। इसके दो कारण हैं—एक तो वह वहमी होने के कारण उसे घर पर अकेली नहीं छोड़ सकता; दूसरे यदि पत्नी साथ न हो तो असबाब कौन लाद के ले चले। पति महाशय तो भाला अथवा धनुष बाण हाथ में लिये अकड़ते हुए आगे आगे चलते हैं और पीछे पीछे पत्नी चलती है। पत्नी के हाथ में उसकी लाठी होती है। पीठ पर एक थैला रहता है जिसमें उसके एक या दो बच्चे सोते होते हैं—यदि बच्चे कुछ बड़े होते हैं तो उसके कन्धों पर बैठे रहते हैं। इसके अतिरिक्त उसके पास एक गृहस्थी का पूरा सामान रहता है; जैसे—एक पत्थर की सिल, थोड़ी सी मिट्टी, चाकू और भालों के फल, कुल्हाड़ी बनाने के लिए पत्थर, कंग्रू पशु की रगें, जो कपड़े सीने में डोरे का काम देती हैं, कंग्रू की हड्डी की सुई, उपोसम पशु के बाल, भालों पर पालिश करने के लिए कंग्रू की खाल, बाल काटने के लिए एक प्रकार की सीपी, वृक्षों की छाल के बने हुए कुछ डोल तथा अग्नि बनाने के लिए कुछ लकड़ी। इसके अतिरिक्त यदि पति महाशय के पास कोई भाला अथवा बूमरेंग उनकी आवश्यकता से अधिक हुआ तो वह भी पत्नी को लादना पड़ता है। निश्चित स्थान पर पहुँचने पर पत्नी ही को झोंपड़ी बनानी पड़ती है और वही सब आवश्यक सामान एकत्र करके भोजन पकाती है। आस्ट्रेलिया के कुछ स्थानों में घास के बीज रुचि पूर्वक खाये जाते हैं। घास के बीज निकाल कर पानी के साथ सिल पर पीस लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी लप्सी सी बनाकर अथवा कच्चे ही खाये जाते हैं।

Taj Tahir Foundation

परिवार के पालन पोषण का भार भी अधिकांश स्त्री ही पर रहता है। परिवार के लिए शिकार लाने का भार प्रायः परिवार के बड़े बूढ़े पुरुष पर रहता है और साग तथा जड़ें एकत्र करने का भार स्त्रियों के ऊपर।

आस्ट्रेलिया में एक विचित्र प्रथा यह है कि यदि कोई व्यक्ति बैठा खा रहा हो और उसे अपने भोजन में से किसी को कुछ देने की आवश्यकता पड़े तो वह सामने से न देकर अपने कन्धे के ऊपर से पीछे की ओर हाथ करके देगा। इसका कारण यह है कि वे लोग समझते हैं कि भोजन के साथ एक मनुष्य का रोग अथवा जादू दूसरे मनुष्य में चला जाता है; परन्तु यदि कन्धे के ऊपर हस्त ले जाकर पीछे की ओर दिया जाय, तो रोग तथा

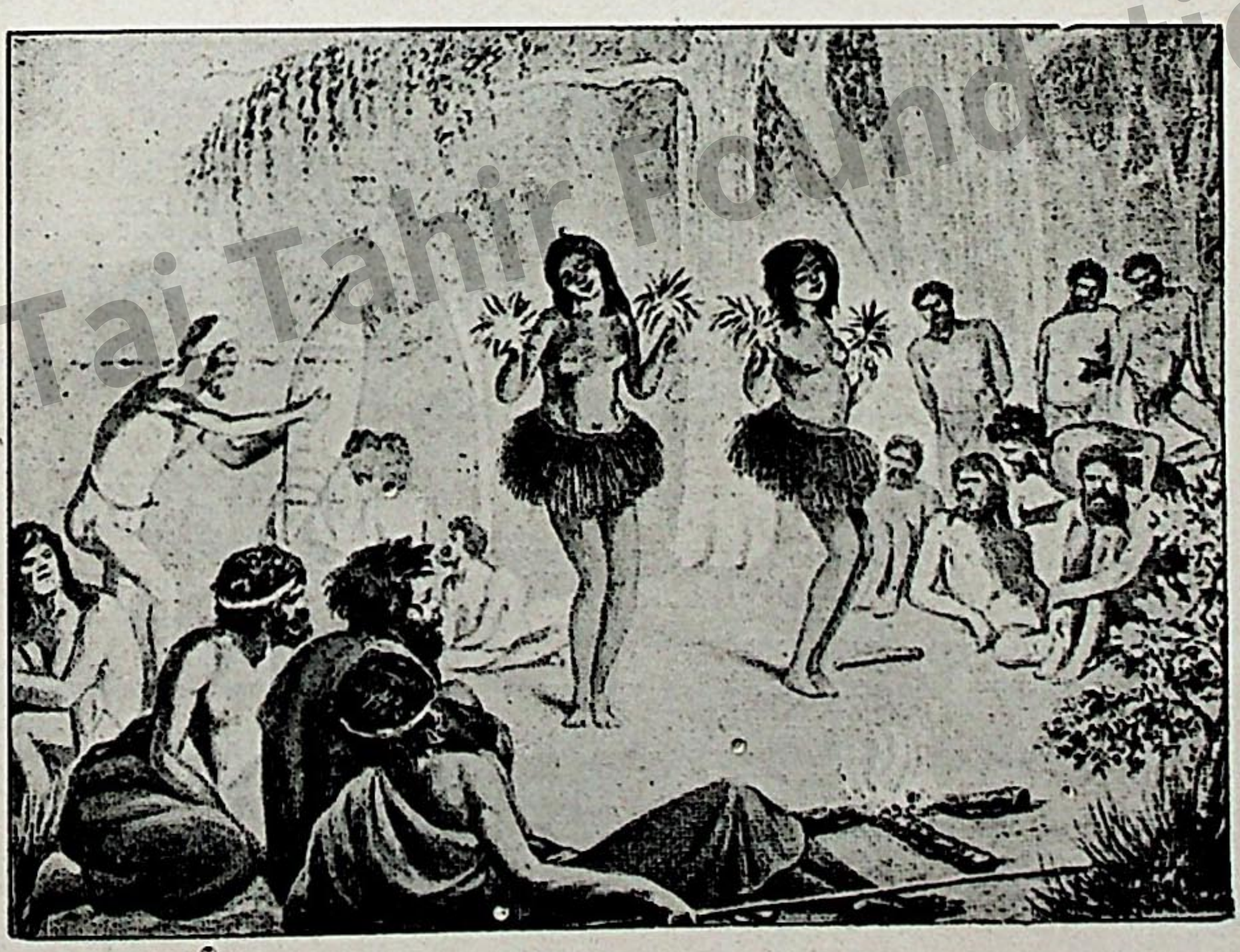

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का नाच.

Tai Tahir Foundation

जादू का प्रभाव नहीं होता। खाने पीने की सामग्रियों के लिए भी आस्ट्रेलियनों में बड़ा बन्धन है। कुछ पशु ऐसे हैं जिनका मांस कुछ लोगों को नहीं दिया जाता। जैसे एमू, साँप तथा साही का मांस युवती स्त्रियों को नहीं दिया जाता। वे स्वयं भी इन जीवों का मांस नहीं खातीं; क्योंकि उनका विश्वास होता है कि इनका मांस खाने से उन्हें कष्ट होगा। परन्तु यह बन्धन ६ वर्ष की वयस के पश्चात् आरम्भ होता है। प्रायः युवकों और युवतियों के लिए वे ही मांस वर्जित होते हैं जिन्हें वृद्ध और वृद्धाएँ बहुत पसन्द करती हैं। पानी में ग़ोता लगा कर जो मछली पकड़ी जाती है वह स्त्री जाति मात्र के लिए वर्जित है। स्त्रियाँ केवल जाल द्वारा पकड़ी हुई मछलियाँ खा सकती हैं।

वैधव्य

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का वैधव्य भी बड़ा दुःखमय होता है। कुछ जातियों में पति के मरने पर विधवा पत्नी को बहुत दिनों तक मातम मनाना पड़ता है। मध्य आस्ट्रेलिया की जातियों में विधवा का सर मूँड़ डाला जाता है और प्रायः दो वर्षों तक उसे मौन व्रत धारण किये रहना पड़ता है। इस बीच में वह केवल संकेतों द्वारा बातचीत करती है। आस्ट्रेलियनों की संकेत भाषा बड़ी पूर्ण है और इसके द्वारा वे बड़ी सरलता पूर्वक भली भाँति बातचीत कर सकते हैं। पूर्व आस्ट्रेलिया में विधवाएँ अपने मृत पति की क़ब्र पर एक झोंपड़ी बनाती हैं और श्वेत मिट्टी की एक टोपी पहन कर, जिसका वज़न चार पाँच सेर के लगभग होता है; उसी झोंपड़ी में बैठी रहती हैं।

माताएँ अपने मृत बच्चों को महीनों और कभी कभी वर्षों तक लिये फिरा करती हैं। इस कार्य के लिए बच्चों की लाशें धुएँ द्वारा अच्छी तरह सुखा ली जाती हैं।

Taj Tahir Foundation

पश्चिमी आस्ट्रेलिया में घर में कोई मृत्यु हो जाने पर जब कोई बाहर गया हुआ पुरुष घर लौटता है तो मृत मनुष्य की निकट सम्बन्धिनी स्त्री उस पुरुष के सामने घुटने टेक कर बैठ जाती है और बाएँ हाथ से उसके घुटनों का आलिंगन करके दाहिने हाथ के नाखूनों से उसके मुख को इतना खरोंचती है कि रक्त-स्राव होने लगता है। इसके पश्चात् वह स्त्री उसी पुरुष की पत्नी के सामने बैठ जाती है और दोनों स्त्रियाँ अपने अपने सिर एक

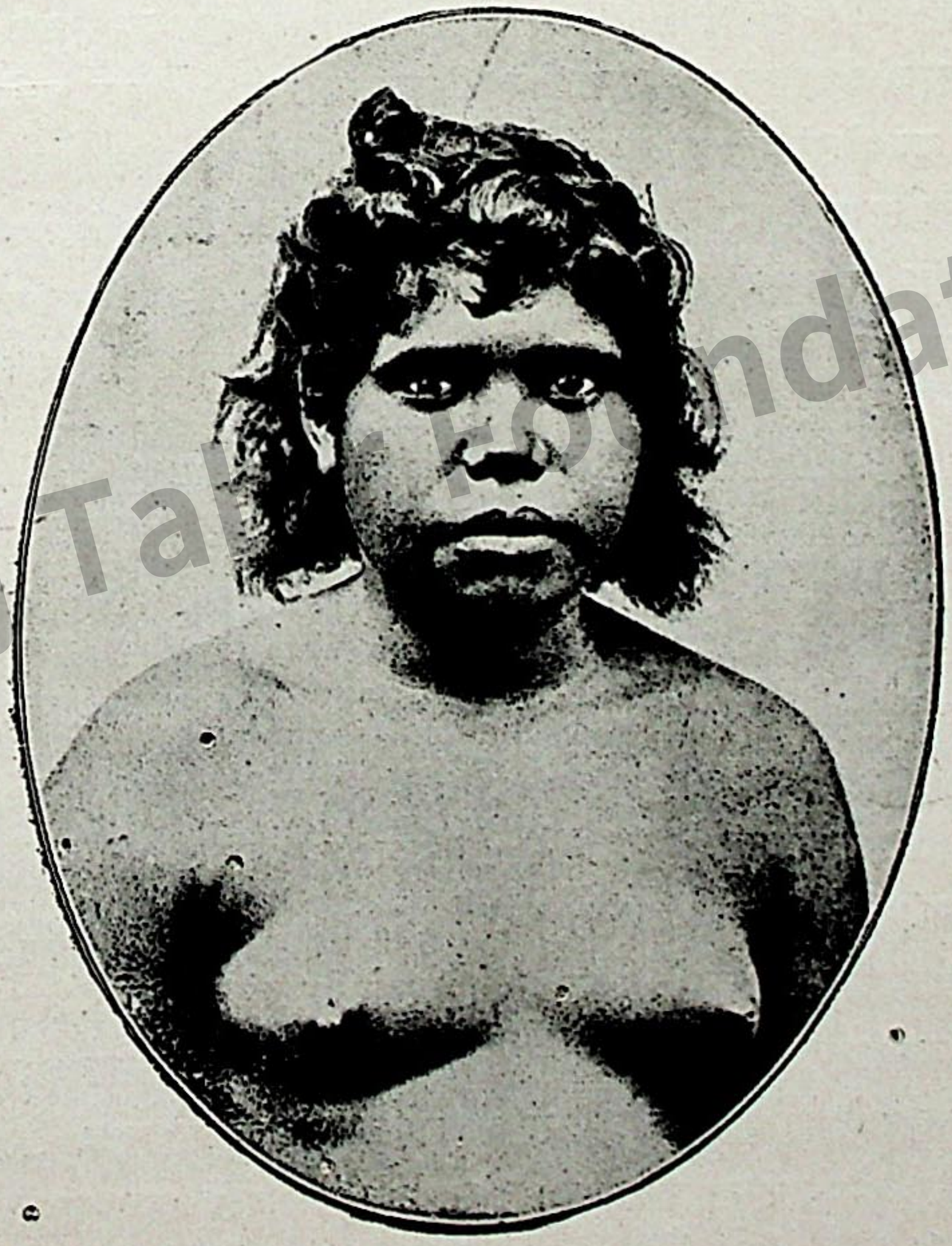

आस्ट्रेलिया की 'मोरूया' जाति की स्त्री.

TajTaal Foundation

दूसरी के कन्धे पर रख लेती हैं और रोना आरम्भ कर देती हैं। रोते हुए वे एक दूसरी का मुख खरोंचती रहती हैं।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों का विचार है कि मनुष्य की मृत्यु केवल उस समय होती है जब उस पर जादू कर दिया जाता है। अतएव मृत मनुष्य के नाते-रिश्तेदार इस बात की खोज करते हैं कि जादू किसने किया और जादू करने वालों का पता लग जाने पर उससे बदला लेना अपना कर्तव्य समझते हैं। जादू करने वाले का पता लगाने का काम वृद्धाएँ करती हैं। प्रायः स्त्रियाँ ही पुरुषों को बदला लेने के लिए उभारती हैं। जादू करने वाले के साथ जब किसी पुरुष का द्वन्द युद्ध होता है तो दोनों की पत्नियाँ साथ साथ रहती हैं और अपने अपने पति को युद्ध के समय प्रोत्साहित करती रहती हैं। इसी अवसर पर कभी कभी स्त्रियों में भी युद्ध होता है। स्त्रियों का युद्ध एक विशेष प्रकार का होता है। जो स्त्री दोषी समझी जाती है वह पहले सिर झुका कर खड़ी होती है और दूसरी स्त्री उसके सिर पर डण्डा मारती है। इसके पश्चात् पहला वार करने वाली स्त्री सिर झुका कर खड़ी होती है और दूसरी स्त्री उसी प्रकार उसके सिर पर प्रहार करती है। परन्तु इन प्रहारों से किसी का सिर नहीं फूटता, क्योंकि उनके बाल इतने कड़े होते हैं कि उनके सिर की पूरी पूरी रक्षा होती है। इस प्रकार लड़ते रहने पर पहले जो स्त्री भाग खड़ी होती है उसी की हार मानी जाती है।

स्त्रियों को धार्मिक कामों में भाग लेने की आज्ञा नहीं दी जाती और न उन्हें धार्मिक बातों का पूरा पूरा ज्ञान ही होने दिया जाता है। धार्मिक कामों के अवसर पर स्त्रियाँ केवल गाने-नाचने का काम करती हैं। नाचने गाने के अवसर पर स्त्रियाँ ढोल बजाती हैं। इनका ढोल प्लोपोसम की खाल का होता है। वे प्लोपोसम की खाल को लपेट कर ढोल सा बना लेती हैं और उसे लकड़ी से पीटती रहती हैं। कोरस गान में स्त्रियाँ तथा पुरुष मिल कर गाते हैं।

Tai Tahir Foundation

आस्ट्रेलिया में जादू का बड़ा प्रचार है और प्रायः स्त्रियाँ ही जादूगरी का काम जानती हैं। मिसेज़ लेंगलोह पार्कर ने आस्ट्रेलियन स्त्रियों की जादूगरी का वर्णन किया है। उनकी वर्णन की हुई घटनाओं में से हम दो घटनाएँ यहाँ उद्धृत करते हैं। एक बार एक यूरोपियन स्त्री आस्ट्रेलिया में मिसेज़ पार्कर के पास जाकर ठहरी, एक दिन सहसा वह स्त्री बीमार हो गई। मिसेज़ पार्कर ने अपनी मेहमान के मनोरंजनार्थ बूया नामक एक आस्ट्रेलियन वृद्धा जादूगरनी को बुलाकर उससे अपनी मेहमान के रोग ग्रस्त होने का कारण पूछा। वृद्धा जादूगरनी पहले कुछ विचित्र रसूम करने के पश्चात् आँखें बन्द करके और कुछ क्षण पश्चात् बोली—'तुम्हारी मेहमान ने मिगाह वृक्ष के नीचे स्नान किया था। उस वृक्ष पर आत्माओं का वास है। अतएव आत्माओं के

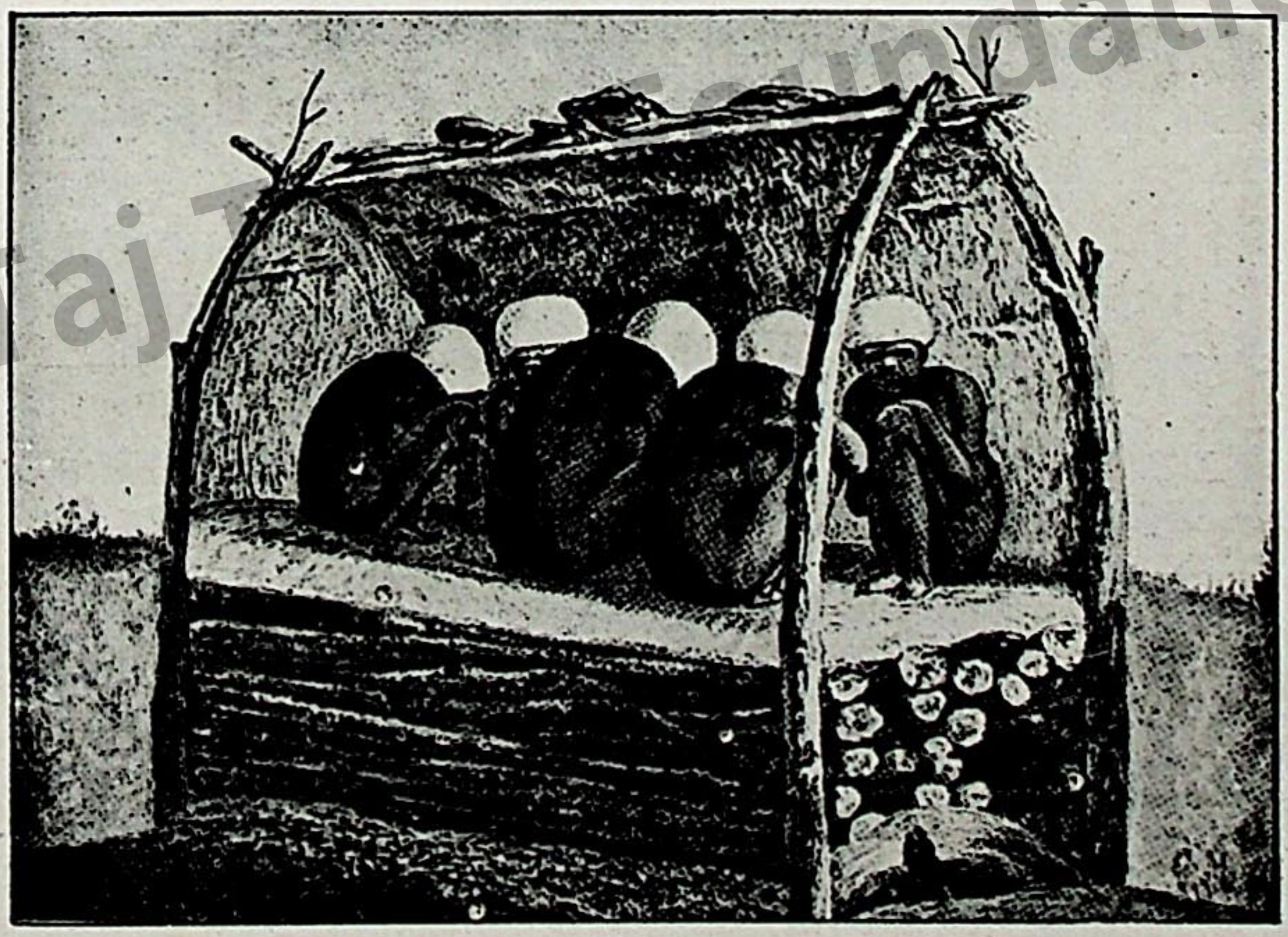

आस्ट्रेलिया की विधवाएँ अपने मृत पति की क़ब्र पर बैठी हुई हैं.

क्रोध से उस वृक्ष पर रहने वाली मधुमक्खियों ने उसकी पीठ पर डंक मारा है जिससे वह बीमार हो गई है।' मिसेज़ पार्कर ने जादूगरनी की इस बात पर विश्वास नहीं किया; पर अपनी मेहमान से पूछने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि वृद्धा जादूगरनी की बात अक्षरशः सत्य है। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे स्नान किया था और स्नान करते समय एक मधुमक्खी ने पीठ पर डंक मारा था। उन्होंने अपनी पीठ भी दिखलाई। पीठ पर रक्त वर्ण चकत्ता पड़ा हुआ था। इसके पश्चात् जादूगरनी ने अपने जादू से उन्हें निरोग कर दिया।

दूसरी घटना इस प्रकार है:—एक बार वर्षा न होने के कारण मिसेज़ पार्कर का उद्यान सूखा जारहा था। मिसेज़ पार्कर ने बूथा जादूगरनी को बुलाकर उससे जल बरसाने के लिए कहा। बूथा ने एक दिन नियत करके उस दिन जल बरसाने का वादा किया। निश्चित दिन आने पर एक बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया और बाग़ के अन्दर दो इञ्च वर्षा हुई, पर आश्चर्य की बात यह है कि बाग़ के बाहर केवल बूँदाबाँदी ही होकर रह गई।

जादू करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि कोई स्त्री शिक्षा प्राप्त जादूगरनी हो। कोई भी सुन्दरी अथवा प्रेमोन्मत्त युवती जादू कर सकती है। यदि कोई स्त्री किसी पुरुष पर जादू करना चाहती है तो वह कुछ मन्त्र पढ़ कर अपनी उँगलियों पर फूँक मारती है और पूरब की ओर अपने हाथों को फैला कर चुपचाप चली जाती है। उसके ऐसा करने से कहा जाता है, वह पुरुष सूख कर मर जाता है। किसी दूसरी स्त्री पर जादू करने के लिए स्त्री अपनी छड़ी लेकर उस पर मन्त्र पढ़ती और उसे दूसरी स्त्री की ओर फैला-कर अपनी ओर खींचती है। उसके ऐसा करने से वह स्त्री बीमार होजाती है। इसी प्रकार की अनेक क्रियाएँ हैं जिनका यहाँ लिखना व्यर्थ है।

आस्ट्रेलिया में अन्त्येष्ठ क्रियाओं की विचित्र प्रथाएँ हैं। मध्य आस्ट्रेलिया की कुछ जातियों में वृद्धा स्त्रियाँ तुरन्त दफ़न कर दी जाती हैं,

Taj Tahir Foundation

अन्त्येष्टि क्रिया

परन्तु युवकों तथा युवतियों के मृत शरीर वृक्षों में लटका दिये जाते हैं। इनकी कुछ जातियों का विचार है कि स्त्री के आत्मा नहीं होती। कभी स्त्रियों को एक खुली क़ब्र में रख कर वैसे ही छोड़ देते हैं। कुछ दिनों के पश्चात् उसका हाड़-कंकाल निकाल कर वृक्ष में लटका देते हैं। प्राचीन समय में नौजवान आदमी दफ़न किये जाते थे, अर्द्ध वयस्क तथा वृद्ध जलाये जाते थे। सन् १७९६ में मृत

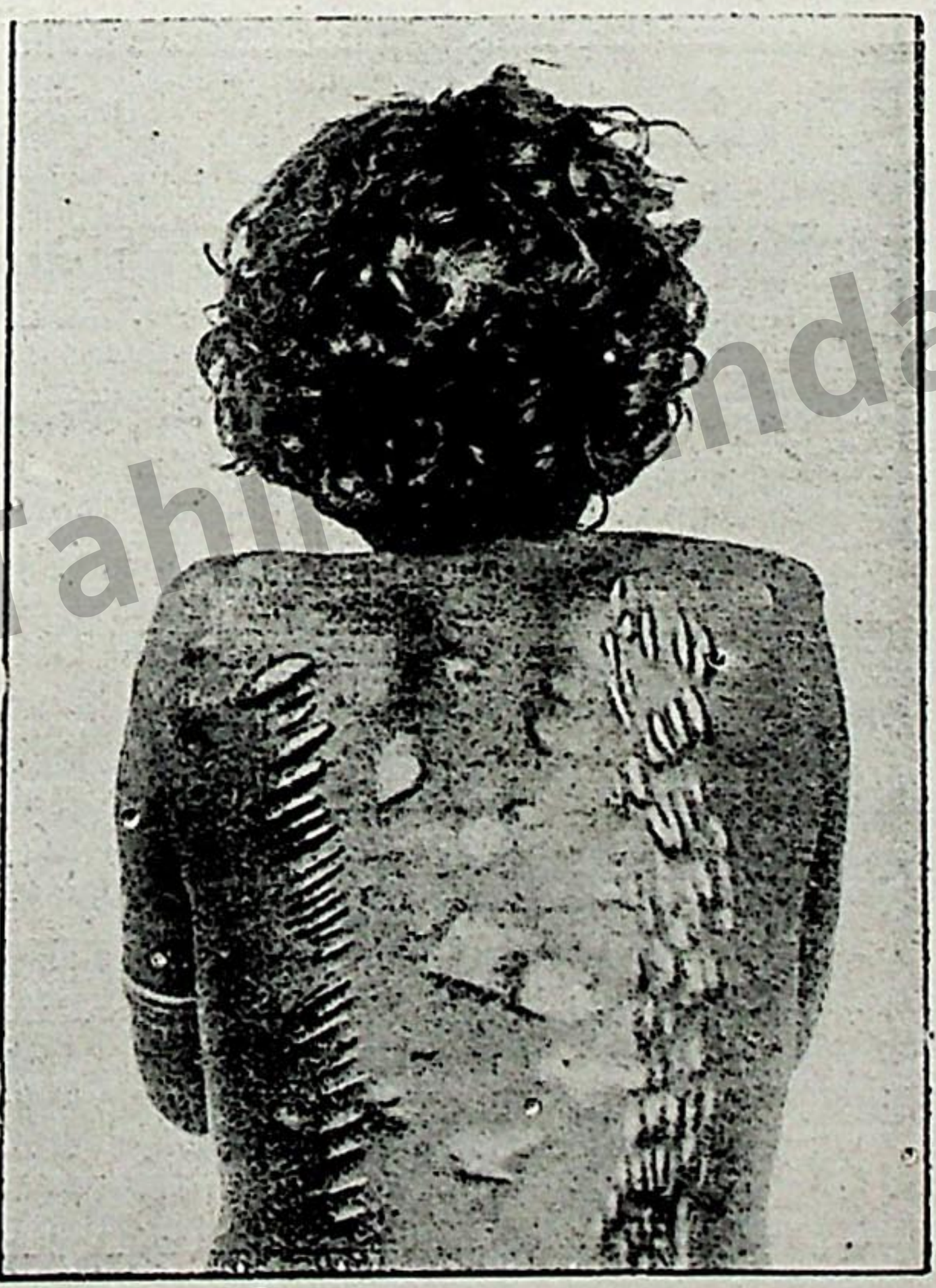

लड़ाकिया जाति की स्त्री.
पीठ पर का उभरा हुआ गुदना वैधव्य का चिह्न है.

Taj Tahir Foundation

शरीर जलाने की यह प्रथा थी कि चिता बनाकर उस पर मृत शरीर रख दिया जाता था। मृत शरीर का सिर उत्तर की ओर रखा जाता था। मृत शरीर के साथ उसकी प्रिय वस्तुएँ तथा शिकार खेलने के अस्त्र-शस्त्र भी रख दिये जाते थे। स्त्री को जलाते समय उसका पति चिता में आग देता था और दूसरे दिन पति ही मृत की भस्म एकत्र करके उसे गाड़ देता थी।

मिसेज़ पार्कर ने अपनी एक वृद्धा मित्र वीमूनी की अन्त्येष्टि क्रिया का वर्णन इस प्रकार किया है—"समस्त रात मृत शरीर के पास उसके रिश्तेदार बैठे रहे जिसमें उस पर दुष्टात्माओं का प्रभाव न पड़े। प्रातःकाल एक वृक्ष के तने की समूची छाल में मृत शरीर रक्खा गया। मृत शरीर को दफ़न करने के लिए ले जाते समय रास्ते में एक छोटी चिड़िया बोली। उसके बोलने पर लोगों ने मुझ से कहा—'यह चिड़िया "वीमूनी" की आत्मा है'। क़ब्र पर पहुँच कर पहले अग्नि प्रज्वलित की गई जिससे कि आत्माएँ क़ब्र पर न आ सकें। मृत शरीर को क़ब्र में उतारने के उपरान्त स्त्रियों ने रोना आरम्भ किया। अन्त में वृद्धा स्त्रियाँ क़ब्र के चारों ओर नाचने लगीं और पुरुष क़ब्र में मिट्टी डालने लगे। मिट्टी डालने का कार्य प्रारम्भ होते ही वीमूनी की कन्या "माँ! माँ!" कह कर ज़ोर से चिल्लाई और उसने एक पत्थर से अपना सिर फोड़ लिया। वहां पर वूथा जादूगरनी भी उपस्थित थी। मैंने उससे पूछा—'पानी कब बरसेगा?' वूथा ने उत्तर दिया तीन दिन में। जब वीमूनी मर रही थी तब उसने मुझ से कहा था कि 'मैं तीन दिनों में जल बरसाऊंगी' इसके पश्चात् सब लोग अपने अपने घर चले आये। वीमूनी बुधवार को मरी थी। शनिश्चर को मेरे सोते समय तक आकाश बिल्कुल स्वच्छ था; परन्तु अर्द्धरात्रि व्यतीत होने के पूर्व ही बड़े ज़ोर की वृष्टि हो गई और दूसरे दिन शाम तक बराबर वृष्टि होती रही। आस्ट्रेलियन लोगों का कहना है कि मृत मनुष्य की आत्मा मरने के पश्चात् एक सप्ताह के अन्दर अवश्य पानी बरसाती है।

आस्ट्रेलियन स्त्रियों की वर्तमान दशा साधारणतया अच्छी है। वे अपनी सन्तान का लालन पालन बड़े स्नेह से करती हैं। ऐसे स्नेह से कि जिससे सभ्य संसार पाठ ले सकता है। वह सदैव

वर्तमान दशा

पुरुष के आधीन रहती है। धर्म में हस्तक्षेप करने का उसे कोई अधिकार नहीं रहता और सार्वजनिक कामों में

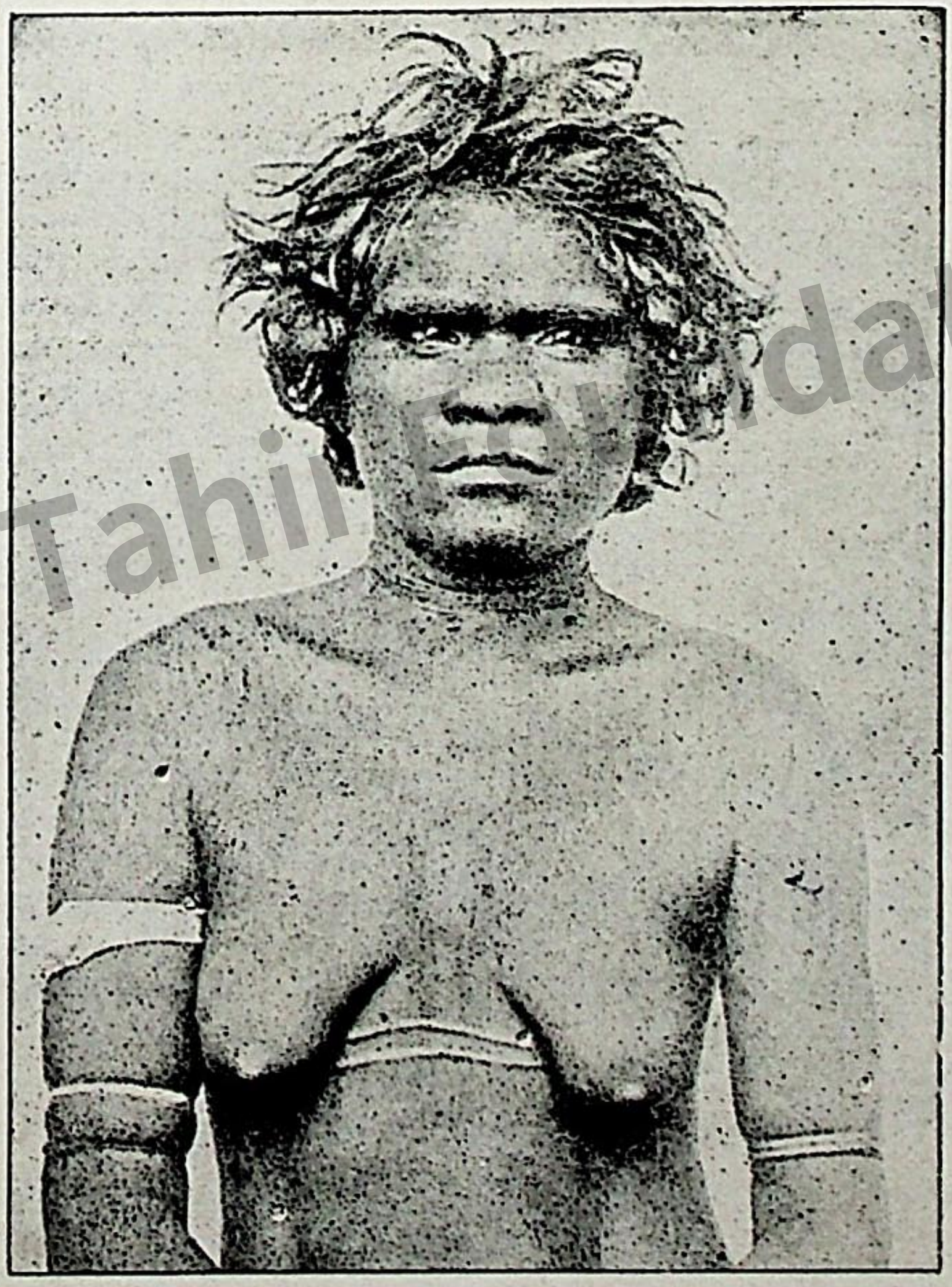

उत्तरी आस्ट्रेलिया की 'उलना' जाति की स्त्री.

Taj Tahir Foundation

भी उसे भाग लेने की आज्ञा नहीं। वृद्धापे में स्त्रियों को वड़ा प्रतिष्ठित स्थान मिल जाता है। वह जातीय पञ्चायत तक की सदस्या हो जाती है और यदि वह व्यर्थ समझी गई तो वह त्याग भी दी जाती है; परन्तु ऐसा वहुत कम होता है। अधिकतर वृद्धा स्त्रियों को उनके पुत्र पौत्र वड़े स्नेह से रखते हैं और कौटुम्बिक कार्यों में सदैव उसके परामर्श से काम करते हैं।

Taj Tahir Foundation

टारेस स्ट्रेट्स

और

न्यू गाइना

टारेस स्ट्रेट्स की पापन जाति का विनाश, परिच्छादन, वैवाहिक रीति रिवाज, न्यू गाइना की स्त्रियाँ, गुदना, विवाह, न्यू गाइना की विधवाएँ, गापा, भोजन पकाने की रीति.

Taj Tahir Foundation

टारेस स्ट्रेट्स की पापन जाति का विनाश

टारेस स्ट्रेट्स आस्ट्रेलिया और न्यू गाइना के मध्य में स्थित है। यह छोटे छोटे अनेक द्वीपों का समूह है। इनका राजनीतिक सम्बन्ध क्वीन्स-लैण्ड से है। आस्ट्रेलिया और टारेस स्ट्रेट्स के मध्य का समुद्री भाग बहुत छिछला है। अतएव, यद्यपि यह लोग आस्ट्रेलिया सरलता पूर्वक आ जा सकते हैं, तथापि इन लोगों में आस्ट्रेलियन जाति का सम्मिश्रण बहुत कम हुआ है। टारेस स्ट्रेट्स के निवासी पूर्णतया पापन हैं और सूरत शकल तथा रीति-रिवाज में न्यू गाइना के निवासियों से अधिक मिलते जुलते हैं। पहले टारेस स्ट्रेट्स की जनसंख्या उसके लिए यथेष्ट थी; परन्तु २५–३० वर्षों से यहाँ समुद्र से मोती निकालने का कार्य बहुत बढ़ गया है, अतएव लंका, जापान तथा अन्य स्थानों से बहुत लोग यहा आकर बस गये हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि मिशनरियों तथा व्यापारियों के प्रभाव से पुराने आचार विचारों में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया। विदेशियों की यथेष्ट जन-संख्या होजाने के कारण

द्वीपों में विदेशी बीमारियाँ भी फैल गईं और इसलिए वहाँ के मूल निवासी बहुत नष्ट होगये हैं। कुछ द्वीपों में तो अब वहाँ का एक भी मूल निवासी नहीं रहा। कुछ में थोड़े थोड़े अर्थात् बीस बीस पच्चीस पच्चीस निवासी ऐसे रह गये हैं जो वृद्ध होने के कारण प्राचीन रीति-रिवाज की रक्षा किये हुए हैं; परन्तु इनमें भी ऐसे कुछ ही हैं जिनकी पीठ पर उनका वंश चिन्ह उभरे हुए गुदने में गुदा है। उन्हीं में से एक वृद्धा का चित्र हम यहाँ देते हैं। इस वृद्धा की पीठ पर इसका वंश चिन्ह दो सर्पों के रूप में गुदा है।

परिच्छादन

पचास वर्ष पूर्व टारेस स्ट्रेट्स की स्त्रियों का परिच्छादन सागू की पत्तियों का बना हुआ एक छोटा लहँगा हुआ करता था जो काला या भूरा रँग लिया जाता था; परन्तु आज कल यह सादा और स्वच्छ परिच्छादन लुप्त होगया है। अब छींट के बने गौन का रिवाज है। यह गौन जब बनते हैं तभी स्वच्छ रहते हैं; क्योंकि अब फ़ैशन के अनुसार कोई भी स्त्री बिना इस गौन के बाहर नहीं निकल सकती और दरिद्रता के कारण किसी स्त्री के पास एक से अधिक गौन नहीं रहता। अतएव जब तक एक गौन फट न जाय तब तक दूसरा न बनने के कारण वह बहुत गन्दा होजाता है। इन गौनों की अपेक्षा इनके सागू की पत्तियों के लहँगे कहीं अधिक अच्छे थे; क्योंकि सागू की पत्तियों के लहँगे के लिए स्त्रियों को कोई मूल्य नहीं देना पड़ता था। वे जितने चाहती थीं बना लेती थीं। अतएव उन लहँगों में वे स्वस्थ और स्वच्छ रहती थीं। सभ्य देशों के ठेकेदारों ने वहां पहुँच कर सभ्यता तो पहुँचाई; परन्तु वह सभ्यता ग़रीब निवासियों के लिए हलाहल का काम कर गई। टारेस स्ट्रेट्स के मूल निवासियों के नाश का कारण अधिकतर नई सभ्यता ही हुई। गन्दे और मैले परिच्छादन के कारण उनके स्वास्थ्य बिगड़ गये और वे बेमौत मरने लगे।

पहले टारेस स्ट्रेट्स के सब द्वीपों में कन्या के विवाह योग्य होते ही एक बहुत बड़ी रस्म अदा की जाती थी। रस्म इस प्रकार होती थी। कन्या के लिए

वैवाहिक रीति रिवाज

घर की एक अँधेरी कोठरी में झाड़ियों तथा अन्य छोटे वृक्षों की हरी शाखाओं का एक वाड़ा सा बनाया जाता था। इस वाड़े में कन्या को उसके सब गहने पहना कर रख दिया जाता था। इस वाड़े में बैठने पर कन्या का सिर्फ़ सिर और वक्षस्थल दिखाई पड़ता था। कन्या को तीन मास तक इस वाड़े में रहना पड़ता था। प्रत्येक रात को इस वाड़े में नई शाखाएँ लगाई जाती थीं और शाखाएँ लगाने के समय, कन्या को थोड़ी देर के लिए बाहर निकलने की आज्ञा दी जाती थी। तीन मास तक उसके पास दो स्त्रियाँ, जो उसकी चाची ताई

टारेस स्ट्रेट्स की एक वृद्धा.
इसकी पीठ पर इसका वंश चिन्ह उभरे हुए गुदने में गुदा है.

Taj Tahir Foundation

हुआ करती थीं, प्रत्येक समय बैठी रहा करती थीं। वे ही उसके लिए भोजन बनाती थीं और अपने हाथों से उसे खिलाती थीं। इस बात का बहुत ध्यान रखा जाता था कि कन्या के इस एकान्त वास में उस पर सूर्य की किरणें न पड़ने पावें; क्योंकि ऐसा होने से इन लोगों की समझ में, कन्या की नाक सड़ कर गिर जाने का भय रहता था। तीन मास पूरे हो जाने पर कन्या की चाचियाँ उसे गोद में उठा कर समुद्र के किनारे ले जाती थीं और उसे स्नान कराती थीं। इसके उपरान्त कन्या को स्वच्छन्दता पूर्वक रहने का अधिकार प्राप्त हो जाता था। पहले टारेस स्ट्रेट्स के सब द्वीपों में युवतियाँ ही युवकों को अपने प्रेम जाल में फाँसने की चेष्टा किया करती थीं। विवाह के पहले युवक और युवती परस्पर छिप कर मिलते जुलते रहा करते थे। यद्यपि दोनों के माता पिताओं को इसका पता रहा करता था, परन्तु जान बूझ कर वे अनजान बने रहते थे। जब विवाह की रस्म पूरी करने का समय आता था, तब वर और कन्या के छिप कर मिलने की बात जान लेने का ढोंग रचा जाता था और वर तथा कन्या के परिवारों में बड़ी चख़ चलती थी। जब तक वर पक्ष का कोई आदमी कन्या पक्ष के किसी आदमी द्वारा घायल नहीं कर दिया जाता था, तब तक यह झगड़ा चलता रहता था। इसके उपरान्त आपस में मेल हो जाया करता था और विवाह की रस्म पूरी कर दी जाती थी।

सेवाई द्वीप में जो स्त्री प्रथम वार गर्भवती होती थी वह गले में लकड़ी की बनी हुई बालक की एक मूर्ति पहने रहती थी। इस प्रथा को उनके यहाँ 'विड' कहते थे। यह मूर्ति २० इञ्च के लगभग लम्बी होती थी।

न्यू गाइना के कुछ द्वीप नीची भूमि पर होने के कारण नम रहते हैं। अतएव यहाँ भूमि पर मकान नहीं बनाये जाते। भूमि से आठ दस फ़ीट ऊँचा मचान बना कर उस पर घर बनाते हैं। एक कुटुम्ब के लिए केवल दो बड़े बड़े घर होते हैं; एक में केवल स्त्रियाँ और दूसरे में केवल पुरुष रहते हैं। स्त्रियों को

न्यू गाइना की स्त्रियाँ

Taj Tahir Foundation

पुरुष के घर में जाने की आज्ञा नहीं होती। पुरुष स्त्रियों के घर जा सकते हैं। पूर्वी न्यू गाइना के निवासी पश्चिमी गाइना के निवासियों की अपेक्षा वर्ण में कुछ अच्छे होते हैं। पश्चिमी न्यू गाइना में लोग अपने शत्रु को

मिराउकी स्त्रियाँ
गले के गहने पहने और बाल सँवारे हुए.

Tarikhi Kitab Collection

मार कर खा जाते हैं और उसका सिर सुरक्षित रखते हैं। जिस पुरुष के पास जितने ही अधिक सिर होते हैं वह उतना ही अधिक वीर समझा जाता है। पूर्वी न्यू गाइना के निवासी मनुष्य भक्षी नहीं हैं और न उनमें सिर सुरक्षित रखने की प्रथा है।

न्यू गाइना की स्त्रियों का शरीर सुदृढ़ होता है, स्त्रियाँ सिर पर बड़े बड़े बाल रखती हैं और खूब गहने पहनती हैं; परन्तु यह प्रथा केवल फ्लाई नदी के आस पास प्रचलित है। यह स्थान ब्रिटिश राज्य के अधिकार में है। ठेठ न्यू गाइना में स्त्रियाँ अपने केश काट डालती हैं और गहना बिल्कुल नहीं पहनतीं—केवल पुरुष ही गहना पहनते हैं।

गुदना

न्यू गाइना में गुदने का भी रिवाज है; परन्तु यहाँ आस्ट्रेलिया की तरह उभरा हुआ गुदना नहीं गोदा जाता, केवल रँग का गुदना गोदा जाता है। जब कन्या विवाह योग्य हो जाती है तब उसके वक्षस्थल पर अँग्रेज़ी के V अक्षर के आकार का गुदना गोदा जाता है। कन्या के पूर्ण वयस्क होने पर पेड़ू के नीचे भी गुदना गोदा जाता है।

विवाह

मध्य न्यू गाइना की अविवाहित स्त्रियाँ लम्बे बाल रखती हैं, गहने पहनती हैं और एक छोटा लहँगा पहनती हैं। यह वेष उनके अविवाहित होने का सूचक होता है। छोटी कन्याएँ तीन तीन चार चार लहँगे पहनती हैं। विवाहित स्त्रियाँ गहने नहीं पहनतीं और उनका सिर हर समय मुँड़ा रहता है। उन को नाच में सम्मिलित होने की आज्ञा भी दी जाती है। पति की मृत्यु पर विधवाओं का समस्त शरीर काला रँगवा दिया जाता है और वे एक लम्बा लहँगा और जालदार टोपी पहनती हैं।

पति की प्रिय वस्तुओं को तोड़ कर और उनका हार बनाकर पहनती हैं। यह वेष उनका केवल उस समय तक रहता है जब तक कि अन्त्येष्टि

Taj Tahir Foundation

न्यू गाइना की विधवाएँ

क्रिया सम्बन्धी भोज नहीं दिया जाता। भोज दिये जा चुकने पर विधवा समुद्र में स्नान करके ये सब चीज़ें उतार देती है और साधारण वेष में रहने लगती है। विधवाएँ यदि चाहती हैं तो पुनर्विवाह कर लेती हैं।

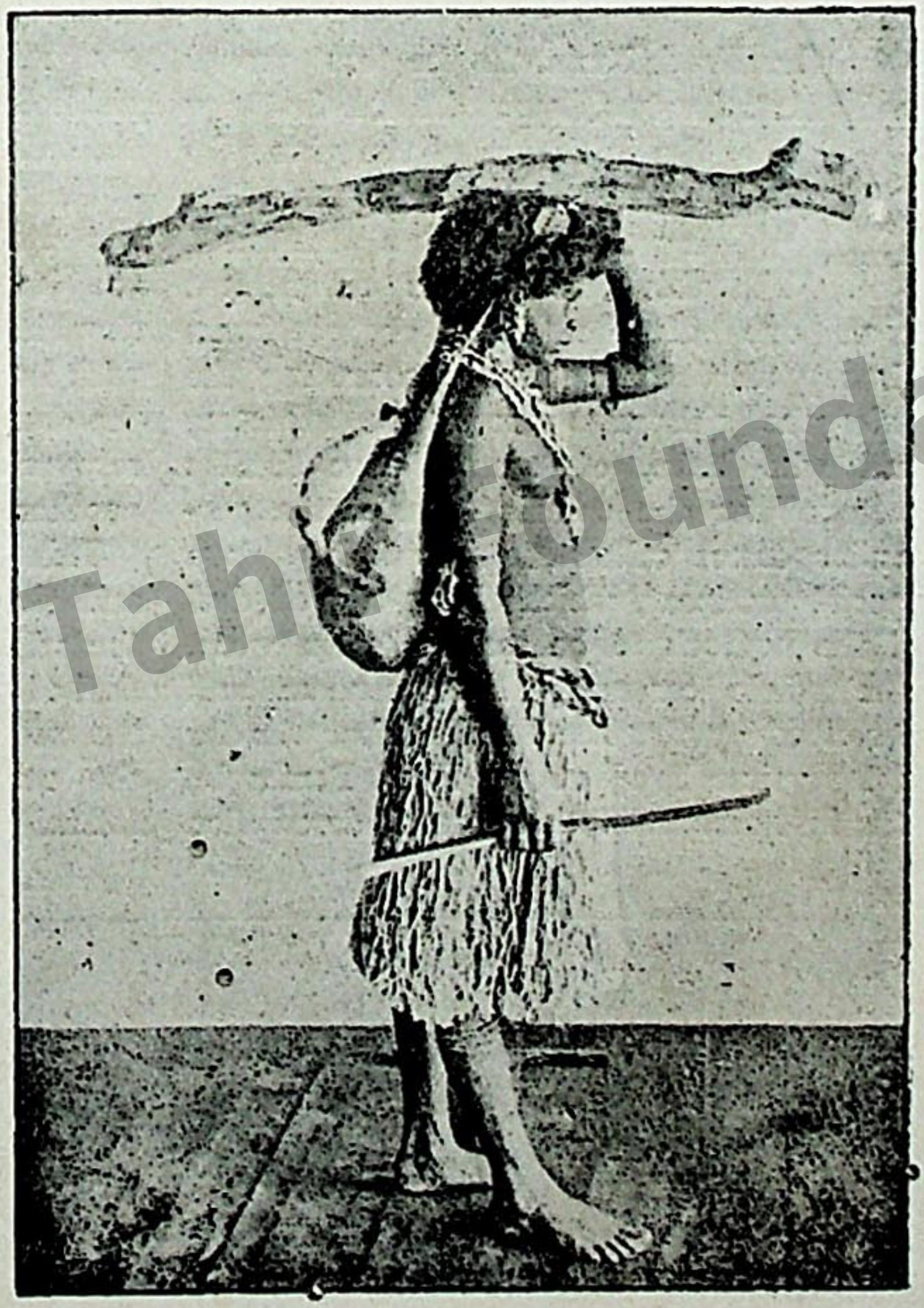

मोटू जाति की लड़की.
सागू की पत्तियों का लहँगा पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

इन लोगों में एक त्योहार 'गापा' होता है। इस अवसर पर एक बहुत बड़ा भोज होता है जो प्रायः दो महीने तक चलता है। इसी अवसर पर बड़े बड़े नाच भी होते हैं। विवाह भी अधिकतर

गाप्पा

इसी त्योहार पर होते हैं। इस अवसर पर मकानों की मरम्मत की जाती है और वे फल तथा फूलों से खूब सजाये जाते हैं।

कुछ स्थानों में यह त्योहार केवल दो दिन तक रहता है। इस अवसर पर विवाह योग्य कन्याओं का प्रदर्शन होता है। इसके लिए एक विशेष प्रकार का मचान बनाया जाता है जिसे 'इवू' कहते हैं। विवाह योग्य कन्याएँ इस मचान पर अपने नये लहँगे तथा गहने पहन कर नाचती हैं। इस नाच को 'ईरोपी नाच' कहते हैं। ईरोपी नाच का वर्णन स्वर्गीय मि० आर० ई० गाइस ने इस प्रकार किया है:—लहँगे में जो नाड़ा होता है उसमें दो फ़ीट लम्बा एक डोरा बँधा रहता है। उस डोरे में एक बटुवा बँधा रहता है। कन्याएँ एक अथवा कई क़तारों में खड़ी होती हैं। प्रत्येक कन्या अपने दाहिने हाथ में डोरे को पकड़े रहती है। ढोल का बजना आरम्भ होते ही कन्याएँ ताल पर नाचती हैं और बटुवे को दाहिने बाएँ उस प्रकार घुमाती रहती हैं जिस प्रकार एक पटेबाज़ अपनी लकड़ी घुमाता है। यह नाच आध घण्टे तक होता है। इसके पश्चात् अन्य नाच होते हैं जिसमें गाँव के सब लोग भाग लेते हैं। इस अवसर पर पान सुपारी का खूब ख़र्च रहता है। दोपहर को अविवाहित कन्याओं का प्रदर्शन होता है। सब कन्याएँ 'इवू' मचान पर खड़ी की जाती हैं। उनके साथ में एक वृद्धा रहती है जिसके हाथ में ढोल रहता है। वृद्धा के ढोल बजाते ही सब कन्याएँ अपने अपने लहँगे खोल डालती हैं और उन्हें अपने पीछे फेंक देती हैं। इसके पश्चात् कुछ वृद्धाएँ प्रत्येक कन्या के सामने एक टोकरी रखती हैं जिसमें एक छोटा चाकू और कुछ सुपारियाँ तथा ज़मीकन्द की छोटी छोटी गाँठें रक्खी रहती

हैं। इस अवसर पर केवल एक कन्या को जिसके पिता ने युद्ध में किसी के प्राण लिये हों, यह अधिकार रहता है कि वह अपने सिर पर परों का एक मुकुट पहने। सुपारियों की टोकरियाँ रख दिये जाने के पश्चात् एक वृद्धा सब कन्याओं के वक्षस्थल तथा पेड़ पर सुअर की चर्बी अथवा नारियल के तेल की मालिश करती है। इसके उपरान्त दो तीन सधवा अथवा विधवा स्त्रियाँ ढोल लेकर कन्याओं के पीछे बैठ जाती हैं। ढोलों का बजना आरम्भ होते ही प्रत्येक कन्या दाहिने हाथ में चाकू तथा बायें हाथ में ज़मीकन्द ले लेती है और प्रत्येक ताल पर चाकू से ज़मीकन्द का एक टुकड़ा काटती है। इसी प्रकार छः सात ज़मीकन्द काट डाले जाते हैं। इसके उपरान्त ढोलों का बजना बन्द हो जाता है और कन्याएँ लोगों पर सुपारियाँ फेंक कर मारती हैं।

ईरोपी नाच.

Taj Mahir Foundation

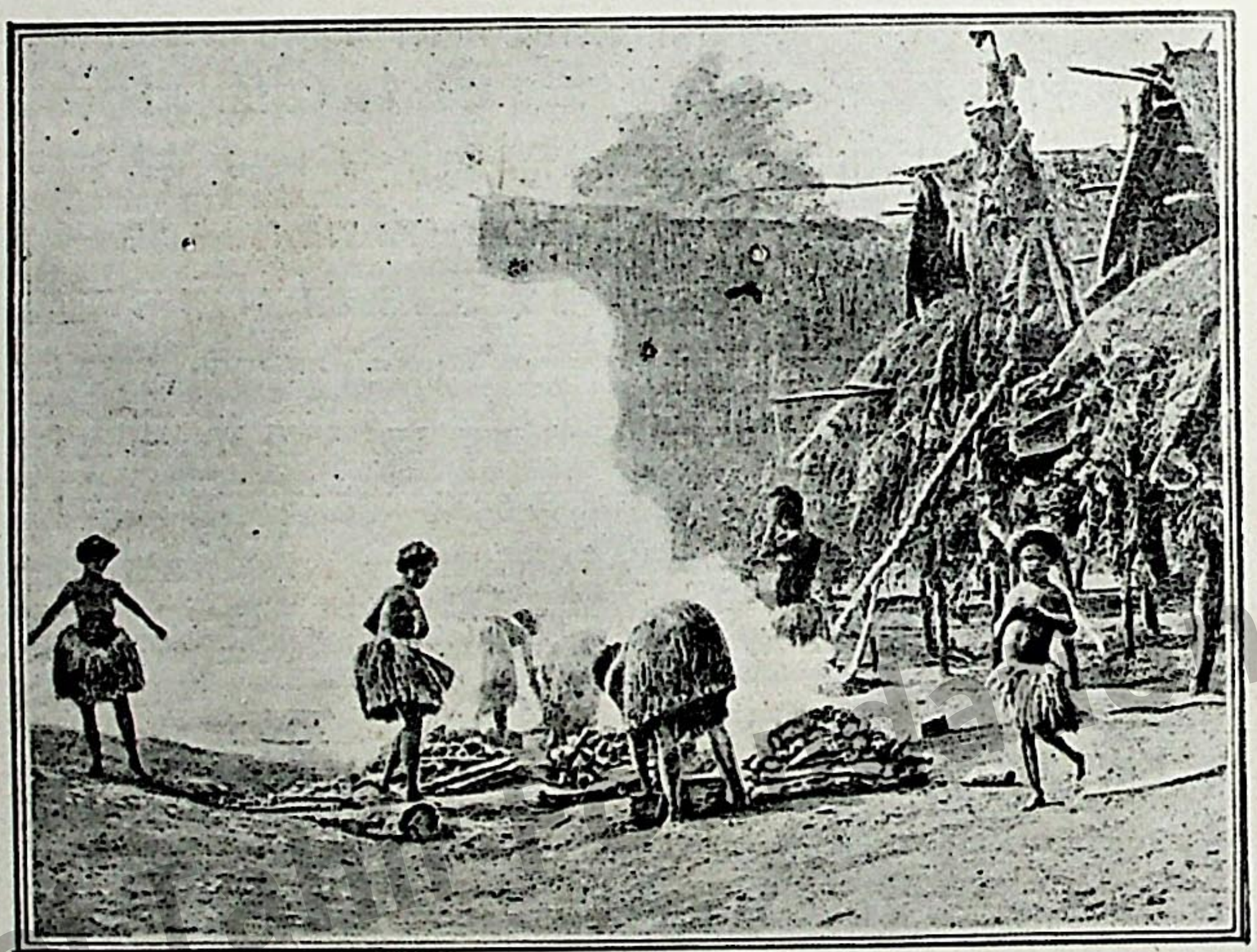

स्त्रियाँ भोज के लिए भोजन पका रही हैं.

भोज के अवसर पर भोजन पकाने का कार्य सधवा स्त्रियाँ करती हैं। भूमि में बड़े बड़े गड्ढे खोदे जाते हैं और उनमें पत्थर लगा दिये जाते हैं।

भोजन पकाने की रीति

इसके पश्चात् उनमें खूब आग भर दी जाती है। जब पत्थर लाल हो जाते हैं तो आग निकाल दी जाती है। आग निकाल कर पत्थरों पर पानी भीगे हुए केले के पत्ते रख दिये जाते हैं और पत्तों पर मांस के टुकड़े पत्तों में लपेट कर रख दिये जाते हैं। इसके बाद पानी छिड़का जाता है, जो जलते हुए पत्थरों पर पड़ने से तुरन्त स्टीम बन जाता है। इसी स्टीम से खाद्य पदार्थ पक जाता है।

सण्डा द्वीप

तथा

सैलीबीस

इण्डोनीशियन जाति की उत्पत्ति, शारीरिक बनावट, अचेहनीज़, सौन्दर्य्य, अचेहनीज़ वैवाहिक रीति रिवाज, बहु विवाह, बत्तक जाति की विवाह प्रथा, सुमात्रा के बच्चे.

Taj Tahir Foundation

इण्डोनीशियन जाति की उत्पत्ति

सण्डा द्वीप यथार्थ में एक द्वीप समूह है। इस द्वीप समूह के मुख्य द्वीप हैं—सुमात्रा, बोर्नियो, जावा तथा बाली। यह द्वीप न्यू गाइना तथा मलाया प्रायद्वीप के बीच में स्थित है। केवल सुमात्रा द्वीप मलाया प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिम कोने में है। यह द्वीप मलाया प्रायद्वीप के इतने निकट हैं कि सर्वसाधारण तुरन्त यह धारणा बना लेते हैं कि इन द्वीपों के तथा मलाया प्रायद्वीप के निवासी एक होंगे और भाषा भी केवल एक होगी; परन्तु बात ऐसी नहीं है। यह बात अवश्य है कि सण्डा द्वीप तथा सैलीब्रीस में जो भाषाएँ बोली जाती हैं उनमें से कुछ मलाया भाषा से निकली हुई प्रतीत होती हैं और नखशिख भी कुछ कुछ मिलते हैं; परन्तु इतना होते हुए भी वर्ण शास्त्र विशारद सण्डा द्वीप के निवासियों को मलाया प्रायद्वीप के निवासियों से बिल्कुल भिन्न मानते हैं। इसीलिए उन्हों ने सण्डा द्वीप की जातियों का

नाम (Non-Malay Tribes) अ-मलाया जाति रखा है। इन्हीं अ-मलाया जातियों को इण्डोनीशियन कहा जाता है।

शारीरिक बनावट

अ-मलाया जातियों की बनावट ऐसी होती है जो भारतीय दृष्टि में सुन्दर नहीं कही जा सकती। उनका क़द नाटा होता है, शरीर कुछ स्थूल, नाक कुछ चपटी, होंठ मोटे और कुछ मुड़े हुए से होते हैं, गालों की हड्डियाँ उन्नत होती हैं, इनका वर्ण पीला और बादामी होता है, आँखें काली तथा सिर के बाल घने और लम्बे होते हैं। केवल आँखों और बालों के सौन्दर्य से ये लोग कुछ सुन्दर मालूम होते हैं। अ-मलाया जातियाँ पान खूब चबाती हैं। दाँतों को काला बनाने की चेष्टा की जाती है; क्योंकि श्वेत दाँत भद्दे समझे जाते हैं। यूरोपियनों के दाँतों को ये लोग कुत्ते के दाँत कहते हैं।

इन जातियों के परिच्छादन, अलंकार तथा प्रथाओं में इतनी विभिन्नता है कि इनको अलग अलग वर्णन करना ही उचित होगा। सबसे पहले सुमात्रा के सम्बन्ध में लिखा जाता है।

सुमात्रा

अचेहनीज़

सुमात्रा की अ-मलाया जातियों में मुख्य जातियाँ चार हैं। अचेहनी उत्तरी सुमात्रा में, बत्तक पूर्वी सुमात्रा में, रीजांग दक्षिणी सुमात्रा में और लैम्पांग पश्चिमी सुमात्रा में। अचेहनी स्त्रियाँ लहँगा पहनती हैं जो घुटनों तक लम्बा होता है। वे एक जाकेट भी पहनती हैं जो काम करते समय उतार डाली जाती है। चौड़े पैजामे भी पहनने की प्रथा है और ओढ़नी भी ओढ़ी जाती है। स्त्रियाँ अपने लिए अधिकांश कपड़ा स्वयं बुनती हैं और सर्व-व्यापी चीनी व्यापारियों की कृपा से उन्हें मानचेस्टर के कपड़े भी मिलते रहते हैं।

Taj Tahir Foundation

बत्तक स्त्री.

कान में टीन का बाला पहने हुए.

रीजांग जाति के लोग अपने बच्चों की नाक चपटी कर देते हैं और कानों को खींचा करते हैं जिससे वे सिर से अलग खड़े हुए मालूम हों।

सौन्दर्य

सामने के दाँत या तो रेत कर बिल्कुल मसूड़ों से मिला दिये जाते हैं या उन्हें नोकीला कर देते हैं।

हाथ पैरों में धात के कड़े और कमर में कन्धनी पहनी जाती है। बत्तक स्त्रियाँ कानों में टीन के बने हुए बाले पहनती हैं। ये बाले गोलाकार नहीं होते वरन् कोट में लगाने के हुक की शक्ल के होते हैं। ये बाले छः इञ्च लम्बे होते हैं। इनका वज़न भी छटाँक भर से लेकर तीन छटाँक तक होता है। काम करने के समय ये बाले सिर की टोपी में अटका लिये जाते

Taj Tamil Foundation

हैं। वत्तक स्त्रियों की टोपी कपड़े की होती है और एक विचित्र आकार की होती है।

रीजांग स्त्रियाँ कानों में कर्णफूल पहनती हैं। कान छेदने की रस्म छः या सात वर्ष की अवस्था में होती है। कान छेदने के समय वालिका को किसी साधु-सन्त की समाधि पर अथवा मन्दिर में ले जाते हैं। वहाँ वालिका के उवटन लगाया जाता है। कानों में हल्दी से रँगे हुए चावल लगाये जाते हैं। तदुपरान्त सोने की सुई अथवा काँटे से कान छेदे जाते हैं।

अचेहनी वालिकाओं का विवाह आठ से लेकर दस वर्ष की अवस्था तक होता है। प्रायः ऐसी वालिकाएँ, जिनके खेलने कूदने के दिन होते हैं,

अचेहनीज़ वैवाहिक रीति रिवाज

बाज़ारों में अपने बच्चों के लिए चीज़ें ख़रीदते देखी जाती हैं।

अचेहनी वालिका के विवाह योग्य होने पर यदि कोई युवक उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट नहीं करता तो यह समझा जाता है कि दुष्टात्माएँ विवाह में विघ्न डाल रही हैं। अतएव दुष्टात्माओं का प्रभाव दूर करने के लिए अनेक उपचार किये जाते हैं।

जिस समय कन्या की सगाई होती है उस समय पहले गाँव के मुखिया की स्वीकृति लेनी आवश्यक होती है। सगाई की रस्म में केवल इतना होता है कि वर पक्ष के लोग गाँव के मुखिया को कोई अँगूठी अथवा अन्य कोई गहना देते हैं। मुखिया वही गहना वर पक्ष के लोगों की ओर से कन्या पक्ष के लोगों को देता है।

सगाई एक महीने से लेकर एक वर्ष तक रहती है। इसी बीच में विवाह का दिन नियत किया जाता है।

विवाह के पूर्व तीन दिवस तक कन्या पक्ष के लोग अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों को भोज देते हैं। तीसरे दिन रात को 'अनदन' की रस्म होती

सुमात्रा की बत्तक स्त्री.

Raj Tah... Foundation

है। इस रस्म में कन्या की हजामत बनाई जाती है। इस हजामत बनाने का तात्पर्य यहहोता है कि कन्या विवाह की रस्म के लिए तैयार है। अनदन रस्म के दूसरे दिन शाम को वर अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों सहित कन्या के द्वार पर जाता है। कन्या पक्ष के लोग उसका स्वागत करते हैं। द्वार पर कुछ रस्में पूरी की जाती हैं जो भारतवर्ष की द्वार-चार रस्म से बहुत मिलती जुलती हैं। इस के पश्चात् वर कन्या के घर में जाता है और वहाँ कन्या और वर दोनों सुन्दर आसन पर विठाये जाते हैं। एक वृद्धा पंखे से कन्या का मुख ढके रहती है। इसके उपरान्त कन्या पति के चरणों पर अपना सिर झुकाती है। पति उसे भेंट-स्वरूप कुछ चीजें देता है और विवाह की रस्म समाप्त हो जाती है। इसके पश्चात् वर पक्ष के लोगों को, घर के बाहरी भाग में, भोज दिया जाता है। बच्चे घर के भीतर भोजन करते हैं। विवाह के दूसरे दिन प्रातःकाल वर अपने घर लौट आता है। सुहाग रात दूसरे दिन होती है।

विवाह के एक मास पश्चात् वर अपना घर छोड़ देता है और अपनी ससुराल में स्थायी रूप से रहने लगता है।

बहु विवाह

अचेहनी जाति में बहु विवाह की प्रथा भी खूब है; परन्तु अमीर आदमी ही बहु विवाह करते हैं। बहु विवाह करने में सरलता भी रहती है; क्योंकि नियमानुसार कोई पत्नी पति के यहाँ नहीं रहती। अतएव पति ही थोड़े थोड़े दिन अपनी सब पत्नियों के यहाँ रहता है।

तलाक़ दे देना भी इन लोगों में एक साधारण सी बात है। जब कोई पुरुष किसी स्त्री को तलाक़ देता है तो वह हाथ में तीन सुपारियाँ लेकर एक एक सुपारी स्त्री के हाथ में रखता है और कहता है, 'एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़। आज से तू इस लोक और परलोक में मेरी बहिन के समान है।' इसके उपरान्त इस तलाक़ की सूचना गाँव के

Taj Tahir Foundation

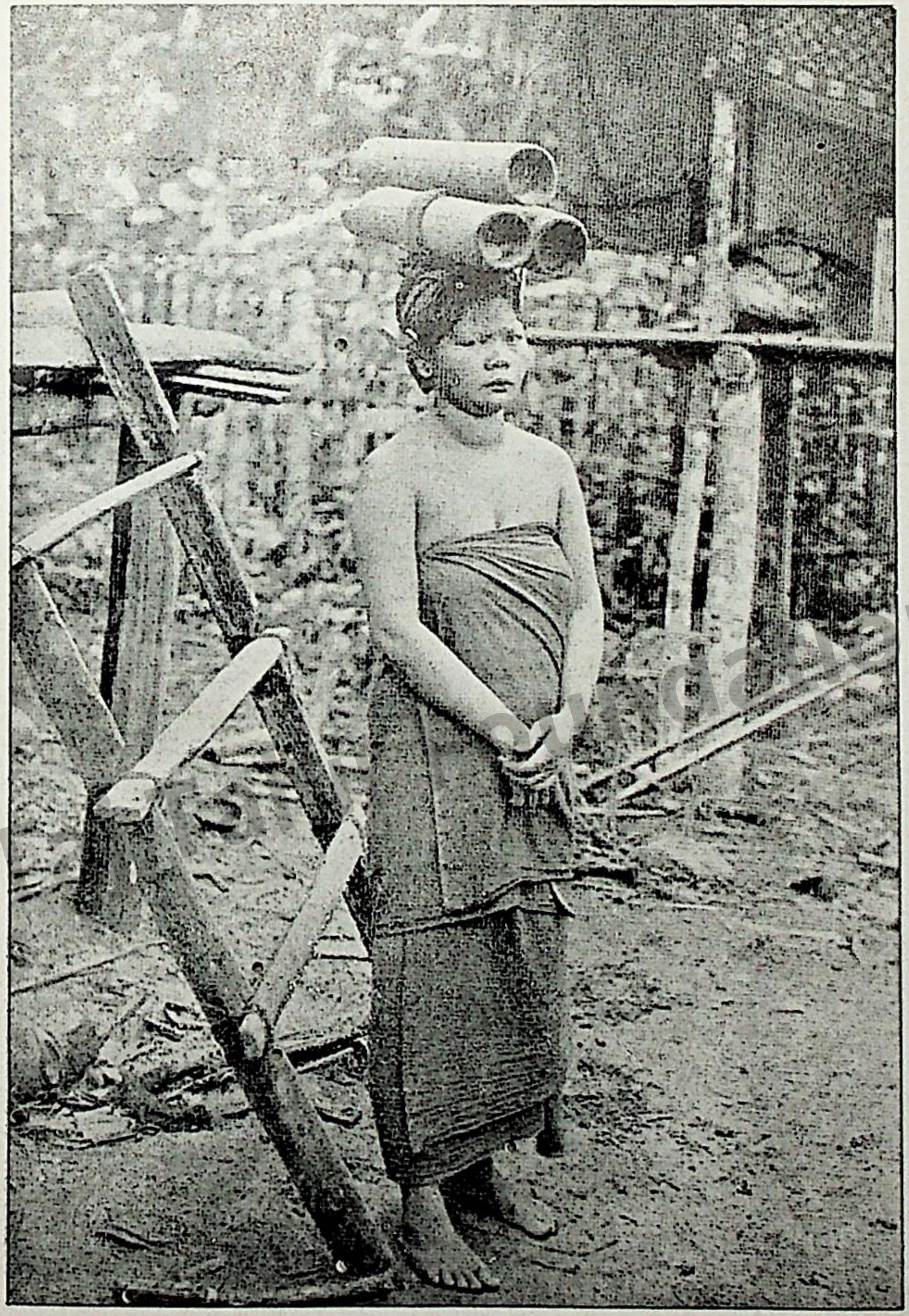

सुमात्रा की बत्तक स्त्री.
बाँस के डोल लिये हुए.

मुखिया को दे दी जाती है। तलाक़ से सुपारियों का इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि प्रायः पति से लड़ाई झगड़ा होने पर पत्नियाँ कहा करती हैं—'मेरी तुम्हारी अब नहीं निभ सकती; बस मुझे तीन सुपारियाँ दे दो।' 'तीन सुपारियाँ दे दो' का तात्पर्य यह है कि तलाक़ दे दो।

वत्तक जाति की विवाह प्रथा

वत्तक जाति के लोगों में कन्याहरण की भी प्रथा है। कोई व्यक्ति अपनी किसी प्रेमिका को रात के समय चुपके से भगा ले जा सकता है और कन्या के माता पिता की तुष्टि के लिए कुछ रुपया रख जाता है। आजकल कन्याहरण एक रस्म सी हो गई है। कन्या के माता पिता को यह पता रहता है कि उनकी कन्या का हरण कब और किस समय होगा; परन्तु वे जान बूझ कर अनजान बने रहते हैं।

वत्तक जाति में बहु विवाह करने का नियम सा है। एक पुरुष छः पत्नियाँ रख सकता है। सब पत्नियाँ एक ही घर में रहती हैं। उनके लिए अलग अलग रसोई-घर तथा भोजन पकाने के बर्तन रहते हैं। वे सब अपनी अपनी बारी पर पति के लिए भोजन पकाती हैं। इन लोगों में पति अपनी पत्नियों से वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा कि गुलामों के साथ किया जाता है। पति जब चाहता है अपनी पत्नी को बेच डालता है। कभी कभी बच्चे भी बेच डाले जाते हैं।

लेम्पांग जाति में ये बातें बुरी समझी जाती हैं।

मार्सडन अपनी 'सुमात्रा का इतिहास' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि रीजांग जाति में विवाह की दो प्रथाएँ हैं। एक तो अचेहनी जाति की विवाह प्रथा के समान है और दूसरी वत्तक जाति की कन्याहरण के समान।

Taj Tahir Foundation

बत्तक स्त्री.

सिर पर चावलों की टोकरी और हाथ में सूप लिए घर के ज़ीने पर खड़ी है.

अचेहनी जाति में गर्भवती स्त्री को टापू रहना पड़ता है। वह न तो ज़ीने की सीढ़ी पर बैठ सकती है और न बन्दरों को ही देख सकती है। क्योंकि बन्दरों को देखने से, इनके विचार में, बच्चे की **सुमात्रा के बच्चे** सूरत बन्दर की सी हो जाती है। यदि गर्भवती स्त्री का पति कहीं बाहर से आता है तो वह सीधा घर में नहीं जा सकता ; क्योंकि उसके ऐसा करने से दुष्टात्माएँ जो उसके साथ बाहर से आ जाती हैं, बच्चे को हानि पहुँचाती हैं ।

सूतिका गृह भी बड़ा पवित्र रखा जाता है। दुष्टात्माओं को दूर रखने के लिए प्रसूता की चारपाई में गण्डे तावीज़ बाँध दिये जाते हैं। जब किसी स्त्री के बच्चा होता है तो माता को एक ऐसी शय्या पर लिटाते हैं जो अग्नि द्वारा गर्म रखी जाती है। माता इस गर्म शय्या पर ४४ दिन तक रहती है। उसे पीने को पानी नहीं दिया जाता। पानी के बजाय चाय अथवा अनन्नास का रस दिया जाता है। चवालीस दिवस के पश्चात् स्त्री अपनी गर्म शय्या त्याग देती है और स्नान करती है।

बाल विवाह के कारण सुमात्रा की स्त्रियाँ १५–१६ वर्ष की वयस के पूर्व ही माताएँ हो जाती हैं और ३० वर्ष की अवस्था में वृद्धा।

Taj Tahir Foundation

२

बोर्नियो की जातियाँ, सौन्दर्य, विचित्र परिच्छादन, गुदने की प्रथा, कायन जाति की श्रेणियाँ, स्त्री चिकित्सक, विवाह प्रथा, जावा की जातियाँ, जावी के हरम, स्त्रियों का स्थान, विवाह प्रथा, कुत्तों की उपासना, बालीनी सौन्दर्य, बालीनी परिच्छादन, सती प्रथा, सैलीवियन परिच्छादन, सैलीवियन विवाह प्रथा, मध्य सैलीबीस का परिच्छादन.

बोर्नियो।

बोर्नियो की जातियाँ

बोर्नियो की जातियाँ तीन श्रेणियों में विभक्त हैं। छोटे सिर की जाति को "इण्डोनीशियन" कहते हैं; बड़े सिर की जाति को "प्रोटोमलायन" और दोनों के मध्य वाली जाति को "कनयाह" और "कायन" कहते हैं। "कनयाह" तथा "कायन" श्रेणी के लोग बोर्नियो के "सरावक" स्थान में पाये जाते हैं।

सौन्दर्य

बोर्नियो की सब जातियाँ सौन्दर्य बढ़ाने के लिए बड़ी चेष्टा करती हैं। स्त्रियाँ सुन्दर बनने के लिए अनेक प्रकार के कष्ट सहन करती हैं। इण्डोनीशियन श्रेणी की "कानोविट्स" जाति की स्त्रियाँ पीतल की कन्धनी पहनती हैं। शरीर के ऊपरी भाग में पीतल की एक जाकेट, जो कवच सी बनी होती है, पहनती हैं। इस कवच को इनकी भाषा में खाई कहते हैं। "समुद्रदायक" (Sea-Dayak) जाति की स्त्रियाँ हाथ पैरों में पीतल के तार लपेटे रहती हैं। खाई, तार तथा कुन्धनी आदि पहनने से उनका भार इतना हो जाता है कि प्रारम्भ में स्त्रियों को चलने में बड़ा कष्ट होता है। इन चीज़ों को पहने हुए जब कोई स्त्री नदी

अथवा समुद्र में गिर जाती है तो वह चाहे जितनी अच्छी तैरनी वाली हो कभी जीवित नहीं निकलती क्योंकि पीतल के कवच तथा अलंकारों का भार उसे शीघ्र डुबा देता है।

विचित्र परिच्छादन

भूमिदायक जाति की अविवाहित लड़कियाँ वृक्ष की छाल की जाकट, जो पीपे की तरह केवल ऊपर और नीचे खुली रहती है, पहनती हैं। इन जाकटों के किनारों पर पीतल की गोट लगी रहती है। कुमारिकाएँ अपनी यह जाकट एक वार पहन कर फिर नहीं निकालतीं। यदि कभी निकालती हैं तो केवल उसी समय जब पीतल की गोट उखड़ कर उनके शरीर को क्षत-विक्षत करने लगती है।

भूमिदायक (Land-Dayak) जाति की कुछ स्त्रियाँ अपने शरीर का ऊपरी भाग खुला रखती हैं। पीतल के तार के दोनों ओर शंख की चूड़ियाँ लगाकर हाथ पैरों में पहनती हैं। पैरों में जो पीतल के तार लपेटे जाते हैं वे इतने कस दिये जाते हैं कि उनसे पैरों की शक्ल विगड़ जाती है।

स्त्रियाँ अपने पीतल के अलंकारों को प्रत्येक समय साफ़ और चमकीले रखती हैं।

यहाँ पोत के गलेवन्द तथा हार भी पहने जाते हैं। परन्तु, यह गहना अधिकतर वे स्त्रियाँ पहनती हैं जो मन्त्र-बल से रोग दूर करने का व्यवसाय करती हैं। इन स्त्रियों को इनकी भाषा में "वोरिच" कहते हैं। इनके गलेवन्द में अनेक प्रकार के तावीज़ गुथे रहते हैं।

बोर्नियो की सब जातियाँ वस्त्र के रूप में केवल एक तहमद पहनती हैं। यह तहमद केवल घुटनों तक रहती है। समुद्रदायक, मूरुट, कलाविट तथा भूमिदायक जाति की स्त्रियों की तहमद पैरों तक रहती है। समुद्रदायक तथा कुछ अन्य जाति की स्त्रियाँ कभी कभी यह तहमद वक्षस्थल के ऊपर से भी बाँधती हैं।

Taj Tahir Foundation

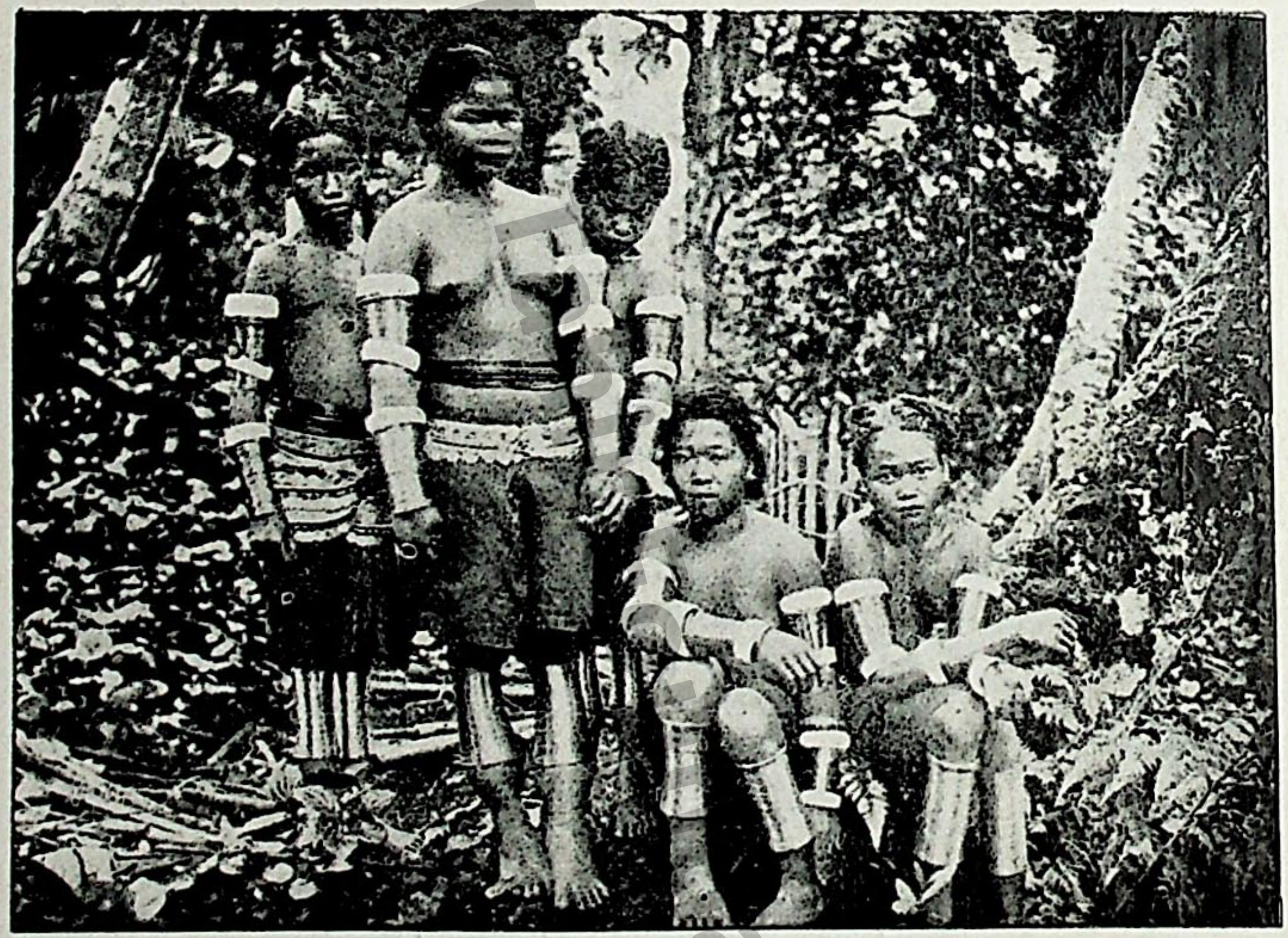

भूमिदायक स्त्रियाँ.
हाथ-पैरों में पीतल के तार पहने हुए.

"टानजांग" तथा "मिलानो" जाति की स्त्रियाँ एक लम्बा कुर्ता पहनती हैं जिसकी आस्तीन में गिलट अथवा चाँदी के वटन टँके रहते हैं।

"इसुन" जाति की अविवाहित युवतियाँ वक्षस्थल को कपड़े के एक टुकड़े से ढके रहती हैं। इस कपड़े के टुकड़े को वे लताओं की कोमल शाखाओं से बाँध लेती हैं।

खेतों में काम करते समय स्त्रियाँ खजूर की पत्तियों की वड़ी टोपी पहनती हैं। इस टोपी का व्यास दो फ़ीट के लगभग होता है। इस टोपी के पहनने का हेतु केवल धूप से सिर की रक्षा करना होता है।

गुदने की प्रथा

वोर्नियो में विना गुदने के स्त्रियों का सौन्दर्य अधूरा समझा जाता है। 'कायन' जाति की स्त्रियाँ गुदना गोदने में वड़ी प्रवीण होती हैं और गुदने में अनेक प्रकार के चित्र वनाती हैं। इस जाति की स्त्रियाँ हाथों, वाहों, रानों, टाँगों तथा पैरों में गुदना गुदाती हैं। इनका गुदना नीले रंग का होता है। एक एक स्त्री पर गुदना गोदने का कार्य प्रायः दो तीन वर्ष तक चलता रहता है।

कायन जाति की श्रेणियाँ

'कायन' जाति की स्त्रियों में तीन श्रेणियाँ होती हैं। एक तो मुखिया की नातेदार स्त्रियाँ; दूसरी स्वतन्त्र स्त्रियाँ; तीसरी गुलाम स्त्रियाँ। स्त्रियों की सामाजिक अवस्था उनके गुदने से प्रकट होती है। गुदना जितना ही उत्तम और विचित्र होता है उतना ही स्त्री का स्थान समाज में ऊँचा होता है।

कनयाह स्त्रियाँ केवल वाहों, हाथों तथा पैरों में गुदना गुदाती हैं। मूल्ट स्त्रियाँ पूरी बाँह, हाथ तथा अँगुलियों में गुदना गुदाती हैं। इसी प्रकार कोई जाति रेखागणित की सी शक्लें तथा कोई पशु पक्षियों के चित्र गुदाती हैं।

Taj Tahir Foundation

बोर्नियों के सरावक स्थान की टानजांग स्त्रियाँ.
कानों में पीतल की वजनदार बालियाँ पहने हैं और टोकरी बुन रही हैं.

वोर्नियो की स्त्रियाँ खेती का सब काम करती हैं। केवल मुखिया की पत्नियों तथा कन्याओं को काम नहीं करना पड़ता। माताएँ अपने बच्चों को पीठ से बाँधकर स्वच्छन्दता पूर्वक काम करती हैं। घर में स्त्रियाँ प्रायः धान कूटने का कार्य करती हैं।

पीने के लिए नदी से पानी लाया जाता है। इस काम को स्त्रियाँ करती हैं। पानी बाँस की बनी हुई चौड़ी नलिकाओं में लाया जाता है।

समुद्रदायक जाति की स्त्रियाँ स्वयम् सूत कातकर कपड़ा बुनती हैं। इनका कपड़ा दो तीन रंग की छींट का सा होता है। सूत में खजूर की पत्तियाँ लपेटकर उसे रँग लिया जाता है। जहाँ जहाँ खजूर की पत्ती लिपटी रहती है वहाँ रँग न चढ़ने के कारण वह स्थान श्वेत रहता, है और शेष सब रँग जाता है। इसी प्रकार अनेक रँगों से रँगकर बेलबूटे बना लिए जाते हैं। इसी प्रकार के सूत का ताना बनाकर श्वेत सूत के बाने से बुन लेती हैं।

स्त्री चिकित्सक

कायन तथा भूमिदायक, लांगवाई ट्रिंग इत्यादि, बहुत सी इण्डोनीशियन जातियों की स्त्रियाँ, चिकित्सा का कार्य करती हैं। बोर्नियो की सब जातियों का विश्वास है कि मनुष्य तभी रोगी होता है जब उस पर किसी दुष्टात्मा का प्रभाव होता है। अतएव स्त्रियाँ मन्त्र-तन्त्र तथा झाड़-फूँक द्वारा इन दुष्टात्माओं का प्रभाव दूर करती हैं। इन स्त्री चिकित्सकों का बड़ा मान होता है और उन्हें फ़ीस भी काफ़ी दी जाती है।

समुद्रदायक जाति में चिकित्सा का काम पुरुषही करते हैं; पर इस कार्य के योग्य वे ही पुरुष समझे जाते हैं जिनका स्वभाव और जिनके हाव भाव स्त्रियों के से हो जाते हैं। अथवा यों समझिये कि जो पुरुष चिकित्सा कार्य में अधिक ख्याति प्राप्त करना चाहते हैं और चिकित्सा कार्य में सफलता लाभ करना चाहते हैं उन्हें अपने हाव भाव स्त्रियों के समान

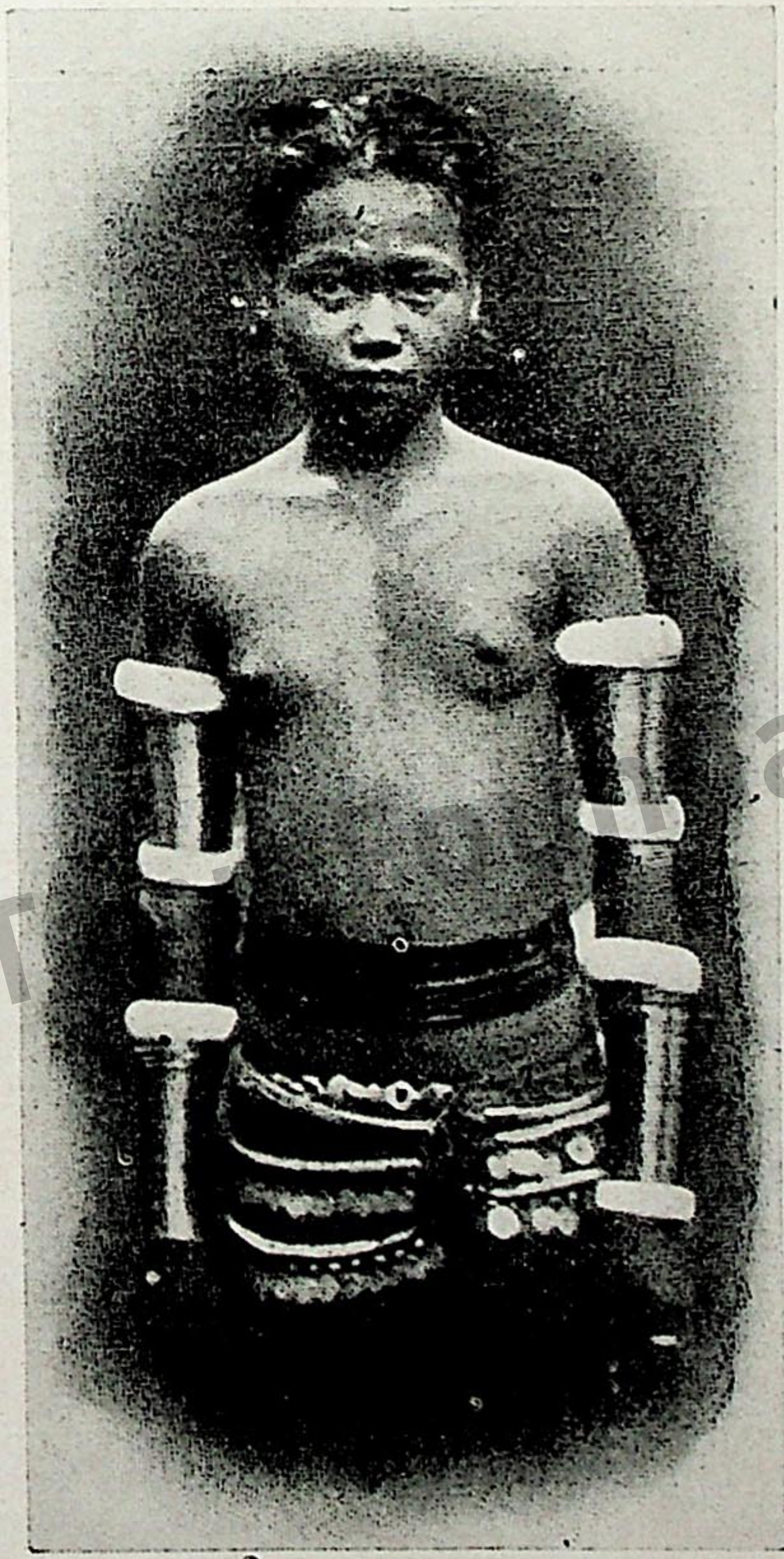

भूमिदायक स्त्री.

पीतल के तार .और शंख के मोटे कंकण पहने हुए.

Taj Trust Foundation

बनाने पड़ते हैं। ये स्त्री रूपी पुरुष अपनी इच्छानुसार किसी पुरुष को अपना पति बना लेते हैं। उनके ऐसा करने से चिकित्सकों की श्रेणी में उनका स्थान अधिक ऊँचा हो जाता है।

विवाह प्रथा

बोर्नियो में विवाह प्रथा उसी प्रकार की है जैसी कि सुमात्रा की अचेहनी जाति में होती है। समुद्रदायक जाति में एक रस्म उल्लेखनीय है। इस रस्म को "ब्लाह पीनांग" कहते हैं। एक सुपारी के आठ टुकड़े किये जाते हैं। ये टुकड़े पति के कर्तव्यों के द्योतक होते हैं। ये टुकड़े एक रकावी में रक्खे जाते हैं। इसी प्रकार एक सुपारी के सात टुकड़े करके उसी रकावी में रक्खे जाते हैं। ये सात टुकड़े पत्नी के कर्तव्यों के द्योतक होते हैं। रकावी को एक कपड़े से ढक कर अलग रख देते हैं। कुछ देर पश्चात् रकावी पर से कपड़ा उठाकर टुकड़ों को गिनते हैं। यदि टुकड़े संख्या में पन्द्रह से अधिक निकलते हैं तो दम्पति के लिए शुभ समझे जाते हैं और जो कम निकलते हैं तो अशुभ। आज कल यह रस्म केवल लकीर पीटने के अभिप्राय से की जाती है। आज कल सदैव पन्द्रह ही टुकड़े निकलते हैं। परन्तु, ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में पुरोहित अथवा कोई अन्य व्यक्ति अपनी इच्छानुसार इन टुकड़ों को बढ़ा घटा देता होगा।

तलाक़ का चलन भी खूब है। साधारण से साधारण बात पर भी तलाक़ दे दी जाती है।

अविवाहित युवक तथा युवतियाँ परस्पर मिलते जुलते रहते हैं। यदि इस मिलने जुलने में युवती गर्भवती हो जाती है तो जिससे गर्भ-स्थिति होती है उस युवक को उससे विवाह अवश्य करना पड़ता है। यदि वह विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता तो उसके तथा युवती के नातेदार और मित्र उसको विवाह करने के लिए विवश करते हैं।

Taj Tahir Foundation

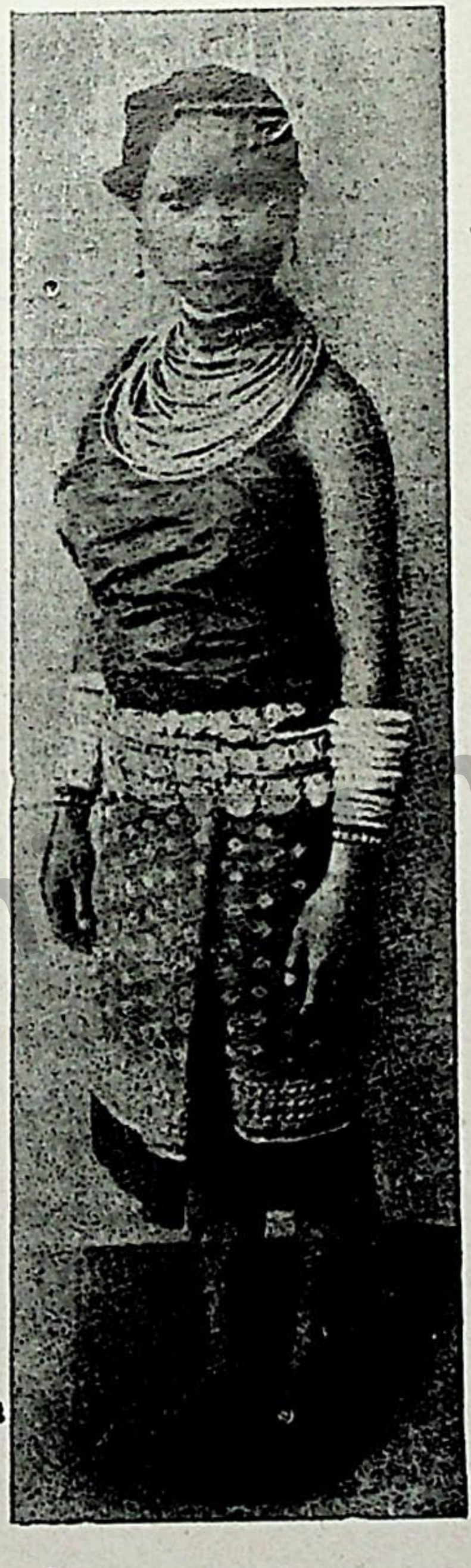

समुद्रदायक जाति की अविवाहित युवती.
पीतल के तारों का गहना पहने हुए.

Taj Tahmindation

जावा

गर्म द्वीपों में केवल जावा ही एक ऐसा द्वीप है जो घना बसा हुआ है और जिस में इस द्वीप के मूल निवासी अधिकता से पाये जाते हैं। इस द्वीप का क्षेत्रफल पचास सहस्र वर्ग मील है और जन संख्या तीन करोड़। मूल निवासियों के अतिरिक्त इस में यूरोपियन, मलाया तथा चीनी लोग भी रहते हैं। यूरोपियनों के पदार्पण के पूर्व इस द्वीप में हिन्दू तथा मुसलमानी सभ्यता फैली हुई थी। परन्तु इस समय यूरोपियन सभ्यता तथा इस्लाम धर्म का आधिपत्य होते हुए भी इस द्वीप के मूल निवासियों में ऐसी बहुत सी बातें पाई जाती हैं जिन से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि किसी समय में इस द्वीप में हिन्दू धर्म तथा हिन्दू सभ्यता का अखण्ड राज्य था।

जावा की जातियाँ

जावा में इस समय चार जातियाँ हैं। पश्चिमी जावा में 'सण्डानी' जाति, पूर्वी तथा मध्य जावा में 'जावानी' जाति, पूर्वी जावा के पहाड़ी स्थानों में 'तिंगरी' जाति तथा उत्तरी जावा में 'कलिंग' जाति। कलिंग जाति के लोग जावा के प्रायः सभी स्थानों में पाये जाते हैं।

जावा की सभ्यता बहुत प्राचीन है; अतएव वहाँ शासक श्रेणी तथा शासित श्रेणी के लोगों में बड़ा स्पष्ट अन्तर है। मलाया तथा बोर्नियो में यह अन्तर इतना स्पष्ट नहीं है। इन द्वीपों में यद्यपि

जावा के 'हरम'

गाँव का मुखिया अनेक गुलाम रखता है; गाँव पर डण्डे के बल से शासन करता है; परन्तु तो भी उसे अपनी जाति के पञ्चायती घर में रहना पड़ता है और वेष भूषा तथा सामाजिक व्यवहार में वह अपनी प्रजा के छोटे से छोटे आदमी के समान ही होता है। परन्तु जावा में यह बात नहीं है। वहाँ का सुलतान महलों में रहता है और वेष भूषा तथा सामाजिक व्यवहार में अपनी प्रजा से

समुद्र-दायक स्त्री कपड़ा बुन रही है.
पीतल का खाई (कवच) चांदी का मुकुट तथा शंख के आभूषण पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

बिल्कुल भिन्न होता है। प्रत्येक सुलतान तथा उच्च कुल के धनाढ्य पुरुष अपने लिए एक बड़ा 'हरम' रखते हैं। इस हरम में उसकी पत्नियाँ, जिनकी संख्या सदैव अनिश्चित होती है, रहती हैं। इसमें से कुछ को नाचना गाना सिखाया जाता है और वे राजोत्सवों पर नाचती गाती हैं। इनका एक प्रसिद्ध नाच 'ख्रिम्पी' है, जिसमें चार स्त्रियाँ मिलकर हारमोनियम, मँजीरे तथा तबले की लय पर नाचती हैं। इस नाच के लिए केवल वे युवतियाँ चुनी जाती हैं जिनकी वयस १४, १५ वर्ष से अधिक नहीं होती। नाचने के समय ये एक रेशम की पेशवाज़ पहनती हैं जो लम्बे लहँगे के सदृश होती है। लहँगे के ऊपर कमर में एक सुनहरे गोटे की पेटी बाँध लेती हैं। रेशम की एक चुस्त जाकेट भी पहनती हैं और कन्धे पर रेशमी डुपट्टा डालती हैं। उनकी यह पोशाक ठीक वैसी ही होती है जैसी कि भारत की वेश्याओं की। उनका नाच भी भारत की वेश्याओं का सा ही होता है। गहनों में वे कड़े, बाजूबन्द और अँगूठियाँ पहनती हैं तथा कभी कभी सिर पर सुनहरा मुकुट भी रख लेती हैं। नाच समाप्त होने के पश्चात् वे सुलतान को सलाम करके भूमि पर सिर झुका कर बैठ जाती हैं।

हमारे विचार में इनका उपर्युक्त 'ख्रिम्पी' नाच भारत की वेश्याओं के 'क़हरवा' नाच का भाषान्तर मात्र है।

एक प्रकार का नाच और होता है। इसे 'विदाय' कहते हैं। इसमें आठ स्त्रियाँ मिलकर नाचती हैं। प्रायः इसमें धनाढ्यों की रखेली स्त्रियाँ ही सम्मिलित होती हैं। जिन लोगों के पास इतनी स्त्रियाँ नहीं होतीं वे इस नाच के लिए लड़कों को रख लेते है।

जावा में जो स्त्रियाँ नाचने का व्यवसाय करती हैं उन्हें 'रंगांग' कहते हैं। ये स्त्रियाँ भी नाचते समय पेशवाज़ पहनती हैं। इनकी पेशवाज़ें प्रायः सूती कपड़े की होती हैं। जावा में नाटक मण्डलियाँ भी हैं जो महाभारत इत्यादि की घटनाओं पर नाटक खेलती हैं।

Taj Tahir Foundation

जावा की भूमि उर्वरा है और वहाँ चावल खूब उत्पन्न होता है। जावा के पूर्वीय स्थानों में गन्ने की बहुत बड़ी खेती होती है और यह काम डच तथा चीनी कम्पनियों के हाथों में है। खेती के काम में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ मिल कर काम करती हैं।

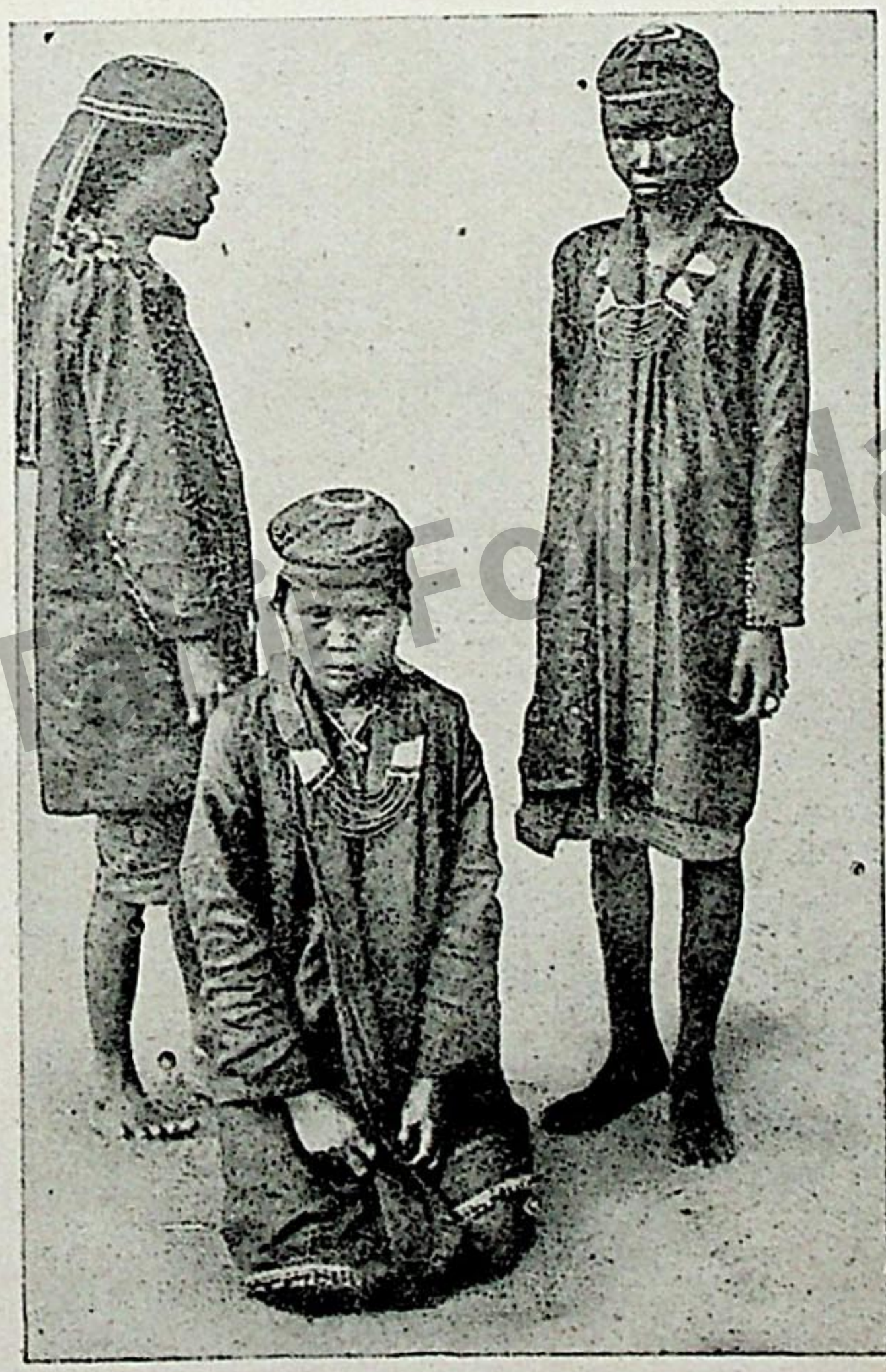

भूमिदायक जाति की चिकित्सक स्त्रियाँ.
ये स्त्रियाँ मंत्र जंत्र के द्वारा चिकित्सा करती हैं.

जावा में स्त्रियों का स्थान सन्तोष जनक है । घर की मालकिन प्रायः स्त्रियाँ ही होती हैं । दूकानों पर भी प्रायः स्त्रियाँ ही बैठती हैं । जावानी लोग एक अच्छी पत्नी की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:—खूब हृष्ट पुष्ट हो, सीधी हो, परिश्रमशील हो, धनाढ्य हो, उदार हो, सुन्दर हो, कुलीन हो, नम्र हो तथा सच बोलने वाली हो । जो स्त्री पति की मृत्यु हो जाने पर स्वयं भी

स्त्रियों का स्थान

बोर्नियो की 'कदायन' स्त्रियाँ.
पीतल की गोट और चाँदी के बटन लगी हुई जाकेट पहने हुए.

Taj Tahir Foundation

मर जाने की इच्छा प्रकट करती है अथवा पुनर्विवाह नहीं करती वह स्त्री सबकी दृष्टि में आदृत होती है।

विवाह प्रथा

बालकों तथा बालिकाओं की सगाई थोड़ी ही वयस में कर दी जाती है; परन्तु विवाह उसी समय होता है जब दोनों यथेष्ट सयाने हो जाते हैं। अधिकतर विवाह इस्लामी ढंग से होते हैं अर्थात् निकाह पढ़ाये जाते हैं। निकाह पढ़ाये जा चुकने के पश्चात् एक रस्म होती है जिसे 'तालीक़' कहते हैं। यह रस्म इस प्रकार होती है कि निकाह पढ़ाये जा चुकने के पश्चात् दूलह तथा उसके इष्ट मित्र दुलहिन के घर पर जाते हैं। दुलहिन के द्वार पर दूलह के पहुँचते ही दुलहिन दूलह के 'सीरी' पत्तियों के गुच्छे खींच कर मारती है और दूलह भी ऐसा ही करता है। जो दूसरे के मुख पर गुच्छा मारने में सफल होता है उसी के सम्बन्ध में यह समझा जाता है कि गृहस्थ-जीवन में वह दूसरे पर प्रबल रहेगा। इसके पश्चात् पत्नी पति के सामने सिर झुकाती है और बाद को घर के भीतर दोनों एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं और पान चबाते हैं।

"तिङ्गरी" जाति में, जिन्होंने अपने प्राचीन हिन्दू-धर्म्म को सुरक्षित रखा है, विवाह इस प्रकार होता है कि वर तथा कन्या गाँव के "दुकुन" (पुरोहित) के सामने बैठते हैं। पहले वर तथा कन्या दोनों चारों दिशाओं, पृथ्वी तथा आकाश को प्रणाम करते हैं। तत्पश्चात् "दुकुन" ब्रह्मा का पूजन करता है। पूजन समाप्त होने पर कन्या वर का पाद-प्रक्षालन करती है और विवाह की रस्म समाप्त हो जाती है। इसके उपरान्त दोनों ओर से भेंट तथा पानों का वितरण होता है। भोज देने के पश्चात् बारात विदा कर दी जाती है।

कलिंग जाति जावा की एक जंगली परन्तु प्राचीन जाति है। यह जाति कुत्तों की उपासक है। यह जाति अपना आदि पुरुष एक मुखिया को

कुत्तों की उपासना

मानती है जिसका विवाह एक राजकुमारी से हुआ था। मुखिया का विवाह राजकुमारी से नियमविरुद्ध हुआ था; इस कारण मुखिया कुत्ते के रूप में परिवर्त्तित कर दिया गया था। इसीलिए ये लोग कुत्ते को पूज्य समझते हैं।

इस जाति का कोई युवक जब किसी कन्या से विवाह करना चाहता है तो उसको पहले यह प्रमाणित करना पड़ता है कि वह उस मुखिया की सन्तान है जो कलिङ्ग जाति का आदि पुरुष समझा जाता है। विवाह के दिन एक भैंसे के सिर पर श्वेत अथवा लाल या काले रँगे हुए चावलों का चूर्ण रख कर उसे बीच में रखते हैं। बारातियों में से स्त्री पुरुष एक एक जोड़ा बना बना कर उस सिर के चारों ओर नाचते हैं। प्रत्येक जोड़ा अपना नाच समाप्त करने पर कन्या का हाथ वर के हाथ में पकड़ा देता है और कुछ भेंट देता है। वर कन्या को दहेज़-स्वरूप दो भैंसे, एक हल तथा कृषि सम्बन्धी अन्य चीज़ें और कुछ चावल भेंट करता है। कन्या तथा वर के शरीर पर लाल रंग के कुत्ते की हड्डियों की भस्म मली जाती है और शाम को दोनों एक थाली में चावल खाते हैं। दूसरे दिन रात को उनकी शय्या के पास भैंसे का सिर रख दिया जाता है और वर तथा कन्या दोनों उसका भोजन करते हैं।

बाली

बालीनी सौन्दर्य

बालीनी स्त्री की शारीरिक बनावट बड़ी सुन्दर होती है। सिर पर बोझ ढोने से इनका शरीर सीधा तथा सुडौल रहता है। सिर पर बोझ ढोने की प्रथा अफ़रीका तथा भारत में भी है; परन्तु मलाया तथा उसके आस-पास के द्वीपों में सिर पर बोझ ढोने की प्रथा बिल्कुल नहीं है। इस कारण सिर पर बोझ ढोने से

बालीनी स्त्रियों के शरीर में जो विशेषता आजाती है वह अन्य जातियों की स्त्रियों की शारीरिक बनावट के मुक़ाबिले में स्पष्ट झलकती है।

बालीनी स्त्रियाँ गहरे नीले रंग का एक लहँगा पहनती हैं। निम्न श्रेणी की स्त्रियाँ केवल लहँगा पहनती हैं और कमर के ऊपर का भाग खुला

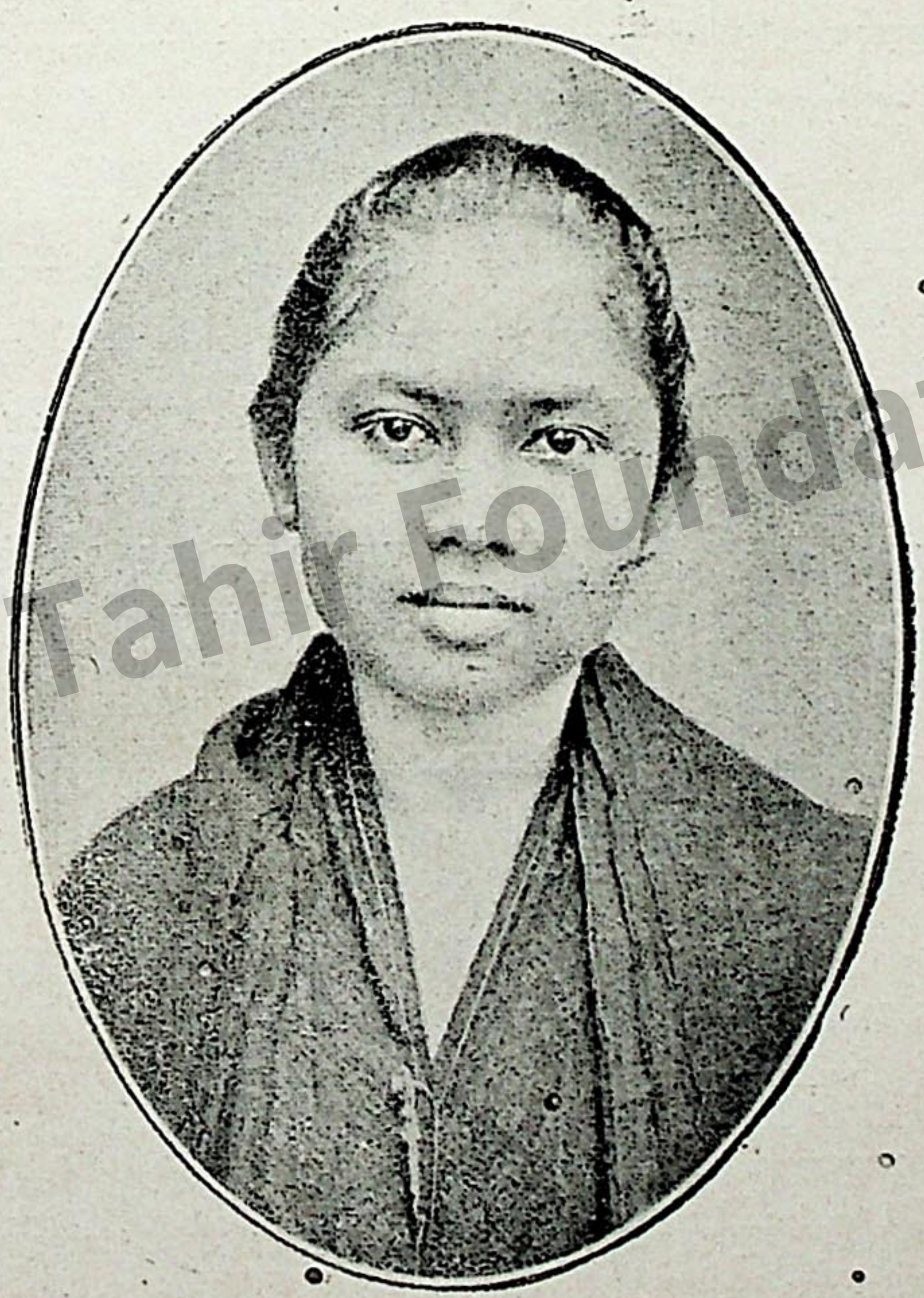

जावा की 'बतावियन' युवती.

Taj Tahir Foundation

बालीनी परिच्छादन

रखती हैं। उच्च श्रेणी की स्त्रियाँ गले में एक डुपट्टा डालती हैं अथवा जाकेट पहनती हैं। कानों को छेद कर उनमें खजूर की सींकों का गुच्छा पहनती हैं। धनवानों की स्त्रियाँ सोने अथवा चाँदी की मोटी लौंगें पहनती हैं।

कन्या को भगा ले जाना अथवा उसका हरण कर ले जाना विवाह की साधारण प्रथा है। जो युवक कन्या को ले जाता है वह कन्या के माता पिता की तुष्टि के लिए कुछ रुपये रख जाता है।

वाली में पहले विधवा सती हो जाया करती थीं। राजा की मृत्यु पर उसकी सब रानियाँ सती हो जाती थीं। मि० क्राफ़र्ड के कथनानुसार वाली के "बोलीलिंग" स्थान के राजा की मृत्यु पर उसके साथ उसकी रानियाँ तथा अन्य स्त्रियाँ मिलाकर ७४ स्त्रियाँ सती हुई थीं। जो स्त्रियाँ स्वेच्छापूर्वक सती होना स्वीकार नहीं करती थीं उन्हें कटारी से मार कर चिता पर फेंक देते थे। परन्तु जब से वहाँ डच लोगों का राज्य स्थापित हुआ तब से सती प्रथा बिल्कुल बन्द हो गई।

सती प्रथा

सैलीबीस

सैलीबीस के सम्बन्ध में अभी सभ्य संसार का ज्ञान अपूर्ण है। सैलीबीस का "मिनासा" स्थान बड़ा सुन्दर है। अतएव इसी के सम्बन्ध में लोगों को अधिक जानकारी है। इस पर डच सरकार का अधिकार है। यहाँ ईसाई धर्म बहुत-कुछ फैल गया है।

आजकल स्त्रियाँ एक छोटी श्वेत जाकेट पहनती हैं जिसमें आगे ब्रूच अथवा पिन लगाई जाती है। इस जाकेट को वहाँ "कबाया" कहते हैं। एक रंगीन लहँगा पहना जाता है जिसे "सरांग" कहते हैं।

सैलीबियन परिच्छादन

Taj Tahir Foundation

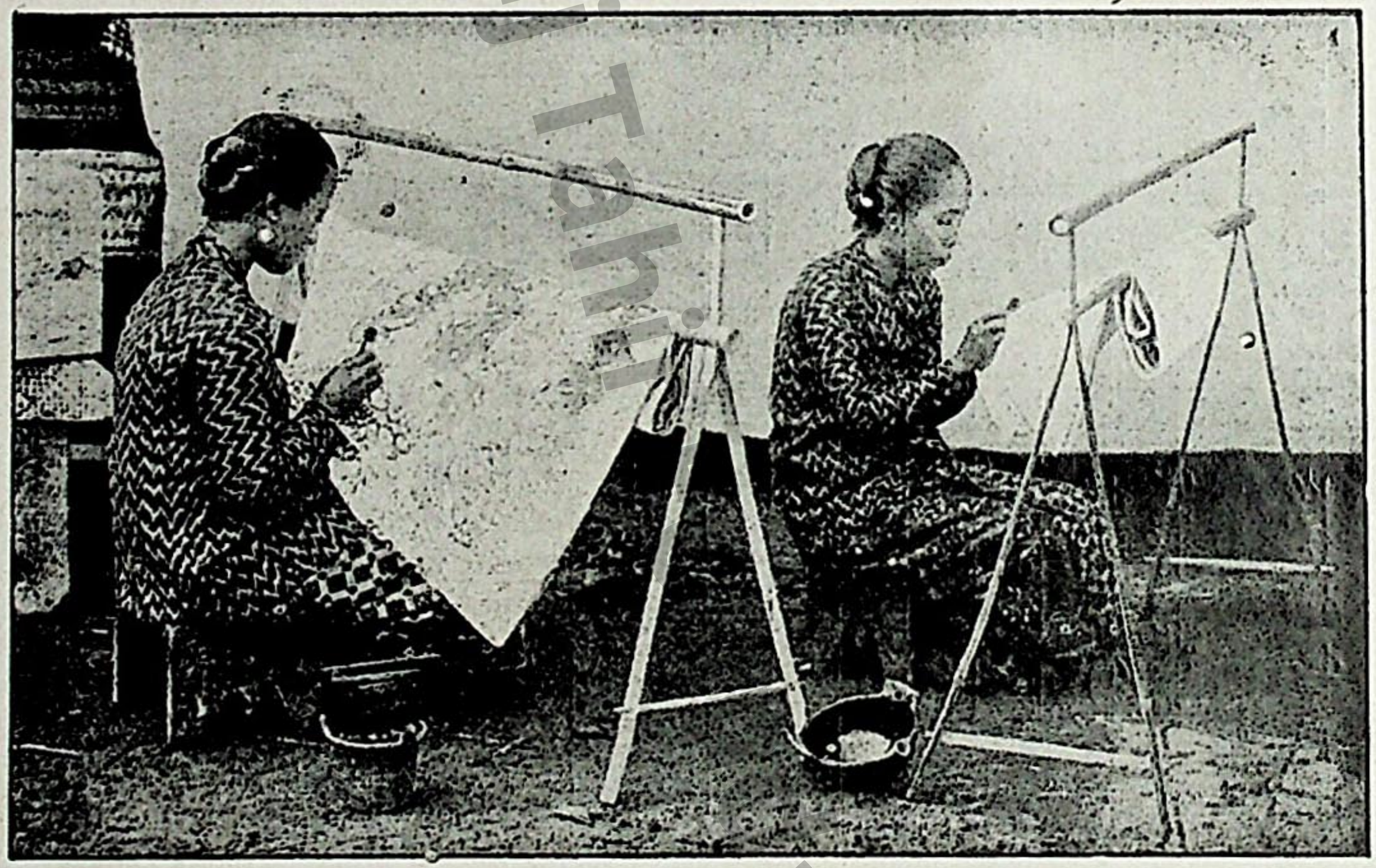

जावा की स्त्रियाँ "सरांग" बना रही हैं.

Tamil Nation

ईसाइयों के पदार्पण के पूर्व सैलीबीस की जातियों का वंश स्त्री के नाम से चलता था। पति को ससुराल में अपना निवास-स्थान बनाना पड़ता था; परन्तु अब विवाह होने के पश्चात् पति पत्नी अपना घर अलग बना लेते हैं।

सैलीबियन विवाह प्रथा

जब कोई युवक किसी युवती से विवाह करना चाहता है तो पहले उसके पास पान के बीड़े भेजता है। यदि युवती उससे विवाह करना उचित समझती है तो युवक के बीड़ों को स्वीकार करके स्वयम् भी बदले में पान के बीड़े भेज देती है। इस प्रकार सगाई निजी रूप से पक्की हो जाती है। जब चावल की फसल तैयार होती है तब विवाह होता है। रात को खूब नाचना–गाना होता है और चावल का भोज दिया जाता है। वर भी इस नाचने–गाने में भाग लेता है और अवसर पाकर चुपचाप कन्या के पास चला जाता है तथा रात भर उसी के पास रहता है। सवेरा होते ही वर कन्या के पास से चला आता है और अपने काम में लग जाता है। यदि इस मिलन के पश्चात् वर और कन्या परस्पर विवाह करना उचित समझते हैं तो वर फिर रात को कन्या के पास जाता है। दूसरे दिन सवेरे भी वह कन्या के पास रहता है और अपने काम पर नहीं जाता। काम पर वर की अनुपस्थिति से लोग समझ जाते हैं कि सगाई खुले रूप से पक्की हो गई। विवाह के एक दिन पूर्व वर कन्या को पानों के नौ बीड़े, नौ सीरीफल तथा कुछ सोने-चाँदी के गहने भेजता है। प्राचीन काल में यह प्रथा थी कि वर उपर्युक्त चीज़ों के साथ किसी शत्रु का सिर भी भेजता था; परन्तु अब डच लोगों का राज्य होने से यह प्रथा बन्द कर दी गई है। इसके अतिरिक्त वर कन्या के माता पिता के लिए भी कुछ भेंट भेजती है। पहले भूमि, कुछ वृक्ष तथा चौपाये देने की प्रथा थी; परन्तु अब इन चीज़ों के बदले इनके मूल्य के रुपये देने की प्रथा है। विवाह की रस्म कन्या ही के घर पर पूरी की जाती

Taj Tahir Foundation

पश्चिमी जावा की सण्डानी स्त्रियाँ तथा पुरुष.

है। विवाह के समय 'वलियाँ' (पुरोहित) पान के कुछ बीड़े तथा सीरीफल चबा कर उन्हें वर के हाथ में देता है। वर वे पान तथा फल कन्या को दे देता है। कन्या पुरोहित के उन आधे चबाये हुए पान तथा फलों को खा लेती है: इसके उपरान्त वर तथा कन्या एक ही थाली में भोजन करते हैं और विवाह की रस्म समाप्त हो जाती है। दूसरे दिन सवेरे बारातियों को फिर एक भोज दिया जाता है। इसके पश्चात् वलियाँ वर तथा कन्या को गाँव की हद पर ले जाकर भूमि में एक बाँस गाड़ देता है और कहता है:—"यहाँ एक चूहा है; ईश्वर करे तुम्हारे पास इतना धन हो जितने कि चूहे के शरीर पर बाल हैं।"

मध्य सैलीबीस का परिच्छादन

मध्य सैलीबीस में अनेक जातियाँ हैं। इन जातियों की पोशाक भी एक विशेष प्रकार की होती है। "बादा" जाति की स्त्रियाँ एक विशेष प्रकार की टोपियाँ पहनती हैं। उच्च श्रेणी की स्त्रियों की टोपियाँ पीले रंग की होती हैं। इन टोपियों में मुर्ग़ के पर भी लगाये जाते हैं। वे भिन्न भिन्न रंग के कपड़े के टुकड़ों की एक जाकेट भी पहनती हैं। धनाढ्य स्त्रियाँ इस जाकेट में गोटा भी लगाती हैं तथा एक लम्बा और बड़े घेर का लहँगा पहनती हैं।

कानों में सींग की लौंगें पहनती हैं। पोत, मछली की हड्डी तथा बीजों के हार पहनती हैं। श्वेत शंख के कड़े पहनने की भी प्रथा है। त्योहारों और उत्सवों पर स्त्रियाँ मुख पर राल की लकीरें तथा बिन्दु बना लेती हैं जो गुदने की तरह प्रतीत होती हैं।

मध्य सैलीबीस की जातियों में से बहुत सी ऐसी हैं जिन्हें कपड़ा बुनना नहीं आता; अतएव वे वृक्षों की छाल से काम लेती हैं। पहले छाल को पानी में भिगो कर मुलायम कर लेते हैं। तत्पश्चात् उसे पीट कर उसकी चौड़ी तथा पतली धज्जियाँ बना लेते हैं। इन धज्जियों को आवश्यकतानुसार

लम्बाई में काट कर उन्हें परस्पर सी लेते हैं। उत्तरी सैलीवीस में स्त्रियाँ कपड़ा बुनने में परम प्रवीण होती हैं और रेशमी सरांग बनाती हैं जो सैलीवीस के समस्त स्थानों में बड़े आदृत होते हैं।

टोपीवाटो जाति की स्त्रियाँ एक पेटी बाँधती हैं। यह पेटियाँ भी बुने हुए सन की होती हैं। पक्षियों की चोंच, घोंघे तथा अन्य कीड़ों की की हड्डियों के हार पहनती हैं।

सौन्दर्य तथा शृंगार की दृष्टि से बहुत सी जातियों की स्त्रियाँ अपने अगले दाँत रेतवा देती हैं और कभी कभी उखड़वा भी डालती हैं।

Taj Tahir Foundation

मलाया प्रायद्वीप

जाति, परिच्छादन, मलाया स्त्री का गृहजीवन, जन्म और बाल्यकाल, सौन्दर्य, वैवाहिक रीति रिवाज, अन्त्येष्टि क्रिया.

मलाया प्रायद्वीप के निवासी दो श्रेणियों में विभक्त हैं एक तो सभ्य श्रेणी के लोग और दूसरे असभ्य श्रेणी के। असभ्य श्रेणी के लोग जंगलों और पहाड़ी स्थानों में पाये जाते हैं। असभ्य श्रेणी

जाति की तीन जातियाँ हैं। 'निग्रिटस अथवा सीमांग,' 'साकाई' तथा 'मलायन' अथवा 'जाकून'। शहरों में चीनी अधिकता से पाये जाते हैं। चीनियों के अतिरिक्त तामिल भी पाये जाते हैं। उत्तरी स्थानों में श्यामी लोगों का आधिक्य है।

मलाया के जंगलों में जंगली हाथियों और चीतों की बहुत अधिकता है। प्रायः पूरे गाँव के गाँव वृक्षों पर ही बसे होते हैं। पहाड़ियों पर भी बड़े और घने जंगल हैं। इन पहाड़ियों पर अधिकतर सीमांग जाति के लोग रहते हैं। इन पहाड़ियों पर से असंख्य छोटी छोटी नदियाँ निकल कर मैदान में बहती हैं। यह नदियाँ मैदान की जंगली जातियों के लिए सड़कों का काम देती हैं। इन्हीं नदियों में जंगली लोग नौका द्वारा इधर उधर आते जाते हैं। इन नदियों के किनारों पर 'औरांग लाट' जाति के लोग रहते हैं जो अधिकतर मछली मारते हैं।

Taj Tahir Foundation

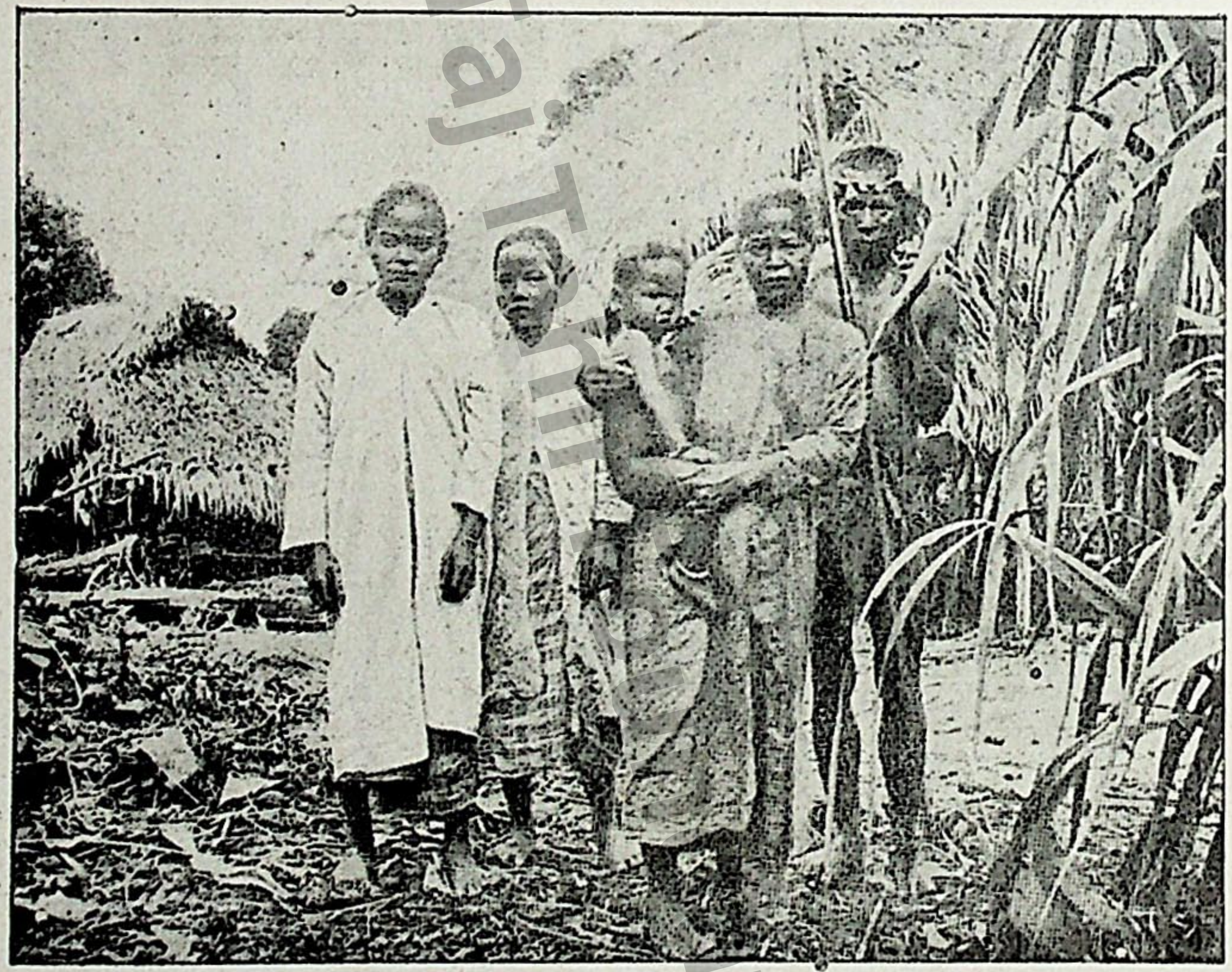

मलाया की मूल निवासी जाति 'सीलांगर' की स्त्रियाँ.
'सरांग' तथा 'कबाया' पहने हुए.

जाकून जाति निग्रिटस और साकाई जाति के सम्मिश्रण से उत्पन्न हुई है और उसमें मलाया के मूल निवासी, जो मंगोलियन नखशिख के हैं, मिल गये हैं। इनके केश नीला रंग लिये हुए काले तथा मोटे होते हैं, सिर गोल होता है, कर्ण पीत मिश्रित वादामी रंग का होता है, आँखें छोटी छोटी और गालों की हड्डियाँ उठी हुई होती हैं।

इनके अतिरिक्त सुमात्रा से कुछ मुसलमान भी आकर मलाया में वस गये। इन मुसलमानों में से कुछ तो खेती करने के लिए आये थे और कुछ इस्लाम धर्म का प्रचार करने के लिए। इन लोगों ने इस्लाम धर्म की आड़ लेकर मलाया के निवासियों पर वड़े वड़े अत्याचार किये।

मलाया की मूल जाति का कोई निश्चित धर्म नहीं है। श्यामी लोग वौद्ध हैं। वहुत से उनमें से अपने को इस्लाम धर्म का अनुयायी कहते हैं, पर हृदय से वे वौद्ध ही हैं।

परिच्छादन

'सरांग' मलाया का राष्ट्रीय परिच्छादन है। सरांग सूत का अथवा रेशम का होता है। यह भारत की धोती सा होता है और उसी प्रकार पहना जाता है। सरांग अधिकतर धोती की तरह गाँठ वाँध कर पहना जाता है; परन्तु कभी कभी उसे कसा रखने के लिए ऊपर से पेटी भी० वाँध ली जाती है। सरांग के ऊपर एक चादर, जिसे मलाया भाषा में 'कैन लेपस' कहते हैं, वक्षस्थल पर उसी प्रकार वाँध ली जाती है जिस प्रकार ०कि प्रायः भारतवर्ष के सन्यासी वाँधे रहते हैं। सिर के ऊपर एक चादर ओढ़ ली जाती है, जो केवल दोनों भुजदण्डों पर लटकी रहती है।

वैसे तो मलाया में सरांग कई प्रकार का वनता है; परन्तु अधिकतर छींट तथा चारख़ाने की तरह का वनाया जाता है। रेशमी सरांग वड़े सुन्दर और वड़े मूल्यवान वनते हैं। उन पर सुवर्ण के तारों से अनेक प्रकार के वेल-वूटे तथा चित्र वनाये जाते हैं। मलाया के 'कलन्तन' तथा 'तृंगानू' स्थान सरांगों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन स्थानों के प्रत्येक घर में एक एक करघा है

और इन करघों से स्त्रियाँ बड़े सुन्दर सरांग बनाती हैं। धनाढ्य स्त्रियाँ सरांग के नीचे एक श्वेत कपड़े का तहमद बाँध लेती हैं और एक लम्बा गौन, जो घुटनों तक होता है और जिसे मलाया भाषा में 'कबाया' कहते हैं, पहनती हैं। इस गौन को आगे वक्षस्थल पर ब्रूच अथवा पिन से बन्द कर लेती हैं।

मलायन स्त्रियों के केश कौवे के पर की तरह नील मिश्रित काले होते हैं। केशों को स्त्रियाँ चूने से धोकर पीछे जूड़ा बाँध लेती हैं। जूड़े में सोने की बनी हुई छोटी सी कटार अथवा चाँदी के 'हेयर-पिन' लगाती हैं। चम्पक के लाल पीले पुष्प भी लगा लेती हैं जो बड़े सुन्दर दिखाई पड़ते हैं।

मलायन स्त्रियाँ प्रायः नंगे पैर रहती हैं। लकड़ी की खड़ाऊँ पहनने की प्रथा है, परन्तु उनका व्यवहार अधिक नहीं है।

अब आज कल क्रमशः जूतों का प्रचार बढ़ता जा रहा है। पूर्व के पटानी तथा सिंगोरा स्थानों से, जहाँ श्यामी लोगों की अधिकता है, श्यामियों की राष्ट्रीय पोशाक 'पन्नंग' का अधिक चलन है।

कलन्तन नगर के भले घर की विवाहित स्त्री. सरांग तथा कैन लेपस पहने हुए.

निग्रिटस तथा साकाई जाति की स्त्रियाँ एक लंबा विशेष की

लँगोटियाँ बनाकर पहनती हैं। इसके अतिरिक्त साकाई तथा जाकून जाति की स्त्रियाँ छाल की तहमद भी बाँधती हैं। उत्सवों और त्योहारों पर फूल तथा पत्तियों की टोपियाँ पहनती हैं। नाक में साही के काँटे पहनती हैं। धात के कड़े तथा पशुओं की पूँछ, बालों के गुच्छे, दाँत, बीज, सिक्के तथा हड्डियों के गहने भी पहनती हैं।

मलाया स्त्री का गृहजीवन

मलाया के किसानों की स्त्रियाँ खेतों में काम करती हैं। मलाया में चावल की खेती अधिक होती है। स्त्रियाँ इस कार्य में बड़ी निपुण होती हैं। पुरुष केवल खेत को जोत कर छोड़ देते हैं; शेष सब काम अर्थात् खेत बोना, सींचना, खेत रखाना इत्यादि स्त्रियाँ ही करती हैं। फ़सल तैयार होने पर खेत काटने इत्यादि का काम भी स्त्रियाँ ही करती हैं। परन्तु खेतों में केवल उन्हीं किसानों की स्त्रियाँ काम करती हैं जो वहाँ असभ्य समझे जाते हैं। सभ्य किसानों की स्त्रियाँ केवल गृह सम्बन्धी कामों की देख रेख करती हैं।

कलेवा करने के पश्चात् मलाया स्त्रियाँ काम में जुट जाती हैं। जो खेतों में काम करने नहीं जातीं वे घर पर ही कपड़ा बुनने, चटाई बनाने, टोकरियाँ बनाने, चावल के बोरे बनाने इत्यादि का काम करती हैं।

मलाया की जंगली जातियों में कार्य का अधिक भार स्त्रियों ही पर रहता है। पुरुष केवल वह काम करते हैं जिनमें अधिक बल प्रयोग की आवश्यकता होती है।

जन्म और बाल्यकाल

मलाया के निवासी बड़े दुर्बल-विश्वासी होते हैं। भूत प्रेतों पर उनका अटल विश्वास है। जब स्त्री के बच्चा उत्पन्न होता है तो भूत प्रेतों से उसकी रक्षा की जाती है। उन्हें रात दिन यही भय लगा रहता है कि कहीं बच्चे को डायन न खा जाय। इसके लिए वे बड़े जन्त्र मन्त्र करते हैं। रात को किसी पड़ोसी ने चीत्कार की और मलाया स्त्री का कलेजा काँप गया। उसने समझा

कि कोई पिशाच चिल्लाया । उनकी समझ में नवजात शिशु का रक्त पीने के लिए अनेक पिशाच रात को निकलते हैं । उनके पिशाचों के नाम हैं:—लंगसूर—उड़ने वाला पिशाच; पागटीनक—पक्षी रूपी पिशाच जो इच्छानुसार सूरतें बदल सकता है; पिनंगलन—बिना धड़ का उड़ता हुआ सिर । ये सब पिशाच बच्चों

बालन्तन की एक वेश्या और उसकी सन्तानें.

का रक्त पीते हैं। इन पिशाचों से प्रसूती तथा वच्चे को वचाने के लिए प्रसूती को एक ऊँचे मचान पर लिटाते हैं जिसके नीचे आग जलती रहती है। यह आग खूब तेज़ होती है, इतनी तेज़ कि जिससे प्रसूती का शरीर कभी कभी झुलस सा जाता है। केवल इस कार्य के लिए लकड़ी एकत्र करने में कई सप्ताह लग जाते हैं। प्रसूती का पति उस समय तक हजामत नहीं वनवा सकता जव तक कि प्रसूती सूतिका-गृह में रहती है। उसे शिकार खेलने की आज्ञा भी नहीं होती।

यदि वच्चा चन्द्रग्रहण के समय उत्पन्न होता है तो उसे धुएँ से सेंकते हैं। यदि लड़का हुआ तो उसके माथे पर वेञ्च के आकार का चिन्ह वनाते हैं और यदि लड़की हुई तो अंकगणित के जोड़ का चिन्ह वनाते हैं।

जव वच्चा अपने पैरों चलने फिरने लगता है तो उसकी कमर में एक करधनी पहनाई जाती है। करधनी में पान के आकार का एक छोटा गहना लटकता रहता है। कन्या के कान छेदे जाते हैं और उनमें वह लौंगें पहने रहती है। ये लौंग अविवाहितावस्था का चिन्ह होती हैं—विवाह हो जाने पर लौंगें निकाल दी जाती हैं।

जव कन्या यौवन में पदार्पण करने लगती है तो उसके दाँत रेत दिये जाते हैं और उसके सिर के वालों की सव से बड़ी सात लटें काट दी जाती हैं। मलाया स्त्रियाँ गुदना नहीं गुदातीं। केवल साकाई स्त्रियाँ चिवुक तथा गालों पर गुदना गुदाती हैं।

सौन्दर्य

मलाया स्त्रियाँ प्रायः देखने में सुन्दर होती हैं; परन्तु उनका यह सौन्दर्य अल्पकालीन होता है। प्रौढ़ावस्था में पहुँचते ही वे कुरूपा हो जाती हैं। मलाया स्त्रियों की नाक चपटी होती है और नथुने फूले हुए। आँखें गहरी भूरी अथवा काली होती हैं। स्त्रियाँ पान खूब चवाती हैं, जिससे उनके दाँत काले हो जाते हैं; परन्तु वे दाँतों को श्वेत रखने की चेष्टा करती हैं। उनका

Taj Tahir Foundation

साकाई स्त्रियाँ और बच्चे.

वर्ण वादामी रँग का होता है। सिर गोल तथा भौंहें झुकी हुई होती हैं। मलाया निवासी अर्द्धचन्द्र के आकार की भौहों को सुन्दर मानते हैं। मलाया स्त्रियों के केश वड़े सुन्दर होते हैं। गालों की हड्डियाँ, मंगोलियन नख–शिख के अनुसार, उन्नत होती हैं।

वैवाहिक रीति रिवाज

सगाई के पूर्व वर की ओर के कुछ लोग कन्या को देखने के लिए जाते हैं। इसके पश्चात् कन्या के पिता के पास एक दूत भेजा जाता है जो सगाई पक्की कर आता है। सगाई पक्की होजाने के पश्चात् वर की ओर से कन्या को एक सुन्दर और वहुमूल्य कपड़े में लपेट कर फल तथा पान भेजे जाते हैं। कन्या की ओर से वर को एक विशेष प्रकार के वने हुए चावल भेजे जाते हैं। ये चावल रँगी हुई पत्तियों की वनी हुई छोटी टोकरी में भेजे जाते हैं। ये टोकरियाँ प्रायः मोर तथा अन्य पक्षियों के आकार की वनी होती हैं। विवाह की सव से साधारण प्रथा निकाह है। मलाया में इस्लाम–धर्म्म का प्रचार अधिक है; अतएव ऐसी दशा में निकाह ही होता है। दूसरी प्रथा यह है कि वर और कन्या एक साथ वैठ कर एक ही थाली में भोजन करते हैं। तीसरी प्रथा कन्या को ख़रीद लेने की है।

वसीसी जाति में विवाह के समय मिट्टी की एक वड़ी और ऊँची वेदी वनाते हैं। यह वेदी एक वड़े घेरे के आकार की होती है। कन्या इस वेदी के चारों ओर दौड़ती है और वर उसे पकड़ने की चेष्टा करता है। जहाँ वर ने कन्या को पकड़ लिया वस विवाह हो गया। इसके पश्चात् वर से कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं जो उसकी योग्यता के सम्वन्ध में होते हैं। जैसे—क्या तुम वृक्ष गिरा सकते हो? क्या तुम वृक्ष पर चढ़ सकते हो? इत्यादि। वर इन सव प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' में देता है। इसके पश्चात् भोज होता है और वर तथा कन्या एक ही थाली में भोजन करते हैं।

Taj Tahir Foundation

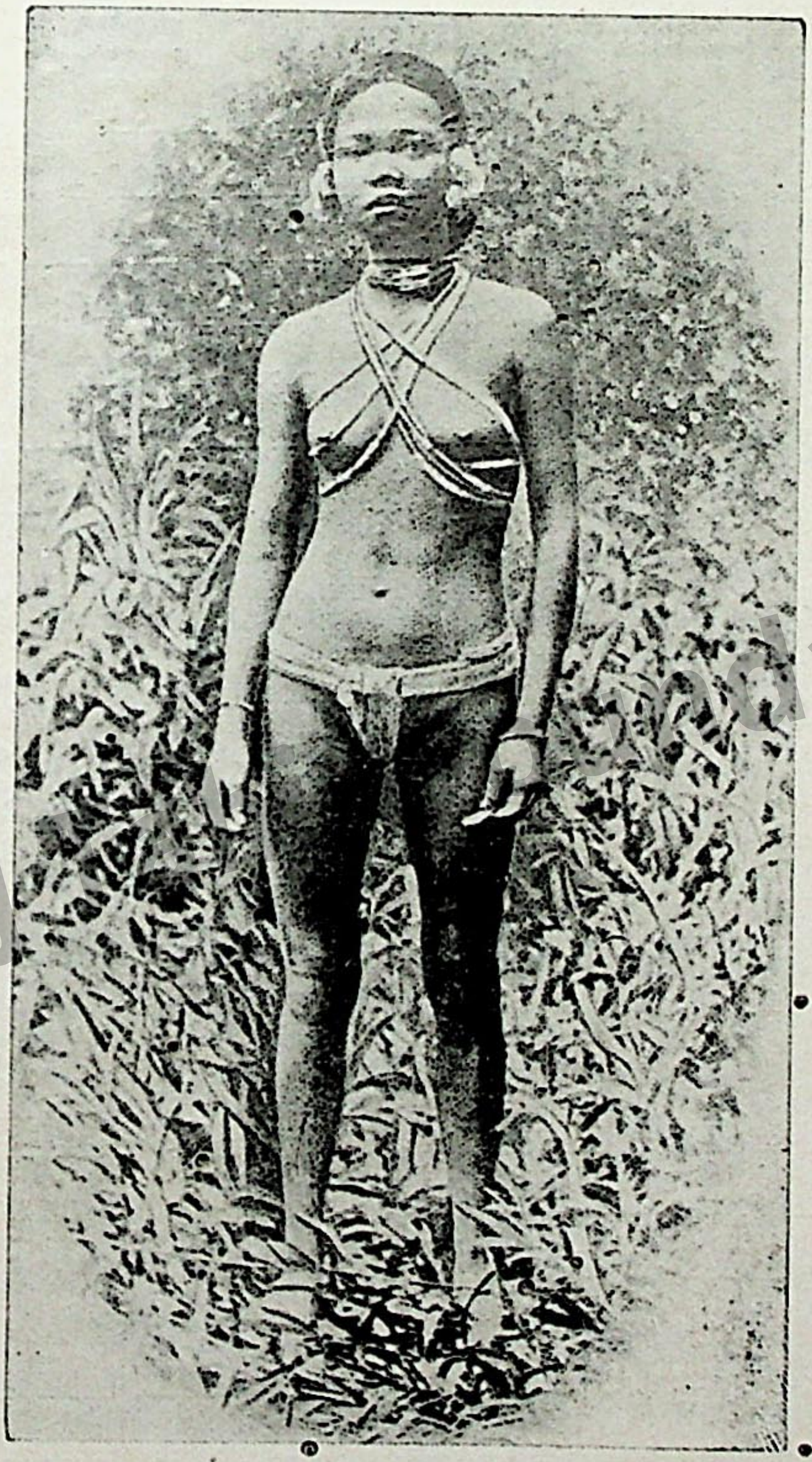

एक साकाई युवती.

Tajmahal Foundation

विवाह के लिए इन लोगों में जुलाई तथा अगस्त के महीने नियुक्त हैं; क्योंकि इन महीनों में फल खूब पैदा होते हैं।

मलाया के पश्चिम में समुद्र के किनारे रहने वाले लोगों में विवाह की प्रथा कुछ भिन्न है। कन्या का घर खूब सजाया जाता है। द्वार पर त्रिशूल के आकार की दो वड़ी वड़ी मोमवत्तियाँ जलाई जाती हैं और एक वड़ी कोच अथवा मसनद विछाई जाती है जो खूव सजी होती है। इस कोच पर रंग-विरंगे गाव-तकिये लगे रहते हैं। यह गाव-तकिये वैटने वालों के पदानुसार छोटे वड़े होते हैं। पहले यदि इन गाव-तकियों के लगाने में भूल हो जाती थी तो छुरियाँ चल जाया करती थीं; क्योंकि वैठने वाले इसमें अपना अपमान समझते थे। इस कोच पर वराती वैठते हैं और कुरान का पाठ सुनते हैं। पहले मुर्ग़ी की लड़ाई, कुश्ती इत्यादि देखने तथा क़िस्से कहानी सुनने का रिवाज था। इधर वराती कुरान सुनते हैं उधर कन्या के घर में वर तथा कन्या के हाथों में मेंहदी लगाई जाती है। कन्या की पोशाक वहुमूल्य और प्रायः फूलदार साटन की होती है और उस पर जरी का काम किया हुआ होता है। साटन की एक चुस्त जाकेट पहनी जाती है जिसमें सोने के वटन टँके होते हैं। ग़रीव स्त्रियाँ सूती जाकेट, जिसमें पीतल के वटन लगे रहते हैं, पहनती हैं। जाकेट के नीचे रेशमी 'सरांग' पहनी जाती है। कभी कभी रेशमी पाजामा भी पहनती हैं। सिर के जूड़े में सोने के वने हुए साँप तथा तितली लगाई जाती हैं। फूलों का झूमर पहना जाता है। गले में गलेबन्द तथा हार पहना जाता है। मलाया कन्याएँ वर के सामने घूँघट निकाल कर नहीं वैठतीं। वहाँ घूँघट की प्रथा ही नहीं है।

वर की पोशाक भी मूल्यवान होती है। वर के पास एक छुरी रहती है और इस प्रकार सज कर वह वरात सहित कन्या के घर पर जाता है। विवाह की रस्म के समय वर तथा कन्या दोनों एक मसनद पर विठाये जाते

हैं। उन दोनों को कुछ चावल दिये जाते हैं जो वे परस्पर खिलाते हैं। इसके पश्चात् वर बाहर के कमरे में जाता है और अपने नाते रिश्तेदारों का अभिवादन करता है। इसके उपरान्त मिठाई बाँटी जाती है। बरात कन्या के घर पर प्रायः एक सप्ताह रहती है। चौथे दिन वर तथा कन्या को एक साथ एक बेञ्च पर बिठा कर स्नान कराते हैं। स्नान कराते समय कुछ युवक वर तथा कन्या पर बाँस की पिचकारियों से पानी छोड़ते हैं। इसके उपरान्त वर तथा कन्या नारियल की पत्ती में लगी हुई एक गाँठ को एक साथ मिल कर खोलते हैं। इसके पश्चात् एक धागा सात बार वर तथा कन्या के ऊपर और पैरों के नीचे से लेकर चारों ओर लपेटते हैं। धागा लपेट चुकने पर ज्यों ही वर इस धागे को तोड़ देता है त्यों ही बरात विदा हो जाती है। ससुराल आने के सात दिवस पश्चात् दुलहिन के कानों में से लौंगें, जो उसके कुमारिका होने का चिन्ह होती हैं, निकाल दी जाती हैं।

अन्त्येष्ठि क्रिया

मृत्यु के पश्चात् २४ घण्टे के अन्दर अन्त्येष्ठि क्रिया का होना आवश्यक समझा जाता है। निग्रिटस जाति के लोग मृतक शरीर को गाड़ देते हैं। परन्तु साकाई जाति में भूत प्रेत का इतना भय होता है कि जिस गाँव में कोई मृत्यु हो जाती है कभी कभी वह गाँव का गाँव फूँक दिया जाता है। वैसे साधारणतया जिस घर में मृत्यु होती है उस घर को फूँक देते हैं। मृतक शरीर को ऊँचे मचान पर तथा वृक्ष पर रख देने की भी प्रथा है। स्त्री के मृतक शरीर के साथ उसके गहने भी दफ़न कर दिये जाते हैं। मृत मनुष्य की आत्मा के भोजन के लिए क़ब्र पर चावल, केले इत्यादि के वृक्ष बोये जाते हैं। कभी कभी एक बाँस की नली मृतक शरीर के मुँह से लगा देते हैं। यह नली ऊपर क़ब्र के बाहर निकली रहती है। इस नली के द्वारा मृतक शरीर को भोजन तथा पानी पहुँचाते रहते हैं।

Taj Tahir Foundation

जब कोई मुखिया मरता है तो उसकी अर्थी बहुत बड़ी बनाई जाती है—इतनी बड़ी कि सौ सवासौ से कम आदमी उसे नहीं उठा सकते। अर्थी के ऊपर पान तथा फूल डाले जाते हैं। मृत्यु के सातवें, चौदहवें, चालीसवें और सौवें दिन भोज दिया जाता है। वर्ष व्यतीत होने पर वर्षी मनाई जाती है और उस दिन मृत मनुष्य के कुटुम्ब वाले छुट्टी मनाते हैं।

Taj Tahir Foundation

फ़िलीपाइन द्वीप

जाति की उत्पत्ति, नेग्रिटो सौन्दर्य, विवाह प्रथा, मंडाया स्त्रियाँ.

फ़िलीपाइन द्वीप बोर्नियो के उत्तर-पूर्व कोने में है। यह द्वीप संयुक्त राज्य के अधीन है। फ़िलीपाइन द्वीप के निवासी एक खिचड़ी जाति के लोग हैं; परन्तु मूल निवासी नेग्रिटो जाति के लोग हैं।

जाति की उत्पत्ति

यह लोग फ़िलीपाइन के भीतरी भाग मिण्डानाओ तथा कुछ कुछ अन्य स्थानों में पाये जाते हैं। मलाया की जातियाँ भी पाई जाती हैं। इनमें अधिकांश हिन्दू आचार विचार के मानने वाले हैं। इनके अतिरिक्त चीनी तथा जापानी भी पाये जाते हैं। अमेरिकन मनुष्य गणना के हिसाब से ८ लाख की आबादी में ७ लाख मलीया जाति के लोग हैं; परन्तु इनमें वर्ण फिर भी बहुत हैं। इन लोगों में इगोरोट, इलोंगोट, टैग्लास, विसाया, बागोबो तथा मण्डाया जाति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मिण्डानाओ स्थान में मोरोस जाति के लोग हैं। ये सब इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं और इनमें अरबी रक्त का सम्मिश्रण है।

ऐसी दशा में स्वाभाविक है कि इन सब जातियों के रूप रंग, आचार विचार एक दूसरे से भिन्न हों। इनमें से प्रथम नेग्रिटो जाति का वर्णन किया जाता है। नेग्रिटो जाति के लोग औसत दर्जे ४ फ़ीट के लम्बे होते हैं, उनका रंग काला होता है जिसमें हल्की सुर्ख़ी रहती है, नाक चौड़ी तथा चपटी होती है, आँखें गहरे भूरे रंग

नेग्रिटो सौन्दर्य

Taj Foundation

की होती हैं, केश लाल मिश्रित वादामी रंग के होते हैं। सौन्दर्य वढ़ाने के लिए ये लोग अपने दाँत रेत डालते हैं। इनका कथन यह भी है कि दाँत रेत देने से भुना अनाज चवाने में सुविधा होती है। छाती, कन्धों तथा पीठ पर उभरा हुआ गुदना गुदाते हैं। गले में वीजों के गलेवन्द पहनते हैं। वालों में वाँस के कंघे लगाते हैं। इनका परिच्छदन केवल एक कपड़ा होता है जिसे ये लोग कमर में तहमत की तरह लपेट लेते हैं।

विवाह प्रथा

इन लोगों में विवाह इतना महत्व पूर्ण समझा जाता है कि एक पत्नी के खरीदने में प्रायः कुटुम्ब भर की संचित कमाई खर्च हो जाती है। छोटी छोटी लड़कियों का विवाह वृद्ध पुरुषों के साथ कर दिया जाता है। ऐसी दशा में वहुधा विवाह में वड़ा उपद्रव मचता है। कभी कभी कन्याएँ वर्षों पति के घर जाने को राज़ी नहीं होतीं। विवाह की रस्म वर तथा कन्या के साथ भोजन करने से समाप्त हो जाती है।

लज़ान के दक्षिण में वर तथा कन्या दोनों एक मचान पर विठाये जाते ह और आपस में सिर लड़ाते हैं—वस, विवाह की रस्म समाप्त हो जाती है। जव कन्या विदा होकर ससुराल जाती है तो रास्ते में एक स्थान पर ठहर कर वह यह देखती है कि पति की ओर से उसे कौन कौन सी वस्तुएँ दी गई हैं। यदि वस्तुएँ सव उसकी इच्छा के अनुकूल हुईं तो वह ससुराल चली जाती है अन्यथा अपने मायके लौट आती है।

इगोरोट जाति के लोग पहाड़ी स्थानों में रहते हैं और प्रायः खेती करते हैं। ये पाँच फ़ीट के लगभग लम्वे होते हैं। स्त्रियों के केश लम्वे होते हैं और वे कानों में ताँवे की वालियों के गुच्छे लटकाये रहती हैं। स्त्रियाँ वाल्यावस्था में कुछ सुन्दर होती हैं; परन्तु तीस वर्ष की वयस तक वे वड़ी भद्दी और वदसूरत होजाती हैं। इन लोगों में कन्याएँ और वालक कभी एक साथ नहीं खेलने दिये जाते।

Taj Tahir Foundation

ये लोग एक मकान बिल्कुल अलग बनाते हैं जो ख़ाली पड़ा रहता है। इसमें विवाह योग्य युवतियाँ तथा युवक परस्पर मिलते रहते हैं। इस मकान को इनकी भाषा में 'ओलाग' कहते हैं। जब कोई युवती किसी युवक से ओलाग में मिलना चाहती है तो वह उसकी कोई वस्तु चुरा लेती है। युवक पहले तो उस चीज़ को इधर उधर ढूँढ़ता है पर जब वह नहीं मिलती तो अन्त में ओलाग में ढूँढ़ने जाता है। वहाँ जाने पर उसे वह चीज़ उसी

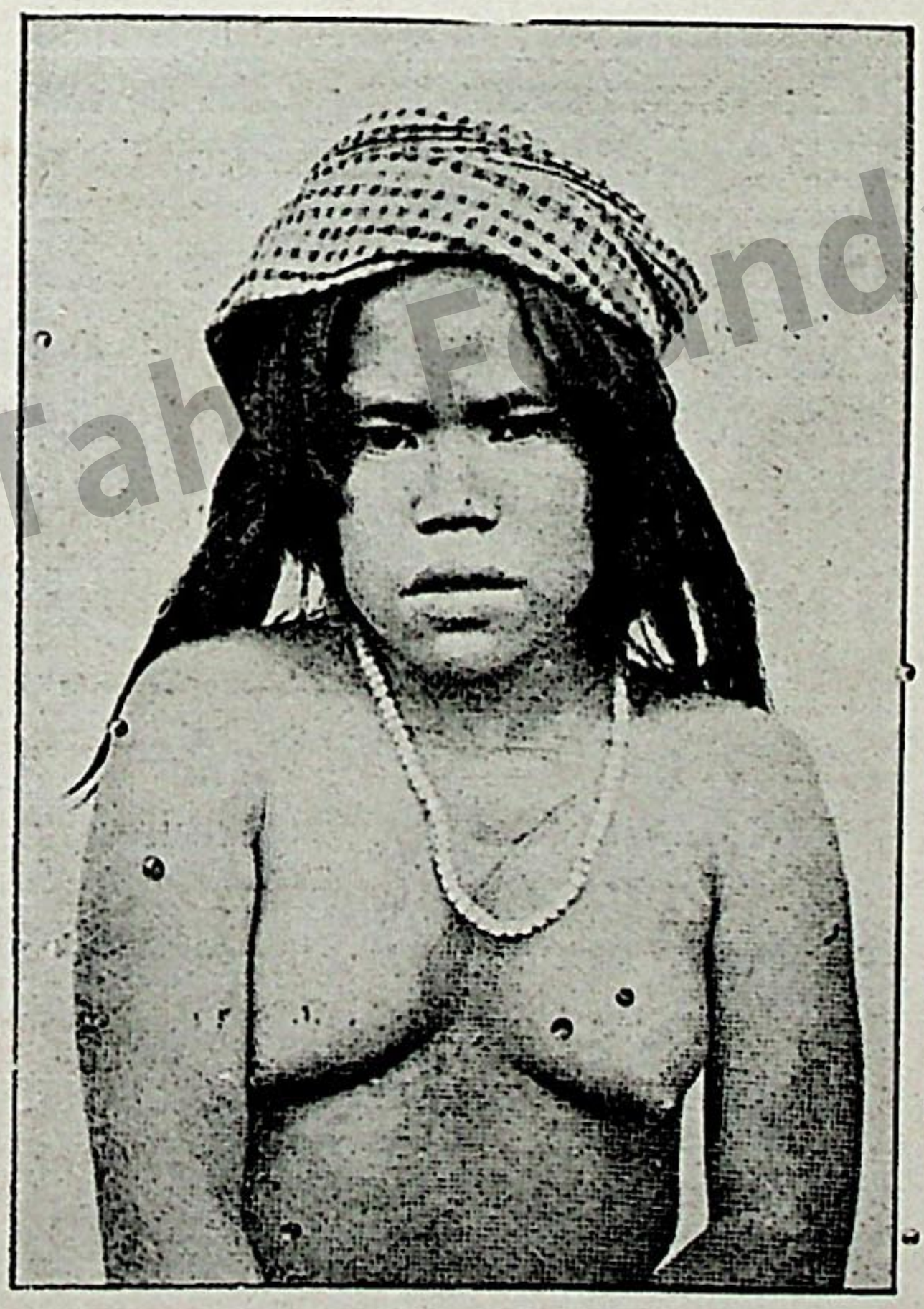

इगोरोट जाति की युवती.

Taj Tah Foundation

युवती से मिल जाती है। बस, यहीं से सगाई का आरम्भ होता है। युवक और युवती परस्पर ओलाग में मिलते रहते हैं। इसी बीच में युवक युवती के पिता के घर पर भोजन भी करता रहता है और उनका काम काज भी करता है। जब युवती के गर्भ-स्थिति हो जाती है तब विवाह होता है।

तलाक़ की प्रथा भी इन लोगों में है। जब कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक़ देता है तो वह घर से निकल जाता है और दूसरा घर बना कर उसमें रहने लगता है। इन लोगों में, यदि विवाह के पूर्व युवक युवती का मिलना क्षम्य मान लिया जाय, तो, यह कहना पड़ेगा कि व्यभिचार बहुत कम है। विवाह योग्य होने के पूर्व किसी कन्या का सम्बन्ध किसी पुरुष से नहीं होता और विवाह के पश्चात् पत्नियाँ प्रायः अपने सतीत्व की रक्षा करती हैं। दम्पति में से एक की मृत्यु हो जाने पर दूसरा कम से कम एक वर्ष तक दूसरा विवाह नहीं करता।

बालिकाएँ पाँच वर्ष की होते ही काम करने लगती हैं। स्त्रियाँ सूत कातती हैं; कपड़ा बुनती हैं; मिट्टी के बर्तन बनाती हैं; उन्हें बेचती हैं तथा नमक निकालती हैं। खेतों का अधिकतर कार्य भी स्त्रियाँ ही करती हैं। भोजन पकाने का कार्य प्रायः पुरुष करते हैं।

इगोरोट जाति की तरह इलोंगोट जाति भी खेती करती है। इनका रंग गहरा बादामी होता है जिसमें कुछ पीले रंग की पुट भी होती है। स्त्री और पुरुष अपने दाँतों को रेत देते हैं और उनको इतना काला कर देते हैं कि स्याही की दावात से प्रतीत होते हैं। विवाह पर वर कन्या को मनुष्य का सिर, हृदय तथा अँगुलियाँ भेंट देता है। इसके बिना कोई कन्या सन्तुष्ट नहीं हो सकती। यह भी प्रथा है कि वर अपने किसी शत्रु का सिर एक लम्बे बाँस पर लटका देता है और उस बाँस को अपने द्वार पर गाड़ देता है। नौ रोज़ तक यह सिर बाँस पर लटका रहता है और सब लोग उसे देख लेते

हैं। नौ दिन के उपरान्त सिर उस मकान में गाड़ दिया जाता है जिसमें कि विवाह के पश्चात् दम्पति रहने का विचार करते हैं।

सोरोस जाति के लोग फ़िलीपाइन द्वीप में सब से अधिक समझदार तथा विश्वासपात्र समझे जाते हैं। इनका वर्ण भी पीत मिश्रित श्याम होता

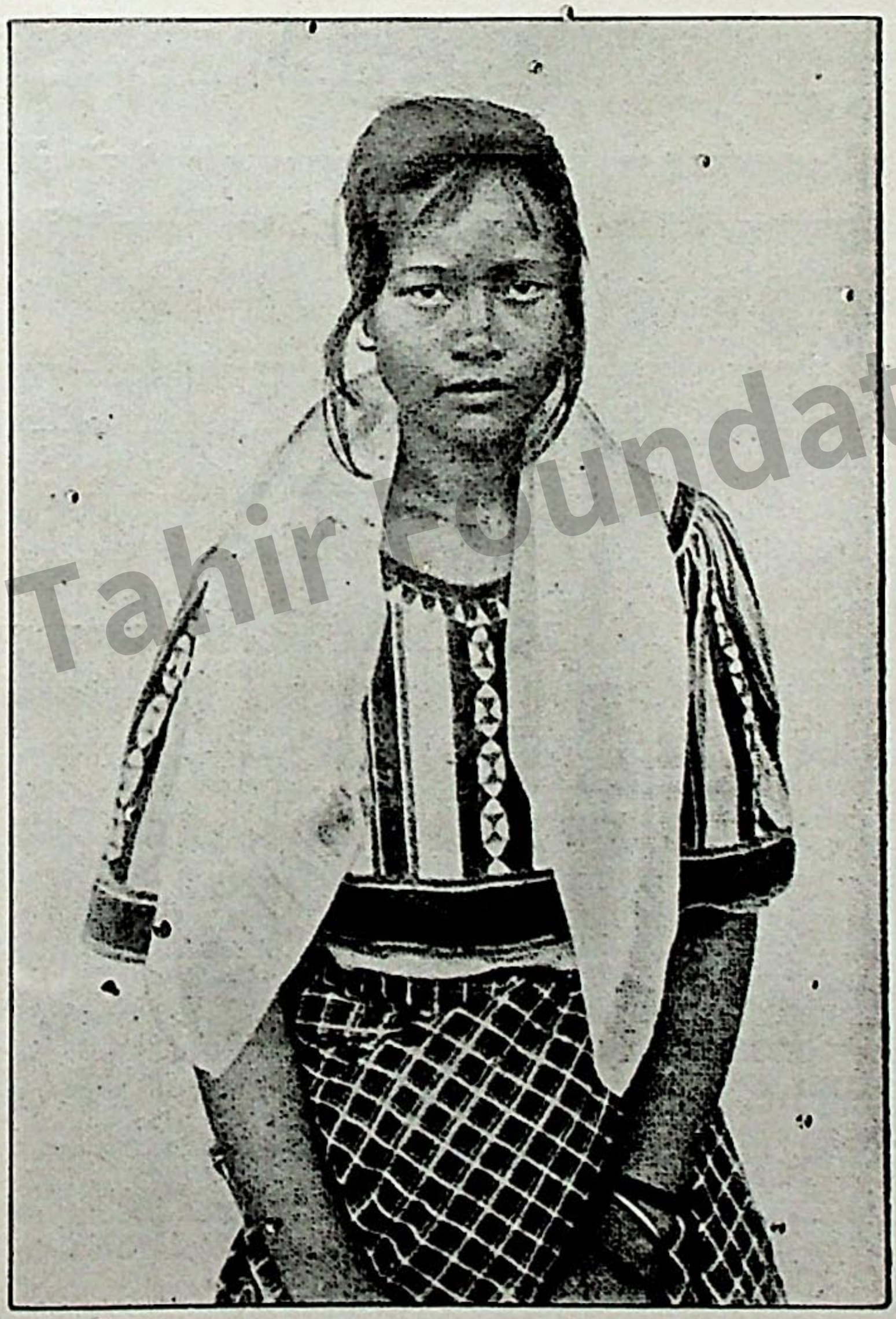

बकिडनोन जाति की स्त्री.

Taj Tahir Foundation

है। स्त्रियों के हाथ पैर सुन्दर होते हैं। घर के वाहर स्त्रियाँ पुरुषों की तरह पाजामा पहनती हैं। यह पाजामा वहुत ढीला होता है। पाजामे के ऊपर जाकेट पहनती हैं जो इतनी चुस्त होती है कि स्तन इत्यादि का आकार विल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है। कभी कभी स्त्रियाँ सारांग भी व्यवहृत करती हैं; परन्तु इसका व्यवहार अधिकतर पर-पुरुषों के सामने घूँघट निकालने के लिए किया जाता है।

विवाह इस्लाम धर्म के अनुसार होता है। मोरोस स्त्रियों में ईर्षा की मात्रा वहुत अधिक होती है। स्त्रियाँ अपने पति का पर-स्त्री से सम्वन्ध जान लेने पर पति को विष देकर मार डालती हैं।

फ़िलीपाइन द्वीप भर में सुन्दर जाति 'मण्डाया' है। इनका वर्ण गौर होता है; आँखें तथा केश काले होते हैं। इस जाति की स्त्रियाँ अपने लिए स्वयं ही वड़े सुन्दर तथा चित्ताकर्षक गहने वनाती हैं। स्त्रियाँ प्राय: लाल कोट, जिसकी आस्तीनें नीली होती हैं, पहनती हैं और नीचे एक लहँगा पहनती हैं जो घुटनों तक होता है। क़लाई से लेकर कुहनी तक धात तथा शंख की चूड़ियाँ पहनती हैं। गले में एक हार डाले रहती है, जिसमें चाँदी का एक तावीज़ गुथा रहता है। कानों में लकड़ी की वड़ी वड़ी वालियाँ पहनती हैं जिसमें पोत और पत्ती लगी रहती हैं। कन्धनी पहनने की प्रथा भी है। कन्धनी में घड़ियाल के दाँत, कौड़ियाँ इत्यादि लगी रहती हैं।

मंडाया स्त्रियाँ

यह कन्धनी अन्य स्त्री को छूने नहीं दी जाती; क्योंकि ऐसा करना कन्धनी पहनने वाले के लिए अशुभ होता है। वालों में लकड़ी की एक वड़ी कंघी, जो प्राय: चाँदी से मढ़ी होती है, लगाती हैं। वालों का जूड़ा वाँधती हैं; परन्तु तीन लटें छोड़ लेती हैं। एक पीछे और दो दोनों गालों पर।

वागोवो जाति की स्त्रियाँ भी देखने में सुन्दर होती हैं। यह पोत का काम वहुत सुन्दर वनाती हैं। पीतल के गहने भी वनाती हैं और वड़ी रुचि

से पहनती हैं। ये अपने दाँत रेत डालती हैं और उन्हें काला कर देती हैं। स्त्रियाँ कानों में लकड़ी, हाथीदाँत तथा नारियल की पत्तियों की बालियाँ पहनती हैं। घुटनों के नीचे पोत की लड़ियाँ बाँध लेती हैं।

'डाटो' मुखिया और उसकी पत्नी.

Taj Tak Foundation

तिख्राय जाति के लोगों का रंग पीला होता है। होंठ कुछ मोटे होते हैं। स्त्रियाँ होंठों को लाल रँग लेती हैं। कानों में सात छेद किये जाते हैं जिनमें तार के टुकड़े पहने रहती हैं। पीतल के तार की कन्धनी पहनती हैं। यह कन्धनी बड़ी लम्बी होती है जिसे सात आठ बार कमर में लपेटती हैं। पीतल की चूड़ियाँ, जिनमें छोटी छोटी घण्टियाँ लगी रहती हैं, पहनती हैं। केवल बाएँ हाथ की भुजा पर पीतल तथा शंख की मोटी मोटी टड़ियाँ पहनती हैं। गले में पोत तथा कौड़ियों की लड़ियों का गलेबन्द पहनती हैं।

विवाह की बातचीत कन्या से गुप्त रखी जाती है। यदि कन्या किसी प्रकार अपने विवाह का समाचार सुन लेती है तो आत्महत्या करने का ढोंग रचती है। विवाह की रस्म में केवल इतना होता है कि वर कन्या का घूँघट उलट कर भागता है और एक पत्नी विशेष की बोली बोलता है। कन्या तथा उसकी माता सुपारी और चूना चबा कर वर को देती हैं। इसके उपरान्त वर तथा कन्या एक दूसरे का स्पर्श करते हैं और विवाह की रस्म समाप्त हो जाती है।

वटाक जाति के लोग बड़े शान्ति प्रिय होते हैं। ये लोग आपस में कभी नहीं लड़ते भिड़ते। इन लोगों के पास अस्त्र शस्त्र हैं, परन्तु उनसे केवल शिकार खेलने का काम लेते हैं।

विवाह की रस्म इन लोगों में बड़ी संक्षिप्त होती है। वर कन्या का मूल्य अदा कर देता है। चावल के तीन ग्रास कन्या वर के मुख में देती है और वर कन्या के मुख में—बस, विवाह हो जाता है। इन लोगों में बहु-पति की प्रथा है अर्थात् एक स्त्री के अनेक पति होते हैं।

फ़िलीपाइन के मिण्डोरो द्वीप में मंगुइन नाम की एक जाति रहती है। इनकी नाक चपटी, आँखें कुछ गोल, केश काले तथा सीधे और वर्ण रक्त मिश्रित श्याम होता है। स्त्री पुरुष दोनों अपने दाँत रेत कर मसूड़ों में

मिला देते हैं। ये लोग ऐसा क्यों करते हैं इसका कारण वे स्वयं नहीं बता सकते हैं।

इस जाति की स्त्रियों के नख शिख देखने में सुन्दर होते हैं। स्त्रियाँ गहने खूब पहनती हैं और कमर में घुँघरू बाँधती हैं।

बागोबो पुरुष, स्त्री और बच्चा.

यह स्त्रियाँ पीतल या लाल पोत की चूड़ियाँ पहनती हैं। शंख के कड़े और पोत के गलेवन्द पहनने की प्रथा भी है। परन्तु इनका एक विशेष शृंगार यह है कि बेंत की पेटी पहनी जाती है। इसी प्रकार बेंत ही की एक पेटी सी छाती पर बाँधी जाती है।

सूलू द्वीप में स्त्रियाँ बड़ी प्रतिष्ठित समझी जाती हैं। किसी भी मामले में पुरुष की अपेक्षा स्त्री की गवाही अधिक माननीय समझी जाती है। इससे प्रगट होता है कि वहाँ की स्त्रियों में सत्य भाषण स्वभावगत है।

Taj Tahir Foundation

卌 卌 卌

मेडागास्कर

जातियाँ, शारीरिक बनावट, स्त्रियों का कार्य, विचित्र नाच, परिच्छादन, शृंगार, जन्म और बालयकाल, बहु विवाह, विवाह प्रथा.

जातियाँ साधारण रूप से मेडागास्कर में सभ्यता की विभिन्नता उसमें बसी हुई जातियों के अनुसार है। मेडागास्कर में अनेक जातियाँ हैं। होवा या ऐंटीमेरिना, मध्य मेडागास्कर में बेत्सीलियो जाति भी पाई जाती है। पश्चिमी किनारे पर सकलावा जाति वेज़ानोज़ानो जंगलों में, पूर्व में बेत्सीमिसारका और ऐण्टेमोरो, महाफ़ले और बारा दक्षिण में, और अन्तनकर्ण उत्तर में पाई जाती है। मध्य मेडागास्कर जातियाँ सबमें अधिक सभ्य हैं और इन्हीं के सम्बन्ध में यात्रियों को अधिक ज्ञान भी प्राप्त हुआ है।

शारीरिक बनावट मेडागास्कर की जातियों में सौन्दर्य की कमी है। इसके अतिरिक्त सब जातियों के नख शिख में परस्पर विभिन्नता है। ऐण्टीमेरिना और होवा जातियों के नख शिख पालीनीशियन स्त्रियों के नख शिख से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। मुख की आकृति साधारणतया अच्छी होती है, हाथ पैर छोटे छोटे होते हैं, शरीर का आकार मध्य श्रेणी का और चमड़े का रंग हल्का पीला होता

Taj Tahir Foundation

है। दूसरी जातियों की स्त्रियोंका वर्णन साँवले से लेकर हवशियों की तरह काला तक होता है। क़द में भी वे कुछ लम्बी तथा स्थूल होती हैं।

स्त्रियों का कार्य

समस्तद्वीप में स्त्री पुरुष का कार्य वँटा हुआ है। पुरुषों का मुख्य कार्य सैनिक शिक्षा प्राप्त करना, शिकार खेलना, मछली मारना, मकान बनाना, बोने के लिए खेतों को तैयार करना तथा पशुओं की देखभाल रखना है। स्त्रियों का कार्य घर का भोजन बनाना, मकानों की छतें पाटना, धान बोना इत्यादि है।

वेज़ानोज़ानो जाति को छोड़ करके अन्य सब जातियों में स्त्रियाँ पुरुषों के समान ही समझी जाती हैं। उन्हें अधिकार भी पुरुषों के समान ही प्राप्त होते हैं। मेडागास्कर में ऐसी बहुत सी रानियाँ हो गई हैं जिनके पति प्रधान मन्त्री की हैसियत से काम करते थे। अतएव यही कारण है कि वहाँ स्त्रियों के अधिकार इतने बढ़े चढ़े हैं। पहले जब बहु-विवाह की प्रथा थी तब प्रत्येक ऐसे आदमी का जो कि अनेक विवाह करता था यह कर्तव्य होता था कि अपनी प्रत्येक पत्नी के लिए अलग अलग मकान बनवावे। विवाह के पहले पूर्ण वयस्क कन्याओं को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त रहती है। वे अपनी इच्छानुसार जिस व्यक्ति से चाहें विवाह कर सकती हैं। विवाह होने के पश्चात् प्रत्येक स्त्री का अधिकार अपनी चीज़ों पर रहता है। स्त्री को यह अधिकार भी रहता है कि वह अपने पति को जब चाहे तलाक़ दे दे। कुछ द्वीपों में जिनमें कि इस्लाम धर्म का प्रभुत्व है स्त्रियों की दशा वैसी ही है जैसी कि ईरान और अरब इत्यादि में है—अर्थात् उनको किंचित् स्वतन्त्रता भी प्राप्त नहीं है।

बहुत सी जातियों में स्त्रियों का एक संगठित दल होता है और उसके क़ायदे क़ानून भी अलग होते हैं। इस दल की मुखिया भी स्त्री होती है। दक्षिण-पूर्व में एक जाति ज़ाफीसोरो नाम की है। इस जाति में यदि कोई पुरुष किसी स्त्री का अपमान करता है तो वह स्त्री अपने दल की मुखिया स्त्री से शिकायत करती है। मुखिया स्त्री अपने दल की एक सभा

करके राजा से इस बात की प्रार्थना करती है कि वह उस व्यक्ति को दंड देवे। ऐसी प्रार्थनाएँ सदैव स्वीकृत होजाती हैं।

विचित्र नाच

मेडागास्कर की स्त्रियाँ नाच और गाने की बड़ी शौकीन होती हैं। इनका साधारण बाजा बाँस के दो डंडे होते हैं जिन्हें यह ताल पर बजाया करती हैं। इसके अतिरिक्त बाँस ही के चिकारे भी होते हैं जिनका स्वर एक सभ्य संसार के आदमी के लिए बड़ा कर्ण-कटु होता है। ऐगटेमोरो स्त्रियों में यह प्रथा है कि जब उनके पति शिकार अथवा युद्ध में जाते हैं तो वे ख़ूब नाचती हैं और एक

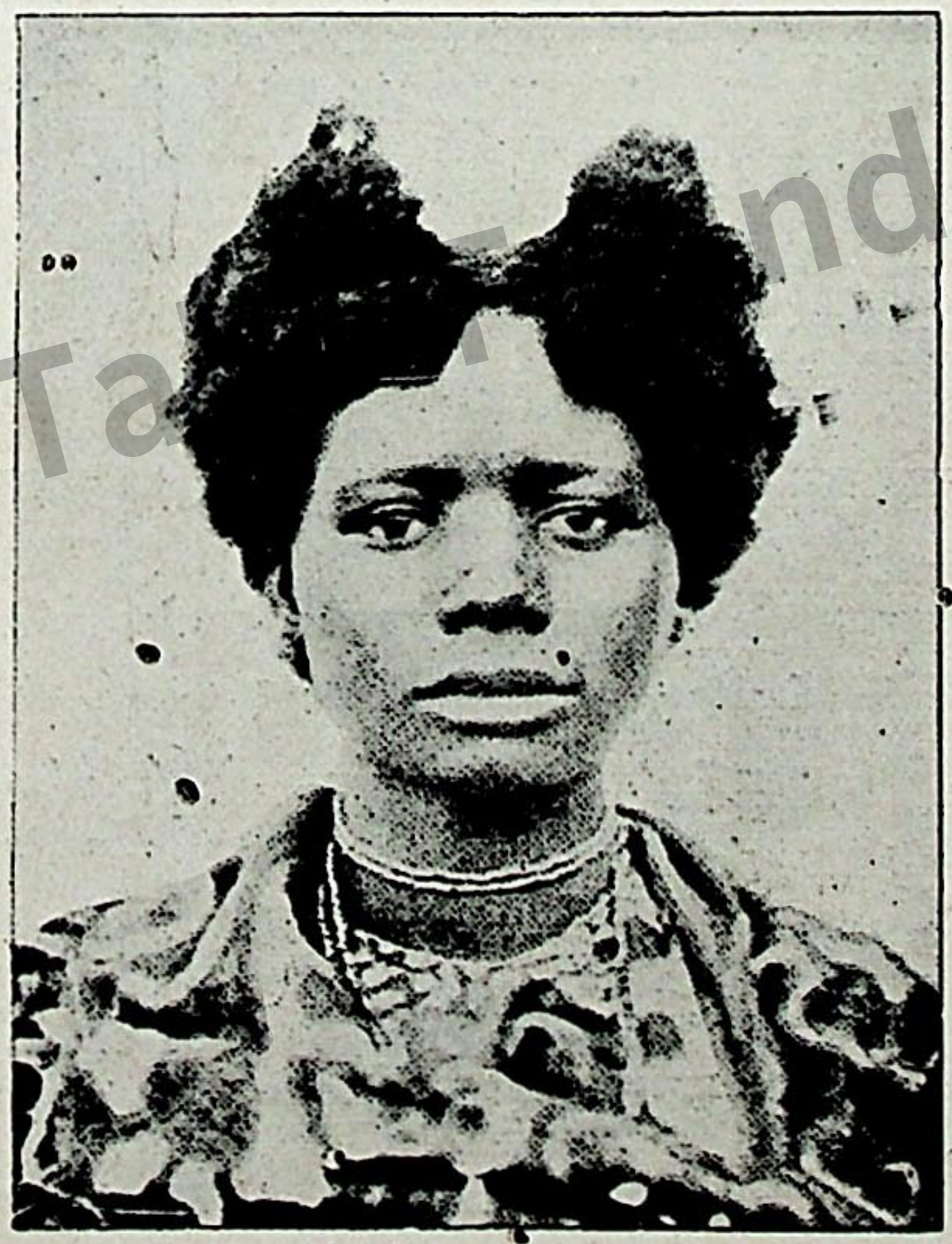

सकलावा स्त्री.
लाँबा पहिने हुए.

Taj Tata Foundation

विशेष प्रकार के गाने गाती हैं। उनका विश्वास है कि इस प्रकार नाचने गाने से उनके पतियों को शिकार और युद्ध में बल तथा प्रोत्साहन मिलता है।

परिच्छादन

स्त्रियाँ एक प्रकार का थैला सा पहनती हैं जो दोनों ओर से खुला होता है, इसे 'सिम्बो' कहते हैं। इसी प्रकार का एक परिच्छादन जिसे 'अकंजो' कहते हैं पुरुषों द्वारा पहना जाता है। इसमें और स्त्रियों के सिम्बो में केवल यह अन्तर होता है कि यह कुछ छोटा और छाती पर तङ्ग होता है। प्रत्येक जातियाँ अपने अपने परिच्छादन भिन्न भिन्न प्रकार के कपड़े के बनाती हैं। ऐगटन जाति में लाल और श्वेत छींट के वस्त्र बनते हैं। चटाई के सिम्बो पहनने की प्रथा भी है जो कि कमर में चमड़े की पेटी द्वारा कस लिये जाते हैं। मध्य मेडागास्कर की स्त्रियाँ रेशम के परिच्छादन बनाती हैं जिन्हें लाँबा कहते हैं। यह लाँबे अनेक रंग के और बड़े सुन्दर बनते हैं। लाँबा एक चादर सी होती है जो भारतवर्ष की चादर की तरह ओढ़ी जाती है। परन्तु अब क्रमशः यूरोपियन काट छाँट के वस्त्रों का प्रचार होता जारहा है।

शृंगार

मेडागास्कर की स्त्रियाँ अपने केशों का शृङ्गार अनेक प्रकार से करती हैं। इस शृङ्गार में कई घण्टे लगते हैं और यथेष्ट परिश्रम पड़ता है। बीच में माँग निकाल कर दोनों ओर बालों की अनेक लटें बनाई जाती हैं। इन लटों को अपनी जाति की श्रेणी के अनुसार बड़ी और छोटी रखने की प्रथा है। केशों में मिट्टी अथवा पशु की चर्बी लगाई जाती है जिससे कि एक बार के सँवारे हुए केश एक महीने तक वैसे ही बने रहते हैं। बहुत सी जातियों में पुरुष और स्त्री दोनों अपने अपने केशों का शृङ्गार करते हैं। सिर में चर्बी इत्यादि लगाने और महीने में केवल एक बार सिर को धोने के कारण इन लोगों का सिर बड़ा मैला रहता है और उसमें खुजली उठा करती है। इसलिए सिर

खुजलाने के लिए ये लोग सदैव एक कङ्घा या हड्डी या पीतल की कील सी पास रखती हैं।

बालक के जन्म लेने के पूर्व इन लोगों में बड़ी तैयारियाँ की जाती हैं। सूतिका गृह सबसे अलगी बनाया जाती है और प्रत्येक समय गर्म रखा

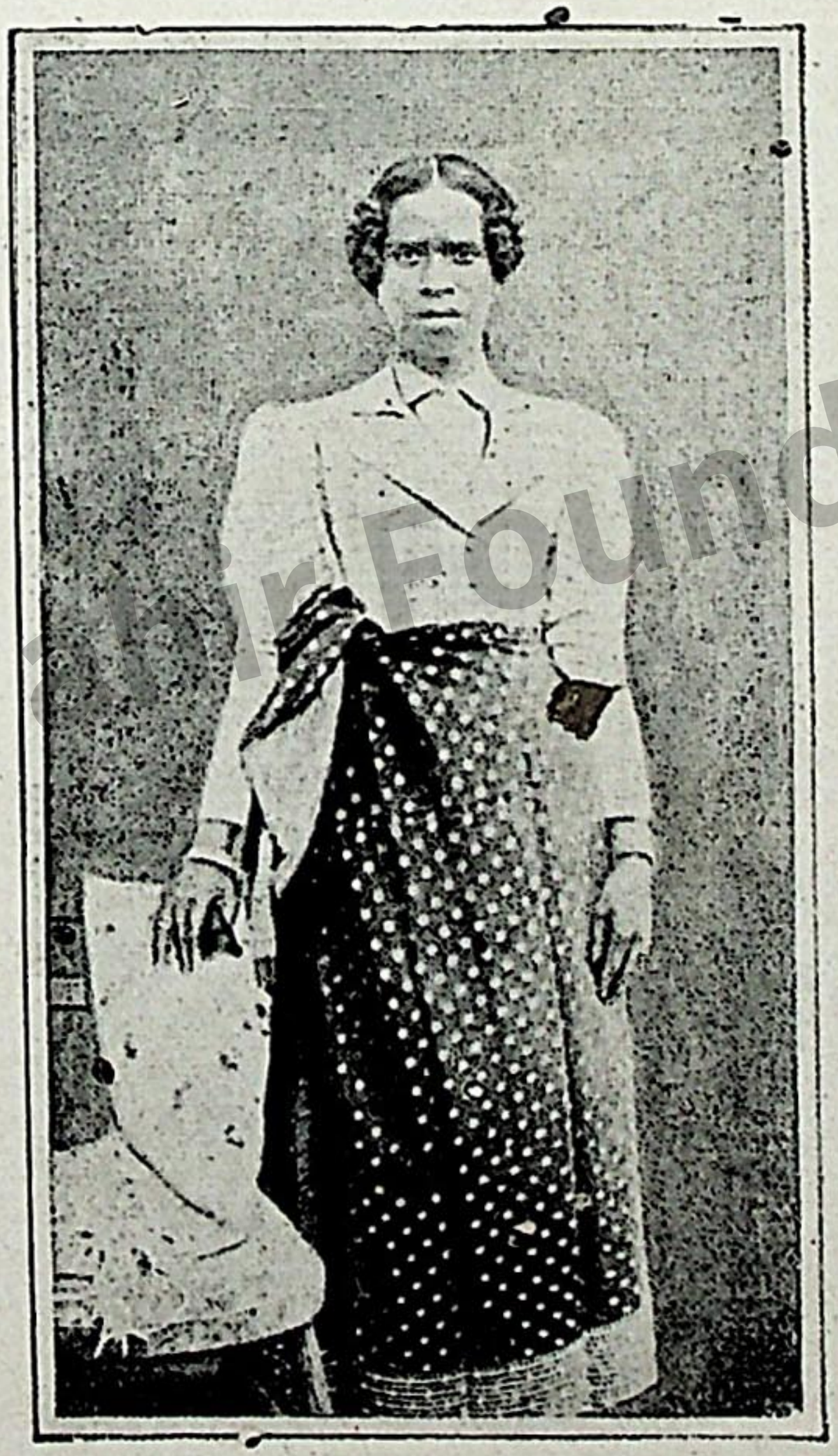

बेत्सीमिसारेका स्त्री.
मलाया तथा नीग्रो रक्त के मिश्रण से उत्पन्न.

Taj Tasvir Foundation

जन्म और बाल्यकाल

जाता है। इन लोगों का विश्वास है कि गर्मी से बालक का जन्म सरलता पूर्वक और सकुशल हो जाता है और माता भी आरोग्य रहती है। बालक का जन्म होने पर सब रिश्तेदारों और मित्रों को सूचना दी जाती है। वे लोग ज़च्चा और बच्चा के लिए अनेक चीज़ें भेंट स्वरूप लाते हैं। सूतिका गृह की आग के लिए लकड़ी लाने की प्रथा भी है। कन्या का जन्म भी उतना ही शुभ तथा सुखदायक समझा जाता है जितना कि पुत्र का।

बच्चे तीन चार वर्ष तक माता का दूध पीते रहते हैं। माताएँ बच्चों को कपड़े में लपेट कर पीठ पर लादे रहती हैं। इमारिना जाति में जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो वह अपनी माता को कुछ रुपये देता है। यह रुपये माता के बच्चे को पीठ पर लादे रहने की दक्षिणा स्वरूप होते हैं।

बहु विवाह

मेडागास्कर में बहु विवाह की प्रथा भी प्रचलित है। एक पुरुष अनेक विवाह कर सकता है; परन्तु गृह प्रबन्ध की बागडोर उसी पत्नी के हाथ में रहती है जिसका विवाह सब से प्रथम हुआ है। प्रत्येक पत्नी को यह अधिकार प्राप्त रहता है कि वह उस रुपये अथवा उन वस्तुओं को, जो उसे दहेज में मिलती हैं अथवा पति द्वारा भेंट की जाती हैं, जिस प्रकार चाहे व्यय करे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पत्नी के लिए मकान भी अलग बनाना पड़ता है इन सब बातों के कारण बहु विवाह केवल धनवान ही कर सकते हैं।

विवाह प्रथा

मेडागास्कर की समस्त जातियों में वैवाहिक रीति रिवाज लगभग एकही से हैं। अधिकतर विवाह सम्बन्ध मध्यस्थों द्वारा तय किया जाता है। यह मध्यस्थ मित्र अथवा रिश्तेदार होते हैं। ऐण्टेमोरो जाति में स्वयंवर की प्रथा है। विवाह के समय वर कन्या के घर पर जाता है और वहीं विवाह की रस्म

Tal Tahir Foundation

वेत्सीलियो स्त्रियाँ.

लाँबा पहने हुए.

अदा की जाती है। विदा के समय कई एक कन्याएँ वधू के स्वरूप में सजाई जाती हैं। एक बड़ा भोज भी दिया जाता है। ऐण्टीमेरिना जाति में वर तथा कन्या एक ही कपड़ा ओढ़ कर बैठते हैं और एक ही थाल में भोजन करते हैं। सक्कलावा जाति में वर का मित्र अथवा रिश्तेदार एक मुर्ग़ा मार कर उसे पकाता है और उसकी दोनों टाँगें वर को देता है। उसमें से एक टाँग तो वर खाता है और दूसरी कन्या खाती है। मुर्ग़े का शेष शरीर वर तथा कन्या पक्ष के लोग खा जाते हैं। बारा तथा कुछ अन्य जातियों में एक बैल मारा जाता है और उसका भोज दिया जाता है।

मेडागास्कर में कन्याएँ जल्दी जवान होती हैं, अतएव विवाह भी थोड़ी उम्र में होता है। १२ से लेकर १४ वर्ष की उम्र में कन्या पूर्ण वयस्क हो जाती है। कभी कभी वर और कन्या की सगाई उनके बाल्यकाल में ही कर दी जाती है; परन्तु विवाह सदैव कन्या के पूर्ण वयस्क होने पर किया जाता है।

Taj Tahir Foundation

समाप्त